श्री ब्रह्मचारी अलतेश्वर ग्रन्थमाला पुष्प ७

श्री जिनरागाय श्री सन्तमहद्गुरुभ्यो नमः

श्री श्रमण माहण संस्कृति पोषक साहित्य योजनान्तर्गत

श्री श्रमण माहण संस्कृति पोषक कथा

भाग १

श्री हंसराज वत्सराज
तथा
बलवीर राजकुमार आदि



संपादक तथा प्रकाशक
फतहचन्द श्रीलालजी महात्मा

वीर संवत् २४९४ | प्रथमावृत्ति १००० | श्री महावीर जयंति
विक्रम संवत् २०२५ | मूल्य ३ रुपिया ५० पैसा | ११ अप्रैल १९६८

[illegible]

फतहचन्द श्रीलालजी महात्मा

[illegible] :

[illegible]

तथा

[illegible]

[illegible]

[illegible]



मुद्रक :

प्रतापसिंह लूणिया

जाब प्रिंटिंग प्रेस, [illegible], अजमेर



करकमलों में

भारतकोकिला विश्व प्रेम प्रचारिका परमविदुषी शात दात व्याख्यान सरस्वती, गगा-यमुना सम पवित्र धर्ममाता श्री श्री विचक्षणश्रीजी साध्वीजी महाराज के करकमलो मे यह पुस्तक रखते हुए अपने को धन्य मानता हूँ एव कोटि कोटि वदन करता हू ।

आपके मद्रास चातुर्मास काल मे दर्शनार्थ गया था एव अपनी साहित्य योजना आपके सन्मुख रखी थी उसी का सुपरिणाम यह पुस्तक श्री श्रमण माहण सस्कृति पोषक कथा सग्रह भाग १ है ।

आपके आशीर्वाद से मद्रास श्री सघ ने मेरा बहुमान किया, विश्वास किया एव मेरी साहित्य प्रकाशन योजना को सफल बनाया । मद्रास का श्रीसघ एव अमरावती का श्रीसघ वदनीय है जिन्होंने मुझे अर्थ सहायता प्रदान की ।

—फतहचन्द महात्मा

समर्पण

पंजाब देशोद्धारक न्यायांभोनिधि आचार्य श्री १००८ श्री विजयानन्दजी (आत्मारामजी) महाराज के पट्टधर पंजाब केसरी, विद्यावारिधि, ज्ञान प्रकाशक श्री १००८ श्री विजयवल्लभसूरिश्वरजी महाराज साहब को यह पुस्तक समर्पण करता हूं। आपके कर कमलो द्वारा स्थापित विद्यादात्रीमाता श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल गुजरांवाला पंजाब की गोद मे रहकर मैने शिक्षा पाई और अतः उसे भी शतशः अभिनंदन करता हूँ।

परमोपकारी शात दात गुरुभक्त आचार्य श्री १००८ श्री समुद्रसूरीश्वरजी महाराज साहब एवं श्री जनक विजयजी गणिके उपकारो के लिए अभिनंदन करता हूँ।

गुरुचरणोपासक—

फतहचन्द महात्मा

उपकार

परमपूज्य स्व० दादीजी हगामबाईजी, चिरायुपेक्षित पूज्य पितृदेव श्री १०८ श्री श्रीलालजी तथा प्रेम पयोधिमातु श्री सरदार बाई का मैं उपकार मानता हूँ जिन्होने जन्म देकर मुझे धर्म के संस्कारो से पोषित किया।

आपका बालक—

फतहचन्द महात्मा

स्मृति में-

स्व० प्र० धर्मपत्नि गौरादेवी व स्व० पुत्र कुमारपाल, गौतमकुमार व गतवर्ण सद्यजातामृतामैना आपको मै कभी नहीं भूल सकता।

--फतहचन्द महात्मा

अभिप्राय

प्रस्तुत पुस्तक श्री हसराज वत्सराज का रास (प्रबन्ध) खरतरगच्छीय आचार्य श्री जयतिलक सूरि के शिष्य श्री जिनोदय सूरि ने सवत १६८० आश्विन शुक्ला १० रविवार को रचा था। यह कथानक अत्यत रोचक एव शिक्षाप्रद होने से एव दुर्लभ होने से कई वर्षों से इच्छा थी कि मैं इसे कथा के रूप मे लिख कर प्रकट करू परन्तु केवल सोचना ही पर्याप्त नही हो जाता हे।

मैंने महात्मा बन्धु पत्र का स्वतन्त्र प्रकाशन गतवर्ष शुरू किया एव श्रमण माहण सस्कृति पोषक साहित्य योजना भी बनाई उसे कार्यान्वित करने की भावना तो थी ही, सयोग से गत वर्ष पर्यु पण पव की आराधना कराने का आमत्रण श्री अमरावती तपागच्छ सघ का समय पर प्राप्त हुआ फलत अपने ट्रस्टो सेठ भोगीलालजो व सेठ फकीर भाई अहमदावाद वालो से आज्ञा लेकर मैं मद्रास गया, विदुषी साध्वीजी विचक्षण श्री जी के दर्शन किए, श्री ढढाजो लालचदजी सा श्री माणकचदजी सा वेताला से पूनमचन्दजी साहब डगमोर, श्री जेठमल सुकनराजजी श्री मदनलालजी खीच्या आदि सज्जनो से मिला परिणामत साहित्य प्रकाशन के लिए प्राय १८०० की राशी प्राप्त हुई। वहा सिर्फ ८ दिन की स्थिरता करके, श्री कुलपाकजी की यात्रा करता हुआ अमरावती पर्वाराधना

हेतु पहुँचा वहा से प्रायः २००) की रकम इस हेतु प्राप्त हुई। मार्ग मे श्री अंतरिक्षजी की यात्रा कर चित्तौड़ लौट आया।

श्री हसराज वच्छराज एवं कथा संग्रह का प्रकाशन उसी निधि मे से किया गया है। जहां जहा भी मैं पर्यु षणपर्वो के व्याख्यान देने जाता हूँ वहा वहा जैन कथाओं की माग होती है। मैं समझायग के लिए दृष्टातो का उपयोग करता हूं जिससे श्रोताओं में व्याख्यान की उत्कंठा बढ़ती है अतः वे स्वभावतः इन दृष्टों को पुस्तकाकार मे मांगते है।

श्री श्रमण माहण संस्कृति पोपक कथा संग्रह मे प्रायः उन्ही की कथाओ की छाया है जो कर्णोपकर्ण चली आई हैं मेरी प्रथम धर्मपत्नि स्व. गौरांदेवी को धर्म की अधिक रुचि थी एव कथाओं का शौक था उनकी उस रुचि का परिणाम यह कथा संग्रह है जो काल्पनिक होता हुआ भी रसप्रद एवँ शिक्षाप्रद है। अभी अनेक कथाएँ लिखनी बाकी है। जो द्वितीय तृतीय भाग मे प्रगट होंगी।

श्रमण महण स्कृति पोषक साहित्य योजना को मैंने अपने पत्र महात्मा वधु के वर्ण १ अंक २ में प्रस्तुत किया था फलतः जिन जिन दानवीर सेठों ने उदारता पूर्वक उसमें सहयोग प्रदान किया उन्हें धन्यवाद है।

यदि भविष्य में समय व आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ तो मैं धर्म शास्त्रों मे वर्णित प्रमुख कथाओं को संक्षिप्त रूप से प्रकट करने की भावना रखता हूँ। वे कथाए है—समरादित्य केवली, अंजनासती, राजा कुमार पाल, वस्तुपाल तेजपाल, संप्रति राजा, चदन मलयगिरि पृथ्वीचन्द केवली, तरगवती, आदि आदि।

महात्मावधु पत्र केवल ७ माह चला उमे महात्मा सदेश में जाति के अनुरोध से मिलाना पडा जो हमारी जाति का मुख्य पत्र है जिसका सपादक मैं ही हूँ। जिन २ महानुभावो ने महात्मा बधु पत्र व साहित्य योजना मे सहयोग दिया उन्हे ये दोना पुस्तकें (१) श्री हसराज वच्छराज (२) श्री श्रमण माहण सस्कृति पोषक कथा सग्रह भाग ८ प्रेषित की जा रही है। आप लोगो ने मुझ पर विश्वास किया मैंने अपने समय व शक्ति का सदुपयोग किया। यदि आपका इसी प्रकार से सहयोग रहा तो भविष्य मे भी साहित्य सेवा करते रहने की मेरी भावना है।

मद्रास व अमरावती से प्राप्त निधिका सदुपयोग महात्मा बधु पत्र के प्रकाशन में तथा इन दोनो पुस्तका के छपवान में किया जा चुका है। अब इस सबधी निधि प्राय नही बत है।

मैं पुन उन साध्वीजी महाराज साहब को बदन करता हूँ जिनके आशीर्वाद से मेरी योजना सफल बनी एव इन दानवीर सेठो का अभिनन्दन करता हूँ जिन्हो ने आर्थिक सहायता प्रदान की।

श्री जोब प्रेस के सचालको का उत्तम व समय पर छपाई के लिए आभार मानता हू ।

जिला चित्तौडगढ महावीर जयति २०२५ ११-८-६८	श्री सघ का कृपाकाक्षी— फतहचन्द श्रीलालजी महात्मा

विषय सूचि

॥ श्री जिनेश्वराय नम ॥ श्री सद्गुरुभ्यो नम ॥

श्री जिनोदयसूरि रचित

श्री हंसराज वत्सराज की कथा

पुण्ये शिव सुख सपजे, पुण्ये सपति होय।
राजऋद्धि लीलाघणी, पुण्ये पामे सोय॥
पुण्ये उत्तम कुल हुए, पुण्य रूप प्रधान।
पुण्ये पूरु आयखू पुण्ये बुद्धि निधान॥

खण्ड—१

गोदावरी नदी के किनारे पयठणपुर नामक प्राचीन नगरी थी। नगरी की शोभा अलकापुरी के समान थी। राजमहल, अतिरमणीय था। नगर मे चौरासी चोहटे (बाजार) थे। जिनालय, शिवालय, पौशाल, पाठशाला आदि से नगरी शोभित थी।

यदुवश शिरोमणि शालिवाहन राजा का पुत्र नरवाहन राजा उस नगरी का नृपति था। राजा के ३६० रानिया थी। हाथी घोडे, पैदल, बत्तीस नाटक मण्डल, सेठ सेनापति, मत्री, माहण राजगुरु आदि राज ऋद्धि के मूल स्तभ थे। बावन वीर सदा राजा की सेवा करते थे, बधुबान्धव बहुत बलवान थे। राजा राज करता था प्रजा चैन करती थी।

एक रात को राजा को वहुत ही सुन्दर सपना आया सपने के आनंद मे राजा विभोर रहा, राजसभा भरने का समय हो गया, मंत्री, प्रधान, हाकिम, कोतवाल और सभासद सव ही महलो मे मुजरा करने आ गए परन्तु सिंहासन खाली। केवल तारों से आकाश की शोभा नही होती है, राजा विना सभा कैसी, पुत्र विना घर जैसी।

सभा पूरी भर चुकी थी, महामन्त्री मनकेसरीजी की सवारी भी आ गई, सव ने मुजरा किया, मन्त्रीजी ने सिंहासन खाली देखा और अन्तःपुर मे गए। राजा साहव सुख निद्रा मे पोढे हुए थे, सूर्य एक घण्टा चढ गया था, हिम्मत और साहस के साथ मीठे वचनो से मंत्री ने राजा साहव को जगाया।

राजा साहव ने जागते ही मन्त्री को सामने देखा और क्रोध के मारे तलवार लेकर मारने दौड़े, और वोले "अरे तुमने यह क्या किया, मेरा सुख लूट लिया, मैं स्वप्न मे कणयापुर पाटण गया था, कनकभ्रम राजा की मनोहर अतिलावण्यमयी पुत्री हंसावली से शादी की थी और आनन्द मे रह रहा था, तुम ने मेरे सुख का भंग किया है, उसका विरह कराया है, तुमने अक्षम्य अपराध किया है।"

मन्त्री ने वहुत ही विनय से प्रार्थना की, "हजूर इसमें मेरा अपराध क्या, आप शान्त होइए आपके सपने को मैं सच्चा करूँगा और एक माह मे हंसावली से आपका विवाह करा दूंगा"। मन्त्री के वचन अमृत जैसे मीठे लगे, राजा उठा और राजसभा मे गया।

मन्त्री ने घर आकर विचार किया कि स्वप्न की नगरी कणयापुर पाटण कहा होगी ? वहा का राजा कनकभ्रम और पुत्री हसावली को कौन जानता होगा ? कैसे यह सब होगा। आखिर मन्त्री तो मन्त्री थे, बुद्धि के भडार थे, अपने कुलगुरुजी से भी सलाह की। अत मे उपाय सूझा अत नगर के चारो द्वारो पर उसने चार दानशालाएँ बनवाई, कामदार रखे और उन्हे आज्ञा दी कि जो भी कोई देशी परदेशी आवे उसे यहा ठहराओ, जो मागे सो मुफ्त मे दो, सब तरह उसकी व्यवस्था करो और नाम पता पूछ लो और मुझे सूचित करो।

इस प्रकार करते हुए बहुत दिन बीत गए। एक दिन एक परदेशी आया, कामदार ने उसका नाम ठाम पूछा पर वह जवाब नही देता था अत मन्त्री को सूचित किया। मन्त्रीजी आए, परदेशी को बहुत ही प्रेम से अपने पास बुलाया, आदर सत्कार किया। भोजन आदि से उसकी भक्ति की। पश्चात उससे पूछा, "कहिए आप कहा से आए हैं, कहा के निवासी हैं, कौन २ नगर आपने देखे हैं ?परदेशी ने उत्तर दिया "मैंने बहुत पृथ्वी देखी है, अठसठ तीर्थों की यात्रा की है, कणयापुर नगर से आया हूँ।" मन्त्री को यह सुन कर ऐसा आनन्द हुआ जैसा कि भूखे को भोजन और अंधे को आख मिलने पर होता है।

मन्त्री ने फिर पूछा, "कणयापुर कहा है"। परदेशी ने कहा समुद्र के उस पार कणयापुर पयठान नगर है, कनकभ्रम उसका राजा है, रभा के समान रूपवती हसावली उसकी

पुत्री है।" यह सुन कर मन्त्री ने परदेशी का आलिंगन किया, खूब प्रेम प्रगट किया और राजा के पास उसे ले गया राजा ने सब वृतान सुन कर आनन्द प्रगट किया। राजा ने नगर का राज्य अपने पुत्र शक्तिसिंह को सौंपा और यात्रा करने की तैयारी की। माहण गुरुजी से शुभ मुहूर्त निकलवाया । ५२ वीरोंको और बलवान भाई बन्धुओ को साथ लिया। पंडितजी के आशीर्वाद के साथ राजा मन्त्री और परदेशी ने शुभ शुकन के साथ प्रयाण किया।

परदेशी का विश्वास कर जहां २ वह ले जाता है उसी रास्ते से सब जा रहे है। राजा ने जोगी का भेप बनाया है, कभी २ ब्राह्मण का भेप भी कर लेता है यों तीन माह के पश्चात उस नगरी मे पहुँच जाते है, परदेशी यहा से छूट जाता है । नगर के बाहर काफी दूरी पर पड़ाव लगाया है। राजा और महता मनकेसरी से वहां के लोग बात नही करते है। वेप बदल कर दोनो जने नगर में प्रवेश करते हैं। सामने सलखु नाम की एक मालन हाथ में दो मालाये लेकर आती है और उन्हें माला भेट करती है। मत्री ने मालन को बहुत सोने की मोहरे दी और उसे प्रसन्न किया। मालन उन दोनो को अपने घर पर लेजाती है और कहती है यह घर बार आपका है आराम से रहो खाओ पीओ मस्त रहो पर जिंदा रहना चाहते हो तो शहर मे मत घूमो। राजा ने पूछा ऐसा क्या भय है ?

मालन ने कहा, "राजा की लड़की बडी क्रूर है। हर आठम, चवदस, पूनम तथा शनि, रवि, सोम, मंगलवार को

वह शक्ति की पूजा करती है, गाजे बाजे बजवाती वहा जाती है और जो भी मनुष्य सामने मिलता है उसे देवी के भेंट चढाती है। राजा, मत्री आदि सब लाचार है, नर वर्ग उस दिन छिपते फिरते है। वह ढूढ तलाश कर के अवश्य नर बली देती है। सब मनुष्य भागते फिरते हैं कोई सामने नही आता है और जो आता है वह जिन्दा नही बचता है।"

यह सुन कर राजा बडी चिन्ता मे पड गया। शादी की बात तो दूर रही हसावली का देखना भी दुर्लभ है। इतनी क्रूर नर घातक कु वरी से विवाह करना नितात असभव है। मन्त्री ने कहा राजा मेरा नाम माकेसरी है मैं असभव को भी सभव कर सकता हूँ आप निश्चित रहे मैं सब कर लूँगा और आपकी शादी हसावली से कराऊ गा।"

राजा को मालणके सुपुर्द कर दिया कि तुम इनका जतन करना मैं अब अपना काम साधने जाता हूँ। मत्री चला और शक्ति देवी के मदिर मे आया। देवी को प्रणाम किया, पूजा की, फल-फूल भेट किये और अरज की कि माताजी हमारी लाज रखो।

शरीर को सकोच कर मत्री देवी के पीछे जा घुसा सध्या समय हसावली हाथ मे तलवार लिए ५०० स्त्रियों के साथ देवी के मदिर मे आई। मन्दिर का रौद्र रूप हो रहा है भयानक डरावना और घातक वातावरण छाया हुवा है। ५२ वीर चित्कार कर डरा रहे है, डमरू बज रहे हैं, डाकणें और चुडेलणे झरोखो मे बैठ कर नाक मे नथे पहन कर विकराल

रुप कर रही है इधर उधर दौड़ भाग कर रही है। भूत प्रेत व्यंतर झंकार कर रहे है। रुण्डों और मुण्डों का ढेर लगा हुआ है भूत प्रेतों के दौड़ने से वे मुंड इधर से उधर उछलते फिरते है, लोहू की नाली वह रही है, अग्नि कुण्ड धगधग कर रहा है, ज्वालाएं लपलप कर रही हैं इतना कौतुक देखती हुई कुंवरी पूजा की विधि शुरु करती है तथा वलि वाकला, तल लापसी चढाती है, और तीन प्रदक्षिणा देती है।

मंत्री मनकेसरी महता ने इस अमूल्य अवसर का लाभ उठाया, विकराल भाषा मे हाक की "मंडप मे मत घुस रे पापिणी, जा चली जा नहीं तो मार दूंगी।" कुमरी के शरीर मे धूजणी छूटगई, कांपती डरती हुई वह मन में सोचती है आज देवी मुझ पर रुष्ट हुई है जरूर मैंने कोई अपराध किया है। फिर देवी वोली, "जा दूर जा, तेरा मुंह न दिखा, अनेक पुरुषो की हत्या करने वाली पापिनी, हत्यारी दूर हट !"

कुंवरी हाथ जोड़ कर नम्रता पूर्वक कहती है, "हे माताजी इसमे मेरा दोष नही है, जाति स्मरण ज्ञान से मैंने अपना पिछला भव देखा है कि, मैं पिछले भव मे पक्षी थी, एक मनोहर उद्यान में विशाल आम्रवृक्ष पर मैने घौसला वनाया था, उसमे मैने दो अण्डे दिये थे। देवयोग से जंगल मे आग लगी, सव हरे और सूखे वृक्ष जलने लगे और मेरे वृक्ष को भी आग लगी। धीरे २ आग मेरे घौसले तक आ पहुँची, मैंने संतान के मोह से घौसले पर अपने पंख फैलाए

और अपने पति को पानी लेने दौडाया, परन्तु पानी लेने के वहाने वह पापी गया सो पीछा ही नहीं लौटा, यहा आग मे अण्डे जलगए उसे दया भी नहीं आई, अपने पेट के जायो के लिए मैंने अपने प्राण वहीं होम दिये, मौत के डरसे, खरी विपत्ति के समय वह गया सो गया डरपोक कायर वही का ! जलते हुए बच्चो को छोड कर वह भाग गया उसे शरम भी नही आई ! इसी द्वेष से मैंने अनेक मनुष्यो की गदने उडाई हैं पुरुष जाति ऐसा स्वार्थी, डरपोक, क्रूर, और निदय होती ह।"

देवी बोली, "हाय हाय, यह तूने क्या किया, तुझ मे जरा भी विवेक नही है, अरे तेरे पति ने तेरे लिए जैसा किया वैसा तो कोई भी नही कर सकता है। तेरे कारण तो उसने अपने प्राणो को आग मे होम दिया।"

शक्ति के मुँह से यह वचन सुनकर हँसावली कहती है, "ह माता मुझे यह पता नही था कि उसने भी मेरे लिए प्राणो का घात किया है, अनजाने ही मैंन मनुष्यो की घात की ह। हे माता तेरे चरणो की सौगन आज से मैं किसी की घात नहीं करूगी।" भक्ति पूर्वक भोग धर के कबरी अपने महलो चली गई।

मत्री, देवी के पीछे से उठ कर सामने आया पैरो मे पडा देवी का गुणगान किया तब देवी हसी और सोचा कि यह कोई साधारण मानवी नहीं है बहुत ही साहसी व बुद्धि निधान है। मन्त्री हाथ जोड कर विनति करता है, हे माताजी मेरा अपराध क्षमा करना। हे माता तू त्रिपुरा है, तू तोतला है,

तीनो लोकों मे प्रसिद्ध है, जीवती जागती जोग माया है, तू ही शिकोतरी और सरस्वती है, सव के कामों को सफल करती है। कोयल पर्वत पर जागती हुई तूं ही देवी हिंगलाज है। जालंधर मे ज्वालामुखी और आवू में तू अंवाजी है, उज्जैनि में हरि सिद्ध को नमस्कार है जिसे राव और राणा सव मानते है। मैं तेरा अपराधी हूँ, मैंने अपने स्वामी के लिए यह साहस का काम किया है। हे माय तू मेरे मन की अभिलाषा पूरी कर।"

इस प्रकार से देवी सतुप्ट हुई और वोली, "हे मानवी वर माग, जो मागेगा सो दूंगी तेरा काम पार पाडूगी। तूं पुण्यात्मा है, सदा पुण्य ही फलता है, पुण्य से ही मन वंछित की प्राप्ति होती है।" महता मनकेसरी प्रफुल्ल हो कर हाथ पसारता है कहता है, "खमा खमा मारी माय, मुझे यह वर दो कि मैं तरह २ के चित्र वना सकू।"माता वोली "तथास्तु" और शक्ति प्रदान कर कहा कि जा वेटा तेरा सव काम सफल करूँगी। देवी के चरणो मे प्रणाम कर मन्त्री अपने स्थान पर आ गया और राजा के चरणो मे प्रणाम किया।

मंत्री को देख कर राजा वहुत हर्षित हुआ, परदेश में गांव का आदमी भी भाई जैसा प्यारा लगता है जव कि यह तो राजा का सहारा था। राजा ने प्रेम से पास विठाया मन्त्री ने सव वात विस्तार से कह दी और कहा कि आज से वह किसी मनुप्य का घात नही करेगी। यह सुन कर राजा वहुत प्रसन्न हुवा कि चिता टली, अव मै भी शहर में घूम फिर सकूंगा।

मत्री वैसी ही बुद्धिमान था फिर शक्ति का वरदान प्राप्त हो गया, सोने मे सुगध। एक कुशल चित्रकार वनकर वह नगर मे सुदर २ चित्र वेचता है। नगर के वाजारो चोहटो और घरो मे उसके अनुपम चित्रो की धूम मच गई थी।

एक वार अपने सव चित्रो को फैला कर वह चौहटे मे बैठा था इधर राज महल से हसावली की एक दासी कुछ खरीदने आई थी। चित्रो को देखकर वह मन मुग्ध भी हो गई तुरत बाई साहव के पास गई कि एक परदेशी चित्रकार चौहटे मे बैठा है। कुवरी वोली जा उसे यहा वुला ला, वह मुस्कराती, आँखो के मटके हाथो के लटके करती चित्रकार के पास आई वोली, "ओ अलवेली नगरी का रुडा रूपाला चित्र-कार पधारो कुवरी साहव रा मैला।" मन्त्री तो यही चाहते थे, भावता भोजन और वेदजी की सलाह। मन्त्रीजी झटपट सव समेट कर उस सुन्दरी के साथ हो लिए, रास्ते मे साधारण जानकारी भी महलो की लेते जाते थे।

कुवरी के पास पहुचकर चित्रकार ने विनयपूर्वक नमस्कार किया, अपनी कला कुशलता और हस्त कौशल का परिचय दिया। कुवरी ने कहा, "परदेशी चित्रकार तुम्हारी प्रसिद्धि बहुत सुनी है लाओ दिखाओ, क्या २ चित्र तुम्हारे पास है? कितने ही हाथी, घोडे, सिंह, महल, सरोवर, घाट, उद्यान आदि के चित्र मत्री ने दिखाए। कुवरी प्रसन्न हुई। चित्रकार से वोली कि, "तुम कल यहा वापस आओ, मैं पिताजी से पूछकर कर मेरे महलो मे सुन्दर चित्रपट वनवाना

चाहती हूँ, इन चित्रों का मूल्य तो यह लेते जाओ।" चित्र-कार अभिवादन कर चला गया।

कुंवरी ने राजा से प्रार्थना करके चित्रकार को महलों में आने व चित्र वनवाने की आज्ञा प्राप्त कर ली। दूसरे दिन चित्रकार अपने सब साधन लेकर वहां आ पहुँचा और कुंवरीजी उसे जैसी सूचना देती है उसी प्रकार से वह काम करता है।

चित्रकार ने कई नमूने और कुंवरी ने अपनी रूपरेखा रखी परिणामतः सुंदर, आकर्षित चित्रकारी प्रारम्भ हुई।

नल राजा जूए मे हारकर किस प्रकार घर से वाहर निकलते है, दमयंती साथ चली है और मार्ग मे उसे सोई हुई को छोड़कर उनका चला जाना भी वताया है।

सोने की लंका वन गई है, राजा रावण का सिंहासन पर विराजमान होना, नव गृहो का उनकी सेवा करना भी दर्शाया है।

राम, लक्ष्मण, सीता का वन-गमन, हेममृग मरण, रावण का योगी रूप आचरण, सीता हरण, हनुमान का लका दहन, समुद्र तरण, लंका पतन, राम सीता मिलन, अयोध्या मंगलकरण भी जताया है।

सोती हुई द्रोपदी का पद्मोतर राजा द्वारा देव सहायता से उड़ा ले जाना, कृष्ण वासुदेव का अमरकंका मे जाना और द्रोपदी को लाकर पॉडवो को सौंपना भी चित्रित किया है।

श्रवणकुमार का माता पिता को कधे पर बिठाकर तीर्था की यात्रा कराना और दशरथ के तीर से उसका मारा जाना भी हुवहु अकित किया है।

श्री कृष्णजी के द्वारा कस को पछाडना। जीवयशा का मद्य पीकर उत्पात मे साधुओ की अशातना करना, पति और पिता दोनो वशो का नाश का निमत्रण देना भी अकित किया है।

अनेक वन जगल, बागबगीचे और उद्यानो के चित्र बन गए है। आम, जामुन, वड, पीपल आदि अनेक वृक्षो का दृश्य उपस्थित हो गया है। कई समुद्र, जलाशय, सरोवर, बावडी, गाव नगर भी अपनी शोभा बढा रहे हैं। नानाविध कलरव करते हुए मोर, तीतर, सारस, तोता मैना, चकवा चकवी भी अटवी व पवत पर नाचते गाते वृक्षो पर विहार करते नजर आ रहे हैं।

सप, अजगर, शेर, चीता, रोज, मृग, सूअर, रीछ, सियाल और खरगोश इधर उधर भाग रहे है।

मस्त हाथी और तेज घोडे, गभीर वृषभ और चचल बदर भी आ गए हैं।

एक उद्यान मे विशाल आम्र वृक्ष खडा है उस पर एक घोंसला है जिसमे दो बच्चे हैं, पास मे दो पक्षी बैठे है। जगल मे आग लगी है, चारो तरफ उजाला हो गया है, पशु पक्षियो का कोलाहल और भय से भागना भी बताया है। मादा चिडिया का अपने बच्चो पर पख फैलाना और पिता पक्षी

का उडकर सरोवर जाना चित्रित है। नर पक्षी का चोंच में पानी लेकर लौटना, अपनी स्त्री बच्चों का आग में जल जाना और उसका भी विलाप करते हुए मोह के वश में जंपापात करना वताया गया है। इस प्रकार से चित्र तैयार हो जाने पर चित्रकार कुंवरी के पास जाता है, कुंवरी ने शावाशी दी तथा धन दे कर उसे विदा किया और वह राजा नरवाहन के पास आ पहुँचता है और सव वृतात सुना देता है।

इधर कुवरी अपने नवीन चित्रित महल मे सुन्दर सुन्दर चित्रो को देखती हुई हर्षाती है, ध्यानपूर्वक एक २ चित्र को देखती है, अचानक उसकी नजर एक आम्र वृक्ष पर रहे हुए घौसले, वच्चों और दो पक्षियो पर पड़ती है। आग लगना मादा पक्षी का पंख फैलाना, नर पक्षी का जल लेने जाना और लौटकर अपनी पत्नि व वच्चों के कारण अग्नि में भस्म हो जाना देखती है।

वह पछाट खाकर नीचे गिर जाती है और विलाप करती है, "हाय हाय, अडो में के वच्चो और मेरे कारण से भरतार ने अग्नि प्रवेश किया, अरे अरे देखो देखो मुझ पापिनी ने कितना वैर धारण किया है। पति द्वेष के कारण कितने ही मनुष्यो का मैने घात किया है। मेरा यह जीवन मुझे खाने को दौड़ रहा है, हे पति मैने दुसाहस किया है, मेरा दु.ख सहन नही होता है। हाय मेरे पक्षी जैसा तूने मेरे लिए किया था वैसा मै क्यो नहीं कर पा रही हूँ ? हाय मै भी अग्नि में जलकर तेरे पास आती हूँ और फिर तेरे साथ

रहती हूँ। बिना पिया के मुझे करतार ने क्यो सरजी, हाय देव मुझे विरह अग्नि मे क्यो जला रहा है ? जले पर नमक क्यो डाल रहा है ? यो कुवरी रोती छटपटाती है और मूर्छित होकर जमीन पर धडाम से गिर जाती है । दासिया दौडी आती है, पखा करती हैं, शीतल जल लाती हैं, चन्दन का लेप सिर पर करती हैं और उसे होश मे लाने का उपाय करती है।

एक दासी दौडी २ जाती है और राजा को यह खबर देती है। राजा घबराता है, पडितो और ज्योतिपियो को बुलाता है, शनि राहु का दान देता है। देवी उपसर्ग या देव दोप निवारण के लिए कितने ही ऊँट घोडे और गधो को डाम दिया जाता है। (पखाली के वाक से पाडे को दड दिया जाता है, सवल के दोप का दड निर्वल को भुगतना पडता है, राजकुवरी के देवी दोप होने के कारण बिचारे निरपराधी पशुओ को लोहे की सिल्ली से डामा जा रहा है, जलाया जा रहा है यह है मिथ्यात्वी पडित ज्योतिपियो का माग।)

कुवरी तो वेभान है उसका ध्यान तो पति मे लगा है। एक कहता है कि गूगल लाकर नाक मे धुआँ दो, दूसरा कहता है कि मेरी वात सुनो, "जिस चित्रकार ने महल मे चित्रकारी की है वह डाकणा है, भूत है, उसी ने एकान्त मे कुवरी को छनी है जरूर कुछ कर दिया है । राजा की आज्ञा हुई कि, "जहा भी वह चित्रकार हो पता लगाओ, मारते, पीटते, खीचते हुए उसे यहा लाओ।" आज्ञा होते ही दास

दासी नगर मे दौडते हैं । ब्राह्मण के घर उसका पता लगता है, एक दास उसे खेंच कर बाहर लाता है और कहता है, "आज तेरा चौथा चन्द्रमा है, तूने बहुत ही खराब किया है, तेरा दिन आज का नेष्ट है, तुझे राजा या तो सूली पर चढा देगा या गोली से उड़ा देगा ।" यों कहते हुये धक्का मुक्की मारते हुए गाली गलौच करते हुए उसे राजमहल की तरफ लाते हैं । मंत्री मन मे सोचता है मैंने अच्छा किया उसका परिणाम उल्टा निकला, खैर जो होता है सब अच्छा होता है । महलों मे पहुँचकर उसने सब भीड को हटा दी, मात्र एक दासी को पास में रखा । अचेत कुंवरी के कान के पास मुंह ले जाकर पिछली सब घटना कहना शुरु किया, और हँसावली सचेतन हुई । आख खोली और प्रसन्नता से बोली, "आह तू कितना अच्छा मनुष्य है मेरे पति की बात कही है, अब बता कि मेरा पखी कहाँ जन्मा है और अब कहाँ है ? चित्रकार कुछ देर ध्यान लगाता है और उत्तर देता है, "मैं अपने ज्ञान के बल से तुम दोनो की बात जानता हूं सुन तेरा पंखी वहाँ अग्नि मे भस्म होकर पेठाणपुर के राजा शालिवाहन का पुत्र नरवाहन हुआ है । उसके चतुरगिनी सेना है, ३६० रानियाँ है, ५२ वीर जिसको सेवा करते हैं और कई मन्त्री और दीवान हुक्म मे हाजर रहते है । यह सुनकर हंसावली बहुत प्रसन्न होती है, पति की बात सुनकर उसके रोम-रोम मे दिए प्रगट होते है, वह अत्यन्त हर्षित होती है और कहती है, "हे धर्म पिता मेरे पति से मेरा मिलाप करा दे, मै आपका गुण नही भूलूंगी ।" चित्रकार ने

आश्वासन दिलाया कि, 'हे पुत्री मैं नरवाहन राजा से तेरा मिलाप करा दूंगा और डंके की चोट से सबके सामने तेरा उस से पाणीग्रहण करा दूंगा। पैठाणपुर यहाँ से बहुत दूर समुद्र के उस पार है बीच मे बहुत से जल चक्र तथा अनेक भय हैं, इतनी दूर से बरात यहा नही आ सकेगी इसलिये म राजा को अकेला ही यहा लाऊँगा, एक मास के बाद तेरी अभिलाषा पूरी हो जायगी, राजा से कहकर तू स्वयवर मडप की रचना कराना तेरा सब काम सिद्ध हो जायगा।"

कुवरी ने बहुत धन देकर चित्रकार को सस्नेह विदा किया, दोनो की प्रसन्नता का पार नही था। मालण के घर आकर मत्री मनकेसरी महता ने राजा नरवाहन को सब वृतान्त कहकर निवेदन किया कि यहा बिलकुल गुप्त रहना है, उसको भेद का पता न चले वैसा करना है। कुवरी ने माता के द्वारा राजा से अरज कराई कि स्वयवर मडप की रचना करावें, राजाओ को निमन्त्रण दें और मेरे मन की अभिलाषा की पूर्ति करावे।

राजा बहुत ही प्रसन्न हुआ, नरघातिणी नर चाहिनी बनी है और पति की अभिलाषा करती है, इससे बढकर खुशी की बात और क्या होगी। राजा ने अनेक नृपतियो को निमन्त्रण दिए। स्वयवर मडप की रचना अत्यन्त भव्य की। अनेक राजा महाराजा अपने हाथी घोडे व दलबल के साथ आने लगे हैं। इस तरह २७ दिन व्यतीत हो गए हैं,

कुंवरी पिया मिलन की प्यासो, हरदम रहे उदासी । मछली की तरह तड़पती है हर क्षण मे चिंता करती है । कभी गोखडे मे आती है कभी वाहर निकलती है, वहुत ही वेचैन होकर सोचती है, "हे मेरे व्हान्ने पंखीड़े मेरे प्राण, मैंने विना विचारे सव किया था, मेरा दिन वरस के समान जाता है, मेरा हृदय दुःख से फटा जा रहा हे, वह दिन मेरा धन्य होगा जव पूर्व भव का वह मेरा पति मुझसे आन मिलेगा, चित्रकार एक माह की अवधि दे गया था अव तो मात्र दो दिन वाकी रह गए है तो भी कुछ भी खवर नही है ।" कुंवरी की वेचैनी व विरह ज्वाला उग्ररुप धारण करती है इतने में झरोखे के पास चित्रकार नजर पड़ता है, उसे ऊपर वुलाकर पूछती है कि "नरवाहन राजा कव आवेगे । चित्रकार कहता है कि, "हे मेरी कुवरी वा, राजा यहाँ आ गये हैं ।" कुवरी पुलकित हुई और वोली, "स्वयंवर मे तू राजा के पास रहना जिससे मैं उन्हें पहचानलू वरमाला उन्ही के गले मे डाल सकू ।"

राज्य गुरुजी माहण ज्योतिपी के वताए गए शुभ मुहूर्त में हसावली वरमाला लेकर मंडप मे प्रस्थान करती है मानो इन्द्रपुरी से अप्सरा पृथ्वी तल पर उतर रही हो। अनेक राजा महाराजाओ का परिचय दासी देती है दर्पण में मुह वताती है पर हंसावली ने तो दूर से ही चित्रकार को देखकर राजा नरवाहन को पहचान लिया था । गंभीरता पूर्वक गजगति से चलती हुई वह वहां पहुँचती है, अपने हर्पोल्लास मे उछ-लते हुए हृदय को दवाती हुई मन मकरंद को कावू में रखती

हुई हसगति से राजा नरवाहन के समीप पहुँचकर गले मे माला डाल देती है। चारो तरफ आनद छा जाता है। बाजे वजते हैं। नगर के नर नारियो के उत्साह व आनद का पार नहीं है। सब कहते है "आखिर मे हसावली परणी तो सही।"

राजा ने पूरी नगरी को जिमाया, १० दिन तक उत्सव किया विविध रत्नाभूषण कुंवरी को दिए और उसे अलग महल मे अपने वर के पास विदा किया।

उनका मिलन राम और सीता, कृष्ण और राधा, महादेव और पार्वती, नल और दमयन्ति, अर्जुन और द्रौपदी के समान था।

कुछ दिन वहा रह कर राजा नरवाहन ने विदा मागी, मनकप्रभ राजा ने बहुत ही दुखी मन से विदा दी। विदाई मे बहुत ही धन सपत्ति, रथ, हाथी घोडे आदि दिए। शुभ मुहूर्त मे राजा नरवाहन ने अपनी राजधानी की तरफ प्रस्थान किया। कुशल क्षेम से राजा नरवाहन रानी हसावली व मन्त्री के साथ अपनी नगरी मे आ पहुँचे। नागरिको ने बहुत ही स्वागत किया एव हर्ष प्रगट किया।

राजा ने सब के समक्ष मन्त्री मनकेसरी महता की प्रशसा की कि मन्त्री हो तो ऐसा हो, अपने प्राणो की बाजी लगाकर भी इसने मेरी अभिलाषा पूर्ण की, इसकी बुद्धि के प्रताप से हम कुशलपूर्वक वापिस आ पाए हैं। राजा ने मन्त्री को एक प्रदेश का राज्य प्रदान किया। यो राजा अपने पुण्य

के वल से सव प्रकार का सुख भोग रहा है। मंत्री सावधानी पूर्वक राजकाज संभाल रहा है। पुण्य के वल से सव शुभ होता है, पुण्य के वल से आपत्तियां मिटती हैं, पुण्य के वल से ही वैरी भी मित्र वन जाते हे।

खण्ड २

हंसावली राणी की दानशीलता, तप, भाव और परोपकार वृत्ति से पूरी नगरी संतुष्ट थी। वह नित्य सुपात्र दान देकर भोजन करती थी। पति के वचनों में श्रद्धा रखती थी। पुण्ययोग से उसके गर्भ रहा। राजा ने विचार किया कि मेरे ३६० अन्य रानिया है कहीं हसा के गर्भ से उत्पन्न हुए वालको को कुछ अनिष्ट न हो जाय अत. राणी को लेकर राजा जंगल मे जा रहता है, एक चतुर दासी को साथ ले लिया है, जंगल में राणी ने दो अति सुन्दर कोमल वालकों को जन्म दिया है वड़े का नाम वत्सराज और छोटे का नाम हंसराज रखा है।

जन्मते ही वालको को वृक्ष के नीचे रख दिया है इतने में आकाशवाणी होती है "हे राजन ये वालक वहुत ही प्रभाविक होगे, इनकी पूरी रक्षा करना किसी भी तरह गुप्त रीति से इनका पालन करना।" राजा अति प्रसन्न हुवा, दासी को भेजकर मत्री मनकेसरी महता को वहां जंगल में वुलाया और दोनों वालकों को उसकी गोद मे रख दिया। राणी को सव समझाया कि ५२ वीरों का भरोसा नही है इसलिए मंत्री इन्हें दूर जंगल, पहाड़ और अनजान प्रदेश में

जाकर वडा करेंगे, वडे होने पर इन्हे अपने पास
ा लेंगे।'

मन्त्री ने राजा को आश्वासन दिया कि मेरे जीव के जतन
इन्हे पालू गा आप कुछ चिंता न करें। राजा ने वहुत
ग मुद्रा, रत्न आदि दिए। पाच धायमाता साथ कर दी
ा राज्य गुरु ब्राह्मण पुरोहित के पुत्र को बुला कर उन्हे
साथ मे रखा है।

शुभ मुहूर्त मे मत्री ने प्रयाण किया वहुत दूर जाकर एक
तम नगरी मे निवास किया। दोनो वालको का यत्न पूर्वक
लन पोषण हो रहा है। जव वे पाँच वर्ष के हुए तब उन्हे
पाल मे पढने भेज दिया और पद्रह वर्ष की उम्र होते
ते तो वे पुरुष की ७२ व नारी की ६४ कलाओ मे पारगत
गए। शस्त्र विद्या मे भी वे निपुण हो गए हैं और मन्त्री
ी आज्ञानुसार वरत रहे हैं।

पुत्रों के वियोग से राणी हसावली वहुत दु खी रहती है,
र क्षण राजा से उन्हे बुलाने को कहती है, राजा धीरज देते
। इधर पद्रह वर्ष पूरे होते ही मत्री दोनो भाइयो को लेकर
ठणपुर नगर के वाहर उद्यान मे आकर ठहरते हैं। राजा
ुभमुहूर्त मे वाजे, गाजे से उनका नगर प्रवेश कराते हैं।
ुवरो को अपनी माता से मिलने का मुहूर्त कुछ दिन पश्चात
ाता था अत राजा ने वावन वीरो को वुलाया, उन्हे
मिष्ठान जिमा कर आज्ञा दी कि दोनो कु वरो का मन तरह
ारह के खेलकूदो से वहलाया करो। खेलने के लिए रत्नो का
ंद दिया।

कुंवरो और वीरो का खेल देखने के लिए नरवदा नदी के किनारे नगरी के नर नारियों की भीड़ लग गई । शर्त यह रही कि जो हार जाय वह जीतने वाले के पैरों में झुके। एक तरफ तो ५२ वीर थे दूसरी तरफ हंसराज वत्सराज दोनों भाई थे। खेल शुरू हुवा वीरो ने बहुत प्रयत्न किया तो भी जीत तो कुवरों की हुई, वीरो को मजबूरी से कुंवरों के पैरो गिरना पड़ा। वीर इस हार के पश्चात शक्ति देवी के मंदिर में गये और हाथ जोड़कर देवी से प्रार्थना की कि "हे देवी इन दोनो कुंवरों को मार डालो, हम तुम्हारे सेवक है हमसे भी अधिक वलवान मानवी पक गए हैं"। देवी ने कहा कि "वीरों इनकी रक्षा धर्म करता है इसलिए इनको मारना मेरे वस मे नही है फिर भी इन्हे कष्ट दूंगी और माता-पिता से वियोग अवश्य करा दूंगी तुम निश्चिंत रहो।"

देवी हँसराज के पास पहुंची वह गेंद उछाल रहा था देवी ने अदृश्य होकर गेंद को छिपा दिया, वह चारों तरफ ढूंढने लगा। वीरों ने कहा गेद के बिना राजाजी नाराज होगे इसलिए गेद को ढूंढना जरुरी है। एक वीर बोला गेद तो रानियो के महलो मे जा गिरा है वहा जाने पर मिल जाएगा। हँसराज ने वडे भाई वत्सराज से आज्ञा मांगी। वड़े भाई ने कहा कि वहां अपनी ३६० माताएं रहती है तुम उनसे वात न करना और गेद लेकर जल्दी चले आना।

हँसराज राजमहल के द्वार पर जा खड़ा हुआ। द्वारपाल ने दासी द्वारा रानी हँसावली से कहलाया कि कोई पुरुष

दरवाजे पर खड़ा है। रानी ने देखते ही क्रोध से कहा मेरे पति नरवाहन राजा है जो तेरा यहा खडे होना जान जाएँगे तो तुझे जान से मार देंगे। द्वारपाल विनय से अरज करता है कि यह तो चेहरे से आप का जैसा दीखता है।

शायद आपका भानजा हो, भतीजा हो, भाई या पुत्र भी हो सकता है। रानी ने गौर से देखा तो अपने दोनो पुत्रो मे से यह जरूर एक है। हँसराज माता को प्रणाम करता है माता उसे प्रेम मे पास बैठाकर वत्सराज की बात पूछती है। हँसराज कहता है कि वह शुभ मुहर्त मे आपके दर्शन करेगा अभी मुहर्त अच्छा नहीं है फिर भी मेरे तो पुण्य जागे कि मा के दर्शन हो गये। मा मैं एक काम आया हूँ मेरा सवा कोट का गेंद आपके महल मे आ गिरा है वह लेने आया हूँ। माता ने कहा बेटा जा गेंद लेकर वत्स-राज को दे देना। माता को प्रणाम कर वह महल मे गेंद ढूंढता है। उसे गेद गुडकता हुआ नजर आता है वह ज्यो २ गेंद के पास पहुँचता है गद आगे न आगे गुडकता जाता है और अलोप हो जाता है। हंसराज उदास होता है इतने मे पास ही एक सुन्दर महल नजर आता है। दासी से मालूम होता है कि यह राजा की सब प्रिय रानी लीलावती का महल है इसमे ऋद्धि सिद्धि का पार ही नही है। हँसराज महल मे जाता है और माता को प्रणाम करता है। राणी लीलावती हँसराज को देखकर मोहित हो जाती है उसकी कामाभिलाषा जागृत हो जाती है और वह अश्लील बोल चाल

तथा हाव भाव प्रकट करती है । हँसराज कहता है कि माताजी मैंने आपको प्रणाम किया परन्तु आपने मुझे आशीष नही दी । मै तो गेंद ढूंढता २ यहां आ गया हूँ मै तो आपका पुत्र हूँ पेट मे भी लात मारता हूँ परन्तु मा बाप तो सदा अपराध क्षमा करते है। रानी कहती है कि तुम मेरे सगे पुत्र नही हो सोत के पुत्र का सम्बन्ध किसी गिनती मे नही आता है । मै तुम से प्रेम करती हूँ तुम मेरी अभिलाषा पूरी करो तो यह रत्नों का गेंद तुम्हे दे दूगी । हँसराज कहता है हे माता जांघ का मांस भी मीठा हो तो उसे ही क्या स्वयं खा सकते हैं ? यह अनुचित विचार आप छोड दीजिये । लीलावती कामांध होकर तरह तरह से विनती करती है और कहती है कि तुम मेरी बात मान जाते हो तो राज दूंगी । कुंवर कहता है, हे माता ! समुद्र यदि मर्यादा छोड़ दे, अग्नि यदि शीतल हो जाय, चन्द्रमा में से आग झरने लग जाय, सूर्य पश्चिम में उगने लग जाय, धरती रसातल में चली जाय और समुद्र का जल मीठा हो जाय तो भी मै अनुचित कार्य नही करूँगा । यही मेरे माहण गुरुजी की शिक्षा है । राणी कहती है मैं प्रसन्न हूँ तब तक ही तू सुखी है, मै नाराज हुई नहीं कि तेरी घात करा सकती हूँ अतः अब भी मेरी बात मान जा क्यों नाहक दु.ख में पडता है और मेरी आशाओ पर पानी फेरता है। हँसराज ने साहस कर रानी लीलावती के हाथ से गेंद छीन लिया और महलो में से जल्दी जल्दी बाहर चला गया ।

जखमी शेरनी और तरछोडी नारी, मानो बदर ने शराब पी। नारी, नारी मिट कर नारडी वन जाती है। लीलावती ने अपना शरीर नाखूनो से नोचलिया, कचुकी (अगिया) फाड डाली सुन्दर साडी को चीर चीर कर दिया और ओधे मुह खाट पर जा गिरी।

राजा, रानी के महलो मे आया, लीलावती को देखा नही तब दासी ने कहा कि वह तो उदास है और कोप भवन मे पडी है। राजा पास जाकर कहता है कि 'तू तो मेरी पटरानी है तुझ से अधिक मुझे और कोई रानी प्यारी नही है तू बोलती क्यो नही है ?" फिर भी रानी नही बोलती है तब राजा साडी खेंचता है। रानी तडाक से कहती है, "सुसराजी तुम मेरी साडी छोड दो। मैं हसराज की पत्नि हूँ इसलिए मुझ से दूर रहो।" राजा यह सुन कर स्तब्ध रहगया, ऐसी अनहोनी बात कभी नही हो सकती है, सिंह के बच्चे कभी घास नही खा सकते। ये मेरे लडके श्रीकृष्ण के वश यादव कुल मे उत्पन्न हुए हैं, गगाजल जैसे पवित्र हैं फिर यह हुआ क्या ? रानी ने रो रो कर सब बात कही अपनी साडी और कचुकी बताई, नाखूनो के निशान बताए। राजा शकित होकर क्रोध से कापने लगा और दासी को भेज कर मनकेसरी प्रधान को वही बुलाया। सब बात समझ कर महता बोले "राजन यह काम कुवर का नही हो सकता है, स्त्री चरित्र से पहले अनेक अनर्थ हो चुके हैं आप विचार से कामले। पुरुष की सब से बडी कमजोरी स्त्री है, ससार का सत्य एव

स्वयं ब्रह्माजी एक तरफ और एक तरफ पुरुष की अपनी पत्नी का पक्ष। विजय सदा पत्नी पक्ष की होती देखी जाती है वहां सत्य, सवध सगपण भाई पन सव पानी के रेले में जाते है, राजन आप विवेक से काम ले, क्रोध को छोड दे।" राजा कहते है, ये दोनो मेरे शत्रु हैं उनका सिर काट डालो, जरा भी ढील न करो। रानी कहती है कि यदि तुमने ढील की तो उन दो के साथ तुम तीसरे भी मारे जाओगे। राजा कहते हैं, महता अव शका छोड़ कर वह काम करो जिससे रानी का दुःख दूर हो। इस रानी का मन रखने के लिए मै पुत्रों से मोह खेच लेता हूँ। और सव सहन कर सकता हू पर इस प्राण प्यारी रानी की वात नही टाल सकता हू तुम जाओ जल्दी करो। महता ने कहा, "अच्छा, जैसी आपकी आज्ञा पीछे मुझे दोष न दे।"

मन्त्री ने दोनो कुवरो को अपने साथ लिया। अपने घर ला कर सव वात पूछी और राजा की आज्ञा सुना दी। मंत्री ने दोनों को सावधान किया और कहा कि तुम दोनों अभी ही यहां से चुप चाप चल दो। वैठने के लिए ये दोनों घोड़े तैयार खडे है ये १२ रत्न है इन्हें संभाल कर रखना। साथ मे भोजन सामग्री रुपए और आवश्यक वस्तुएं देकर उन्हें विदा किया। जाते समय दोनो भाई मन्त्री के पैरों में पड़ कर खूव रोए। मंत्री ने आश्वासन दिया और नवकार मत्र का जाप करते रहने की शिक्षा दी। कुंवरो ने कहा, "आपने हमें जीवनदान दिया है हम उरिण नही हो सकेंगे।" मंत्री ने

वहा धर्म के प्रताप से सब अच्छा होगा। रोने से राज नही मिलता है आप सुखे सुखे पधारो। दोनो भाई रोते कलपते आंसू डालते निशाने झाडते हुए चल दिए। मन्त्री उनको कुछ दूर पहुंचा कर वापस फिरा। राजा रानी को कल क्या उत्तर देना है यह सोच रहा था कि उसकी दृष्टि एक शिकारी पर पडी, पास मे धरती पर मरे हुए दो हिरण पडे थे, मन्त्री ने शिकारी से दोनो हिरणो के नेत्र माग लिए और घर चला आया। सुबह रानी के महलो मे पहुँच कर चारो नेत्र बताए। रानी प्रसन्न हुई और पूछा कि हसराज ने कुछ कहा तो नही ? मनरेसरी महता ने समय का लाभ लिया अपनी बुद्धि से काम लेकर कहा कि, "हसराज ने कहा कि उस वक्त मैंने भूल की रानी की बात मान लेता तो अच्छा होता।" रानी ने निशास डाल कर कहा, "जब मुह से ऐसा कहा तब मत्री जी तुम उसे बचा लेते और यहा ले आते, मैं चोरी छुपे उसे यहा रखती, मेरी बुद्धि फिर गई है।" यह कह वह विलाप करने और सिर पीटने लग गई। मन्त्री राजा के पास पहुँचा और दोनो कुवरो का घात कर देना विदित कर अपने घर चला आया।

दोनो कुवर वन जगल मे, बियावान, भयानक अटवी पहाडो मे होते हुए आगे बढ रहे हैं। भूखे और प्यासे सरदी गरमी को सहते हुए निर्जन जगलो मे भटकते हुए ऐसे अरण्य मे पहुचते हैं जहाँ मनुष्य न मनुष्य का जाया। कायर मनुष्य के तो वहाँ पहुचते ही प्राण निकल जावें। दरख्तो की

डालियाँ और पत्तो से सूर्य की रोशनी भी छिप गई थी। सिह और रीछ की आवाजें आ रही थी, विकराल भालु और ववर शेर की दहाड़ से वन गूंज रहा था। भयंकर काले नाग पास होकर निकल जाते थे। वे दोनों भाई वातें करते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे। जंगल पार करने पर हंसराज ने कहा कि मुझे प्यास लगी है वत्सराज ने कहा कि भाई तुम वट वृक्ष के नीचे आराम करो मैं पानी की तलाश मे जाता हू। हंसराज ने घोड़े को वृक्ष के साथ वांध दिया और स्वयं लेट गया। उधर वत्सराज चारो तरफ फिरता है कही जलाशय नजर नही आने से वह एक वृक्ष पर चढ़ता है और कुछ दूर पर एक सरोवर नजर आता है, वह सरोवर के पास जाकर कमल के पत्तो का दूना वनाकर जल भर कर ले आता है। उसने स्वयं ने अभी पानी नही पिया है पहले छोटे भाई को अपने हाथों से जल पिलाएगा उसकी प्यास वुझने पर जो जल वचेगा उसे वह आनन्द पूर्वक पीएगा। अतः हर्ष के मारे जल्दी जल्दी वह हंसराज के पास आ रहा है।

इधर क्या होता है कि प्यास के मारे हंसराज तड़प रहा है, घास को विछाकर वह दोनो हाथों का सिराना वनाकर सो जाता है, ठंडी ठंडी हवा के कारण उसे नीद आ जाती है कुछ देर वाद एक भयंकर नाग वट के मूल में से निकलता है और हंसराज को जगह जगह काट खाता है इतने मे वत्स-राज आ पहुंचता है और उसे देखकर सर्प अपने विल मे घुस जाता है। वत्सराज सर्प को देखता है और उसे शका होती

है, पास पहुचते ही वह देखता है कि हसराज का शरीर नीला पड गया है। पानी एक तरफ रख कर वह कल्पात करता है, तुरत पछाड खाकर धरती पर लौट पोट होकर विलाप करता है, हाय हमने जनमते ही दुख ही दुख देखा। हमारा जन्म जगल मे हुवा, १५ वर्ष परदेश मे भटके घर आए तो सौत माता ने लाछित किया और पिता ने मारने का हुकम दिया, मनकेसरी महता ने जीवन दान दिया तो यहाँ काले नाग ने हसराज को खालिया, मैं तो जानता था कि मेरे एक भाई है वह मेरा भुज है जगत मे मेरा मुकावला कौन कर सकता है जिसके ससार मे भाई मौजूद है उसके सब दुख नष्ट होते है भाई वाला सबसे अधिक बलवान और भाग्यशाली है पर विधि को यह मजूर न था। रोते २ उसके आसू खतम हो जाते हैं वह मन को मजबूत करता है कि जगल मे रोने से क्या होना है अब जो होना था सो हो गया मैं अकेला जिन्दगी भर भी यहाँ रोता रहू तो कुछ न होगा। उसने साहस से काम लिया भाई को कधे पर उठाया और सरोवर के पास वाले बट वृक्ष की ऊची डाल मे उसे कसकर बाध दिया और स्वय अपने घोडे पर बैठकर भाई के घोडे को पकडे हुए किसी नगरी की तलाश मे चला जहाँ एक घोडा बेच कर चदन लाएगा और भाई का दाह सस्कार करेगा। कुछ दूर जाने पर उसने बाजे गाजे की आवाज सुनी। आवाज की तरफ वह आगे बढता गया और कुती नगरी मे जा पहुचा। वह नगरी समुद्र की तरह बारह योजन तक फैली हुई थी। वत्सराज लोगो मे

नगरी और राजा का नाम पूछता है और चंदन खरीदने की तलाश में फिरता है।

इधर क्या होता है कि जहां हंसराज बंधा था उससे ऊपर की डाली पर गरुड़ पक्षी बैठा था उसके मुंह में से पानी सीधा हंसराज के शरीर पर गिरता है और हंसराज के शरीर का विष उसी क्षण उतर जाता है। उसकी आंख खुलती है और वह सोचता है कि मुझे यहां किसने बांध दिया वत्सराज कहां चला गया, मेरा घोड़ा कहां चला गया। यों विचारता हुवा वह अपने हाथ से अपने बंधन खोलता है, वृक्ष से नीचे उतरता है, ठंडा जल पीता है स्नान कर निर्मल बन जाता है और भाई की तलाश में इधर उधर भटकता है, रोता है, विलाप करता है कि अवश्य मेरे भाई को पानी लेने जाते समय कोई शेर खा गया है यों रोता हुवा भटकता हुवा वह एक वृक्ष के नीचे पहुँचता है और अचानक उसकी नजर एक तपस्वी पर पड़ती है। हंसराज को घर छोड़ने के बाद आज पहली बार एक मानवी के दर्शन हुए हैं। वह उसी मुनि को वंदना करता है और पूछता है कि मेरा भाई कहां गया होगा ? मुनि, तपस्वी और ज्ञानी थे। बोले, "तेरा भाई तेरे वास्ते चंदन लेने कुंती नगरी मे गया है छ महीने मे उसका तेरा मिलाप होगा।"

मुनि को वंदन करके हंसराज भाई की तलाश मे कुन्ती-नगरी की तरफ जाता है परन्तु भाई का कुछ भी पता नही लगता है। मार्ग चलते हुए एक कबाडी जिसका नाम केल्हण

है वह हंसराज से प्रेमपूर्वक परिचय पूछता है हंसराज अपनी सब घटना उसे वह सुनाता है मात्र अपना राजपुत्र होना छिपाता है। केल्हण प्रेम पूर्वक उसे कहता है कि मेरे पाच पुत्र हैं तुम छठे पुत्र आज से मेरे हुये आनन्द पूर्वक मेरे घर रहो। हंसराज उन पांचो भाइयो के साथ वन जगल मे जा कर लकडी काट कर पेट गुजारा करता है। छ भाइयो मे आपस मे खूब स्नेह बध गया। (जहा धन नही है वहा छ छ भाई साथ रह सकते हैं जहा धन है वहा स्वार्थ है, स्वार्थ के कारण छ छोड कर दो भाई भी साथ नही रह सकते हैं विधि की कैसी विचित्रता है।)

अब वच्छराज की बात सुनिए। वह चदन की तलाश करते हुए सुमण सेठ की दुकान पर जा पूछता है। सेठ ठाठ से बैठा है, आस पास बहुत ग्राहकों की भीड है दीखने मे बहुत सुन्दर है पेट खूब बडा है। कुवर को देखते ही सेठ खडा हो कर मान सम्मान देता है, गादी तकिए पर बैठाता है। कुवर को सतोष होता है कि परदेश मे मेरा कोई सहारा है तो यह सेठ है। सेठ पूछता है कि आपके साथ मात्र ये दो घोडे हैं और कोई नही है सो क्या कारण है? वच्छराज दुखी होकर हंसराज की मृत्यु होना और उसके लिए चदन लेने आने की बात प्रगट करता है। सेठ बहुत शोक प्रगट करता है, आश्वासन देता है और चदन तोलदेता है। वच्छराज ने इस सेठ को बहुत विश्वास पात्र माना और कहा कि मेरे इन दोनो घोडो तथा वारह रत्नो

पास धरोहर (अमानत-थापण) रखता हूँ, हंसराज की खबर लिया कर आने के पश्चात मैं वापस लेलूंगा । सुमण सेठ बहुत झुक कर उदासी पूर्वक सब सुनता है और रत्नों को संभालता है तथा घोड़ों को मकान मे बंधवा देता है ।

नमन नमन में फेर है, बहुत नमे नादान
दगल बाज दूना नमे चित्ता, चोर कमान ॥

वच्छराज चंदन का भार एक मजदूर के सिर धरा कर जंगल मे श्रवण सरोवर के पास जाता है, वटवृक्ष पर नजर डालता है तो भाई को नहीं देखता है अतः विलाप करता है कि मुरदा यहां से कहां गया, शेर चीते की तो यहां पहुँच नहीं थी, फिर वह गया कहा । नीचे उतर कर चारों तरफ पैरो के निशान देखता है और प्रसन्नता होती है कि वह अवश्य जीवित हो गया है और मेरी तलाश में निकला है । वच्छराज वापस सुमण सेठ के यहा पहुँच जाता है और सेठ को चदन वापस दे कर उससे अपने घोड़े और बारह रत्न मागता है । सेठ की बुद्धि फिर जाती है, कब्जे मे आये हुए घोड़ो और रत्नो को वापस लौटाना वह मूर्खता मानता है । शास्त्र कार धन को अनर्थ का मूल बताते है । धन के कारण मनुष्य युद्ध करते है । धन के लिए मनुष्य सेवक बन कर चौकी पहरा करते है । धन के लोभ मे ही झूठ बोला जाता है, व्यापार किया जाता है खेती की जाती है, और यहां तक कि धन के लिए भाई को भाई नही गिना जाता, भाई का घात तक

किया जाता है। सेठ भी लोभ मे फस गया है अत वच्छराज को फसाने का उपाय सोच लेता है।

मकान में जहा घोडे बधे थे वच्छराज को उन्हे खोल कर लाने कहता को सेठ है। वच्छराज दोनों घोडों को खोलता है एक पर सवारी करना है और जैसे ही दूसरे की लगाम पकड कर चलने को तैयार होता है सेठ चिल्लाता है, "दौडो रे दौडो, चोर रे चोर, मेरे घोडे चुरा कर कोई ले जाता है।" लोग बहुत से आ जाते हैं सिपाही व कोतवाल भी आ जाते है और वच्छराज को बाध कर घसीटते हुए, मारते हुए राजा के पास ले जाते हैं।

कर्म की गति विचित्र है, कर्म बलवान है वह किसी को नही छोडता है। नलका भटकना, मु जका भिखारी बनना, चक्रवर्ती राजा सुभूम का समुद्र में डूबना, राम का वनवास, पाडवो का कष्ट, सीता का अग्नि प्रवेश, द्रोपदी का चीर हरण यह सब कर्मों का खेल है। बिचारे हसराज वच्छराज भी कर्मों की मार मे दुखी है। आज दोनो कुन्ती नगरी में हैं एक तो लकडी काटता है दूसरा चोर बना कर राजा के यहा ले जाया जा रहा है। बिचारी जन्म देने वाली मा को क्या पता है कि उसके लाडलो पुत्रो के जिन का मुह भी नही देखा है क्या हाल हो रहे हैं।

कोतवाल ने चोर को राजा के सामने खडा किया सेठ ने कहा कि हजूर मेरे दो घोडे चुरा कर यह ले जा रहा था यह तो ठीक हुआ कि मैंने हल्ला गुल्ला किया और कोतवाल

साहब आ गए, नहीं तो मैं लुट जाता। अन्य लोगों ने राजा से कहा कि यह चोर नहीं दीखता है, कोई बिचारा परदेशी भोला नर है इसका दोष नहीं है। सेठ ने राजा से कहा कि यदि आप इसे छोड़ देंगे तो यह शेर पर जमा देगा नगरी में चोर बहुत बढ़ जायेंगे अतः इसे जब तक आप मरवा नहीं देते मैं अन्न जल नहीं लूंगा। राजा सेठ का पक्ष लेता है और कोतवाल को कहता है कि इसे कड़ी सजा कर मरवा दो, सेठ को नाराज नहीं करना है। (धन्य है लक्ष्मीदेवी तेरे आगे न्याय भी पानी भरता है, राजा भी जांच नहीं करता है तभी तो तेरे स्वामी धनाढ्य कहलाते हैं।) कोतवाल ने वच्छराज को गधे पर बिठाया है, सिर पर (टूटा बर्तन) का ठीकरा रखा है और मुंह काला किया है। परदेश में उसका कोई था नहीं कौन रक्षा करे। वच्छराज मन मे सोचता है कि सब कर्मराज के काम हैं जिन्हे सहने ही पड़ेगे, जो बीतता है वह भुगते जाओ। मन में वह नवकार का जाप कर रहा है। भीड़ भाड़ के साथ गधे पर बैठा हुवा वच्छराज स्मशान की ओर ले जाया जा रहा है मार्ग मे कोतवाल का घर आता है उसकी पत्नि ने भी वच्छराज को देखा। उसे देखते ही दया आती है और मन मे सोचती है कि यह निर्दोष है इसे बचाना चाहिए वह कोतवाल को बुलाती है और कहती है कि इसे बचालो यह निर्दोष है। यह पुरुषरत्न है फिर बालक है, क्यो बाल हत्या सिर लेते हो, अपने सतान नही है इसे बेटा करके रखलो।" कोतवाल के बात समझ मे आ जाती है अतः स्मशान में जाते २ भीड़ को डराधमका

कर दूर भगा देता है और एकात मिलने पर गधे को छोड देता है और एक चादर ओढाकर गुप्त रूप से वच्छराज को अपने घर ला कर पुत्रवत पालन करता है। शास्त्रकार फरमाते है, "धर्मो रक्षति रक्षित अर्थात् जो धम की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है।"

मुमण सेठ के लोभ का पार नही है। अटूट सम्पत्ति पास मे है फिर भी विदेश कमाने के लिए अपने पुत्र पुष्पदत को तैयार करता है और १८ जहाज विविध वस्तुओ से भरकर सजाता है। मुहूर्त के दिन जहाजो को हकाता है पर जहाज टस से मस नही होते है। सेठ माहण ज्योतिषी को बुलाता है ज्योतिषी कहता है कि तुमने किसी की अमानत मे खयानत की है, धरोहर दबाई है उस पाप से जहाज आगे नही बढेगे। सेठ को वच्छराज वाली बात याद आती है। नगर मे यह चर्चा भी फैली हुई थी कि सेठ ने भूठा अपराध लगा कर जिस चोर को मृत्यु दड दिलाया था वह तो कोतवाल के घर पुत्र बन कर रह रहा है। मुमण सेठ ने गुप्त तलाश की तो बात सच्ची निकली अत सेठ राजा के पास बहुत सा धन लेकर जाता है और राजा से कोतवाल का पुत्र मागता है कि वह मेरे पुत्र का दास बन कर विदेश जाएगा उसे मैं बहुत द्रव्य दू गा। राजा ने कोतवाल को बुलाकर वच्छराज को मुमण के सुपुर्द किया, सेठ उसे लेकर जहाजो के पास आया। वच्छराज को जहाज मे बिठाया और सेठ ने अपने पुत्र को कहा कि "काम पूरा करना।" लडका इशारे मे समझ गया कि वच्छराज की हत्या करना है।

पुष्पदन्त के जहाज चलते चलते कनकावती द्वीप-नगरी के समीप जा पहुंचे उस ने, बहुत सी भेंट लेकर राजा से मुलाकात की। राजा प्रसन्न हुवा और नगरी में व्यापार करने की आज्ञा दी। वच्छराज को घोड़ों का चरवादार स्थापित किया जो बिना जीण पलाण के घोडों पर बैठ कर उन्हें पानी पिलाने जाता है। उसे कंबल का टुकड़ा पहनने को मिला है लूखा सूखा खाने को मिलता है फिर भी वह घोडों को पवन वेग से दौडाता है।

रत्नों की कीमत जोहरी कर सकता है। राजा कनक भ्रम की अति सुन्दर पुत्री चित्रलेखा हमेशा वच्छराज को घोड़े पर बैठकर आते जाते देखती है और उसके बत्तीस लक्षणों वाले शरीर पर विशाल भुजदण्ड और वक्ष स्थल की रोमराजी पर आकर्षित हो जाती है कि जिसके पूरे पुण्य हों उसे यह पति प्राप्त होगा। कुंवरी ने मदनरेखा नामा अपनी दासी को वच्छराज के पास भेजा और कहलाया कि मैं तुम्हारी स्त्री हूं अतः मेरी आशा पूर्ण करो। चकोर को चन्द्रमा की तरह तुम मुझे प्यारे हो यदि तुम मुझे स्वीकार नही करोगे तो मैं प्राण दे दूंगी। कुंवर ने कुंवरी की बात स्वीकार करली और दासी वापस चली गई।

मदन रेखा ने राजा से अर्ज की कि अब बाई साहब के विवाह के लिए स्वयवर मडप की तैयारी करावें। राजा ने देश विदेश के राजाओ के पास दूत भेज दिए। ठीक समय पर सब राजा महाराजा आ गए, महाण गुरुजी के बताए

निश्चित मुहूर्त के दिन स्वयवर रचा गया। मब राजा अपने २ स्थान पर आ वैठे । पुष्पदन्त भी वछराज को लेकर स्वयवर मण्डप मे सजधज कर आ वैठा।

वाजे वज रहे है ढोल निशाने गुडक रहे हैं। कु वरी सजधज कर दासी के हाथ मे काच लिए निकलती है। प्रत्येक राजा का नाम, नगरी और गुण सुनती हुई आगे वढती जा रही है। वढते २ पुष्पदन्त के समीप जा पहुचती है सेठ को खशी का ठिकाना नही रहा कि मैं पुण्यात्मा हू कुवरी मुझे वरेगी पर कु वरी ने जव वच्छराज के गले मे वर माला डाली तो वह शर्मिदा हो गया। मब राजा कन्या की निंदा करते हैं। कनक भ्रम राजा भी पुत्री को उलाहना देता है कि सब उत्तम राजाओ को छोडकर तूने चाकर के गले मे वर माला क्यो डाली। आमन्त्रित राजा सव क्रोधित होते हैं और वच्छराज को कहते हैं कि यदि जीवन की आशा हो तो माला निकाल कर हमे दे दे। वच्छराज सव को कहते हैं कि तुम सव क्यो क्रोध करते हो वधु जिसके लिखी उसे मिली इसमे अपने कर्मों को दोष दो। कुवरी सवको कहती हैं कि आप सव क्यो विवाद करते है मेरे मनमे तो ये ही वसे है आप से मेरा कुछ काम नही है। सव लोग कु वरी की निंदा करते हुए अपने २ स्थान पर चले जाते हैं। राजा अपनी पुत्री से कहते है कि, "वेटी तू चतुर है कहा तो कल्पवृक्ष कहाँ आकडा धतुरा, कहा सूरज चांद कहाँ जुगनु, कहा अरट का साल भर चल कर पानी भरना कहाँ क्षण मे वादलो की वारिश ? पास मे अति सुदर सेठ वैठा था उसे ही वर लेती। यह तूने जगहाँमी जैसा काम किया है। राजा सठ से पूछने

है यह कौन नर है ?" पुष्पदन्त कहता है यह मेरा चरवादार है। राजा उसकी जाति तथा वंश पूछने है तो सेठ कहता है, इसका रूप सुन्दर है तो भी मै तो इसे अपने से दूर रखता हूँ मुझे भी इस की जाति के बारे मे शंका है।

राजा कुंवरी से कहता है, "हे कुललंछनी तू ने अपना शरीर विटाला है अब मैं तेरा मुह भी नही देखना चाहता हूँ तू मेरे काम की नही है। तूने मेरी नाक मे हंसी कराई है तूने निन्दा का काम किया है तू मेरे लिए मरी समान है। नगर से दूर जा कर एक तरफ घर मांट कर रह।" पिता की बात सुन कर कुवरी पति से कहती है कि हे स्वामी नाथ यदि पिता के वचन को नही मानेगे तो क्रोध मे यह घात करा सकते है अतः हम गाव के बाहर जा कर बसे। वे दोनो जने नगरी के बाहर अछूतों की तरह जा बसते है जहां रानी हमेशा चंद्रलेखा दासी के द्वारा अन्न जल वस्त्र आदि गुप्त रूप से भेजती रहती है।

वच्छराज मन मे प्रभु का ध्यान धरता है और पत्नि से कहता है कि, "हे सुवदना, मेरे पापो के उदय के कारण तुम्हे भी दुःख सहना पड रहा है, राजा के क्रोध का पात्र बनना पडा है अतः तुम मेरा साथ छोड़ दो मेरा सुन्दर रूप देख कर तुम छली गई हो अतः महलो मे चली जाओ। मैं परदेशी हूँ, राक हूं, असहाय हूं सेठ का नौकर हूं, फिर क्या सोच कर तुमने काग के गले मे हंस को बाधा है। मेरा संग छोड़ने से तुम्हारे माता पिता प्रसन्न हो जायेंगे। पराये के

लिए तुम कष्ट क्यो सहती हो अव भी समय है।" कुवरी कहती है, "हे स्वामी नाथ मैंने समझ बूझ कर सब काम किया है माता-पिता तो हे ही पर मेरे तो एक आप ही प्राणधार हैं। यदि सूर्य पश्चिम मे उगने लग जाय, पृथ्वी रसातल मे चली जाय, समुद्र मर्यादा छोड दे तो भी में आप को नही छोड सकती हूँ। शरीर की छाया की तरह आपके साथ रहूँगी।" वच्छराज ने सोचा कि इसका मेरे प्रति पूर्ण प्रेम है ऐसी पत्नि पूव पुण्य से ही प्राप्त होती है। यो दोनो पति पत्नि आनन्द पूर्वक रह रहे है।

राजा के मन मे वात उठती है कि लोग मेरी निंदा करते है चाहे कुछ भी हो जवाई को तो चालाकी से मरवाना ही ठीक है, कुवरी रो धोकर आजीवन बैठी रहेगी। अत राजा ने चार मल्लो को बुलाकर समझा दिया कि जवाई की इस तरह मालिश करो कि उसके अग अग ढीले पड जाये और फिर नस निकाल देना ताकि कुछ दिनो मे वह मर जाय। चारो मल्ल वच्छराज की झोपडी मे पहुँचते हं और कहते हे कि राजा ने आप की सेवा के लिए मालिश के लिए हमे भेजा है। वच्छराज उनसे मालिश करवाता है। कुवरी ने चारो का रग ढग देख कर पति से कहा कि इनके मन मे कपट है ये जरूर आप का घात करने आए हैं। वच्छराज ने कहा कि तुम चिंता न करो। जैसे ही वे चारो अपना दाव बताने लगे वच्छराज ने उन्हे पकडकर ऐसे रगडा कि दो की तो नसें ढीली हो गई वे तडफने लग गए और दो भागकर राजा के पास पहुँच गए ॱ अव हाल राजा से वह सुनाया।

राजा ने सोचा मेरी यह तरकीब तो बेकार गई खैर कुछ और उपाय करूंगा। कुछ दिन बाद राजा ने एक बहुत बड़ा घोड़ा पुष्पदंत के पास भेज कर कहलाया कि वह वच्छराज को शिकार करने के बहाने नगर से बाहर लेकर आवे। राजा ने वच्छराज को बहुत आदर दिया सन्मान से पास बिठाया और शिकार को चलने की बात कही। राजा और पुष्पदंत अपने अपने घोड़े पर बैठ गए। वच्छराज को उस बड़े तेज तर्राट घोडे पर बैठने को कहा। वच्छराज ने घोडे को देखते ही समझ लिया कि मुझे मारने का यह दूसरा प्रयत्न है। कुवर तो भगवान का नाम लेकर घोड़े पर सवार हो गया, घोड़ा चारों पैरो से उछला लोग हैरान हो रहे हैं, घबरा रहे है कि कुवर अब गिरा अब गिरा और अब मरा। कुंवरी भी देख देखकर शोक कर रही है इतने मे वच्छराज ने घोडे को पूर्णरूप से अपने वश मे कर लिया है खूब घुमाफिरा कर वह घोड़े से नीचे उतर जाता है। घोड़ा शात खड़ा रहता है। राजा सोचता है कि जो भी मैं उपाय करता हूँ सब झूठे पड़ते है खैर। राजा अपने महल मे जाता है वच्छराज अपनी झोपडी मे जाता है। शाति मिलने पर राजा सोचता है कि यह मनुष्य अधम नहीं हो सकता है इसके सब लक्षण महान है यह देव जैसा दीखता है अतः अपने मंत्री को बुला कर चित्रलेखा कुवरी के पास भेजकर जवाई का परिचय पुछाता है। कुवरी पति से आदर पूर्वक कहती है, "आपके कामो से राजा प्रसन्न है वे आप का नाम ठाम और कुल-वश जानना चाहते है। मै आजीवन आपकी हूँ सुख मे दु:ख मे

जीवन मे मरण मे आपके साथ हूँ दो शरीर एक प्राण हमारे हैं। आपके लिए मैंने माता पिता तक का वियोग सहन किया है, अपने दु खो का पार नही है कृपा कर आप अपना परिचय दीजिए उसके बाद ही मैं भोजन करूँगी वरना आत्महत्याकर मर जाऊँगी।" वच्छराज को यह सुनकर पिछले सब दु ख याद आ गए, माता व भाई की याद सताने लग गई और आंखो से आसू बहने लग गए। कुवरी यह देखकर पछताती है कि मैंने यह बात क्यो पूछी, ज्यादा खेंचने से डोरी टूट जाती है अब मौन रहना ठीक है। कुछ देर बाद कुवर के चरणो पर हाथ रखकर कहती है, "हे प्राण वल्लभ मैंने आपको दु ख दिया, आप रोना बन्द करें, कायर न होवें मैंने तो एकात देख कर सुख दुख की बात निकाली है। कुवर कहता है, तुमने पिछली बात पूछी है तो सुनो, "मैं पैठनपुर का निवासी हूँ राजा नरवाहन मेरे पिता हैं। यादव वश में उत्पन्न हुए हम हसावली राणी के दो पुत्र हैं। मेरा नाम वच्छराज है छोटे भाई का नाम हसराज है। पन्द्रह वर्ष की उम्र तक हम विदेश रहे। फिर भी केवल पिता के दर्शन मिले परतु अपर माता के कपट के कारण हमें मौत की सजा मिली। भाग्यवश मनकेसरी महता ने जीवनदान देकर हमे विदेश घूमने निकाल दिया था। जगलो पहाडो म भटकते हुए हम दोनो आगे बढ रहे थे कि हसराज को प्यास लगी। मैं पानी की तलाश में गया पीछे से हसराज को साप ने काट लिया उसे वट वृक्ष के साथ बाध कर मैं चदन की लकडी ले [illegible] न्नोनगरी में

पहुँचा। वहा भाई को न देख कर मुझे उसके पैरों के निशान नजर आए और उसके जीवित रहने की आशा बंधी। मै वापस कुतानगरी मे आया और इस पुष्पदंत के पिता मम्मण सेठ के यहा अमानत रखे हुए अपने दोनों घोडे और बारह रत्न वापस मागे। सेठ ने कपट से मुझे चोर साबित किया, राजा ने मृत्यु दण्ड दिया परन्तु कोतवाल ने मुझे जीवित रख अपना पुत्र बना कर रखा। कर्मों ने वहाँ आराम से न रहने दिया और इस पुष्पदंत के साथ यहां भेज दिया। यहा आकर तुम से विवाह हुआ यही मेरा वृतात है।"

चित्र लेखा ने मंत्री द्वारा सब वृतात अपने पिताजी को कहला दिया। राजा बहुत ही प्रसन्न हुए कि ये दोनों कुवर तो जग विख्यात है। पुष्पदन्त को पकड़ बुलाया और कोतवाल को आज्ञा दी कि इसका सब धन लूट कर इसे मार डालो। वच्छराजने अर्ज की कि यह मेरे दु:ख का साथी है अत: मेरे भाई के समान है इसे छोड दीजिए। राजा विचारते है, कि उपकारी पर उपकार तो जगत मे सब करते है पर अपकारी पर उपकार तो उत्तम जन ही कर सकते है यही श्रेष्ठ आचार है। राजा के हर्ष का पार न रहा, पूरे परिवार मे खुशी छा गई कि कुंवरी भूली नही है उसकी उत्तम परख है जिससे ऐसा अच्छा पति उसने स्वय वरा है।

पूरी नगरी को शणगारी गई। चारो तरफ उत्सव मनाए जाने लगे और बाजे गाजे से कुवरी व जंवाई को नगर मे प्रवेश कराया गया। सब लोग कुंवरी के भाग्य की सराहना कर रहे है कि विधाता ने ऐसा स्वरूपवान नर इसी के लिए घड़ा

था। यो वच्छराज सुख वहा पूर्वक रह रहा है पर हसराज को याद सता रही है। कुती नगरी कहा और यह कनकावती नगरी कहा, दोनो के बीच मे भारी समुद्र फैला हुआ है हाय भाई से कब मिलना होगा।

इधर पुप्पदत राजा मे निवेदन करता है कि मुझे सीख देवें मैं कुतीनगरी को जाना चाहता हूँ। वच्छराज भी पास ही बैठा था वह भी राजा से सीख मागता है। राजा कहते है कि तुम जाने का नाम मत लो। मेरा सारा राज्य तुम्हे दे दूगा यही आनन्द से रहो। वच्छराज कहता है कि मैं हसराज से मिलने के लिए छटपटा रहा हूँ आप कुवरी को यही रखें मैं मिल कर वापस आ जाऊगा। कुवरी यह जान कर कहती है कि यह नारी की रीति नही है जहा वृक्ष वही छाया मैं आपके बिना जिन्दा नही रह सकूगी। अत मे राजा ने सब को सीख दी। शुभ मुहूर्त में सबने प्रयाण किया। पुप्पदत कुवरी को देख कर मोहित हो जाता है और उसे पाने का उपाय सोचता है कि किसी तरह से वच्छराज को समुद्र में धक्का देदूगा, यह अकेला है परदेशी है इसे कोई पहचानता नही है। यो सोच कर वह वच्छराज से विशेष प्रीति रखता है खूब धुल मिल कर हस-हस कर बातें चीते कर प्रेम प्रगट करता है अत कुवरी के मन में दावा उत्पन्न होती है और वह सदा चिंतित रहती है।

पुप्पदत ने वच्छराज को पानी मे धकेलने के लिए सब मल्लाहों को लोभ देकर राजी कर लिया। जहाज को वहते २

लगातार पाँच दिन व पाच रात बीत गई है सब लोग प्रेम पूर्वक बाते चीते करते आनन्दपूर्वक आगे बढ रहे है। छट्टे दिन रात जब तीन घंटा बीत चुकी थी पुष्पदंत ने वच्छराज को अपने पास बुलाया कि देखो देखो यह विचित्र मच्छ जा रहा है। आओ जल्दी आओ। वच्छराज जैसे ही मच्छ को देखने के लिए समुद्र में झाँकता है पुष्पदन्त ने पोछे से धक्का दे दिया। गिरते हुए भी वच्छराज नवकार मत्र गिनता है और एक मगरमच्छ की पीठ पर जा गिरता है। पुण्य के प्रभाव से मगरमच्छ वहाँ से रवाना हो जाता है।

पानी मे कुछ गिरने की आवाज से चित्रलेखा चौक उठती है पास मे वच्छराज को न देख कर घबराती है और रोने लगती है। आस पास देखने और पूछने पर भी जब वच्छराज का कही पता नही लगता है तब वह विलाप करती है कि "हाय अब मै अकेली क्या करूंगी तुम मुझे छोड़ कर कहां चले गए, मैं जन्मते ही क्यों न मर गई, हे पति मेरे लिए तो संसार मे तुम्ही सार हो, मेरा जीवन कैसे बीतेगा, तुम्हारे बिना जीना धिक्कार है धिक्कार है, तुमसे पहले मैं क्यो न मर गई। हाय निर्दय हृदय तू क्यो नही फट जाता है, मेरा प्राणनाथ कहा गया। जरूर मैने पिछले भव मे पाप किए है, मैने शोक को शाप दिया होगा, पुत्र मरने की गाल दी होगी, पुत्र के सौगन दिए होगे, या किसी के लिए बुरे जाप जपे होगे, या दूसरे की अमानत हड़प की होगी या बंधी हुई पाल तोड़ी होगी, या खेलने के लिए वृक्ष की डाले तोड़ी होगी, या गर्भ गिराया होगा या दवाई के द्वारा किसी का

गर्भ स्थपित कराया होगा, कच्चे फल तोडे होगे, जीभ के स्वाद के लिए नरम ककडी के आरे, कोमल इमली, भुट्टे आदि तोडे हागे, या सुस्ती के कारण बिना छाना पानी काम मे लिया होगा, किसी को झूटा कलक दिया होगा, किसी की सुनी सुनाई बात पर कुटुब मे क्लेश किया होगा, स्नेही का वियोग कराया होगा, पक्षी के घोसले तोडे होगे, उनके अडे फोडे होगे, दूसरो के धन माल की चोरी की होगी, पशु पक्षी को पिंजडे मे बन्द किया होगा, या घास जलाया होगा, लोभ और लाभ के लिए तिल या सरसु की घाणी कराई होगी, जगल जलाए होगे, पृथ्वी का पेट चीरा होगा, खेती की होगी, जू या लीक मारी होगी, दान देते समय किसी को गाली दे कर क्रोध मे कुछ कह दिया होगा, या अगुलियो से कडीके मोडे होगे। खराब जतर मतर से किसी का गर्भ बधाया होगा या कामण टूमण टोटका कराया होगा शोक को दुःख दिया होगा, किसी का धन उधार लेकर वापस न देते हुए उसके उसकी आत्मा के श्राप सहे होगे, माता से बालक का वियोग कराया होगा, बिल्ली कुत्ते या चूहे के बच्चो का घर छुडाया होगा, या किसी को लूटा होगा , या किसी का घर तोडा होगा या किसी को अधा पागला लूला होने की गाली दी होगी, साधु मुनिराज की निंदा की होगी, उनके आहार पानी मे अतराय की होगी, मैंने अनेक तरह के पाप पिछले भव मे किए होगे तभी तो मेरा प्राण प्यारा पति मुझे मझधार मे अकेली छोड कर कही चला गया है।" इस तरह बार बार वह रोती है जमीन पर लोट पोट होती है पछाड खाती

है और कहती है कि इस जीवन से मरना अच्छा है मैं आत्म-घात करूंगी। उसकी सखिये भानुमती और सरस्वती उसे धीरज देती है और कहती है कि तुम धीरज रखो रोवो मत, उत्तम रीति से शील पालने से सब अच्छा होता है, सब कामना पूरी होती है। शील पालने से अंत मे सीता सती की विजय होती है, वह रावण के पंजे में से निकलती है, अग्नि परीक्षा में भस्म नही होती है, पद्मावती के पति ने भी अपनी अकेली रखी हुई स्त्री के पद् चिन्हों को सिंहलद्वीप में पहचान कर उसे प्राप्त किया, नल दमयंति का भी बारह वर्ष मे मिलाप हुवा, अंजना को पवनजी का भी वर्षों बाद सुख प्राप्त हुआ, शख राजा ने कलावती के दोनों हाथ कटवा दिए थे फिर भी शील के प्रभाव से उनका मिलाप हुवा और हाथ फिर से आगए थे। जीते जी की सब आशा है, पुण्य के प्रभाव से सब अच्छा होता है, अतः हे सखी तुम भी मन को दृढ करो अवश्य वच्छराज का तुमसे मिलाप होगा।

चित्रलेखा के संताप का कुछ भी पार नही है वह समुद्र देव से विनती करती है, कि "हे जलधि तुम मेरे पति की रक्षा करना, उन्हे शरण देना, मै भी मरने की इच्छा से तुम्हारी गोद मे आती हूँ।" यह सुन कर रत्नाकर कहता है, "हे बहिन तू मत गिर, मत कूद, वच्छराज सुरक्षित है, पानी मे गिरते ही वह तो एक मगरमच्छ की पीठ पर बैठकर कुंती नगर की तरफ जा रहा है और तुम से पहले वहाँ पहुंच जाएगा। वहाँ तुम्हे वह मिलेगा और सब प्रकार का आनन्द मंगल होगा।" इस प्रकार की आकाशवाणी रत्नाकर

समुद्र की सुनकर चित्रलेखा प्रसन्न होती है कि अब मुझे मरने की जरूरत नही है। जब तक मेरा पति मुझ से नही मिलता है तब तक सौदर्य वृद्धि के लिए मैं स्नान नही करूँगी। निरस भोजन करूँगी, नयी साडी धारण नही करूँगी। कुछ देर बाद सेठ उसके पास आता है और कहता है, "हे सुभद्र तू मन दृढ कर, मुझे पता नही था कि वच्छराज समुद्र मे गिर गया है, खैर जो विधाता ने छट्ठी रात को लेख लिखा है उसे कौन टाल सकता है अब अफसोस करने से क्या होता है। जो होना था सो गया, अब मरने वाले से तो तेरा दुःख मिट नही सकता है, मैं भी तेरा दास हू जो चाहेगी वह लाकर दूगा, आजीवन तुझे सिर पर रखू गा, तू मेरी स्वामिनी बनी रहना। अब तू मुझ पर प्रेम नजर से देख, मेरा जैसा मनोहर पुरुष और तुझे कोई नही मिलेगा।" चित्रलेखा यह सब सुनकर निश्चय करती है कि अवश्य ही इसी ने मेरे पति को समुद्र मे डाला है। जिसने मेरे पति का घात किया है उससे भला मन कैसे मिल सकता है। पानी मे पति को फेंक कर अब यह मेरा पति बनना चाहता है, ओह अब शील किस तरह से रख सकू गी, इस जहाज मे सब इसी के नौकर हैं यदि मैं ज्यादा खीचती हू तो बात बिगड सकती है इसलिए मैं भी मधुर वचन से काम लू गी अत वह पुष्पदन्त से कहती है, "मेरा तो तुमसे स्नेह पति की मौजूदगी मे ही था, आज मेरी मन की अभिलाषा पूरी हुई है परन्तु बात ऐसी है कि तुरत दूसरा पति नही करना चाहिए यदि ऐसा किया जाता है तो वह प्रेत बनकर पीडा देता है इसलिए तुम छ महीने

तक धीरज रखो वाद जैसा कहोगे वैसा करूँगी, जहाँ तुम्हारा घर है वही रहूंगी और शुभ मुहूर्त आने पर सब ठीक करेगे।" सेठ ने यह बात मान ली और धीरज मन मे धारण की। पुष्पदन्त की खुशी का ठिकाना नही है जितना सफेद है वह सब दूध है ऐसी उसकी मान्यता हो गई। वह मानता है कि मेरा काम अब वन गया है।

इधर वच्छराज ने पानी मे गिरते ही नवपद का ध्यान शुरू किया था जिसके प्रभाव से उसे जीवनदान मिला। मगरमच्छ की पीठ पर सवारी करके देव-प्रेरित मार्ग से वह सात दिन तक लगातार जल मे वहता हुवा कुंती नगरी के किनारे आ पहुंचता है और एक वृक्ष की छाया मे जा वैठता है। कुछ विश्राम के पश्चात स्नान कर ठंडा जल पीता है और शाति से वैठ कर विचार करता है कि मेरी स्त्री का क्या हाल हुवा होगा उस अकेली अवला का वहा सगा सवंधी हितैपी कोई नही है हाय, कर्मराज तूने वियोग कराया पर रोने से क्या होता है जो लेख लिखा है वही होगा। थकावट के मारे उसे नीद सताती है और वह एक वाग मे जाकर वृक्ष के नीचे सो जाता है।

वह वाग कई वर्षो से उजडा हुआ था। सव वृक्ष, वेलि सूख गए थे इस पुण्यशाली के वहाँ पैर धरते ही सारा का सारा वाग हरा हो गया, सव वृक्षो के फूल और फल लग गए। राहगीर यह सव देखकर अचरज करते है और उस वाग की स्वामिनी सलखु मालण से जा कर यह वात कहते है कि

तुम्हारा बाग अचानक हरा भरा हो गया है। सलखु के पैर जमीन पर नही टिकते हैं वह जल्दी २ आकर बाग की शोभा देखती देखती वहा पहुचती है जहा वच्छराज सो रहा है। पैर मे पद्म का निशान और चहरे की मनोहर आकृति देख कर उसे विस्मय होता है कि यह कोई देव पुरुष है इसी के पुण्य से बाग नव पल्लवित हुवा है इसे मैं खूब आदर भाव दू गी।

मालण कु वर के पास आती है उसके पैर सहलाती है और जबरन वच्छराज को जगाती है। जागते ही वच्छराज आलस मरोड कर बैठा होता है और मालण को प्रणाम करता है। मालण आशीष देकर कहती है कि तू मेरे पुण्य भाग से यहा आया है। कई फल फूल लाकर कु वर के सामने भेंट करती है और बात पूछती है, 'हे कु वर तू बहुत ही सुकुमार और सुन्दर है पर अकेला कैसे है तेरे साथ कोई नही है सो क्या बात है।" कु वर जवाब देता है, "कर्म के प्रताप से मैं अकेला हूं, निराधार हूं मन की बात मैं किससे कहूँ हे माता! किरतार सब जानता है, मैं परदेश जाने को निकला हूँ इसीलिए इस बाग मे आकर ठहरा था, नीद आने से सो गया और अब तुम्हारा दर्शन होने से मेरा दु ख मिट गया है। दु खी को देखकर दु ख याद आता है, दुखिया मालण भी दहाड मार कर रोती है। कु वर सतोष देकर पूछता है कि ऐसा तुम्हे क्या दु ख है जिससे इतना रोती हो। मालण आखो के आंसू पोछती हुई कहती है कि मैं इस नगरो

में प्रसिद्ध हूँ मेरे पाच पुत्र थे और छठा पति था पर कर्म संयोग से सभी मर गए कोई पानी देने वाला भी नही रहा। हे कुंवर तुम मेरे घर चलो तुम्हें बेटा बनाकर रखूंगी। मेरे पास बहुत संपत्ति है वह सब आज से तुम्हारी है। कुंवर ने बात मान ली इसलिए सलखु उसे बेटा बनाकर घर ले आती है और घर का सब भार तौर उसे सौंपती है।

कुंवर भी घर की रीत के अनुसार फूलों की माला गूँथता है, तरह तरह के गुलदस्ते बनाता है, गजरे बनाता है, बहुत सुन्दर पुष्पहारो का व्यापार करता है। काम में मन लगाने मे पत्नी की याद को भुलाता है, दिन यों बीत जाता है पर रात बैरन हो जाती है, नीद नही आती है और तरह २ के संकल्प विकल्प वह करता है। कभी २ जंगल मे जाकर जोर जोर से रोता चिल्लाता है, पत्नी के विना वह हर दम बैचेन रहता है। मजबूरी से मन को दृढ़ करके ज्यों त्यो मालण के घर दिन बिता रहा है।

पुष्पदंत का जहाज अनुकूल हवा के कारण रात दिन बहता हुवा कुती नगरी के समीप पहुँच जाता है। सब लोग जहाज से उतरते है। सेठ भी जहाज से उतर कर नगरी के वाहर डेरा ड़ाल देता है। नगर में से उसके पिता ममण सेठ वहुत से साहुकारो के साथ उसे गाजे वाजे से वधाते है और उसका नगर प्रवेश धूम-धाम से कराते है। नगर के सव लोग पुष्पदंत के भाग्य की सराहना करते हैं कि इसने जिस स्त्री से विवाह किया है वैसी सुदर स्त्री ससार में नही है यह वड़ा भाग्यवान है इसे धन्य है। यो अपने घर आकर

पुष्पदत्त चित्रलेखा के पास जाता है और कहता है कि अवतो मुझसे प्रेम से बोलो। चित्रलेखा कहती है तुम धीरज धरो धीरज से सब अच्छा होता है।

सलखुमालण भी पुष्पदत के घर फूलमाला देने गई थी, वापस आकर सब वृत्तात बच्छराज से कहती है कि पुष्पदत परदेश से घर आया है और एक अनुपम सुन्दरी को ब्याह कर लाया है। यह सुनकर वच्छराज के रोमरोम मे दीपक प्रकट होते हैं प्रसन्नता के मारे उसका हृदय कमल पूर्ण रूप से विकसित हो जाता है, पत्नी से मिलने की आशा ताजा हो जाती है। वह मालण से कहता है कि माता, मैं हमेशा जो फूलहार बनाकर दूगा वह पुष्पदत के घर स्त्री को भेंट करना। वच्छराज ने चित्र लेखा के शरीर जितना लम्बा-मनोहर हार बनाया मानो फूलो का कवच ही हो। दोनो तरफ बाजु बद और पैर भी फूलों के वस्त्र परिधान बनाए एव बहुत ही कलामय अपना नाम लिखा और कुशल क्षेम लिखा कि मैं इस नगरी मे आया हूँ। बच्छराज ने फूलो से डलिया भर दी और नीचे भेट भी रख दी। मालण डलिया ले जाकर पुष्पदत को भेंट करती है वह कहता है कि महलो मे लेजाकर भेंट करो। मालण अन्दर जाकर चित्रलेखा को वह डलिया अर्पण करती है और कहती है कि मैं ऐसी भट लाई हू जिसे देखते ही आप प्रसन्न हो जायगी। कुवरी कहती है हे माताजी आपका उपकार मानती हू आप मेरी सगी मा जैसी हो पर मेरे यह भेंट काम की नही है कारण कि मेरा पति शुद्ध नही है इसलिए पान फूल लेने का मेरे को सौगन है।

जव तक मेरे स्वामी नही मिलेंगे मैं स्नान तक नहीं करूंगी और नये वस्त्र भी नही पहनूगी इसलिए ये फूलहार काम के नही है आपको वहुत ही कष्ट हुवा। मालण ने ऊपर से फूल हटाकर वह फूलों का आभूपण वस्त्र वाहर निकाला और चित्रलेखा के सामने रखा। चित्रलेखा ने अपने पति का और अपना नाम पढ़ते ही, मन ही मन पति को प्रणाम किया उसका रोम-रोम विकसित हुआ और हार लेलिया। शांति और एकांत में वह पति की प्रेमपाती पढती है कि,

"स्वस्ति श्री कुती नगरी से लिखितं श्री वच्छराज। मैं कुशलक्षेम से आगया हूँ, अव जरा भी चिंता न करना। सलखु मालण के घर सदा उदासी से रहता हूँ मेरे मनकी सव वात परमेश्वर जानता है कहां तक प्रकट करूं। जवसे हमारा तुम्हारा वियोग हुवा है नींद हराम है, अन्न पाणी भी नही भाता है अव मेरा जीव संतोप में आया है। तुम्हारा हमारा मिलाप नदी नाव के संजोग से अकस्मात हुवा है तुम और हम समुद्र तक साथ थे, अव यहां है।"

कुंवरी ने पति का पत्र पढ़ा और अधिक मोह में उलझ-गई। वह प्रभु का उपकार मानती है कि तू दयालु है तूने मेरे कंत को जीता रखा है। जीते जी सव कोई आ मिलते हैं मरने पर कोई नही मिल सकता है। अफसोस मेरे पति ने मन में रीस रखी है। मैं समुद्र के कहने से जीवित क्यों रही, पति ने कितने ही उलाहने लिखे है पर मूलवात वह जानते

नही है । हे प्राणनाथ तुम्हारे कारण से मैं रात दिन रोती रहती थी, तुम्हारी याद मे मैंने सरस आहार का त्याग किया है, दैव भी जानता है कि स्नान विलेपन और नवीन वस्त्राभूपण तक मैंने छोड दिए हैं। सच्ची बात है कि विचारा घोडा दौड दौड कर मरता है पर असवार को कदर नही है। इसमे घोडे का दोप नही है बैठने वाला गवार है। हे पति तेरे कारण मै दुखिनी हुई और रात दिन विलाप करती रही, आसु ही आसु से हृदय को सीचती रही पर तूने प्यारे मेरी बात नही जानी। इस तरह पति के मार्मिक वचनो पर विचार करती हुई वह मूर्छित होगई, बारबार उठती है और धरती पर गिरजाती है हाय मेरे पति ने मेरी सभाल न ली। यह सब देख सुनकर मालण घबराई और डरके मारे कापने लगगई। कुवरी के ये रग ढग देख कर सब दास-दासी दौड आए और हगामा मचगया।

सब लोग इकट्ठे हो गए और सताप करने लगे। कोई कहता है कि यह बुढिया डाकण है कुवराणीजी को लग गई है यह छोड दे तो ही कुवराणीजी बच सकती है, इसको मार कूट कर बाहर निकालो। मालण बुरी फसी बिचारी कहती है कि पिछले कौनसे भव के मेरे पाप उदय मे आए जो यहां आ फसी। एक कहता है कि मालण की जात ऐसा काम नही करती है, कोई और भूत प्रेत लगा होगा उसीका यह छल है। कुछ देर बाद कुवरी चेत मे आती है और सबको दूर जाने को कहती है। एकात होने पर वह मालण से पूछती है कि ये

फूल किसने गूथे हैं सब सच-सच बताओ । मालण कहती है कि हे कुंवरी या मेरे बेटे ने यह हार बनाकर भेजा है इसमें जरा भी झूठ नही है। अनुमान से चित्रलेखा ने सब सोच-लिया कि सागर की बात सच्ची है यही मेरे पति हैं अब मेरी आशा फलने में देरी नही है। हे मेरे दिल के चोर तूने मेरा मनमोहित किया और मनने प्रीति को जगा लिया। तेरा नेह हाथी को रेवा नदी की तरह और चकोर को चांद की तरह है। मनको धीरज देकर वापस प्रेम पाती लिखी, "हे प्राण प्यारे मैं तेरी दासी हूँ, तेरे बिना रह नही सकती हूँ रात दिन छटपटाती हूँ, पर मेरा वश नही है, तेरे बिना मेरा इस संसार मे और कोई नही है। हे नाथ तेरे कारण से मैंने इस देह की संभाल तक छोड़ दी है, बे मन होकर निरस भोजन करती हुई लाचारी से यहां रह रही हूँ । संसार के अन्य पुरुष मेरे लिए भाई समान है इस भव का तू ही मेरा भरतार है। अच्छी तरह से शील की रक्षा करती हुई इस जगह आई हूँ"। इस प्रकार पान में संदेशा लिख कर नीचे अपना नाम और प्रणाम लिखा। पान की बीड़ी बनाकर मालण के हाथ दी और कहा कि यह पान बीड़ा अपने बेटे को देना। अपने हाथ की अंगूठी उतारकर और बहुत सी स्वर्ण मुद्रा मालण को देकर उसे विदा किया। यों राजी होती मुसकराती मालण आनन्द पूर्वक अपने घर आती है और पान बीडा बेटे के सामने धरती है। पान खोलकर प्रेमपाती बांच कर वच्छ-राज बहुत ही खुश होता है कि चित्रलेखा जैसी सती इस ससार मे नही है आज मेरे भाग्य का उदय है कि प्राण प्यारी

के हस्ताक्षरो के दर्शन हुए, यो आनन्द मे वह विभोर हो जाता है।

इधर जव कुन्ती नगरी मे वच्छराज को ले कर पुष्पदत जहाज कमाने को समुद्र पार जाता है तव पीछे से नगरी के राजा भद्र की मृत्यु हो जाती है। राजा के कोई सतान न थी अत नगरी अनाथ हो गई। प्राचीन काल के रिवाज के अनुसार सव नागरिक एकत्रित हो कर पच परमेष्ठी का नाम लेकर एक हाथी की पूजा करते ह और हाथी मगल कलश लेकर पूरी नगरी मे घूमता है, सव लोग गाजे वाजे के साथ उसके पीछे पीछे चलते ह। हाथी जिस पुरुष के सिर पर वह कलश सींचता है वही पुरुष नगरी का राजा माना जाता है। हाथी घूमता घूमता केल्हण कवाडी के मकान के पास आता हैं घर मे से सव वाहर निकलते हैं। हसराज को देखते ही हाथी मगल कलश उसके सिर पर ढोलता है। चारो तरफ जय जय कार होता है और वाजे वजते हैं सव लोग खमा खमा कर हसराज को वदन करते हैं और उसी हाथी पर विठा कर उसे राजमहलो की तरफ लाते हैं। सधवा स्त्रियें मगल गीत गाती है और नगर मे आनन्द ही आनन्द छा जाता है। लकडहारा राजा वनता है जिस का सव को विचार आता है पर किसे भी पता नहीं कि वह तो महान पुण्य शाली राजपुत्र हसराज हैं।

हसराज राजा वन कर सव का न्याय करते हैं सव उनकी आज्ञा मानते है। पर एक क्षण भी वह वच्छराज को नही भूलते हैं कि मेरा जीवन प्राण भाई कहा होगा ?

भाई का पता लगाने के लिए वह पटह बजवाते है, ढोल के साथ घोषणा करवाते है कि, जो कोई वच्छराज का पता बतायेगा, उसे एक नगरी का राज्य दूंगा।" यह घोषणा कुंती नगरी मे हर गली बाजार मे हो रही थी। सातवे दिन चित्रलेखाने भी ढोल के ढमके के साथ इस घोषणा को सुना तो दासी को भेज कर राजा के सेवकों से कहलाया कि "मैं राजा को संतोष दूंगी, वच्छराज का पता बताऊंगी मेरे लिए पालकी भिजाई जाय।" सेवकों ने ज्यों का त्यो यह वचन हंसराज से निवेदन कर दिया। हंसराज को अत्यंत उल्लास हुवा और उसने पुष्पदन्त के यहां एक पालकी भिजाई। घर के बाहर राजा की पालकी देख कर पुष्पदन्त फूला नही समाया वह सोचता है कि अच्छा मौका है मै भी साथ चलू और पूरी नगरी को बता दूँ कि मैं ऐसी उत्तम स्त्री को शादी करके लाया हूँ। सब ही महाजनों को एकत्रित कर सबके साथ राज दरबार मे जाऊँगा। उसने सब भाई सगो व इष्ट मित्रो को बुलाया और अपने पिता सुमण सेठ को आगे करके सबके सब लोगों के साथ ठाठ से राज-दरबार में वह जाता है, पीछे २ पालकी आ रही है। राजा के ढोल निशान बाजे गाजे हाथी घोडे रथ पैदल सब साथ में है।

सुमण सेठ सब को आदर भाव देता हुआ पेट की तोंद को हिलाता हुआ पान चबाता हुआ मस्ती से चल रहा है खुशी मे फूला फूला कभी वह आगे देखता है कभी पीछे देखता है कभी पालकी के पास खड़ा रहता है यो अभिमान से मस्त

हाथी की तरह झूलते हुए दोनो बाप बेटे दमाम के साथ चल रहे हैं। सब लोग अन्दर ही अन्दर बातें करते हसते मुस्कराते और कहते है कि अरे इस पुष्पदन्त की दुलहण के कारण हमे भी नये राजा के दर्शन होगे, पुष्पदन्त बडा भाग्यशाली है। यो सब महाजन राज महल के दरवाजे पर पहु चते हैं छडीदार राजा को खबर देता है, राजा सब को अदर बुलाता है और सब को सन्मान के साथ योग्य आसन पर बैठने का इशारा करता है। सब आराम से बैठ जाते हैं। चित्रलेखा के लिए पर्दे की आड मे बैठने की व्यवस्था की गई थी वहा वह चली गई। सब लोगो ने राजा को नजराना दिया। राजा ने सब का नजराना और मुजरा स्वीकार किया और कहा कि अब सब लोग ध्यान पूर्वक सुनें बीच मे कोई नही बोलेगा। पर्दे की तरफ मुह करके राजा ने विनति की कि हा अब आप वच्छराज का वृतात कहना शुरू करें।

कु वरी बोली "सुनो राजन, कान देकर एक ध्यान से सुनिए। आपकी नगरी पैठनपुर है जहाँ बावन वीरो का चौकी पहरा है। यादव वश कुल भूषण प्रतापी शालिवाहन सुत नहरवाहन राजा आपके पिता हैं। आपकी जननी हसावली रानी ने दो पुत्रो को जन्म दिया जिनके हसराज, वच्छराज नाम दिए गए। अब हसराजजी आपके,बचपन का हाल सुनिए। पन्द्रह वर्ष तक आप दोनो परदेश रहे, खूब पढे लिखे और युवा होने पर माता पिता से मिलने पैठणपुर आए परन्तु विमाता के छल कपट के कारण मृत्यु दड की आज्ञा राजा ने दी, मनकेशरी मत्री ने जीवितदान दे कर चुप के से नगरी के

बाहर विदेश भिजवा दिया। मंत्री के दिए हुए दोनों अश्व रत्न और उत्तम बारह मणियों को लेकर आप वन जंगल भटकते हुए आगे बढ़ रहे थे कि हंसराज को प्यास लगी। बड़ा भाई पानी की तलाश में इधर-उधर गया और जब लौटा तो देखा कि हंसराज को सांप ने काट लिया था जिससे वह अचेत हो गया है। वच्छराज बहुत रोया और थक कर हैरान हो गया। अंत में हंसराज को एक जलाशय के किनारे के वटवृक्ष की डाल पर बांध कर अग्निदाह के लिए वच्छराज कुन्तीनगरी में चंदन लेने गया। जब वच्छराज चंदन लेकर आया तब हंसराज को वहां नहीं देखा तो फिर जोर जोर से विलाप करने लगा, वन जंगल पूरा ढूंढ़ मारा। हताश हो कर वह वापस कुन्तीनगरी में आया और सुमण सेठ से अपने घोड़े और रत्न वापस मांगे। सेठ ने झूंठा कलंक दिया और राजा ने मृत्यु दण्ड की सजा दी। सेठ ने दोनों घोड़े और बारह रत्न अपने पास संभाल कर रख लिये।"

इतनी बात सुन कर सब सेठ साहुकार चौंक उठे कि हमने आज बहुत ही बुरा काम किया जो इस सुमण के साथ यहां तक आए अब इसके साथ हमारी भी पूजा होगी, राजा धनमाल तो लेंगे ही पर मार पड़ेगी वह अलग। सबने सोचा कि जितनी देर अधिक यहां बैठे रहेंगे उतना ही अधिक नुकसान होगा। क्रोध के मारे राजा कान कतरा देगा या मरवा देगा। यों विचार कर एक एक आदमी वहां से खिसकने लगा। मारे डर के सब धूज रहे थे हाथों पैरों में से हिम्मत निकल गई थी, सब अपना अपना जीव बचाने की फिक्र में थे। भागने

चाला मे डर के मारे किसी की धोती छूट रही है तो किसी की पगड़ी गिर रही है तो किसी की लाग खुल गई है।

यों सब के सब भाग कर घर चले गए मात्र सुमण सेठ और पुष्पदत्त दोनों नीचा मुंह किए मजबूरी से बैठे रहे।

हंसराज पर्दे की तरफ कहते हैं कि, "जो तुमने पिछली सब बातें कही हैं वे सच हैं अब आगे की बात कहो कि मेरा भाई का आगे क्या हुआ और अब वह कहां है ?"

सुन्दरी कहती है कि, "सुनो राजन, सुमण सेठ ने व्यापार के लिए समुद्र मे जहाजों को तैयार किया पुष्पदत्त उसमे जा बैठा और कोतवाल के घर ने तुम्हारे भाई को राजा से मांग कर उसे भी साथ लिया और जहाज रवाना हुए। यों जो जहाज पद्मावती जा पहुंचे। किराणा उतार, वहां पर पुष्पदत्त राजा से मिलने गया वत्सराज साथ मे था ही, मैंने उसे देखते ही अपने हृदय मे स्थापित किया। यद्यपि वह उस वक्त बिना जीन के घोड़े पर बैठ कर, फटे कपड़े पहने हुए घोड़ों को पानी पिलाने आया सादा सा था फिर भी नूर छिपा नहीं रह सकता है मैंने मनोगत उसे अपना स्वामी बना लिया। स्वयंवर मंडप मे जब मैंने उसे वर माला पहनाई तो सब राजा नाखुश हो गए। मेरे पिता ने भी मुझे बुरा भला कहा और पुष्पदत्त से वत्सराज का परिचय पूछा तो पुष्पदत्त ने अछूत जाति का घोषित किया जिससे राजा ने इसे गांव के बाहर एकांत मे रहने का आदेश दिया और वत्सराज को मारने के कई प्रयत्न किए गए। जब राजा के सब प्रयत्न निष्फल गए तब राजा

को वच्छराज के प्रति मान उत्पन्न हुवा और उसका परिचय पूछने के लिए मुझसे कहा गया। जब असली परिचय राजा ने जाना तब हमें गाजे बाजे से नगर प्रवेश कराया मैं तुम्हारे भाई की पत्नि चित्रलेखा हूँ। जब सुख भोगते हुए हमें कई दिन बीत गए तब पुष्पदन्त ने राजा से विदाई माँगी और हम भी उसके साथ जहाज में बैठे। मुझे देखते ही पुष्पदन्त मोहित हो गया और वच्छराज को समुद्र में धक्का दे दिया यह शब्द सुनते ही हसराज को मूर्छा आ गई बीच २ मे चेत आने पर वह विलाप करता है और जमीन पर लोट पोट होता है फिर अचेत हो जाता है। चित्रलेखा कहती है राजन दुखी मत हो वच्छराज जीवित रह कर तुम से मिलेगे। हसराज कहता है कि जो समुद्र में फेंका गया वह जिन्दा कैसे रह सकता है अतः मैं भी आत्मघात करता हूँ। चित्र लेखा कहती है हे मेरे देवरजी तुम्हारा भाई मगरमच्छ की पीठ पर तैरता हुवा तुम्हारी नगरी मे ही आ गया है और सलखू मालण के घर पर रह रहा है।

यह वचन सुनते ही हंसराज परदे को हटा कर भाभी के चरणो मे गिरकर प्रणाम करता है कि तुम मेरी माता हो। वह अधीर होकर मालण के घरकी तरफ पैदल ही रवाना होता है साथ में सब नर-नारी भी पीछे पीछे चलते हैं।

धाम-धूम सुन कर वच्छराज भी घर से बाहर निकलता है और दोनों भाई प्रेमपूर्वक मिलते है। छ माह के वियोग के बाद दोनों भाइयो का वह स्नेह मिलन अपूर्व था, देखने वालों

की आखें भी गीली होगई थी। पूरे शहर मे आनन्द छागया था चारो तरफ नाटक चेटक होने लगे। बाजे गाजे के साथ दोनो भाई महल मे आते हैं। वच्छराज व चित्रलेखा के मिलाप का वर्णन करने की शक्ति लेखनी मे नही है यह तो अनुभव की बात है। दो आत्माओ का अनेक सकटो के पश्चात मधुर मिलन यह लेखनी क्या जान सकती है।

अब मुमण सेठ पछताता है कि हमने बुरा काम किया है, अपयश भी हुवा और लाज भी गई। दोनो पिता पुत्र सोचते हैं कि भले का परिणाम भला होता है और बुरे का बुरा। आज जो मति हमे उपज रही है वह पहले उपजी होती तो क्या अच्छा होता है। न तो हमारा कामही विगडता न दुश्मन ही हसते।

हसराजा ने कोतवाल को बुलाकर दोनो को वध करने की आज्ञा दी जिससे पूरे नगर मे धाक जम जाय और कोई ऐसा काम करने का साहस न करे। सेठ के कुटुम्ब को सूली दो, घर का सब धन लूट लाओ और सब माल सामान यहा मगालो। वच्छराज ने कहा भाई, "इसमे सेठ का कोई दोष नही है सब अपनी करनी का फल है जो कर्म मे लिखा था वही हमने पाया और भुगता। मा जैसी मा और परमेश्वर जैसे पिता ने भी हम दोनो के सिरछेद की आज्ञादी, मन केसरी महता ने जीवित दान दिया यह तो सब हम करनी के अनुसार भोग ही चुके है। जो कुछ शुभ और अशुभ कर्म मे लिखा है वह निश्चित होता है। नल राजा ने राजपाट हार

कर स्त्री को जंगल में छोड़ा, हरिश्चन्द्र राजाने चण्डाल के घर पानी भरा; दशरथ राजा ने वाणमार कर श्रवण का वध किया; राम लक्ष्मण दोनों को वनवास मिला; सीता का रावण ने हरण किया यह सव कर्मो का काम है। राजा मुंज को भीख मांगनी पड़ी, कई विटंवनाएं सही; यह सव कर्मराज का नाटक है।"

वच्छराज के ऐसे वचन सुन कर, तथा वड़े भाई की शरम रखने के लिए हंसराज ने मुमण सेठ को जीवित रखा और पूरे कुटुम्व को नगर वाहर निकाल दिया। वच्छराज की उदारता का सव ने गुणगान किया। दोनों भाई आनंद-पूर्वक वहां सुख मे रह रहे हैं पुण्य के प्रताप से सव अच्छा हुवा है। दोनो कहते है कि कर्म वलवान है जिस कारण से पिताजी ने हमपर क्रोध किया और हमें विदेश भटकना पड़ा। आज सुखी हुए है।

हंसराज कहता है कि अव अपने माता पिता के पास चलना चाहिए। माता की प्रीति हम पर अत्यंत थी। चकवा चकवी की तरह विरह वेदना में वह झूरती होगी। उसका स्नेह चांद और चकोर जैसा, गाय और वछड़े जैसा; मोर और मेह जैसा; हंस और मानसरोवर जैसा; आम और कोयल जैसा, जल और मछली जैसा; साव और प्रद्युम्न जैसा, पति और पत्नि जैसा, क्रौंच और उसके वच्चे जैसा सच्चा है।

केल्हण को राज्य सोपकर दोनों भाई सजधज कर हाथी घोडे फौज पलटन लेकर संपूर्ण ऋद्धि-सिद्धि के सहित पैठण-

पुर नगर के बाहर आपहुचे और नगर के बाहर तम्बु ताणकर पडाव किया। अपने पिताजी के पास सदेश भेजा कि हम सकुशल यहा आपहुचे हैं। इस सदेश से पिता बहुत प्रसन्न हुए पूरी नगरी मे हर्ष की लहर दौडगई। जब हसावली राणी को यह सदेश मिला तो उसके आनन्द का पार का नही रहा। हर्ष मे उसकी रोमराजी विकसित होगई व अग-अग मे प्रसन्नता छागई। राजा-राणी, मनकेसरी महता और नगर के सब लोग कु वरो से मिलने चले। जब पिता माता नजर आए दोनो भाई उनके सामने गए और चरण स्पर्श कर प्रणाम किया। माता ने पुत्रो का सिर चूमा खूब प्यार किया, इस मिलन के अनुभव का आनन्द वियोगी ही कर सकते हैं। दोनो पुत्रो को माता ने आशीर्वाद दिया कि बेटा करोड वर्ष जीयो। दोनो को छाती से चिपका लिया। बच्छराज तो जन्म के बाद आज प्रथम वार माता के दर्शन कर रहा था। राजा की तीन सौसाठ रानिया भी आकर पुत्रो से मिली। मनकेसरी महता के साथ विशेष प्रीत व भक्ति से ये दोनो मिले और कहा कि आपने हमे जीवितदान दिया, हमारी सब व्यवस्था की हम जीते जी भी आपके उपकारो से उऋण नही हो सकते हैं। दोनो पुत्रो के साथ राजा नगर प्रवेश करता है, नगरी जय-जय कार करती है। दोनों भाइयो ने लीलावती से प्रणाम किया। राजा कहते हैं, "लीलावती ने जैसा किया है वैसा बुरा कोई नहीं कर सकता है। मेरे पुत्र अवगुण पर गुण कर रहे है, ये गगाजल जैसे पवित्र हैं। इसने झूठा कलक लगाकर हसराज बच्छराज को

मरवाने की आज्ञा दिलाई । संसार में तिरिया चरित्र की तुलना किसी से नही की जा सकती है । सुरिकांता स्त्री ने अपने पति परदेशी राजा को मराया, जितशत्रु राजा की रानी ने अपने पति को गोखड़े से नीचे गिराया, वे पुण्य के प्रभाव से गंगाजल मे से वाहर निकले थे । धनदत्त की पत्नि ने पति से द्रोहकर देवी के आराधन के प्रभाव से उसे अंधा वहरा बनवाया । चुलणीराणी ने जैसा किया वैसा तो कोई भी माता नही कर सकती है उसने अपने पुत्र ब्रह्मदत्त व उसकी पत्नि को अग्नि मे जलवाया पर पुण्योदय से वह वच निकला और चक्रवर्ती राजावना । तिरिया चरित्र का कहा तक वर्णन करू इसका कोई पार ही नही है । इस लीलावती का वध कराऊँगा ।" राजाने राणी को मारने के लिए तलवार निकाली, दोनों भाई सामने खड़े होगए और बोले हे पिताजी क्षमा करे यह भी हमारी माता है, फिर स्त्री हत्या तो नरक का कारण है । लीलावती मां के प्रताप से हमें वहुत धन संपत्ति व राज्य मिला है, चित्रलेखा की प्राप्ति हुई है । लीलावती के प्राणो की भिक्षा मांगकर कुवरों ने उसे पीयर भिजादिया और सव लोकलाज की रक्षा की ।

अव नर वाहन राजा सुख पूर्वक राजकर रहे है। हंसराज वच्छराज भी आनन्द पूर्वक रह रहे है । हंसावली राणी भी वहुत प्रसन्न है उसकी चिताएं नष्ट हो चुकी हे वह संतुष्ट है कि मेरे जोड़ले दोनो पुत्र वहुत शूरवीर और पराक्रमी हैं ।

नरवाहन राजा एक रात को सोते सोते विचार करता है कि यदि कोई मुनिराज यहां पधारजावे तो उनकी सेवा भक्ति करू । पुण्य संयोग से सुवह ही धर्म घोष सूरीश्वर

पाचसो शिष्य परिवार के साथ उस नगरी मे पधारे । राजा, हसावली राणी और हसराज वच्छराज गुरुवन्दना को जाते हैं और सूरीश्वर को नमस्कार करते हैं । गुरुदेव उपदेश देते है कि, "सुख दु ख कर्मो के प्रताप से होता है अत विवेकी पुरुष को सदा जागृत रहकर धर्मक्रिया मे मन लगाना चाहिए जिससे शुभकर्मों का वधन हो जो मोक्ष का कारणभूत हो ।" इस अमृत देशना के पश्चात् नरवाहन राजा नम्रभाव से पूछते हैं, "गुरुदेव ! मुझे किस पुण्य के प्रताप से यह राज ऋद्धि, हसावली जैसी रमणी और हसराज वच्छराज जैसे पुत्र रत्नो की प्राप्ति हुई और इन दोनो ने कष्ट क्यो पाया ।" गुरुदेव फरमाते है, प्राचीन काल मे धनपुर नामक नगर मे भूधर और सुधर नामक दो भाई रहते थे । कर्म सयोग से उनका धन नष्ट होगया था इसलिए वे सदा धनचिंता मे ही लगे रहते थे । पेट भरने के लिए वे लकडी काटने का काम करते थे । सदा प्रातःकाल कधे पर कुल्हाडा लेकर कमर मे डोरी बाध कर, लकडी पर रोटी लटकाए वे जगल मे जाया करते थे । पेट के लिए उन्हें यह महनत का काम करना पडता था । जगल मे से लकडी लाकर नगर मे वेचते और मिले हुए एक टके से सूखासूखा खाकर जीवन बिताते थे । एक दिन जगल मे काम करके दोनो भाई रोटी खाने बैठे ही थे कि दो साधुओ को देखा । दोनो साधु अपने साथ से छूट गए थे भूखे थे प्यासे थे । दोनो भाइयो ने उन्हें भक्ति भाव से आहार और पानी दिया और रास्ता भी बता दिया । हे राजा, उस पुण्य के प्रताप से ये हसराज वच्छराज हुए है । बाकी जो इन्होने कष्ट देखा वह तो पिछले भवो के पापा के कारण

से है। राजा ने गुरु देव से विनंति की कि "हे महाराज कुछ काल यहा विराजे जिससें मैं निवृत हो कर आपके चरणों की शरण ग्रहण करूँ।"

राजा ने वच्छराज को अपना राज्य दिया। कुन्तीनगरी का राज्य हंसराज का था ही। नरवाहन राजा और हंसावली राणी ने दीक्षा अंगीकार की और आत्म कल्याण कारी जैन धर्म के त्याग मार्ग के नियमानुसार अपना जीवन शुरु किया।

राजा पाँच आचारों और पांच समितियों का शुद्ध रीति से पालन करता हुआ, गोचरी के बयालीस दोषों को टालता हुआ उग्रविहार से विचरण करता है। कितने ही काल के पश्चात वह फिर से पैठणपुर में आया। वच्छराज गुरुवंदना के लिए गया। मुनिराज ने श्रावको के बारह व्रतों का स्वरूप समझाया, साधु के पाच महाव्रतो का वर्णन किया। वच्छराज ने मुनि के उपदेश से सजोड़े समकित (सच्ची श्रद्धा) ग्रहण किया और श्रावक के बारह व्रतो को धारण किया। अंतिम अवस्था मे पुत्र को राज्य देकर अनशन करके वच्छराज तीसरे कल्प विमान मे उत्पन्न हुवा और क्रमशः दोनों सिद्ध गति प्राप्ति करेगे।

श्री खरतरगच्छ मे गुरू श्री भाव हर्षसूरीजी हुए है। उनके पाट पर श्री जयतिलक सूरि राय हुए है जिनके चरण कमलों की सेवा वड़े २ राजा महाराजा करते थे उनके शिष्य श्री जिनोदय सूरीश्वर ने यह प्रबंध-रास (कथा) सवत १६८० आश्विन शुक्ला दसमी (विजय दसमी) को श्री संघ के हित के लिए रचा। जो इस प्रवन्ध को सुनेगा या पढेगा उसके घर में आनन्द मंगल होगा। पुण्य के प्रताप से जैसे हंसराज और वच्छराज क्रमशः शिवसुख को पाएंगे वैसे सब आत्मा पावे।

समाप्त

॥ श्री २४ ॥

श्री शखेश्वर पाश्वनाथाय नम
श्री जिन वीतरागाय नम

भाव धर्म पर दृष्टात

बलवीर राजकुमार

बाता श्रधा बावला, तिरिया श्रधा छेल ।
नदिया बहे उतावली घर घर पाकर गेल ॥
कितनाक नर सूता कतराक नर जागे ।
सूता नरा को पागडिया ऊदरा ले भागे ॥१॥

(नौ हाथ की ककडी तेरह हाथ का बीज)

वसतपुर नाम की अति रमणीय नगरी थी। वज्रसेन राजा राज करता था । राजा प्रजा मे बहुत ही स्नेह भाव था। सेठ साहुकार, कोटवाल, सभी नगरी की शोभा थे। उज्वल प्रासादो मे विभूषित यह नगरी अमरावती सदृश सुशोभित थी। अनेक जिनालयो मे वह नगरी देव विमान सी प्रतीत हो रही थी। रसिक प्रिय राजा के दो रानिया थी। एक मानेतण सुग्रीवा नाम की थी। दूसरी

मानेतण प्रियवदा नाम की थी। प्रियंवदा शुभ संस्कारो वाले गुरु के पास पढ़ी थी।

मानेतण (चन्द्रभा) के दो कुंवर थे धनवीर और जयवीर। कोमानेतण (अप्रिया) के एक पुत्र था बलवीर। नगरी में देवजी गुराजी की पोशाल थी। राजा प्रजा के सब बालक वहीं पढ़ने जाया करते थे। मानेतण के कुंवर अधिक लाड प्यार के कारण उद्दण्ड उच्छृंखल व मूर्ख थे। कोमानेतण का एक ही पुत्र अपनी माता की हित-शिक्षा का ध्यान रखता था। गुरुजी की बातो को मानता था अत विनयशील, उदार, सत्यप्रिय साहसी व वीर था। तीनो युवाअवस्था को प्राप्त हो रहे थे। एक दिन का समय हुआ कि राजा अपने महल मे सुख निद्रा मे सो रहा था। रात दोपहर बीतने पर उसे एक सपना आया। सपना इतना मीठा व लम्बा था कि उसे दिन उगने का भान ही नही रहा। हमेशा जागने की अपेक्षा आज बहुत अधिक देरी होगई थी। राज दरबार भरने का वक्त हो चुका था। धीरे २ दीवान, कोतवाल, सेठ साहुकार, सरदार भाई बैटे सब आचुके थे। राजा का सिहासन खाली था। सबको आश्चर्य हुआ कि राजा साहब अभीतक क्यो नही पधारे।

राजा सुख निन्द्रा मे पोढे हुए थे। किसी की हिम्मत जगाने की नही होती थी। अन्त मे दिन दो घन्टे चढ जाने से बडा कुवर राजा के पास गया, चरणो पर सिर रख कर राजा को जगाया। राजा की सपने की खुमारी टूटी सपना

भग हुआ। जो आनन्द वह पूरी रात से लूट रहा था उसमे विक्षेप हुवा। उसे क्रोध आया। नहा धोकर सजधज कर वह सिंहासन पर जा बैठा।

आवश्यक काम काज के बाद उसने पूरी सभा के समक्ष रात का सपना कह सुनाया कि—

मैं रात को पाताल लोक मे सैर करने गया था वहा एक सुन्दर वाटिका मे एक विचित्र वृक्ष देखा। वह वृक्ष तांबे का था, उसके चादी की डालिया थी, नीलम के पत्ते थे, मोती की लडे लटक रही थी। उस पर हस बैठा २ मोती चुग रहा था।

इतना कहने के बाद उसने घोषणा की "है कोई माई का लाल जो मेरा सपना सच्चा कर सकता हो ?" सब राजपूत सरदार जागीरदार फौजी अफसर नीचा मुह किए बैठे रहे। नाई ने सोने की थाली मे चादी के वरको मे लिपटे पान बीडो को सब के सामने फेरा, किसी की हिम्मत पानदान मे हाथ डालने की नही हुई। राजा को निराशा हुई, क्षत्रीपन की शान रखने वाला मेरी सभा मे कोई नही ! ! सब हाजी हा करने वाले निकले। अन्त मे मानेतण राणी के बडे कुवर ने पान बीडा उठाया और सपना सच्चा करने की हामी भरी।

राजा ने दोनो कुवरो की मुसाफरी का पूरा प्रबन्ध किया। ५ घुडसवार नौकर चाकर मोहरो के तोवरे उन्हे (थैलिया) दिए। दोनो को अवलक घोडे बैठने को दिए, सब तैयारी कर धनवीर और जयवीर चल पडे।

दूसरे ही दिन ये मानो जने आगे रवाना हुए। कुछ दूर आकर दोनों भाइयों ने पाचों सवारों व नोकरों को वापस लोटा दिया, उन्हें अपनी शक्ति व बुद्धि की परीक्षा करनी थी। अत अकेले ही जाना पसंद किया। चलते चलते रास्ते के जगल में एक बुढ़िया गोवर बीनती मिली। उसने लाचारी से कहा कि मुसाफिरो, जरा मेरा टोकरा उठा देना। "धत्ततेरे की हम राज कुमार तेरा गोवर का टोकरा उठाए।" वे आगे वढ गए।

कुछ दिन जाने के पश्चात् रास्ता एक लम्बे वजड़ मैदान मे होकर जा रहा था। गांव समीप ही दीखता था। गांव के वाहर एक खेत सा था वहा उन्होंने एक अचवा देखा। एक नौ हाथ लम्वी ककडी पडी हे पक कर फूट गई है और उसमे से तेरह हाथ लम्वा वीज जीभ की तरह वाहर निकल रहा है। उन्हे खूव आश्चर्य हुआ। कुछ देर वाद वे गाव मे प्रविष्ट हुए। वाजार मे पहुँचते ही वे चौराहे पर आए, गाव के मुखिया की वह चौपाल थी। ठाकुर के लिए गादी तकिया लगे हुए थे। सफेद दूध जैसी चादरे विछी हुई थी। मसनद विछी थी। गलीचों की छटा न्यारी थी। हुक्के की नली ७ हाथ लम्वी थी। २०-२५ सरदार वैठे थे वारी वारी हुक्का गुड गुडा रहे थे। अमल कसुम्वा ले रहे थे। खार वजेणा (नास्ता) की तस्तरिए सजी पडी थी। पास मे ही धीग कडिग धीग कडिग नौवत, गुडक रही थी। इतने मे ठाकुर की नजर इन कुवरो पर पडी। वह देखते ही खडा हुवा। इन्हे ताजीम दी। सन्मान से पास विठाया। अमल, कुसुवा दिया, नास्ता

कराया । इतमिनान से बैठने के बाद कुवरो ने बात निकाली कि आपके गाव के बाहर हमने अजब ककडी देखी है जो ९ हाथ लम्बी है १३ हाथ का बीज है । ठाकुर और सब सभासद बोले यह तो असम्भव है । कुवर बोले हम नजरो देख आए हैं । ठाकुरो ने कहा कि नहीं, यह नही हो सकता । शरत ठहरी । जिसकी बात मे फरक आए वह हारा । हारने वाले का सब सामान घर बार घोडा नकद जेवर सब जीतने वाले का । बात यह थी कि यह ठगो का गाव था । राहगीरो को इसी चालाकी से शरत मे लाकर लूटना उनका काम था । ३० घर थे सब एक से एक बढकर ठग थे । आस-पास हाथ फेर आते कुछ न मिला तो वह ककडी घर बैठे गंगा थी ही । दो छोटे २ बच्चे वहा तैनात थे । मुसाफिर के गाव मे जाते ही रस्सी खीच कर उस ककडी को पास की झोपडी म छुपा देते थे । दूर से मुसाफिर नजर आते तो फिर उस ककडी को लाकर वहा रख देते थे । बदले मे दूध रोटी पाते थे । सब लोग गाव के बाहर आए, ककडी नजर नही आई । ३-४ खेत ढूढ मारे कहीं नजर नही आई । कुवर हारे ठाकुर जीते । दोनों घोडे, जीण, सामान, मोरो के तोगरे सब ठगों के हवाले कर रास्ता नापना पडा । ठगो ने सोच रखा था —

अजगर करे न चाकरी पछी करे न काम ।
दास कबीरा यू कहे सब के बेलो राम ॥

आगे चलते २ भूखे प्यासे एक छोटे से गांव मे वे घुसे। एक ठाकुर की कुंआरी लड़की चरखा चला रही थी । वे दोनों चबूतरे पर बैठगए। ऊपर नजर डाली तो मकान के ऊपर एक अति सुन्दर लड़की का मोर तोरण पर बना हुवा था। मोर इतना सुन्दर बना था मानो सचमुच का हो । पानी पीकर छोटा भाई बोला यदि यह मोर बोलता होता तो कितना मजा आता । लड़की बोली यह बोलता है । कुंवर बोले लड़की का मोर नही बोल सकता । लडकी ने शर्त रखी यदि यह बोलने लग जाए तो तुम मेरे दास, अगर नहीं बोले तो मैं तुम्हारी दासी । कुवरो ने मंजूर किया । लड़की ऊपर गई । एक कल घुमाई और मोर बोलने लग गया । कुंवर हारे और उसके दास बने । लड़की एक ठग ठाकुर की बेटी थी । ठाकुर का कमाऊ पूत यह मोर ही था । ठाकुर के औरत या लड़का नही था, यह जवान जोध लड़की ही घर सभालती थी । ठाकुर थोड़ी खेती करता, भैंसे चराता, मौका मिलता तो कहीं हाथ भी साफ कर आता था । इन दोनो कुवरों के अच्छे २ कपड़े फट चुके थे इसलिए ठाकुर ने जाड़ी रेजी की आधी आस्तीन की बगल बन्डी, व चड्डिया सिला दी थी । एक घास काटता दूसरा भैंसे चराता । शाम को चोपाल मे पड़े रहते, सुबह बासी रोटी और छाछ का नास्ता करते, दोपहर को घाट और छाछ या ज्वार मक्कई की रोटी व गंवारफली का शाक मिलजाता । रात को देर से थके मादे आते; दो दो टिक्कड़ कढी के साथ मिल जाते ।

इन्हे यहा रहते-रहते २॥ साल बीत गए राजा सपने को सच्चा करने की प्रतीक्षा मे था । कुवरो के कोई समाचार नही मिले । राजा रानी भारी चिंता मे थे । गए बाद न खैर न खबर । लाचार एक दिन फिर राज सभा मे पान का बीडा फेरा गया । किसी की हिम्मत नही हुई । आखिर कोमानेतण राणी का कुवर बलवीर खडा हुआ । पिताजी को प्रणाम किया और सपना सच्चा कर भाइयो की खबर लेकर एक साल मे आने का बचन दिया । राजा प्रसन्न हुए आखिर बेटा बेटा ही है । चाहे प्रिय रानी का हो चाहे अप्रिय रानी का । बलवीर माता के पास गया । माता ने आशीर्वाद दिया । बाद मे गुरुजी की पोशाल गया । गुरुजी ने नीति की बाते बताई । उसमे पहले से ही बहुत गुण गुरुजी ने भर दिए थे । एक मामूली घोडा राजा ने बैठने को दिया, साधारण खाने पीने को व थोडीसी मोहरें दी । लडका भगवान के दर्शन कर रवाना हुवा । जाते २ रास्ते मे वही गोबर बीनने वाली बुढिया मिली । उसने टोकरा उठाने को कहा । बलवीर तुरन्त घोडे से उतर गया । बुढिया से राजी-राजी बोला, कुछ खाने को दिया और टोकरा उठा दिया । बुढिया प्रसन्न हुई । वह उस जगल की देवी थी उसने आशीर्वाद दिया और चेतावनी दी कि, "आगे ९ हाथ की ककडी और १३ हाथ का बीज पडा मिलेगा उससे अगले गाव मे लकडी का मोर मिलेगा, वह दोनो जादू व ठगाई के खेल ह । ये तीन ककरी अपने पास रखो । ककरी फेंकते ही जादू हट जाएगा तू ने मेरा विनय किया मैं खुश हू । तेरा हमेशा ध्यान रखूगी ।"

वताया। लड़कियां ताली पीट २ कर नाचने लगी और इतनी खुश हुई कि कोई पार नही। कुंवर की उदासी दूर करने का वचन दिया और अपनी शादी का वचन मांगा। कुंवर मंजूर हुवा।

चारों कुंवरियो ने कहा यह अमृत की कूपी अपने पास मे रखिए और हमारा सिर तलवार से काटते जाइये, सब हो चुकने के वाद हम पर अमृत छिड़कना हम जी ऊठेंगी। वलवीर ने पहले पहल ताम्रवंति का सिर काटा, झट तावे का वृक्ष वन गया, रूपवंति का सिर काटते ही चांदी की डालियां वन गई। नीलवंति का सिर काटते ही नीलम के पत्ते वनगए मोतवंति का सिर काटा तो वृक्ष के मोतियों के झूमके लटकने लगगए इतने में कही से एक हस आगया और मोती चुगने लग गया। वलवीर के खुशी का पार नही रहा। पिता का स्वपन नजरो नजर देख कर अपने को धन्य माना। वाद में सब पर अमृत छांटा, सव अपने रूप में आगईं। राजा ने चारो वेटियो की शादी वलवीर से करदी। कुछ दिन के वाद उसने सीख मांगी घर जाने की इजाजत चाही राजा ने वड़ी मुश्किल से आज्ञा दी। दहेज में कुवरियों के सिखाए मुजव वलवीर ने ये चार चीजे ही मागी (१)उड़न खटोला, (२)अमृत की कूपी, (३)राजा के हाथ का खड़ग,(४)राजा के पैरों की पावड़िये। और कुछ नही मागा। फिर भी राजा वासुकी ने नाना प्रकार की मणिया, रत्न हीरे जवाहरात दिए। फौज पलटन दी रवाना होकर हसावली के गाव आए, रात रहे। सुवह उठते ही चलना था। हसावली को दया आई कि मेरे दो नौकर हैं

उनकी सभाल कौन करेगा उनको भी साथ लेले। वलवीर ने उन्हे पिछान लिया, ये तो उसके वडे भाई थे। उनके कपडे वदले और बढी हुई जटाए काटकर हजामत कराई, जटा जूट कटा दिये और एक पेटी मे सव को रखदिया। फिर उन्हे अच्छे कपडे पहनाए और सन्मान दिया। सव ने जाना कि ये तो अपने राजा के वडे भाई है। पाचो औरतो को पता लगा कि ये जेठजी है सपना सच्चा करने ३ साल पहले घर से निकले थे। ये पडाव करते २ अपनी राजधानी की तरफ वढ रहे हैं दिन आठ ही वाकी रह गए है। वलवीर की माता वडी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी। मानेतण राणी के कुवरो का तो पता ही नही था, विचारी आसुओ से नहाती थी। राजा भी इन्तजारी मे थे। ठगो के गाव की सारी सम्पत्ति भी वलवीर ने साथ ले ली। स्त्री और सपत्ति दोनो लुभावनी चीजें है, वडे २ मुनिराजो का भी दिल पिघलजाता है तव साधारण राजकुमारो की तो वात ही क्या। दोनो भाइयो ने विचार किया कि हम ३ वर्ष पहले निकले पर कुछ भी हाथ न लगा, जिन्दे वचे है सो भाग्य की वात है। किसी न किसी तरह इस वलवीर को मारकर इसकी औरतो को छीन ले और सम्पत्ति पिताजी को देकर उन्हे राजी करें। सपने की वात भी कभी सच्ची होती है वह तो असम्भव है यो समझाकर काम निकाल लेगे।

दूसरे दिन पडाव डाला और तीनो भाई घोडे पर वैठकर शिकार खेलने गए व्हा उन दोनो ने कपट मे वलवीर को तीर मे मार दिया, आज का दिन ताम्रवति का था। पाचो के

वारे वन्धे थे । ताम्रवति वहुत सावधान थी, वह उड़न खटोले पर उड़ कर पति को ले आई, अमृत डाल कर जीवित किया । सुबह जव वलवीर को राजसिहासन पर मुजरा झेलते देखा तो भाइयों को आश्चर्य हुवा । वलवीर ने दोनों भाइयों को प्रणाम कर पास विठाया । कल की वात वह मानों भूल ही गया हो वैसा वरताव किया । तीसरे पड़ाव पर फिर तीनों भाई घूमने निकले, स्त्री वर्ग ने मना किया परन्तु वलवीर न माना । भाइयों की आज्ञा मानना अपना परमधर्म समझता था । दूर जंगल मे जाकर दोनों भाइयों ने उसे तलवार से मारा और चले आए । आज रूपवन्ति का वारा था वह जंगल में जाकर पति को ढूंढलाई और अमृत सीचा रात बीती सुबह फिर हमेशा के रिवाज के अनुसार दरवार भरा। दोनों भाइयों को बड़ा अचम्बा हुआ । बलवीर ने उन्हें वुला कर पास विठाया इस तरह से चौथे पड़ाव में बलवीर को घायल कर कूए में डाला नीलवन्ति पावड़ी पहन कर कूए में उतरी और पति को लाकर जिंदा किया । पांचवें पड़ाव में जंगल में जाकर भाइयों ने उसे घास में जला दिया, मोतवंति और हंसावलि दोनो चीले वनी और झपटे मार कर आग वुझाई और वारिश वरसाकर आग ठंडी की और अपने तंवु में ले आई । छठे दिन दरवार खाली देखा और बलवीर को न देख कर दोनो भाई राजी राजी हुए । अन्त मे उनकी कोशिश कामयाव हुई औरतें तीन बड़े की दो छोटे की होगी यह उन्होंने माना और राजा स्वयं वन बैठे । बलवीर हंसा-वली के तम्वु में था । सातवे दिन अपनी राज-

धानी के समीप पहुचे । दोनो भाइयो ने पाच घुडसवार राजा के पास दौडाए । राजा को सवारो ने वधामणी दी कि आपके दोनो वडे कुवर ठाठ से अपनी ३ और २ कुल ५ रानियो के साथ आरहे है । भारी फौज पलटन साथ है । राजा और प्रजा सामने गए खूब शानदार स्वागत हुवा । वडे ठाठ वाठ से राजाने नगरी को सजाया नगरी मे खुशी छागई । पूत किसे प्यारे नही लगते । मानेतणराणी की खुशी का पार न था कुमानेतण के आसु सूखते ही नही थे । आठवा दिन का सूर्य उगा । आज राजा अपने कुवरो को व वहुओ को नगर मे प्रवेश कराएगा ।

वलवीर के वचन का आज अन्तिम दिन था अत वह वेप वदल कर नगर मे गुरुजी की पोशाले गया । गुरुजी से सव हाल वताया । गुरुजी ने आशीर्वाद दिया और सव स्वय निपटने को कहा । वह वापस हसावली के पास आगया । राजा से पूछ कर गुरुजी ने ढिढोरा पिटाया कि एक परदेशी मुसाफिर आया है आज दोपहर के दो वजे नौलखा वाग मे राजा का सपना सच्चा करके वह नजरो नजर वताएगा अत राजा रानी व समस्त नगर के नरनारी देखने आवें । कुवरो का नगर प्रवेश कल होगा ।

इस घोपणा से नगर मे खलवली मचगई । भीड जमा होने लग गई । राजा का सिहासन विछाया गया दोनो कुवर भी पास वैठे थे । रानियो के लिए भी प्रवव किया गया, दीवान कोतवाल, सरदार भाई वेटे, सेठ साहुकार छत्तीसी कौम वहा इकट्ठी हो गई । एक वहुत ऊचे मच पर एक

परदेशी अपनी सुन्दर वेश भूषा के साथ खड़ा है उसके पीछे परदा है।

उसने सब प्रजा के समक्ष राजा से अपना सपना जाहिर करने को कहा। राजाने कहा मैंने सपने में एक विशाल तांबे का पेड़ देखा था, परदेशी ने पर्दे में जाकर झट तलवार चलाई सबके सामने तांबे का वृक्ष खड़ा हो गया। राजा बोला उस वृक्ष की डालें चांदी की थी। पर्दे में फिर तलवार चली चांदी की डालिया होगई, राजा बोला उसके पत्ते नीलम के थे, तलवार चलाते ही वृक्ष के नीलम के पत्ते लग गए। राजा बोला उस वृक्ष पर असली मोतियो की लूबकें लटक रही थी। तलवार की आवाज के साथ पूरा वृक्ष मोतियों से लद गया। राजा बोला उस पर हंस बैठा २ मोती चुग रहा था। फिर तलवार चली और हंस मोती चुगने लगा। सब के सामने परदेशी ने सपना सच्चा कर दिया। राजा प्रजा सब की खुशी का पार नही रहा।

राजा ने मारे हर्ष के परदेशी से इनाम मांगने को कहा। परदेशी बोला राजन, इस सपने के ससार को सत्य मानना ही भूल है, सपना सपना ही है। यह जगत भी सपना है इसमें सत्य का गला घोटा जाता है, झूठ आगे आ बैठता है। आपको देना ही है तो आपके दोनों कुंवरों को अभयदान दे।

राजा को शंका हुई, बात क्या है, अन्त मे वचन दिया परदेशी ने सब को कहा आँखें खोल कर सब देख लो यह सपना फिर कभी न देख पाओगे। यों कहकर परदे में जाकर

क्रमश हसावली, मोतवति, नीलवति, रूपवति, और ताम्रवति के धडो पर अमृत का सचार किया वृक्ष अदृश्य होगया। पग्देशी ने सबको नमस्कार किया और गायब हो गया। रात भर नगर मे खलबली मची रही । वह परदेशी कौन था अणमानेती के थनो मे से दूध की धारा निकलने लगी उस की डावी आख फरकने लगी ये शुभ शुकन थे, पुत्र का मिलाप होगा उसकी रोमगजी विकसित हो गई वह पुलकित हुई। गृह मन्दिर मे जाकर देवाधिदेव जिनदेव की उसने पूजा की, पुत्र के लिए मगल कामना की।

दोनो कुवरो पर हनावली ने कडी निगरानी रखाई थी रातो रात कही वे भाग न जाए अत अपने सेनानायक को सचेत कर दिया था।

सुबह होते ही राजा ने हाथी घोडे सजाए, नौबत निशान आगे भेजे। नगारे पर चोट पडी पूरी पलटन आगे २ चली, पीछे राजा राणी और प्रजा चली। कुवरो की आरती मोती के थालो से की गई। सधवा स्त्रियो के साथ राणीजी अपनी नई दुलहनो के पास पहुची। तबु मे पहुचते ही वहा का रग अजब देखा आज खुशी के दिन पाचा दुहलने शोक मे बैठी थी, दासियो ने काले कपडे पहने थे, कोई हसती बोलती नही थी। राणीजी ने राजा साहब को पास बुलाया। राजा ने दासियो से गमी का कारण पूछा। परदे मे से मोतीवति ने जवाब दिया "हम इस हत्यारी नगरी मे नही आना चाहती, हमारे पति (आप के पुत्र) को दोनो राजकुवरो ने मार डाला है और जबरन हमे अपनी पत्निया बनाना चाहते है।"

चारों तरफ खलबली मचगई। दोनों कंवरों को राजा ने पास बुलाया, तो बोले सब त्रिया चरित्र है ये हमारी स्त्रियां है हमने इनके पिताओं को जीता है और इनसे शादी की है। मामला पेचीदा हो गया।

रूपवंति ने कहलाया कि जो सपना कल आपको दिखाया है वह यदि आपके कुंवर दिखा दें तो आप बात सच्ची मानना। जो नरवोर सपना बताएगा वही राज्य का अधिकारी और हमारा पति होगा।

चारों तरफ शोरगुल मच गया। सब व्यवस्था बिगड़ गई। आज फिर सपना देखने को मिलेगा राजा के हुकम सेदोनों कुंवरों के हथकड़ियां डाली गईऔर कल वाली जगह पर ऊंचे मंच के पास सब व्यवस्था की गई। सबके देखते २ राजा की अनमानीती का कुवर बलवीर मंच पर दिखाई दिया प्रजा के हर्ष का पार नही रहा। उसने राजा प्रजा को प्रणाम किया और रास्ते की सब घटनाएं जो उसपर बीती थी कह सुनाई। बड़े कुंवरों ने किस प्रकार अपने घोड़े व मुहरें नौ हाथ की काकड़ी के गांव में खोए, आगे लकड़ी के मोर वाले गांव में जाकर नौकर रहे। अपनी व हंसावली की शादी की बात कही। उसने पेटी खोल कर दोनो भाइयों के कपड़े व जटा जूट सबके सामने रखे। किस प्रकार वह पाताल लोक मे पहुंचा। चारों कन्याओ से किस प्रकार से विवाह किया और किस प्रकार से रास्ते मे चार बार उसका घात किया गया, पांचों कुवरियों ने किस प्रकार उसकी रक्षा की यह सब विस्तृत कथा सबने सुन कर बड़े कुंवरों की तरफ घृणा की। छोटे की प्रशंसा

हुई। उसने प्रमाण के रूप मे कल की तरह फिर से सपना सच्चा कर वताया। राजाने वही वलवीर का युवराज पद का तिलक किया उसकी माता मानेतण वनी। दोनो कुवरो को फासी की सजा दी गई। बलवीर झपट कर राजा के चरणो मे गिरा और कल जो उसने भाइयो के लिए अभयदान मागा था वह याद दिलाया।

राजा और प्रजा वलवीर के गुणो की प्रशसा करने लगे। दोनो कुवर मारे शरम के वेहोश होगए। वाजे गाजे से सवका नगर प्रवेश हुआ। दोनो कुवरो का मुह काला कर गधो पर विठा कर गले मे जूतो की माला डाल कर जुलूस के साथ नगर के चारो दरवाजो मे उन्हे फिराकर दक्षिण दरवाजे से देश निकाला दिया गया।

अन्त मे सत्य की विजय हुई। वलवीर के गुरु ने अनेक गुण उसे सिखाए उसके भार से दवा हुआ वह उपकार का वदला देने के लिए गुरकी पोशाल मे पहुचा। आशीर्वाद प्राप्त किया। राजाने गुरुजी को राज्यगुरु की पदवी से विभूपित किया तथा वहुत जमीन जागीरी दी।

यो राजा प्रजा सुख से रह रहे थे। धर्म ध्यान से जीवन वीत रहा था। सव तरफ धर्म से सुख पाप मे दु ख की चर्चा चला करती थी। कुछ काल पश्चात उस नगरी मे चार ज्ञान के धारक रतनेन्द्रसूरीश्वर गुरु महाराज पधारे। राजा प्रजा वडे उल्लास व पूज्य भाव से वदना करने गए। गुरु महाराज ने ससार का स्वरूप समझाया। राजा व दोनो रानियो

को वैराग्य उत्पन्न हुआ। बलवीर को राज्यतिलक करके उन तीनों ने दीक्षा ग्रहण की।

बलवीर न्यायनीति पूर्वक राज्य भार संभाल रहा था। सद्गुरु के उपदेश से उसने अनेक देवालय, पाठशालाएं, ज्ञानशालाएं, दानशालाएं, स्थापित की; सदाव्रत चालू किया। उसके राज्य में कोई दुःखी नहीं था। वह वेष बदलकर प्रजा के दुःखों को देखा करता था। एक दिन धर्मशाला के बाहर वह भेष बदले बैठा हुआ था। मुसाफिर बात कर रहे थे कि दो भिखारी विचारे जंगल में भटक रहे है, न शरीर पर पूरा कपड़ा है न खाने को पूरा मिलता है, रोग से पीड़ित है कमजोरी के मारे चल भी नहीं सकते। शरीर से बड़े सुन्दर हैं राजकुंवर जैसे दीखते हैं। बलवीर ने उन से पूछा यहां से कितनी दूर तुम लोगों ने उन भिखारियों को देखा है। वे बोले २०-२५ योजन पर मार्ग में एक वट वृक्ष के नीचे पड़े देखा था। राजा बलवीर सुबह उठते ही दो सवारों के साथ वहां जा पहुँचा एक रथ साथ ले गया था। खाना पीना वस्त्र अलंकार रथ में रख ले गया था। दोनों को वृक्ष के नीचे मिट्टी में पड़े देखा। लोहु और परू पर मक्खियां भिन भिन कर रही थीं। पाप का प्रत्यक्ष फल उन्हें मिल गया था। राजा ने बड़े प्रेम से भाइयों को प्रणाम किया, उन्हे न्हलाधुला कर उत्तम वस्त्र आभूषण पहनाए। खाना खिला कर जल पिला कर रथ में बिठा कर अपने महलों में ले आया। वैद्य बुलाकर सार संभाल ली। उन्हें आरोग्य लाभ मिला। पांचों बहुओं ने खूब सेवा की। उनके पांचों के पुत्र हुए थे वे सब

दादा दादा कह कर उनसे खेलते थे दोनो कुवरो ने पश्चाताप की अग्नि मे अपने सारे अपराधो को धो दिया था। उनके चित्त निर्मल होगए थे। उनके पूर्ण स्वस्थ होने पर राजा ने उन्हे राज्य मभालने की व विवाह करने की प्रार्थना की। उन्हे कितनी लज्जा आई। कहा तो हम पापियो का जीवन कि राज्य व पत्नि के लोभ से हमने इसकी४-४वार हत्या की, कहा इसका उत्तम जीवन कि हमारी सदा रक्षा की, जीवन दान दिया। धन्य है इसके धर्म को, धन्य है इसके गुरु को जिसने उत्तम मस्कार अपनी पोशाल मे दिए। उन्होने वडे प्रेम मे पूरे परिवार को व प्रजा के आगेवानो को तथा गुरुजी को अपने पास बुलाया और अपनी सपूर्ण जीवन कथा कहने के बाद भाई व वहुओ मे क्षमा मागी, प्रजा मे क्षमा मागी और वैराग्य भाव मे दीक्षा की आज्ञा मागी। प्रजा ने चार-चार आसु बहाए। राजा का कलेजा फटने लगा। वहुओ को अपार दु ख हुआ। सयोग से वज्रमेनसूरीश्वर महाराज तथा साध्वीजी करुणा श्रीजी विहार करते हुए बमन्तपुरी मे पधारे थे। सब के हर्ष का पार नही रहा। त्याग की महिमा विचित्र है, वैराग्य भाव की कीमत अमूल्य है। जो कुवर राजा प्रजा की आखो मे काटे थे घृणा के पात्र थे वही आज सब की आखो के तारे वन रहे है। सभी भक्ति मे उन्हे वन्दना कर रहे है। गृहस्थ गुरुजी ने भी अपनी उत्तरावस्था जानकर अपने पुत्र व परिवार की सम्मत्ति से दीक्षा ग्रहण की। माहण, गृहस्थ गुरु त्यागी गुरु बने। अपने महात्मा पद को सार्थक किया। दोनो राज कुमार उनके शिष्य बने। राजा ने अपनी पाचो

रानियो के साथ श्रावक के व्रत ग्रहण किए सब तरफ आनन्द ही आनन्द छा गया। सब ने आदीश्वर दादा के मन्दिर में दर्शन कर अपने २ घर की राह ली। अपकारी पर उपकार करना और क्षमा करने की विशाल भावना रखना जैन धर्म का मूल है। व्रत अंगीकार कर देवजी गुरां ने कठोर तपस्या प्रारंभ की। विविध अभिग्रह लिए। भिक्षु की १२ प्रतिमाएं धारण की और आत्मचिंतन करते हुए चार ज्ञान के धारी देवेंद्र-सूरीश्वरजी हुए। उनके दोनों शिष्य धन मुनि और जयमुनि ने भी खूब तप किया। उनका शरीर क्षीण हो गया था, पश्चाताप की अग्नि ने उनके समस्त दुष्कर्मो को जला दिया। चौथे ज्ञान का उदय हुवा। देवों ने महोत्सव किया।

ग्रामानुग्राम विहार करते हुए वे वर्षों के बाद फिर से वसंतपुर में आए। राजा प्रजा ने वाजे गाजे से नगर प्रवेश कराया। देवेन्द्रसूरीश्वरजी ने धर्मदेशना दी कि "कर्म की गति विचित्र है, किए कर्मो का छुटकारा नही है अतः मानव को सदा विवेक बुद्धि से यतना पूर्वक चलना चाहिए।" राजा ने पूछा, "गुरुदेव ऐसे मैने कौनसे पाप किए थे कि दोनो भाइयों ने मेरी चार बार हत्या के प्रयत्न किए और किस पुण्य से मैं जीवित रहकर राज्य सुख पा रहा हूं।"

गुरु महाराज ने फरमाया कि, "प्राचीन काल में तुम छः मित्र थे। सदा साथ रहते थे। एक समय जंगल में घूमते हुए राजन, तू ने दो पक्षियों को देखा उन पर तीर चलाए और ४ बार उन्हें घायल किया। पक्षियों को तीर से तू

मारता था तब पाचो मित्रो ने उपेक्षा बुद्धि रखी थी, तुझे राका भी नहीं था तुम्हारे उस काम को दूर से एक मुनिराज देख रहे थे, वह तुम सवके समीप पहुचे, और तुम्हे दया का उपदेश दिया जिससे तुमने पश्चाताप किया ओर करुणा प्रगट की। मुनिराज को शहर मे ले जाकर तुमने उनका उपदेश सुना और उनको अन्न वस्त्र का दान दिया । वह मुनि मैं हू और वह शिकारी तुम हो, वे दोनो पक्षी ये तुम्हारे दोनो भाई धनमुनि और जयमुनि है। तुम्हारे वे पाचो मित्र पक्षियो पर उपेक्षा बुद्धि से स्त्री शरीर पाकर तुम्हारी ये पत्निया बनी है । मुनि पर भक्ति रखने से तुमने राज्य ऋद्धि प्राप्त की हे। पश्चाताप से तुम चार वार मरते २ बचे हो। उन पक्षियो के बच्चे तुम्हारी पाचो रानियों के पाच पुत्र हुए ह ।

राजा ने अपना पिछला भव सुनकर वैराग्य पाया। वडे पुत्र को राज्य देकर पाचो पत्नियो सहित राजा ने व्रत अगीकार कर आत्मसाधन किया।

धन कण कचन राजसुख, सुलभ है इस ससार मे।
पर दुर्लभ है, दर्शन श्री जिनराज का इस ससार मे।।

———

दान धर्म की कथा

सदाव्रती सेठाणी सुनन्दा

धर्म किये धन ना घटे, नदी घटे नहीं नीर।
अपनी आंखों देखिए कह गए दास कबीर ॥

देवकुल पट्टण नगरी में पृथ्वीपाल राजा राज्य करते थे। राजा न्यायशील व उदार थे। विमल सेठ दीवान और केवल सेठ संघ पति थे। राज्य घराने मे केवल सेठ का भारी मान था अतः उन्हें नगर सेठ की पदवी मिली हुई थी। उनके खानदान की इज्जत चार पीढ़ी से चली आती थी। केवल सेठ की पत्नि सुनन्दा, सदाचारिणी, नियम व्रत धारणी, परोपकारिणी व दयालु थी।

सदा नौकारसी के पच्चक्खान पारने के लिए बाहर चबूतरे पर बैठी २ दातुन करती थी। पास में दासी टोपलों में गेहूँ ज्वार मक्की लिए बैठती थी। भिखारियों व ब्राह्मणों की जय जय पुकार के शब्दों से वह दातण करती थी। लाइन का अन्तिम आदमी जब तक भिक्षा न पा लेता सेठाणी चबूतरे से उठती नही थी। सुभिक्ष था अन्न को कमी नही थी, भिखारियों की संख्या भी खास नही थी। सेठानी की उदारता से हमेशा दूर २ से याचक आते थे, सबको अन्न व कभी २ वस्त्र का दान भी यहां से मिलता था। गांव में जो

भी कोई साधु साध्वीजी पधारते उनकी वैयावच्च का पूरा ध्यान सुनन्दा रखती थी। देवालय का खर्च, जीवदया की मक्की, कुत्तो की रोटी, पाठशालाओ की रकम नियमित वहाँ पहुच जाती थी। सेठाणी का नाम दूर २ फैल गया था। यश वढाना हो तो दान आवश्यक हे। स्वय सादगी से रहती थी। नियमित पूजा, सामायिक, व्याख्यान, अध्ययन करते हुए भी घर के काम को पूरी तरह सभालती थी।

विवाह किए १० वर्ष वीते थे। सवा सेर मिट्टी की कमी थी। सेठ पुत्रचिंता मे मग्न रहते थे। सेठाणी वेफिक्र थी जैनपडितजी मयाचन्दजी ने पहले ही वताया था कि शादी के १२ वर्ष वाद सतान होगी। सेठाणी को जैन ज्योतिषी पर विश्वास था।

पुत्र चिन्ता के कारण केवल सेठ उद्विग्न रहते थे, इधर सेठाणी की दान वृत्ति वढती जा रही थी। जो भी आता घर से निराश नही जाता था। किसी की लडकी की शादी है, गरीवी के कारण वस्त्र पूरे नही है, सेठाणी उसे कपडो की पेटी की पेटी दे देती। किसी का पुत्र परदेश मे हे घरमे खाने को नही है, सेठाणी वोरी की वोरी नाज वहा पहुँचा देती थी। किसी को कितावे, किसी को चद्दर, किसी को धोती, किसी को कुर्त्ता, जो चाहिए सुनदा से लीजिये।

सेठजी मन ही मन पत्नि की इतनी उदारता व दान वृत्ति से चिढते थे। कमाऊ वेटा तो कोई था नही, यो लुटाने से वृद्धावस्था मे क्या होगा ?

एक दिन चिढ़कर सेठजी ने सेठानी से दान कम करने को कहा। सेठानी बोली, सबके भाग्य का अपने को मिलता है। सेठजी कुछ बाहर से चिढ़े आये थे, वे बोले, "रखो तुम्हारी घर गृहस्थी, मैं तो यहाँ से दूर चला जाऊँगा, मुझसे अब यह धतिंग सहन नहीं होगा।" कुदरत की करामात ! बात बढ़ गई। सेठ सेठाणी में बोल चाल हो गई। सेठाणी बोली, "ले जाइये आपका माल असबाब, धान चून सब, धर्म के प्रताप से सब अच्छा होगा !" पुरुष आखिर पुरुष था। स्त्री की धौंस कब सह सकता था। अपने नौकरों से सब सामान गाड़ियों में लदाया। धन दौलत नकद जेवर सब पेटियों में भरा, आटे के थैले और दालों के डब्बे भी भर लिए। सब नौकर चाकर और ओढ़ना बिछौना तथा राच रचीला घर गृहस्थीका इकट्ठा करा लिया। दिन भर तैयारी की और पिछली रात को सब सामान रवाना किया। जाते वक्त सेठानी प्रणाम करने आई तो गुस्से के मारे सेठने कहा—मैं भी देखता हूँ तुम कैसे अपना सदाव्रत चलाकर नाम रखती हो, अरे सदाव्रत तो दूर, खाने के साँसे न पड़े तो मेरा नाम केवलचद्र नहीं, तुम्हें अभिमान हो गया है। मेरे बाप दादों की कमाई को लुटते मैं नही देख सकता हूँ। तुम रहो यहाँ और तुम्हारे पीअर की कानी दासी, मजे में पानी पीसना करना और पेट भर खाना। यदि तुम नेम धरम की पक्की हो तो ये चार बातें कर बताना। मै १३ वर्ष बाद तुम्हारी संभाल लूंगा।

(१) सदाव्रत दुगुना बाँटना।

(२) राजा के महल गिरवी रखना।

(३) बेटा पैदा करना।

(४) शादी कर नई सेठानी ला रखना।

दिन उगते २ सेठ व उसका काफला ५-७ कोस जा चुका था। सेठ के परदेश जाने की बात पहले से नगर मे फैली हुई थी। हवेली इतनी बडी थी कि रात को क्या हुआ यह बाहर वाले सुनही नही पाए।

सर्दी के दिन थें। सूरज देर से उगता था। याचक भी मारे ठण्ड के देर सें आते थे। पौ फटते ही सेठानी ने घर को नजर भर देखा। चारो कौनें खाली। कही मुट्ठी भर नाज भी नहीं। खोजते २ एक खाली पेंटी कौने में पडी रखी थी। उसने पेटी मे ईंटें भरी, ताला लगाया और चादर ओढकर चली राजमहल मे, कानी दासी ने पेटी उठाई। अन्धेरे २ ही रानी साहब के पास पहुँची। रानी साहबा जागी ही थी, अचानक सेठानी जी को देखकर आश्चर्य हुआ। सेठानीजी ने कहा कि, अचानक काम होने से सेठजी रात को परदेश चले गये। जल्दी २ मे चावियो का गुच्छा साथ ले गये। यह मेरी पेंटी अमानत रखिये और २५०००) खजाने मे व्याज पर दिलवा दीजिये। आप और राजा साहब तो मेरे कुटुम्ब पर कृपालु है, आप तो माता पिता हैं, दूसरो के सामने बात करने मे खानदान की इज्जत जाती है इसलिए अन्धेरे २ मैं हाजिर हुई हूँ। रानी ने राजा से बात कही। राजा ने कहलाया, "पेंटी रख जाने की कोई जरूरत नही, आपने कष्ट क्यो किया नौकरानी को भेज देती तो भी लाख रुपया हवेली भिजवा

देता। आपको जितना रुपया चाहिये ले पधारिये।" नौकरानी समझदार थी उसने दो टोपलों में थोड़ी मोहरें भरी और ऊपर खूब नाज भरकर साड़ी से ढक दिया और दोनों हवेली आ पहुँचीं। बाकी की मोहरें फिर ले जाने को वह कह आई।

सूरज उगने लग गया था। सेठानी के दातुन का समय हुआ। नौकरानी दोनों टोपलों में नाज लिये आ बैठी याचक आए, दान ले गये, आशीष दे गये। सेठानी की लाज रही। उसके जीवन में आज की पलें अमूल्य थीं। धर्म ने लाज रखी। याचकों के निराश चेहरे उसे नहीं देखने पड़े। बचे हुए नाज को पीसकर नौकरानी ने खाना बनाया, दूर मुहल्ले के मोदी से सब सामान ले आई। साधु महाराज गोचरी पधारें, तब तक सब व्यवस्थित था।

सेठाणी ने पुराने मुनीमजी को बुला लिया। शरीर उनका बूढ़ा था पर बुद्धि बूढ़ी नही हुई थी। धंधा व्यापार आड़त जो हमेशा होता था होने लगा। सेठानी स्वयं सब काम काज देखती थी। पढ़ी लिखी व अनुभवी थी, जो कमी थी उसे समय ने सिखा दिया।

तीन दिन में वही सब पहले वाला ठाठ जम गया। गादी तकिये नौकर चाकर, हाली बालदी, मुनीम गुमास्ता, आड़तिये पोड़तिए सब साबक़दस्तुर हो गया। मंदिर दूर पड़ता था अतः गृहमंदिर स्थापित कर पूजा वही कर लेती थी।

यों सदाव्रत जो हमेशा होता था उसने दूना देना शुरू कर दिया, एक एक याचक को आधा सेर के बजाय एक एक सेर नाज देना शुरू कर दिया। सेठ की पहली बात पूरी हुई।

काम धंधा खूब बढने लग गया। सेठानी की धर्मवृत्ति और व्यापार कुशलता से दूर २ के व्यापारी अपना माल भेजने लगे। अविश्वास को कोई स्थान नही था। धन की रेलमछेल बहने लगी। मुनीम गुमास्ते दूने रखने पड़े। खेती बाड़ी बाग बगीचे की सभाल के लिए दूने नौकर रखने पड़ें। राजा से उधार लिया धन ब्याज सहित लौटा दिया गया। सेठानी सुनदा एक काम से निश्चित हुई। अभी सेठ के तीन बोल बाकी थे। सेठ को गए १। साल बीत गया था। सेठाणी का व्यापार पूरे परगने मे प्रसिद्ध हो गया। देश परदेश मे साख बैठ गई। एक लक्खी वणजारा बैलो की पोठे भर कर शक्कर लाया। सब ही सौदा एक ही व्यापारी से करना चाहता था। अन्य व्यापारी इतना माल नही खरीद सकते थे। लाख बोरे शक्कर रखने को जगह भी चाहिए और दाम भी। वणजारा पहुचा सीधा सुनदा की हवेली। आव आदर मान सम्मान भोजन के पश्चात बात चीत हुई, देखते ही देखते पोठे खाली करादी गई। हवेली छोटी तो थी नहीं, वणजारे को अभी आगे के शहरो मे माल भरने जाना था। जोखम साथ नहीं ले जाना चाहता था। अपने पास की जोखम भी पटक गया सेठाणी के पास।

कुछ दिनो बाद राजा साहब के माजी का स्वर्गवास हो गया। सौ बरस की बडी ठकुरानी का कारियावर (मौसर)

भी सौ हाथ लम्बा हुआ। तीसरे, नौमे, और ग्यारवें दिन के ब्रह्म-भोजन में कोठार की और गांव में से खरीदी हुई शक्कर खतम हो गई। अभी तेरवां दिन तो बाकी था। आसपास के २५ मील के भाई बेटे राजपूत, ब्राह्मण सब जीमने वाले थे। देवकुल पट्टन नगरी भी पूरी जीमेगी। राजा विचार में पड़ गए। शक्कर कहां से लावें। भन्डारी ने बात निकाली कि सुनंदा सेठानी के यहाँ वणजारा शक्कर बेच गया था। राजा ने पालकी भेजी। सुनंदा तो इसी प्रतीक्षा में थी। एक वही खाता लेकर कामदार को साथ लिए मेहलों जा पहुंची। राजा रानी ने उसका सत्कार किया। बातचीत हुई। भावताव हुए। लाख की शक्कर दो लाख में बिकी। नकद तो सब खजाने का खर्च हो गया था। राजी राजी महल गिरवी रखने की लिखा पढ़ी वही मे करदी गई। ब्याज की आमद के लिए नजर बाग इनाम में लिख दिया गया। यो सेठ के दो बोल पूरे हुए। ४-६ माह बाद वणजारा अपनी खाड की कीमत व अमानत लेगया और देश देशावर मे सुनदा की बड़ाई करता फिरा।

सेठानी को पंडित जी की बात हरदम याद आती थी कि बारहवे वर्ष में गर्भ रहेगा। सेठजी रिसाकर परदेश चले गए थे। उनके चार बोलों मे से तीसरा बोल असंभव था। हिम्मत रखना सेठानी का स्वभाव हो गया था।

घर और व्यापार का सब काम काज कामदार और विश्वासु नौकरो को सौप दिया गया। गुरां महाराज से नजर रखने

को कहा। भडार कोठार और आवश्यक वहियो को व्यवस्थित किया। चिट लगाए और कानो दासी को सावचेत कर पियर जाने के वहाने रथ जुता कर सेठजी की खबर निकालने चल पडी। आवश्यक वस्त्र व धन की एक पेटी के सिवाय और कुछ साथ नही रखा। जाते २ उस नगरी के पास पहुची जहा सेठ जी ने नया कारोवार जमाया था। केवल सेठ का नाम यहाँ भी प्रसिद्ध हो गया था। शहर से कुछ दूर ही रथवाले को लौटा दिया था। पास के छोटे से गाव मे जा पहुची। गूजरो का गाव था। उसने भी गूजरो का वेश वना लिया। गाव मे जा पहुची। रामा पटेल का नाम चमकता था। जा पहुची रामा मामा के घर। रो रो कर गले मिली, मामी के पैरो पडी, वालको को मेवा मिठाई दी। भानजी वाई का आव आदर वढने लगा। गाव के सव गूजरो को मामा कहती थी दूसरी गूजरियो के साथ शहर मे दूध दही वेचने जाती थी। चतुर तो थी ही ४-५ दिन मे गुजरियो के लटके मटके, और दही वेचने की ललकारे सीख गई। रामा मामा से परख करा कर दो भैसे मोल लेली और अलग मकान लेकर रहने लगी। हर गली २ मे उसकी मधुर आवाज सुनाई पडने लगी "ए लो खट्टा मिट्ठा दही" कोयल की टूहुक जैसी मधुर लेहरी से और सुरीले कठ से निकलती हुई स्वर माधुरी का पान करने के लिए कई ग्राहक प्रतीक्षा करते रहते थे। वह कभी सुवह को कभी दुपहर को कभी शाम को दूध दही वेचने शहर मे आती थी। कई लेहरी लाला उसके दर्शनो और मीठे शब्दो के लिए तरसते रहते थे। खास कर केवल सेठ तो

हमेशा उसके हाथ का दही खाते थे। १०-१५ दिन में वह गुजरी से खूब हिलमिल गए। कभी २ खबर अंतर पूछते रहते थे। एक दिन बोले तुम्हें फुरसत होतो हमारे १ मटका पानी लादो। गुजरी ने पानी ला दिया। यो किसी न किसी बहाने केवल सेठ गुजरी से दांव पेच खेलने लगे। वह भी आंखों के मटके अंगली के चटके और झूमर के झटके से उनको मोहित किए जा रही थी। हमेशा के वार्तालाप मे और हरकतों में वे एक दूसरे के पास आते जाते थे। अब तो सेठ कभी मिठाई कभी कपडा और कभी २ इनाम भी देने लगगए थे। गूजरी को कोई आना कानी नही थी। एक दिन सेठ ने अपने रसोइये से विशेष भोजन बनवाया और उसे दूर के गांव कुछ काम भेज दिया। आजकल गूजरी शाम को हमेशा आती थी। आज कुछ काम होने से जरा देर से वह आई। सेठ तड़प रहे थे। उसकी आवाज सुनते ही बाहर आए और पानी भरने के बहाने घर पर ले गए। घर का दरवाजा अंदर से बंद कर सांकल लगादी और अपनी मन की बात कह डाली। गुजरी ने छणका किया और सेठ की बहुत हाथाजोडी के बाद शरत मंजूर की कि तुम्हारी हाथ की अंगूठी, पगड़ी, फतेपेच और कमर की कटार दो तो तुम्हारी इच्छा पूरी हो सकती है। कामाधो नैव पश्यति। सेठ ने सब मंजूर किया। गुजरी आधी रात तक वही रुकी और दिन उगने के पहले २ अपने गांव के घर मे जा पहुंची। भैसो को दुहा। ना धोकर दही दूध बेचने चली। यो ४-५ दिन और रुकी बाद मे अपनी भैसों को रामा मामा के हाथों

सस्ती मोधी वेच कर एक घोडा खरीद कर देवकुलपट्टरण का रास्ता लिया। रास्ते मे मर्दाना भेप वना लिया था। मेठ की अगूठी, पगडी, फतेपेच और कमर की कटार लगाए हुए थी। अवलक घोडे पर सवार थी। यो रास्ते के ५ दिन बीतने पर एक दुपहर को विश्राम के लिए वट वृक्ष के नीचे ठहरी। रास्ते की थकान और सुस्ती ने उसे आगे बढने से रोका। घोडा वृक्ष से वाघ दिया। सामान उतार कर नास्ता किया और सध्या वदन, नाम स्मरण करने वैठ गई। हमेशा के नियम के अनुसार नव स्मरण का पाठ करके लेट गई। पिछली रात को अचानक नीद उडी। वृक्ष पर वैठा चकवा नदी पार की चकवी से मानवी भापा मे वात कर रहा था। "कहो चकी रानी वात, तो खूटे वैरण रात"। "सुनो मारा चका राणा गरीव नवाज। मेरे सर आखो का ताज। पास की नगरी के गजा को कोढ हो रहा है वह दु खं के भार मे कल शाम को चिता मे जलने वाला है। गनी सतवति है। कुवर है नही मात्र एक धर्म कन्या है जो धर्मपाल मेठ मे गोद ली है। अगर कोई काले माथे का मानवी तुम्हारी विप्टा पानी मे घोले और शरीर पग तीन वार लेप करदे तो राजा वच सकता है"। चकवा वोला "राजा का पुण्य प्रताप प्रवल होगा तो योग मिलजाएगा।"

सुनदा सव सुन रही थी। प्रात उठ कर स्नान ध्यान किया। मरदाने वेश मे तो थी ही। एक थैले मे कुछ जडी वूटिया इकट्ठी की। वृक्ष के नीचे से चकवे की विप्टा लेली

और घोड़े पर बैठकर चली शहर की तरफ। बाजार में पहुंचते ही सराय का रास्ता पूछा। वहां घोड़े को बांध कर राजमहल में जा पहुंची। गांव के सब लोग राजा की बीमारी से चिंतित थे। राज सभा में कई वैद्य हकीम इकट्ठे हो रहे थे। रानी का हुकम था कि कोई भी वैद्य हकीम आकर राजा को देख सकता है। अंतःपुर में कोहराम मचा था। सब भाई बेटे ठाकुर जागीरदार शोक के कपड़े पहने हुए थे। चिता खड़कने के लिए चंदन की लकड़ी का गाड़ा तैयार खड़ा था। खोपरा और घी भी तैयार था। इतने मे एक छड़ीदार ने मालूम की कि एक परदेशी वैद्य आए हैं और राजा साहब का रोग दूर करने को कह रहे है। जब तक सांस तब तक आस। वैद्य जी बुलाये गए। उन्होंने सब को दूर किया। केवल रानीजी को व कुंवराणी जी को पास रहने दिया। साफ कपड़े से राजा जी का शरीर पूछा। फिर दवा का पहला लेप किया। लेप कर थोड़ी देर तक विश्राम लिया। रेशमी कपड़े को पानी में गीला कर उस लेप को पूछा। थोड़े से कीटाणु उस कपड़े के चिपके। एक चौड़ा बर्तन मंगाकर उसमें उस कपड़े को डाला। दूसरा लेप किया। इस वार बहुत से जतु कपड़े के चिपक गए। फिर तीसरा लेप किया। तमाम कपड़ा जंतुओं से भर गया। फिर गरम जल से राजा साहब को स्पंज किया। राजा को नीद आने लग गई थी। ३ घन्टे का विश्राम करने की सूचना कर वैद्यजी बाहर निकले। रानी जी व कुंवरानी जी के आनन्द का पार न रहा। सारे नगर में खुशी

मनाई गई। रानी जी ने वैद्य जी का वारणा लिया। कुवरानी ने मनोमन नमस्कार किया। तिरछी नजर से भर पेट देखा भी। तीन घन्टे के बाद राजाजी की आख खुली। बहुत शाति महसूस हुई। रानी को पास बुलाया। रानी ने सब वृतात कहा। राजा ने वैद्यजी को बुलाकर प्रणाम किया। बहुत ही कृतज्ञ दृष्टि से देखा। ३ दिन मे राजा भले चगे स्वस्थ हो गए। वैद्यजी के सन्मान मे जुलूस निकाला गया। सब के सामने ही अपनी प्यारी राजकुमारी का विवाह वैद्यजी से कर दिया। ४ दिन तक बहुत आराम से रहकर वैद्यजी ने सीख मागी। राजा ने आधा राज्य देना चाहा। वैद्यजी बोले, "मुझे राज्य की इच्छा नही है। आपकी कृपा से मेरे यहा सब आनन्द है। राज्य की खट पट मे कौन कर्म बन्धन करे। अब आपका रोग शात हो गया है शासन देव ने चाहा तो आपके भी कुवर होगे ही। चक्रेश्वरी देवी की आराधना करे धर्म के प्रताप से सब आनन्द मगल होगा।"

राजा ने खूब धनमाल हाथी घोडे डायचे मे दिए। फौज पलटन नौबत निशान, सवार दिए। आनन्द पूर्वक जवाई बेटी को विदा किया। रास्ते मे पडाव डाला। वैद्य जी की छोलदारी अलग, कुवरानी जी की अलग। दिनभर साथ साथ चलते। रात को अलग अलग तबु लगते। कुवरी को कुछ भी समझ मे नही आया। रास्ते मे जो तीर्थ आते थे बडे उल्लास से वे यात्रा करते थे। यो सेठाणी सुनन्दा अपने घर से जाने के बाद ६ माह मे वापस आ रही थी।

ज्यों ज्यों देवकुलपट्टण नजदीक आता जाता था सेठाणी को घर वार की चिन्ता सताती जाती थी। मन में खुशी इसी वात की थी कि सेठजी के चारों वोल पूरे कर लिये है।

शहर से ४ कोसदूर के अंतिम पडाव में अपने और कुंव-रानी के लिए एक ही छोलदारी लगवाई। बड़े प्रेम से कुंव-रानी की पीठ पर हाथ फेरा। खूब प्यारसे स हलाया और अपनी संपूर्ण जीवन कथा उसे कह सुनाई। अपन दोनो बहने बनकर रहेंगी। घर की मालकन तुम्हें बनादूंगी। सेठजी १। साल वाद आवेंगे। तुम चाहे तो यहां रहो तुम चाहोतो कुछ दिन यहां रहकर पीयर चली जाना मैं आकर तुम्हें ले आऊंगी। तुम निश्चित रहो। कुंवरानी की सगीमां का देहान्त बच पन में ही हो गया था। धर्मपाल सेठ ने दीक्षा ली थी इस लिए रानीजी ने उसे बड़ा किया था। नौक-रानियों के लाड़ प्यार में और आज के लाड़प्यार में उसे बड़ा अंतर प्रतीत हुआ। आज् का प्यारा दिन उस के जीवन की निधि बनगया। वह बड़ी बहन के छातीसे लिपट गई और बोली "बहन मुझे अपनी आंखों से कभी दूर न करना। मै बिना मांबापकी बिना स्नेह की हूं। सेठजी चाहे कभी आवें तुम मुझे लाई हो मैं तुम्हारी हूं।"

अगले दिन देवकुलपट्टण में खुशी की खबर फैल गई कि सेठाणी अपने पीअर से अपनी छोटी बहन के साथ आई है। यात्रा करते करते आने से इतना समय लग गया है। सब तरफ आनन्द छागया।

सब मंदिरो मे बडी पूजा पढाई गई। गरीबो को मिठाई बाटी गई। घर घर लाणी फेरी गई। पीछे सब कामकाज आनन्द पूर्वक चल रहा था, यह जानकर सेठानी को शांति हुई।

राजा की तरफ से नजरबाग भेट मे मिला हुआ था ही। वहा सुन्दर कोठी थी। सुनन्दा और सुशीला दोनो सेठानियो ने वही रहना शुरू कर दिया। आमोद प्रमोद और नानाविध कलाकौशल्य से उनके दिन व्यतीत होते थे। सुनन्दा समझदार थी। गर्भ की रक्षापूर्णरूप से कर रही थी। उसका मन अपने पति मे लगा हुआ था। सुशीला बडे चाव से उसकी टहल बदगी करती थी। सुनदा की भावना धर्म के प्रति दिन २ बढती जाती थी। जो कुछ उसकी इच्छा होती सुशीला उसको पूरा करती थी। यो नौ महीने और साढे सात दिन बीतनेपर सुनदा के पुत्र पैदा हुआ। सेठानी के हर्ष का पार नही रहा। प्रबध ऐसा कर रखा था कि पुत्र जन्म की खबर कोठी के बाहर नही जावे। विश्वस्त दासी को गुरूजी की पोशाल मे नाम निकलाने भेजा। ११ मुहर और श्रीफल तथा सवापाच सेर गुड साथ भेजा। सेठानीने कहलाया "गुरूजी आपने जो भविष्य भाखाया वह सच्चा हुआ है मुझे आशीर्वाद देने उचित समय पर पधारना"। गुरूजी ने इष्ट लग्न लेकर कुडली बनाई। रेवती नक्षत्र के तीसरे पाये जन्म हुआ था। चद्र प्रकाश नाम आया। मीन राशी। सोने के पाये। कुटुब, पक्ष उत्तम सर्व प्रकार से आनन्द मगल। एक

वर्ष वाद पुत्र को पिता के दर्शन होंगे। आठ दिन का सूरज, सवा महीने की जलवा, सब पानड़ी में लिख दिया।

यथा समय सब विधि की गई। सूर्य पूजन की विधि कुल गुरू जी ने स्वयं ने जैन रीति से करवाई। माता पुत्र को आशीर्वाद दिया। दोनों ने गुरू जी को प्रणाम किया।

चन्द्र प्रकाश की पूरी संभाल रखी जाती है। सुशीला की आंखों का वह तारा वन गया है। यों लाड़प्यार में एक वर्ष बीतने आया था। सेठजी का कौल पूरा हुआ। तीन वर्प की अवधि पूरी होने आई थी।

मनुष्य का हृदय कठोर होता है। तीन वर्षो में सेठजी ने घर को याद भी नही किया। वे व्यापार धंधे में उलझे हुए थे। तीन वर्ष पूरे होते ही घर की तरफ रवाना हुए। घोड़े पर सवार होकर अकेले ही आ रहे थे। व्यापार का कामकाज मुनीमजी के भरोसे छोड़ आए थे। एक माह की मुद्दत देकर आए थे। ५-७ दिन में देवकुल पट्टण नगरी के नजदीक आ पहुंचे। सेठानी ने चौकीदारों को पहले से ही सावचेत कर दिया था कि दूर से आते ही सेठजी को नजरवाग में लाना। हवेली में न जाने पावें।

धन तेरस के दिन सुबह ही सुबह सेठजी घोड़े पर बैठे नगर के वाहर आते हुए नजर आए। सेवक सामने गया और निवेदन किया कि सेठानी जी ने आपके विश्राम का प्रबन्ध नजर बाग में कराया है। मुहुर्त से नगर प्रवेश करावेंगी। सेठ ने सोचा नजर बाग तो राजा का है, शायद

माग कर एक दिन के लिए लिया होगा। नजर बाग के एक किनारे वाले अतिथि गृह मे विश्राम व स्नान ध्यान भोजन का प्रबन्ध सेठजी के लिए था। सेठजी प्रबन्ध से बहुत प्रसन्न हुए। गुरुजी से मुहूर्त पुछाया गया, तेरस मध्याह्न का ही मुहूर्त था। सेठानी की ओर से सारी नगरी को जिमाने का स्वामीवत्सल भी आज ही था। राजा के बैंड बाजे और सुशीला सेठानी के यहा से आए बैंड बाजो से सेठजी का जलूस निकाला गया। राजा का पूरा रिसाला और खुद का पूरा लवाजमा साथ था। राजा साहब स्वय हाथी पर विराजमान थे। उनके पास ही केवल सेठ बैठे थे। दूसरे हाथी पर गुरुजी एक बालक को लिए बैठे थे। दो रथो मे दोनो सेठानिया थी पूरे बाजार से होकर जलूस सेठजी की हवेली पहुचा। राजा साहब भी आज वही पावने थे। राणी साहबा भी वन्दवग्गी मे पधारी थी। सब तरफ केवल सेठ की प्रशसा हो रही थी। सेठ को खूब आश्चर्य हो रहा था। इतने वर्षो मे कभी भी इतना मान पान नही मिला जितना आज मिला है। गुरुजी ने बालक को लाकर राजा को नमस्कार कराया, बाद मे सेठजी की गोद मे दे दिया। सेठ भौचक्का रह गया कुछ समझा नही। सबके मान सन्मान भोजन के पश्चात सेठ को विचारने का समय मिला। मैं तो यहा पाव जवार भी नही छोड गया था, यह सब कैसे हुआ। उसे मन ही मन पछतावा हो रहा था कि सेठाणी को मैंने कष्ट दिया। सध्या समय नौबत निशानो की कि धडिंग कि

धडिंग उड़ रही थी और रात को दीपकों की रोशनी की गई। पूरी हवेली चमक उठी। दीवाली के त्यौहार थे ही।

सेठजी के निज के शयन कक्ष में पलंग बिछाया गया समीप के दूसरे खण्ड में भी एक पलंग ढाला गया। सोने की पीलसोतों में इत्र के दीपक जल रहे थे। मसरू की तलाइयों के ऊपर रेशमी झूले वाली मच्छरदानियां लटक रहीं थी। यथा समय सेठजी पौढने पधारे। सेठानी सौलह शृंगार किये पहले से उपस्थित थी। सोने की थाली में सच्चे हीरों की आरती उतारी। घी का मंगल दीप जलाया और पैरों पड़ी। सेठ के हर्ष के आंसु दो मोती बनकर गुलाबी गालों पर बह निकले। सेठ का कंठ रुंध हुआ था। सेठानी ने पगचंपी की।

सेठ ने तीन वर्षो की खबर अन्तर पूछी। सेठानी ने बही खाता बताया। राजा के महल गिरवी का खत बताया नजर बाग इनाम में लिखा था। सदाव्रत दूना चल रहा है सुबह आप देख लेवे।

थोड़ी देर ठहर कर वह बाहर चली गई और गूजरी बनकर चन्द्रप्रकाश को साथ लेकर आई। सेठजी की पगड़ी और फतेपेच, चन्द्रप्रकाश के सिर पर था। अंगूठी व कटार उसके हाथ में थी। गूजरी को देखते ही सेठजी हक्का बक्का हो गए। यह गूजरी यहां कहां से आ गई। मेरा भंडा फोड हो जाएगा। राजा से आज मिली हुई इज्जत मे बट्टा लग जाएगा। वह घबरा गए तब गूजरी बोली, "औरतों

का कौन धणी है, पुरुष तो जहा तहा खट्टा मिठ्ठा दही खा आते है हम तो चार दीवारी मे बन्द रहती हैं। यह लो अपना लडका मैं चली अपने गाव। सेठजी झट खडे हुए और बाह पकडी। सेठानी हसदी। अब भेद खुल गया। सुनन्दा बोली तुम्हारा तीसरा वचन पालने को मुझे भैसे पालनी पडी और दूध दही बेचना पडा। ये सभालो अपनी चारो निशानिया। सेठ ने शाबाशी दी। चन्द्र प्रकाश को खूब प्यार किया। उसके मन की मुराद पूरी हुई।

रात एक पहर बीत गई थी। सेठ को नीद नही आ रही थी। सुनन्दा ने सेठजी का हाथ पकडा और सुशीला के खड मे धकेल आई। सेठजी भौचक्का हो गए। यह देवी फिर कौन ? सुनदा बाहर साकल लगा कर चली आई थी। सेठजी को पसीना पसीना हो गया। यह क्या आफत है। सुशीला जमीन पर बैठी बैठी शरमा रही थी। बाए पैर के अगूठे मे जमीन कुरेद रही थी। पलग पर बैठकर सेठजी ने उस अपसरा से पूछा तुम कौन हो यहा कब और कैसे आई। सुशीला ने धीरे धीरे शरमाते शरमाते सब हाल कह दिया। सेठजी की समझ मे अब आया कि मेरा चौथा बोल सुनदा ने पूरा करने के लिए इस मृग नयना को फसाया है। सुशीला ने अपने विवाह के समय सुनदा के हाथ मे खाडा रखने का भेद अब पाया। यो सेठजी ने धन तेरस के दिन, पुत्र-धन, स्त्री-धन, द्रव्य-धन और वचन धन को प्राप्त किया।

सुबह नहाधोकर गाजे बाजे से देवदर्शन करके तीनों जने अपने उपकारी गुरूजी मयाचन्दजी महात्मा की पोशाल में जा पहुंचे। गुरूजी को प्रणाम किया और कहा, "आपके उपदेश व आशीर्वाद से सेठानी ने तीन वर्षों में खूब ऋद्धि में वृद्धि की है। कुलदीपक भी जन्मा है। नई सेठानी भी आई है। राज्य सन्मान भी अधिक मिला है सब आपका आशीर्वाद है !" गुरूजी ने धर्मोपदेश दिया कि, "यथा शक्ति धर्म ध्यान करते रहो। देव गुरू धर्म पर श्रद्धा रखो। स्त्री जाति का आदर करो। अपने अपने पुण्य से सब को मिलता है। तुमने फूटी पेटी के सिवाय घर में कुछ नही छोड़ा था फिर भी जिनशासन देव की कृपा से नमस्कार मंत्र के प्रभाव से आनन्द मंगल हुआ। यह सब भक्तामर का पाठ का फल है।"

सेठजी ने गुरूजी की खूब भेट पूजाकी। और उन के वचनों के अनुसार चलता रहा और अपना जीवन सफल करता रहा। दूर के व्यापार को एक माह के बाद जाकर समेट आया खूब धन लाया। चन्द्रप्रकाश को छठा वर्ष लगते ही पोशाल में पढ़ने भेज दिया। वह भी मन लगाकर पढ़ता है यों पुण्य के प्रताप से सुनन्दा ने सब प्रकार से धर्म तथा व्रत की रक्षा की। यहां आने के दो साल बाद सुशीला के पिताजी का ब्राह्मण और नाई उसकी खोज करते करते आ मिले थे। उसके भाई जन्मा था। उसके भी गर्भ था अतः नाई ब्राह्मण के साथ वह वहां गई भी। सेठजी समय पर वापस ले आए थे। युवा होने पर चन्द्रप्रकाश बड़ा

सुशील निकला। गुरुजी के सुसस्कारो का उस पर पूर्ण प्रभाव पडा था। धीरे धीरे व्यापार और अन्य काम काज मे वह चतुर हो गया था। उसके दो अन्य भाई और हुए है। सुशीला के तीन पुत्र हुए है। पाचो भाइयो के प्रति उसका समान स्नेह है। सब को चन्द्र प्रकाश योग्य रीति से रखता है माता पिता की आज्ञा बरावर मानता है। अब सेठजी विशेषकर आराम ही करते है। यथा रुचि धर्मक्रिया करते है। सुशीला तो सुशीला निकली। सुनन्दा की तरह वह भी गाव की पूजनीय बनगई। सेवा भाव उस मे कूट कूट कर भरा है। किसी बात का उसे जरा भी अभिमान नही है।

यो पूरा परिवार आनन्दमगल मे रह रहा था। आवश्यकता पडने पर गुरुजी की सलाह ले लेते थे। राजाने अपने महल गिरवी से छुडा लिए थे। नजरबाग सुनन्दा को मिलाही था। यो धर्म के प्रताप से राजा प्रजा चैन करते थे। देव कुल पट्टणनगरी मे उस समय आनन्द ही आनन्द था। धर्मनीति पर चलने से सब सुखी होते हैं।

(देवकुल पट्टण वही आजका देलवाडा नगर है उदयपुर से १७ मील है, हमारी जन्म भूमि है। श्री लालजी महात्मा हमारे पिताजी हैं, दीपचन्दजी, हुकमचन्दजी, धर्मचन्द जी हमारे भाई है।)

अचम्बे का बच्चा-पद्मावती देवी।

शील धर्म की कथा

किसी नगरी में एक मदनसिंह नामक राजा था। नाम के अनुसार ही उसमें कामदेव के गुण थे। मित्र मंडली भी वैसी ही लंपटी मिली थी। राजा,वाजा और वांदरा जैसी संगति वैसा असर। सैर सपाटे, शिकार, नाच गान यही उनका नित्यकर्म था। नगर की सब सुन्दरियों को वह अपनी गिनता था। मौका मिला नहीं, कि येन केन प्रकारेण वह उन्हें महलों मंगा लेता था। प्रजा दुखी थी परन्तु सत्ता के आगे शाणपत नहीं चलती थी। सरस्वती साध्वी को बलजब्री से महलों में रखलेने वाले उज्जैनी नगरी के गर्धभिल्ल राजा का मुकाबला करने के लिए हर नगरी में कालिका चार्य नही होते हैं।

एक दिन राज पुरोहित की अनुपम सुंदर स्त्री पद्मावती अटारी पर खड़ी थी। स्नान के पश्चात वह बाल सुखा रही थी। अचानक राजा अपनी मित्र मंडली सहित उसी रास्ते से जा रहा था। उस चन्द्रानना को देखते ही राजा लालायित हो गया। साथियों ने आसपास के घर वालों से पूछा यह सुन्दर घर किसका है, जवाब मिला राजपुरोहित जी का।

राजा ने पद्मावती को वश करने का उपाय अपनी चण्डाल चौकड़ी से पूछा। वहा तो हरदम इसी प्रकार के काम होते

थे। फौरन लपटसिंह बोला हजूर, "पुरोहितजी से कहे कि १५ दिन मे अचवे का वच्चा लाकर दे। नही लाने पर सूली की सजा। राजा प्रसन्न हुआ। दूसरे रोज पुरोहितजी आशीर्वाद देने आए तो राजा ने आज्ञा सुनादी। पुरोहित जी चिंता के मारे मुह लटकाए घर आए। नई शादी थी। घर पर और कोई था नही, पन्द्रह दिन वाहर जावें तो पडितानी की सभाल कौन रखें। शहर मे गुण्डा राज्य हो रहा था। और राजा ने मगायी भी ऐसी चीज है जिस का नाम भी नही सुना। पडितानी से सब वात कही। पद्मावती समझगई कि राजा की नजर मुझ पर पड गई है। अचम्बा का वच्चा मुझे ही वनाना चाहता है खैर निपट लूगी। वह बोली, "आप चिंता न करें, मेरे पीयर आज ही पधार जावें, जाने से पहले राजाजी से १००००) रुपए मागे कि वस्तु कीमती है, वहुत खर्च व प्रयत्न से मिलेगी। पुरोहितजी को दस हजार रुपये मिल गए। राजा को खेत तो खोदना पडता ही नही था। जागीरी, लगान, कस्टम, टेक्स और जुर्माना की प्रथा में राज भण्डार खाली होने ही क्या लगा।

पुरोहितजी चले गए। तीसरे दिन राजा साहव ने दासी के साथ तरह तरह की मिठाई व बहुमूल्य वस्त्र भेजे। पडितानी ने सव रख लिए। पाचवे दिन फिर कुछ फल मेवा मिठाई और वस्त्र आभूषण भेजे। सव स्वीकार। सातवे दिन शाम को दासी आई और राजा साहव मुलाकात को पधारना चाहते है आप नाराज तो नही होगी। पद्मावती

ने जवाब दिया, "मैंने जब से राजा साहब को देखा है तड़प रही हूं। अभी मेरे व्रत चल रहे हैं आज से पांचवें दिन संध्या के पश्चात राजा साहब अकेले ही पधारें।" राजा की बांछे खिल गईं। खुशी का पार नही रहा। पांचवें दिन बहुमूल्य भेंट लेकर वेष बदलकर अंधेरा होने पर राजा साहब पधारे। पंडितानी ने स्वागत किया, सेज पर बिठाया भोजन जिमाया और २-४ मीठी मीठी बातें कहीं। पंडितानी कुशल थी। उसने सब भेंट स्वीकार की और कहा कि आप परसुं पधारिएगा आज तो मुझे आवश्यक काम से देवी पूजन को जाना है। अब मैं आपकी हूं। पंडित जी को मैं नहीं चाहती हूं, मुझे खूब मारते है लड़ते झगड़ते हैं। राजा ने हजारों का नौसर हार भेंट किया और रस्ता नापा।

आज पन्द्रहवां दिन था। अचम्बा का बच्चा लेने गए पंडितजी आज एक पहर रात जाते आवेगे और उससे पहले संध्या समय राजा साहब पधारेंगे।

पंडितानी ने कल ही एक बंदर पकड़ने का पिजरा, पतले गुड़ की कोठी और पीजी हुई पच्चीस सेर रुई मंगा रखी थी।

ठीक समय राजा साहब पधारे। पदमावती ने हंस कर स्वागत किया। पलंग पर बिठाया। राजा बेकाबू हो रहे थे। छेड़ छाड़ करने लगे। पंडितानी बोली उधर कमरे में स्नान कर आइये हौज भरा पड़ा है, लगाइये चमकी, जल्दी

कीजिए मै भी तैयार हो जाती हू । राजा तो कामाव हो रहे थे। पतले गुड मे मारी डुवकी। गुड चिपक गया। चिल्लाए अरे जरा इधर आना, इतने मे दरवाजे पर किसी ने आवाज दी। राजा बोले कोन होगा। ब्राह्मणी वोली मेरे पति आए होंगे। राजा घवराए। अब क्या होगा। पद्मावती वोली। मैं कहू सो कीजिए। आइये इस छोटे कमरे मे छुप जाइये अंधेरे मे पीजरा कमरा दीख रहा था। वहा पहले ही रुई विछा रखी थी। राजा के तन मे सब रूई चिपक गई। घर का दरवाजा खोलते ही पुरोहित जी अन्दर आगए। विश्राम के पश्चात स्नान भोजन कर खैर खवर पूछी। पद्मावती ने सब समाचार कह दिए और सब भेंटपूजा आभूपण आदि पडितजी को वता दिये।

सुवह पौफटते ही नगर मे ढिढोरा पीटा गया कि राज पुरोहित जी अचवे का वच्चा लेकर आगए है। आठ बजे जलूस के साथ राजमहल मे उसे ले जाएगे। सब नरनारी देखने आवें। पुरोहितजी ने दीवान जी से गाजा वाजा भिजाने का हुकम हासिलकर वाजा, गाजा मगा लिया था। थोडे सिपाही भी आगए थे।

पीजरे मे वद रूई से लिपटे हुए राजा साहव की आज खैर नही थी। उन्होंने कितनी ही स्त्रियो के शील लूटे थे आज सव का वदला एक साथ मिलने वाला था। उधर राजमहल मे राजा माहव का पता नही था। रानी जी,

दीवानजी जागीदार मुसाहिव सव चिन्ता कर रहे थे। दीवाने आम भरा था। सिंहासन खाली था। उधर नोबन निशान के साथ वाजते गाजते पुरोहित जी अचंबे का वच्चा लेकर आरहे थे। अपार भीड़ थी। नई चीज को देखने के लिए वूढ़े तक लकड़ियों के सहारे चले आ रहे थे। राजमार्ग में एक पीजरा चला आ रहा था। एक वैल जुता हुआ था। नगर के वच्चे तालियां पीट रहे थे। युवक लोग मजाक कर रहे थे। बूढ़े बूढ़ी हैरान थे कि यह है क्या चीज, कौन से जनावर का यह सफेद वच्चा है, हमने आज तक कभी देखा नही। जानवर है तो पूंछ क्यों नही। सब आकार तो मानव का है।

पद्मावती फौरन छोटे रास्ते से राजमहल में रानीजी के पास जा पहुंची। रानीजी उदास थीं। आज अजब चीज आ रही है, राजा साहब होते तो वे भी देखते पर वे हैं कहां, बिनाही कहे कही पधार गए। दिन में वे चाहे कही पधारते है तो भी रात तो अवश्य महलों में बिताते है। रानी जी के आंसू पद्मावती सह न सकी। बोली आप एक वचन दे तो मैं राजा साहब का पता वता सकती हूं। रानी को धीरज बंधी। पूछा क्या वचन है। पद्मावती वोली मेरे सब अपराध क्षमा करें तो बता सकती हूं। रानी ने वचन दिया। पद्मावती ने सब वृतांत कह दिया और कहा कि बाजते गाजते पीजरे में बन्द अचम्बे का बच्चा और कोई नही राजा साहब ही है। आप जल्दी से स्नान व पोशाक का प्रबन्ध घोड़े की पायगा

मे करे। मैं सब समेट लेती हू । चार दासियो को साथ लिए पद्मावती राजमहल के आँगन मे जा पहुची जुलूस वहा तक आने ही वाला था। पास मे घोडो की पायगा थी। दासिया गरम जल व राजा के वस्त्र आभूपण लिए वहा तैयार खडी थी। परदा डाला गया। पिंजरा पाएगा मे ले जाया गया। दासियो को लेकर पद्मावती चली आई और रानीजी को भेज दिया। राजा ने स्नान किया। गरम जल से गुड छूट गया। राजा ने पोशाक धारण की और राजा रानी गुप्त मार्ग से शयन खण्ड मे जा पहुचे। वहा से छडीदार छडी पुकारता हुआ खमा खमा के फटकारे लगाता हुआ राजसिंहासन तक आया। दरबार भरा हुआ था। दीवाने आम मे राजा साहब विराजे। सब ने मुजरा किया। राज पुरोहित जी ने आशीर्वाद दिया। राजा साहब ने सन्मान के साथ सिरपाव दिया जागीरी दी और कहा कि मगाई वस्तु आपही ला सके शाबाश है। दरबार बरखास्त करने के बाद राजाजी पुरोहितानी पद्मावती के चरणो मे गिरे। क्षमा मागी। उसेअपनी धर्म बहिन बनाई और जीवन मे कभी भी ऐसा दुराचारन न करने की प्रतिज्ञा ली । जो भेट वस्त्र आभूपण राजाजी ने भेट किए थे वह पद्मावती रानीजी के पास लाई थी। राजारानी ने राखीबधाकर उसमे और भी वस्तुए मिलाकर बहिन को वापस दे दिए। अचवे के बच्चे का भेद आजतक किसी को मालूम न हुआ। आप भी पेट मे ही रखिए। अलबत्ता राजा की चडाल चौकडी

को देश निकाला दिया गया। नगर में शांति छागई। राजा के बरताव में खूब अतंर पड़ गया। न्याय व शील का साम्राज्य फैल गया।

एक सतवंती नगरी को तारे,
एक पापिनी मजधार डुबारे ॥

——

तप धर्म पर दृष्टान्त

प्रियदर्शना राजकुमारी

नचिते सुए कुमारडी चोर न मटिया लेय ।
पैरो बांधी गधेडिया लग्गड सिराने देय ।।१।।

कै सोए योगी अवधूत कै सोए चक्रवर्ती का पूत ।
कै सोए चतुर नारी का भरतार लिखने वाला बडा गवार ।२।

बसतपुर नगरी के भुजबल राजा के दो रानिया थी । दोनो के एक एक कन्या साथ साथ जन्मी थी । अवस्था आने पर उन की शिक्षा का प्रबंध किया गया । बहुत ही लाड प्यार से उन्हे धायमाताए बटा कर रही थी । राजा न्याय प्रिय था अत प्रजा की दशा जानने के लिए वह रात को वेश परिवर्तन कर नगरचर्या देखने जाया करता था ।

एक रात को शहर कोट के बाहर वह जा पहुचा । एक कुम्हारिन सो रही थी । नींद मे खर्राटे ले रही थी । इतनी गुरु री नींद तो रानी को भी नही आती है । राजा ने जेब मे से चाक निकाला और चद्रमा की रोशनी मे दरवाजे पर लिखा -

नींचते सुए कुमारड़ी चोर न मटिया लेय ।
पगके बांधी गधेड़िया लग्गड़ सिराने देय ॥

राजाकी छोटी लड़की प्रियदर्शना भी घोड़े पर चढ़कर घूमने फिरने जाया करती थी । रात को वह भी गश्त लगाती थी । राजाजी एकांतरे गश्त में जाते थे । मौका देखकर वह भी ले घोड़ा निकल पड़ती थी । इस तरह एक दिन पिता गश्त करते थे दूसरे दिन वेटी गश्त करती थी ।

गश्त लगाते लगाते वह उसी दरवाजे पर जा पहुंची । आज भी वह कुम्हारिन कल की तरह सो रही थी । उसने विचार किया, विचारी कितने दुःख से सो रही है । गधे के हिलने से इसकी टांगे खींची जाती है । सिराने लग्गड़ चुभ रही है । चारों तरफ वर्तन रखे है, करवट वदलने की जगह भी नहीं है, विचारी दुखियारी है । इतने में उसकी नजर दरवाजे पर लिखे दोहे पर पड़ी । उसे गुस्सा आया उसने दोहे के नीचे लिखा :-

कै सोवे योगी अवधूत कै सोवे चक्रवर्ती राजा का पूत ।
कै सोवे चतुर नारी का भरतार लिखने वाला बड़ा गंवार ।

दूसरे दिन फिर राजा गश्त लगाता लगाता वहाँ जा पहुंचा । अचानक उसकी नजर दरवाजे पर पड़ी । अपने दोहे के नीचे दूसरा दोहा देखा । उसे वड़ा क्रोध आया । मेरी बात को काटने वाला दो माथों वाला यह कौन है ?

राजमहल मे आकर एक सिपाही को उस दरवाजे पर तैनात किया और हुकम दिया कि, वह दोहा लिखने वाले का पता लगाए। जरूर लिखने वाला २-४ दिन मे इधर आएगा और यहा खडा रहेगा।

आज कुवरी का ओसरा था वह गश्त लगाती २ यहाँ आई और बडे ध्यान से दरवाजे के पास गई और जाच की कि मेरे दोहे का किसी ने जवाब तो नही दिया है। दो मिनट वहा ठहर कर वापस चली गई। सिपाही भी आड मे से निकल कर पीछा करता करता राजमहल के दरवाजे तक जा पहुचा। आगे जनानी ड्योढी थी। वह नहीं जा सका। सुबह राजा से अरज की कि लिखने वाली आपकी कुवरी साहबा हो सकती है कल रात तो वहा आकर जाच कर रही थी।

राजा को गुस्सा आया, मेरी बेटी ही मेरी बात काटती है। कुवरी को बुलाया। उसने लिखना स्वीकार किया और कहा कि मेरा लिखना ठीक है, आप खुद ही परिस्थिति देख आए है गधा टागे खींचता है, सिरहाने लक्कड चुभती है। करवट लेने पर बदन पट पट टूटते है, मच्छर अलग परेशान करते है, यह भी कोई सुख की नींद है। राजा जिद्दी और अभिमानी होते ही है सत्ता मे यही तो बुराई है कि मेरा जो सच्चा। सेवा मे यही भलाई है कि सच्चा जो मेरा। राजा ने उसे कहा कि मेरी बात तो तू काटती है, बडों की बात काटना ठीक नहीं। कुवरी भी जिद्दी थी बोली मुझे समझा तो दीजिए मेरी भूल है कि

नही। राजा चिढ़ गए। कुछ वोले नहीं। वड़ी कुंवरी का व्याह अच्छी जगह ठाठ से कर दिया। छोटी लड़की उनकी वैरण है इसलिए इसे पूरा मजा चखाना पड़ेगा। लड़की भोली थी पढ़ाने पंडित जी आते थे। नवकार मंत्र की महिमा का पाठ उसे खूव पसंद आया था। श्री पाल और मदन सुंदरी की कथा उसे वड़ी प्यारी लगती थी। नवपद जी में तपपद का महात्म्य रोचक ढंग से गुरूजी ने सिखाया था। वह अभी १४ वर्ष की ही थी तो भी सव कला में होशियार हो गई थी। हाथ से कामकाज कर स्वावलंवी वनने में उसे मजा आता था।

राजा ऊपर से प्रसन्न थे अंदर से लड़की से जलते थे। एक दिन नाई ब्राह्मण को वुलाकर इस कुंवरी के लिए वर ढूंढने की आज्ञा दी कि "कोई ऐसा मनुष्य देखो जिसके न घर हो न बार, न मां हो न वाप, ऊपर आकाश नीचे धरती, न सगा न सोई रोग से लाचार हो, खाने को नसीव न होता हो। दूर दूर भी जाना पड़े तो जाओ और ४-६ महीने भी लगजाएं पर काम करके ही वापस आओ। खरची लेते जाओ"।

निदान नाई ब्राह्मण गांवों गांव ढूढते फिरे। वैसी हालत वाला कोई न मिला। घूमते घामते गांवों गांव की धूल फांकते उन्हें आज सात महीने पूरे होगए है। नित उठते ही कुंवरी को गाली का आशीर्वाद देते है कि रांड़ हमारे पाये ही जन्मी हमारे पिछले भव की वैरिणी सात

सात माह से भटका रही है कोई ठाला भूला ठठकारे का काका भी न मिला। न मालूम और कितना भटकाएगी। यो वाते करते करते वे एक गाव के वाहर जा पहुचे। प्यासे थे। पनिहारे की वावडी पर जा पहुचे। वहा औरने पानी भर रही थी। नाई वोला "ला मेरी जामण पानी तो पिला, राड अभागणी की साढे सती कव पूरी होगी"। एक स्त्री ने पानी पिलाया और पूछा कहा रहते हो, ऐसी क्या मुसीवत तुम पर आई है। ५-७ औरतें पानी भर रही थी, सव ठहर कर सुनने लगी व्राह्मण ने सव वात कह सुनाई। गट्टु और मट्टु वोल उठी तुम्हे चाहिए वैसा आदमी वह पडा है वृक्षके नीचे, चलो हमारे साथ। सव साथ मे आई। देखा कि एक अधेड आदमी सुस्तसा छाव मे पडा है। मक्खियाँ भिनभिना रही हैं हाथ पैर गल गए हैं पेट वढा हुवा है। शरीर काला पड गया है। रभा ने कहा कि २-३ साल पहले यह यहा आया था यही विश्रामकर नाश्ता किया, मैंने पानी पिलाया था। तव से यह यही पडा है न मालूम इसे क्या हो गया। मुझे तो राजपूत वताता था। अव इसकी हालत और विगडगई है हम ३-४ औरतें सुवह पानी लेने आती है तव इसके लिए कुछ खाने को लाती है और उस खोखल मे से निकालकर इसे जमीन पर विठादेती है शामको वापस खोखल मे रख जाती है विचारा दुखी है न मा है न वाप है न सगा न सवधी। नाई व्राह्मण को सतोष हुआ। वे वहा से रवाना होकर १५-२० दिन मे वसन पुर जा पहुँचे। राजासे सव वृतात कह सुनाया। राजाने एक पालकी तैयार कराई

नाई ब्राह्मण को साथ देकर कुंवरी को विदा किया, रानी खूब रोई पूछाताछा पर रूठा राजा और बिगड़ा ऊंट कोई अंतर नही। रानी ने चुपके से गहने दिए, कुंवरी ने लौटा दिए। न रोई न चिल्लाई। भगवान का नाम लेती हुई, रवाना हुई। १५ दिन के बाद उसी वृक्ष के नीचे तीनों आ पहुंचे। सुबह पनिहारियां पानी भरने आई। रथ और घोड़े देखे, एक सुन्दर राजकुंवरी को भी देखा। पास में आई। सब समझ गई। एक महीने के पहले की बात याद आ गई। औरते खूब रोई, क्यों बिचारी का भव बिगाड़ते हो, मुरदे के गले मे मोती की माला क्यों पहनाते हो, काग के गले हंस क्यों फांदते हो। वहां सुनने वाला कौन? नाई ब्राह्मण ने थोड़ी लकड़ी और कुछ छाणे इकट्ठे किये। अग्नि की साक्षी से उस लड़की को वृक्ष की खोखल में बैठे हुए यमराज के महमान के साथ सात फेरे फिरा दिए। जाते जाते दया के मारे नाई ब्राह्मण भी रोने लगे। चिट्ठी और चाकर, जो कहे सो कर। बेटी और बैल जहां दो वही जाना पड़ता है। लड़की ने रथ के साथ अपने वस्त्र और सोने के दो चार आभूपण जो उस के पास थे सब अपने पिता को भेज दिए। मात्र लाज रखने को एक साड़ी रखी। आज उसकी और उसके कथित पति की दशा थी:-

आगे हाथ पीछे हाथ; रक्षा करे गोरखनाथ।

वह हिम्मत वाली थी। पति को वृक्ष की खोखल मे से निकाला। धूप मे लिटाया। गाव की औरते पानी भरने आती जाती थीं उनसे प्रेम पूर्वक बोली कि बहनो जरा सभाल रखना मैं आती हू। जरा दूर जगल मे जाकर लकडी उपले कडे बीन लाई और गाव मे जाकर बेच आई। लौटते समय आटा दाल लेती आई खाना बनाया, भगवान का नाम लिया ओर पति को गरम गरम रोटी दाल मे मिलाकर अपने हाथ से खिलाई। खुद भी खाना खाकर पास पडी रही। वृक्ष सडक के नजदीक था। रात भर रस्ता चलता रहता था, बावडी पास थी। राहगीर आते रहते थे, विश्राम भी करते थे अत डर किसी बात का न था और तो कुछ नही मात्र जगली जानवरो का भय था। वह सावधान थी। रात को पति को खोखल मे बिठा देती। खुद चौकी करती थी।

सुबह जल्दी उठकर लकडिया बीन लाती, बेचकर, आटा सामान लाती, खाना बनाती और पति की सेवा करती। हमेशा आने जाने वाली स्त्रियो के साथ उसका मेलजोल हो गया था। अब उसे सीने पिरोने का काम मिलने लगा, किसी का कब्जा तो किसी का लँहगा सी रही है किसी की साडी के किनारी लगारही है तो किसी के लहगे मे फूल भर रही है। कसीदे का सुन्दर काम, भरत की अनोखी कला वह जानती हे। उसे काम मिलने लगा। बोली मीठी, बरताव अच्छा, खानदानी प्रकृति। धीरे धीरे गाव के लोगो का

इससे सहानुभूति होने लगी। वह हमेशा अपने यहां आग और पानी रखती थी। आने जाने वाले पानी पीते, वीडी तम्वाकु पीते और दो मीठी मीठी वाते सुनते। देखते ही देखते सवकी सहानुभूति से वहां एक झोंपड़ी खड़ी हो गई। गाँव के छोटे छोटे वालक वहां पढ़ने आने लग गए। यों उसका गुजारा आराम से चलने लग गया। वह पति के शरीर पर मालिश करती, दवा दारू करती पर कुछ असर नही होता था। शरीर सुधरता नहीं तो विगड़ता भी नही था।

यों वैशाख से आसौज आ गया। अव उसका धैर्य टूट रहा था। "मां न मां का जाया देश ही पराया"। उसकी जीभ में अमृत था इसलिए सब गांव वाले उसे चाहने लग गए थे। भार वोझ तो उठाया जा सकता है, वाकी रोग शोक तो खुद का खुद को भुगतना पड़ता है। दु.ख में राम याद आते ही है। नवरात्री के दिनों में राम धुन व रामायण का पाठ लोगों को करते सुनती थी। अचानक उसे सिद्धचक्र की आराधना करने की भावना हुई। गुरांजी का पढाया हुआ सारा का सारा श्रीपाल चरित्र उसके सामने आ गया। उसके रोम रोम में स्फूर्ति व आशा फैल गई।

आसोज सुद सातम से पूनम तक नौ दिन आयंबिल किए। श्रीपाल की कथा पढ़ी और पति को सुनाई। गाव में जाकर नवपदजी की पूजा कर नमण लाती और पति के शरीर पर छिटकती। ज्यों त्यों कर दीवाली नजदीक आ रही थी। उसने अपने मन को वज्र सा कठोर कर लिया था।

मुख दुख मे कोई भेद ही न रखा था। कर्त्तव्य पालन ही उसका ध्येय था। पति सेवा ही उसका धर्म था।

धन तेरस की रात थी। उसने भी अपनी झोपडी मे दीपक प्रगटाए। प्रभु का नाम लिया। पति को प्रणाम किया अचानक पिछली वातें याद आ जाने से उसकी नीद हराम हो रही थी। विस्तर पर वेचेन थी। नीद हराम थी।

वाहर कुछ फुकार की आवाज हुई वह दरवाजा खोल कर वाहर निकली देखती क्या है कि एक नागदेव फन फैलाए वृक्ष की जडो के पास वैठे है सिर पर मणि चमक रही है। वह चुपचाप दरवाजा खुला छोड कर एक ओर वैठ गई। नवपद का ध्यान धरने लगी। इतने मे सर्प वोला, "है कोई मानवी जो इस पापी को सजा दे। तीन वर्ष पहले मैंने इसका पीछा किया था, यह डर के मारे भागा आ रहा था, विचारे राजकुमार ने दया कर इसे अपने थैले मे छुपाया था इसे मैंने नही देखा और मैं आगे चला गया। राज कुमार ने थैला दूर रख कर विश्राम किया, थकावट से उसे नीद आई और तू नुगरा इसके मुह से पेट मे घुस गया। तीन दिन की खट्टी छास कोई पिलावे तो टुकडे टुकडे होकर टट्टी के रास्ते निकल आवे। कचनपुर के राजा राणी तेरी पूजा करते थे एक दिन दूध पिलाने मे जरासी देरी हुई और तू ने उन दोनो को काट खाया।"

पेट वाला सर्प वोला, 'मैं तो नुगरा और तू बडा सुगरा। है कोई मानवी जो इस पापी की वावी मे गरम गरम तेल

उंडेले और इसे मारकर हीरे मोतियों के चरू लेलें ।" वाहर वाला सर्प बोला," "अरे ठहर मुझे मराने वाले तेरी खबर लेता हूं तू जरा वाहर तो निकल, बिचारे राजकुमार का खून पीकर ताजा हो गया है" । फुंकार पर फुकार होने लगी। प्रियदर्शना कुछ डरी पर करती क्या। इतने में उसकी झोंपड़ी में सन्नाटे की आवाज हुई। फन फटकारता फुंकारे करता हुआ एक काला नाग सरर सरर करता बाहर निकला। वह झट से अन्दर आ गई। किवाड़ वन्द किये, नीचे छेदों में कपड़ा लगा दिया। ऊपर वाले छेद से वाहर झांकी तो दोनों सर्प फन फैलाकर लड़ रहे थे। ऐसी भयंकर लड़ाई उसने कभी नहीं देखी थी। लड़ते फुंकारा करते फन पटकते वे दूर दूर भगे जा रहे थे। दोनों की मणियां चमक रही थीं। रात अभी दो घंटा बाकी थी। उसे नींद नहीं आई। दीपक की रोशनी में उसने अपने पति को देखा तो बिलकुल अचेत पाया, शरीर ठन्डा पड़ रहा था। उसने आग जलाई, तेल गरम किया हाथों व पैरों में तेल की मालिश की। शरीर को गरम किया। यों करते करते दिन उग गया। दोनों सर्प लड़ते झगड़ते दूर जा चुके थे।

सुबह उठते ही उसने अपने पति को कुछ स्वस्थ पाया। पति की असली बिमारी का रात को उसे पता लगा था और यह जानकर कि वह राजकुमार है उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।

खट्टी छास माग कर प्रियदर्शना ने अपने पति को पिलाई, दो तीन दिन में विष का असर जाता रहा। वह

धीरे धीरे स्वस्थ होने लग गया था। वट वृक्ष के नीचे वाले विल का वह पूरा ध्यान रखती थी। उसने धीरज से काम लिया।

आज दीपमालिका थी। लक्ष्मी देवी की पूजा का दिन था। उसने भी घी का दीपक जोया। १२ दिये कच्चे और १३ दिये पक्के सजोए। अपने पति के चरणो मे बैठ कर लक्ष्मीदेवी की पूजा की। मन प्रसन्न था। पिछली रात को उसने वृक्ष के विल को खोदना शुरु किया। दिन का वह काम नही था। दीवाली होने से राहगीर भी नही थे न बावडी पर किसी का पडाव था घरबार वाले तो अपने बाल बच्चो के साथ ही निजि घर पर दीवाली मनाते है। दीवाली अपने घर पर ही मनाने का सौभाग्य है।

२–३ हाथ खोदते कुदाली टन से बज उठी। फावडे से मिट्टी अलग की। पति दीया लिए पास खडे थे। नीचे की जगह पोची थी। फावडा चलाते ही मिट्टी अलग हो गई। चार बडे बडे पीतल के घडे रखे थे। मुह पर मिट्टी लगीथी। हिम्मत और ताकत से प्रियदर्शना ने क्रमश चारो को झोपडी मे ला रखा। खड्डे को आसपास की मिट्टी से भर दिया और इतमिनान से झोंपडी मे दोनो चले आये, किवाड बन्द कर दिए।

घडो के मुह की मिट्टी हटाई। ढकने हटाए। एक के अन्दर हीरे चमक रहे थे, दूसरे मे मुहरें थी। तीसरे मे चादी के सिक्के थे, चौथे मे फिर मुहरें निकली। पति पत्नि

ने प्रभु को नमस्कार किया। संतोष की सांस ली। कई वरसों बाद सागर कन्या का पाताल लोक से उद्धार हुआ। सारी रात लक्ष्मीदेवी की पूजा हीरों और मुहरों के थालों से की। अखंड जोत घी की रखी। नवपदजी का ध्यान धरा। दोनों के हर्ष के आंसू रुकते नहीं थे। दोनों ने प्रथम बार प्रेमालिगन किया। अभी तक विवाह की विधि बाकी थी। घड़ों को झोंपड़ी में डाट दिया।

प्रातःकाल नित्यकर्म से निपट कर दोनों साथ साथ पालकी मंगाकर जिनालय में पूजा करने गए। बाहर निकल कर शासन देवी देवता के समक्ष एक दूसरे का हाथ पकड़ा और गृहस्थ धर्म की प्रतिज्ञा ली। नवपदजी का नमन सिर आंखों चढ़ाया और घर चले आए।

राजकुमार का स्वास्थ्य धीरे धीरे ठीक हो रहा था। प्रियदर्शना ने पति सेवा में कोई कसर नहीं रखी थी। वह पति को परमेश्वर मानती थी। गृह लक्ष्मी और स्वर्णलक्ष्मी के कारण उसके स्वास्थ्य में दिनों दिन तरक्की होती गई। एक माह में वह सुंदर, सुदृढ़ सुकुमार प्रतीत होने लग गया। गांवों वालों को अचम्भा हुआ। सब तरफ प्रियदर्शना की प्रशंसा होने लगी सति की महिमा बढ़ी।

राजकुमार ने अपनी जीवन कथा पत्नि को सुनाई कि, यहां से २५ योजन दूर कंचनपुर नामा नगरी है मैं वहां का राजकुमार सूरसेन हूं। हमारे यहा एक काला नाग कभी कभी नजर आता था। पंडितों ने कहा कि ये आंपके घर के देवता हैं इन्हें दूध पिलाया कीजिए। मेरी माता सदा

घर मे दूध रखने लगी। सर्प देवता भी अव हमेशा आने लगे। एक दिन विल्ली ने दूध ढोल दिया,। कुछ देर वाद नाग देवता आए। दूध नही मिला तो मारे क्रोध के पहले मेरी माता को, पीछे मेरे पिताजी को काट खाया।

"जात जमाई भानजा सर्प सुई सुनार। एता कवहु न आपणा कर देखो उपकार" मै उस वक्त अपने मामा के यहा गया हुआ था। घुड सवार मेरे ननिहाल आया और मामाजी को सूचित करते ही वह फौरन लौट गया। मैं उस दिन कुछ दूर के जगल मे शिकार करने गया था। दूसरे दिन मैं घोडे पर वैठ कर घर रवाना हुआ। इसी वावडी पर पानी पीया इस वृक्ष के नीचे विश्राम किया, इतने मे एक सर्प मेरे पास आ गया मैं डरा परन्तु सर्प चुपचाप मेरे थैले मे जा वैठा। मैंने कुछ भी नही किया। इतने मे एक और सर्प पास होकर निकल गया। मैं थकावट के मारे जरा लेट गया। वाद मे क्या हुआ सो मालूम नही। मुझे चक्कर आने लगे। मैं यहा से उठ नही सका। घोडा भाग गया धीरे धीरे मेरे पूरे अग मे सुस्ती छाने लगी। गाव की औरते दयाकर मुझे कुछ खिला जाती थी मेरा अन्न छूट गया। हाथ पैरो मे से चेतनता जाती रही मैं इस खोखल मे पडा रहता था। मेरे भाग्य देवता दो साल वाद तुम्हे यहा लाये। तुमने जीवन दान दिया तुम मेरे लिए साक्षात जीवन दाता हो, लक्ष्मी हो। पिताजी के राज्य का क्या हुआ सो पता नही।

अव तुम अपनी कथा कह सुनाओ। राजकुमारी ने शुरु से अन्त तक सव घटना कह सुनाई। अव यहाँ रहने की

जरूरत नहीं थी। उनके पास धीरे धीरे सामान भी काफी हो गया था। यहां से चलने का पूरा इरादा कर लिया था। एक उत्तम जाति का वड़ा घोड़ा खरीदा, दो वैलगाड़े खरीदे। एक रथ खरीदा और ठीक दिन देखकर चल पड़े बसन्तपुर नगरी की ओर। जव नगरी दो योजन दूर रह गई तब पास के एक छोटे गांव में जाकर रुके। तम्बू डेरा डालकर वही रात रहे। दूसरे दिन गांव में मकान किराये से रखा और वहीं निवास किया।

राजकुमार को तरह तरह से समझा बुझा कर बसन्त पुर नगरी के राजा की सभा में भेजा। राजनीति सीखाना और राजा से मेल झोल बढ़ाना उसका उद्देश्य था। वह हमेशा महलों में जाता और मुजरा कर आता कुछ दिन बाद राजा ने उसे पास बुलाया और नाम पता पूछा नाम सूरसेन और नगरी कंचनपुर वताई "आज कल यहां से दो योजन दूर के गांव मे खेतीवाड़ी करता हूँ। राजा ने हमेशा आने और बैठक में भाग लाने की अनुमति दी।

राजकुमारी वेष बदल कर वसंतपुर में गई और अच्छे अच्छे होशियार कारीगर ले आई। एक चतुर मिस्तरी से अपने पिताजी के महल के जैसा का जैसा नक्शा वनवाया और शुभ मुहूर्त में काम शुरू कराया। यहां भी गांव मे खेती व व्यापार शुरू कर दिया था लक्ष्मीजी पहले से प्रसन्न थीं। १२-१५ माह में महल खड़ा हो गया। ठीक बसन्तपुर नगरी जैसा महल। धीरे २ उसके देखा देखी

अन्य व्यापारी भी आ बसे। कारीगर मजूर वही रहनेलग गए । गाव- धीरे वडा होने लगा वाजार चौहटे वाग वगीचे सव वसतपुर के समान ही वनने लग गए। दो साल पूरे होते होते तो वह एक सुन्दर विशाल नगरी वन गई सबने नगरी का नाम रखा मुदर्शना। सूरसेन ने नए महल मे प्रवेश किया।

राजकुमार मूरसेन वहुत गुणी और सभा चतुर हो चुका था। राजाजी उसे हमेशा अपने साथ रखने लगे। एक दिन शेर का शिकार करते राजाजी का निशाना चूक गया। शेर व शेरनी दोनो दहाड मारकर आ झपटे। राजाजी ने तलवार निकाली निकाली, जितने तो शेरनी ने आ पकडा। सूरसेन ने फुर्ती से वाए हाथ की पिस्तोल से शेर को और दाए हाथ खजर के से शेरनी को ठिकाने लगा दिया। राजाजी की जान वची। राजा ने वहुत ही कृतज्ञता प्रगट की, सूरसेन ने घर जाकर आज की सव घटना कह सुनाई।

दूसरे दिन राजा साहव ने दरवार भरा और कल की घटना जाहिर की। जवा मरद मूरसेन न होते तो आज आपका सिंहासन खाली होता। दोनो हाथो मे दोनो शेर शेरनियो का शिकार करने वाला यह कोई विरला नर पुगव है। मै इन्हे अपना युवराज वनाना चाहता हू। राजा के कोई कुवर नही था। सवने तलवारें ऊची करके इस वात को मंजूर किया।

अव सूरसेन ने विनय से निवेदन किया कि हजूर का फरमाना दुरूस्त है तो भी घर जाकर ठकराणी से सलाह कर, अर्ज करूंगा। घर जाकर सलाह हुई। दूसरे दिन फिर राजदरबार भरा। सूरसेन ने अर्ज की कि हजूर और राणी साब तथा हजूर के भाई बेटे सभी सरदार मुझ गरीब की झोंपड़ी को पवित्र करें यह ठुकराणी ने अर्ज कराया है बाद में जो हुकम रावल होगा वह हमें मंजूर है। हम आपके फरमाबरदार है।

राजा साहब ने १० दिन बाद वहाँ पधारना मंजूर फरमाया। तड़ा मार तैयारी होने लगी। सव के रूतवे के माफ़िक बिछात, वर्तन पाटले आदि का प्रबंध किया गया। पूरा राज महल मय दास दासी के; पूरी वंसत्त पुर नगरी की छत्रीस ही जाति के नर नारियों को निमंत्रण दिया गया था। आने जाने के लिए सवारी का प्रबंध रखा गया था। सब तैयारी पूरी हुई। दसवें दिन अलस सुवह सूरसेन जाकर राजा साहब को मुजरा कर समय पर पधारने की विनति कर आया था और अपने दो विश्वस्त नौकर वहां छोड़ आया था।

प्रियदर्शना ने महल को खूब सजाया। पति के पौढने के लिए राजसी ठाट जमाया नौकर चाकर दास दासी सब को सावधान कर दिया।

राजा साहब ने प्रियदर्शना नगरी में प्रवेश किया। भौचका रह गए। वे देख रहे हैं कि यह तो बसंतपुर जैसी नगरी है। दो योजन की दूरी पर यह नगरी कब बसी ?

किसने वसाई ? कौन इसका राजा है ? महल तो ठीक मेरे जैसा ही है जरोखे गोखडे दीवान खाने सब मेरे जैसे हे । धीरे धीरे उसने राज महल मे प्रवेश किया । वहुत ही अदब आदाव से रिसाले ने सलामी भरी । तोपे छोडी गई, नौवत-खाना गुटने लगा । नगारे पर चोट पडने लगी, अनेक प्रकार की शहनाइया वज उठी । विशेप खड मे राजा साहव की वैठक रखी गई थी वहा का सब ठाट अपने महल जैसा पाया । नर्तकियो ने नाच मुजरे किए अमल गालमा गले इत्र पान हुवा सुगन्धी फव्वारे छूट रहे थे

राजा हैरान मैं कहा हू । यह महल किसका है ! ! उसने दीवान जी से इशारा किया सब तो ठीक पर सूरसेन नजर नही आते है । सूरसेन जी के कामदार ने अर्ज की कि वे पोढ रहे हैं । दीवान जी वुलाने गए । चोवदार ने निवेदन किया कि नीद कच्ची है आधा घटा ठहरकर पधारें ? राजा को आश्चर्य हो रहा था कि मामूली दिखने वाला ठाकर इतना वैभव शाली व गेव वाला है । वे स्वय उठे । साथ मे दीवान और वडे वडे रईस । राजा को सूरसेन जी के खड मे आते देख चोवदार ने सलाम की और आप दूर हट गया ।

राजा साहव ने विशाल शयन कक्ष मे प्रवेश किया । चारो तरफ सुगध फैली हुई थी सोने के हिंगलाट (झूले) पर सूरसेन जी पौढे हुए थे । रेशमी डोरियो पर सच्चे मोतियो की लडें लटक रही थी । सोने की पीलसोतो मे हीना और

केवड़ा जलकर प्रकाश व खुशवू फैला रहा था। दोनों तरफ गावतकिए लगे हुए थे। २०-२० नव यौवनना हीरे जवाहरातों से लदी हुई सेवा में तैनात थी। इधर से झूला उधर जाता था। उधर से इधर आता था। सुगंधी समीर सौरभ फैला रहा था। राजा साहव यह सब देखकर चित्रवत रह गए। सूरसेन तो राजा साहव की प्रतीक्षा में ही थे। नीद का वहाना था। जागते ही चालीसों दासियां खमा खमा करने लगी। किसी के हाथ में जल की जारी है. किसी के हाथ में पंखा है किसी के पास पान है, किसी के हाथ में केसरिया दूध है, किसी के हाथ में मेवा है, किसी के हाथ में दर्पण है। यों सब की सव विविध सेवा के लिए तैयार थी। खमा के फटकारे उड़ रहे थे। राजा ने यह ठाट तो पहली वार देखा था। उसका अचरज बढ़ता जाता था। सूरसेन ने उठकर राजा साहव को अभिवादन किया। स्वर्ण जडित सिहासन पर राजा साहव को विठाया। आप पास खड़े रहे। राजा साहव ने हाथ पकड़ कर सूरसेन को सिहासन पर बिठाया।

राजा के अचरज का पार नहीं अचानक उसकी नजर सामने के एक स्वर्णाक्षरी दोहे पर पड़ी। बड़े २ अक्षरों में सोनेरी फ्रेम में जड़ा हुआ वह दोहा लिखा था:—

न चिंते सुए कुमारड़ो चोरन मटिया लेय,
पैरों बांधी गधेड़िया, लगड़ सिराने देय ॥१॥

कै सोए योगी अवधूत,
कै सोए चक्री राजा का पूत ।
कै सोए चतुर नारी का भरतार
लिखने वाला बडा गवार ॥ २ ॥

यह पढते ही राजा को अपनी छोटी कुवरी की याद आ गई ओह क्रोध व इर्षा के मारे मैने अपनी वेटी के साथ कितना क्रूर अमानवीय व्यवहार किया था । वह जिंदा है या मरी इसकी भी मैंने खबर नही ली । परन्तु ये सब कौन है, यह महल किसका है ।

राजा यह विचार कर ही रहा था कि चोवदार ने पुकारा "तलकिया" अर्थात एकात । राजा और सूरसेन जी के सिवाय सब दाम दासी दीवान आदि दूसरे खड मे जा पहुचे । रुम झुम करती आसु ढारती वेटी आकर राजा के चरणो मे झुकी । राजा झपट कर कुवरी के पास जा पहुचा और सिर पर हाथ फेरा । दोनो चुप । आसुओ से आगन गीला होने लगा । कुछ देर वाद रानीजी व वडी कुवरी वाइमा भी वही आ गई । कई वर्षो वाद मा वेटी मिली वहने वहने मिली । राजा वहुत सकुचाए ।

प्रियदर्शना ने अपने पति को सासु सुसराजी से मुजरा करने का इशारा किया । राजा के सामने से जव परदा हट गया । वेटी की चतुराई और उसके भाग्य की सराहना की । वह

वोली सब आपका आशीर्वाद तथा धर्म पालन व नवपद आराधन का प्रताप है ।

पूरी नगरी जीम रही थी। महल में आनन्द ही आनन्द छा गया था। धीरे धीरे वात फैल गई कि यह महल और नगरी तो अपनी प्रियदर्शना वाई साहव का ही है। सवने कुंवरी के भाग्य की प्रशंसा की।

राजा साहव रात वही रुके दूसरे दिन वेटी जवांई को गाजे बाजे से वसन्तपुर नगरी में लाए और युवराज पद का अभिषेक सूरसेन जी का किया। सव चैन से रहने लगे ।

सतिया सत न छांडिए, सत खोयां पत जाय ।
सत की बांधी लक्ष्मी फिर मिलेगी आय ॥

सूरसेन जी ने यहां का काम काज संभाल कर निश्चिंत होकर अपनी जन्म भूमि की तरफ जाने की तैयारी की। उत्तम मनुष्य अपनी जन्म भूमि को नहीं भूल सकता। बाप दादों की जमीन स्वर्ग लोग से भी अधिक प्यारी होती है।

जननि जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि ।

खूब फौज पलटन लाव लश्कर लेकर अपनी रानी सहित सूरसेन ने प्रयाण किया। धर मंजला धर कूंचा एक माह में अपनी राजधानी कंचनपुरी के समीप वे आ पहुंचे। राजा रानी को सांप काटने के बाद भाई गरासियों ने सब पर कवजा कर लिया था। सूरसेन जी की भारी फौज थी।

दूत को भेजकर खबर दी कि राजगद्दी के अधिकारी राजपुत्र सूरसेनजी मय सेना के आगए है। या तो आप तखत खालीकर सामने आकर क्षमा मागिए नही तो युद्ध की तैयारी कीजिए। काकाजी ने महल पर चढकर देखा कि टिड्डी दल सेना पडी थी। उन्होने माफी मागना मजूर किया और सामने चले। काकाजी को आता देख कर सूरसेन जी आगे बढे और नमस्कार किया। "काकाजी आपको धन्य है जो राज काज सभाला, घर के आदमी घर की सभाल नही करेंगे तो कौन करेगा"। काकाजी ने नगर प्रवेश करा कर सूरसेन के राजतिलक किया। ४–६ माह वही रहे।

यहा सूरसेन जी के कुवर साहब का जन्म हुआ। खुशी मनाई गई। यहा का राजा इन कुवर साहब को घोपित किया गया। कुछ माह पश्चात वसन्तपुर नगरी की तरफ बढे। रास्ते की सब यात्राए करते हुए एक साल मे सुदर्शना पुरी मे जा पहुचे। गाजे बाजे से प्रवेश हुआ। वसन्तपुर और प्रियदर्शनपुर मे विशेप अन्तर नही रहा। आस पास के बहुत व्यापारियो ने उस अन्तर को अपनी हवेलियो व बाजारो से कम कर दिया। आसोज मे सूरसेन और प्रियदर्शना ने साढे चार वर्प मे नवपद के तप को पूरा कर उजमना किया। धर्म वृद्धि की पश्चात दूसरे कुवर साहब जन्मे। इन्हे प्रियदर्शनपुरी का राज्य दिया। स्वय वसन्तपुरी मे जा बसे। राजा भुजबल अब निवृत्त होना चाहते थे अत सूरसेन जी का राजतिलक हुआ। राजा राज करता था प्रजा चैन करती थी।

राजा के गर्भ रहा

तारों की ज्योति में चन्द्र छिपे नहीं,
सूर्य छिपे नहिं बादर छाए ।
नारी के पेट में बात टिके नहीं,
मात पिता के लाख समझाए ॥

चन्द्रपुरी नगरी में चन्द्रसिंह राजा राज्य करते थे । धनसार नाम के सेठ राज्य मान्य थे । राजा बुद्धिमान और शिक्षा प्रिय थे । राज्य में पंडितों का बहुमान होता था । जगह जगह पर संस्कृत व प्राकृत पाठशालाएं स्थापित थीं । कन्या शालाएं भी बहुत थीं । सभी धर्मों के आराधना के स्थान वहां थे ।

चन्द्रपुरी एक आदर्श नगरी थी । यथा राजा तथा प्रजा । व्यापार, कला कौशल्य हुनर उद्योगों का वहां पूर्ण विकास था । धनसार सेठ की बुद्धि प्रखर थी । बड़ी से बड़ी गुत्थियों को वे सुलझा देते थे ।

सेठजी नितनेम करने हमेशा सुबह पांच बजे जागते थे । दिन ६ बजा उगता था । सेठाणी को पानी भरने का शौक था । सबसे पहले वह पानी छानने और

पानी भरने का काम करती थी। घर मे गाय भेंस रहती थी, इसलिए पानी अधिक चाहिए था। बाल बच्चो का घर था। चमक चमक करते चरू (बडा घडा) पर चलक चलक करती हुई चरी (छोटा घडा) लाने मे उन्हे मजा आता था। अपने हाथ से सोनेरी रूपेरी कोर से सी हुई मोतियो से जडी हुई ईडोणी पर निर्मल जलसे भरे बेवडे को अपनी साथिनो के साथ लेकर आना उन्हे खूब भाता था। अलक मलक की बाते और मनोरजन घर की चार दीवारो मे नही मिलता था उसकी पूर्ति वह हम उमर की सहेलियो से करती थी। पास के कुए का पानी वह खारा समझती थी कारण वह घर से नजदीक था। एक आध घन्टे की आजादी न मिली तो पानी का भार ढोने से क्या लाभ। इसीलिए दूरकी बावडी का पानी सेठजी के स्वास्थ्य लाभ के लिए वैद्यजी से पूछ कर आई थी।

गायो का वाडा पास ही था। एक दिन अधेरे मे समय का ध्यान नही रहा और सेठजी चार बजे ही जग गए। ठड गिरनी शुरू हो गई थी। लक्ष्मी देवी जी अपनी सहेली शीतला देवी जी को अपने साथ ही लाती हैं। इसीलिए धन के साथ साथ तन को भी ढाकना पडता है। एक हल्की चादर ओढ कर सेठजी गायो के वाडे मे शौच गए। अधेरे मे और कभी कभी पकौडी खाने के पश्चात वे यही शका समाधान कर लिया करते थे। रात अधेरी थी। वह निपटने बैठे और नीचे की बातचीत सुनी -

गाय——क्यों बेटा आज ठंड लग रही है, अब तो तुम्हें टाट
ओढाया जाय तो ठीक रहे ।

बछड़ा——मां क्या तुझे ठंड नहीं लगती है ?

गाय——नहीं बेटी मेरे खूंटे के पास तीन घड़े मोहरों के
गड़े हैं। उनकी गरमी से मुझे ठंड नहीं लगती ।

बेटा——मां, मुझे भी ठंड नहीं लगती मेरे खूंटे भी दो घड़े
धरे है ।

सेठजी अवाक रह गए। पशुओं को भी धन की गरमी रहती है तो मनुष्यों की तो बात ही क्या ।

एक दिन मौका देखकर सेठाणी के पानी लेने जाने पर सेठजी ने दोनो खूंटे निकाल फेंके। गाय बछड़े की बात सच्ची थी । वापस मिट्टी सरका कर खूटे गाड़ दिए और मुसकराते हुए घर में आ गए · इधर से इनका घर में जाना हुआ उधर से सेठानी का आना हुआ · हमेशा मुंह चढाए रहने वाले सेठजी आज मलक मलक हंस रहे थे। सेठानी को शंका हुई जरूर मुझ पर हंस रहे हैं। कोई न कोई मेरी ही बात है जिससे मुझे देखकर मुसकरा रहे हैं। बोली ।

"क्यों जी आज मुझ पर क्यों हंस रहे हो जो हो सो साफ साफ कहदो"। सेठजी बोले, "तुम्हारी बात पर हंसी नही आई है, बात दूसरी है जो तुम्हें बतानी नही है।" "ऐसी क्या बात है जो मुझ से छिपा रहे हो, रूठकर बोली, बात कहोगे तभी खाना खाऊंगी नहीं तो भूखी ही रहूंगी।"

"भली मनख बात ही कुछ ऐसी है जिसका अचम्बा है, तुम कहीं बाहर बात कर दो तो जुलम हो जाए, इसीलिए तुमसे छुपा रहा हू ।" मुझे मेरे बाप की कसम मैं कहीं बात नहीं करूंगी," "बात यह हे कि अपने राजा के पेट है ।" "है, अपने राजा के गर्भ है" । वह भी खिल खिला कर हंस पडी ।

सेठानी हमेशा दो बार पानी लाती थी । आज तीसरी बार फिर चल पडी । कुछ छाना कुछ ढोला, कुछ क्यारी मे डालकर मटके खाली किये । लिया बेवडा और चल पडी ले पानी । सेठजी पूजा करने चले गए थे ।

ऐ, नाथी की मा पानी को चलती हो क्या ? यो कहती २ सेठानी उसके घर मे जा पहुची । आज नाथी की मा गारा गोबर लिपाई पुताई कर रही थी उसे पानी लाना था ही । चल पडी दोनो सखियाँ । आज सेठाणी बहुत खुश नजर आ रही थी, उसकी चाल ढाल, बात चीत और आखो की पुतलियो मे अजब कुतुहल था । नाथी की मा ने पूछा आज क्या बात है, आज पानी की जरूरत ज्यादा कैसे हो गई । दासी को भेज देती । सेठाणी ने ठणका किया और आखो के इशारे से उसे पास बुलाया । "दासी, आज एक बहुत मजेदार बात सुनी है, तू किसी से न कहे तो कहू," के ने मारी वेना, मुझे मेरी आखो की कसम जो दूसरी से कहू ।" "राजाजी के ऊ (पेट पर इशारा किया) है । "साची,

जभी तो आजकल वालम जी की सवारी नहीं निकलती है । ४-५ महीनों से सैर सपाटे बंद है ।" पानी भर दोनों घर आ गई ।

नाथी की मां ने अपनी जीव जतन की प्यारी पड़ोसन राम प्यारी को आवाज दी, "ए सुनो, सुनो तो यह दही का कटोरा ले जाना" । राम प्यारी से सब बात कह दी। राम प्यारी ने मोहनी से, मोहनी ने सोहनी से, सोहनी ने, तारा से, तारा ने माणक से, माणक ने मोती से, मोती ने जोती से, जोती ने जमना से, जमना ने नरवदा से, नरवदा ने बसंती से, यों पूरे गांव में यह बात फैलती गई । जव भी ४-५ सखियां मिलतीं आंखों ही आंखों,यह बात करतीं और हंसती हुई खूव तालियां पीटती थी ।

एक दिन राज महल की दासियाँ भी पानी भरने आ रही थी राजा जी के पोता मूल नक्षत्र मे जन्मने से२ ७ वाव-डियों का जल चाहिए था । मूल में जन्मने वाले के लिए कितना ही करना पड़ता है । (हमारे भी भरतकुमार मूल में जन्मे हैं सो हम भुगत चुके हैं । और ज्योतिषी होने के नाते हमे सब करना ही पड़ा, दान पुण्य ब्रह्म भोजन अलग ।)

राजा की दासियों को देखकर सब सहेलिया हंस पड़ी, कोई क्या इशारा करती है कोई क्या । कोई कहती है अब तो इनको खूब इनाम मिलने वाला है, कोई कहती है मीठा मुंह हमारा भी कराना । कोई कहती है नावण तो परदेशी

मेम आवेगी।" यो तरह तरह से खिल खिल कर नाज नखरो से वे खुश हो रही थी।

दासियो को कुछ भी समझ मे नही आया। इलाइची ने वसन्ती से पूछा, "क्यो बहिन क्या वात है, तुम सव इतनी क्यो इतरा रही हो कुछ कहो भी तो सही।" नारे भई तुम हमारा नाम ले लो तो राजाजी हमे घाणी मे पिला दे।" शरवती वोली, "हमे हमारे चूडे की कसम जो तुम्हारा एक का भी नाम ले।

सव जणियें वेवडा (मटके) वावडी पर रखकर एक तरफ नीचे गोल घेरा डालकर जा वैठी। अजना वोली, "तुम्हारे महल की वात तुम्हे मालूम नही, पूरे गाव भर मे वात फैल रही है कि राजा साहव के ५–७ माह का गर्भ है।" सवने दातो ऊगली लगाई। चकोरी वोली, "तभी तो राजा साहव का पेट इतना भारी होता जा रहा है और वे वाहर भी कम निकलते है। हसी का फव्वारा यह निकला, सव उठी और जल्दीजल्दी पानी भर कर अपने अपने घर जा पहुची।

गोरी धीरे चलो, गगरी छलक न जाए।
अरि हां पतली कमरिया लचक न जाए॥

अब राजमहल मे भी रगत होने लगी। जिधर देखो उधर ही दासियां खिल खिल करती हसती फिरती हैं। सव

इशारों ही इशारों में वात करती हैं। होते होते वात रानीजी तक पहुंची। राजा के वेटों की वहुएं भी दासियों के साथ मजा लूटने लगीं। अंत में रानीजी ने नाइन को वुला भेजा।

राजा साहव दुपहर को भोजन के पश्चात दो घंटा आराम करते थे। वही समय उपयुक्त था। नाइन आ गई। उसे शयन कक्ष के वाहर विठा दिया। राजा साहव के जागने के वाद रानी जी नाइन को लेकर अंदर गईं। नाइन ने पेट पर हाथ फैरा। पेट गोल मटोल वीकानेरी तरवूज था। चारों तरफ दासियाॅ छुपी छुपी देख रही थीं। राज वहुएं भी चुपके चुपके झांक रही थी। नाइन ने गरदन हिलाकर घूंघट में हां कहा और वाहर निकल गई। पीछे पीछे रानी जी गई। नाइन बोली कुछ कुछ फदकता है हिलता भी है। चारों तरफ किलकारियाँ व हंसी की खिल खिलाट मच गई। राजा साहव हैरान कुछ समझ में नही आया। पास की दासी को आवाज दी। मैना भागी आई। राजा ने जोर से पूछा बात क्या है लौडी ? मैना भागी भागी रानी जी को बुला लाई। रानी जी ने गांव भर में हो रही गर्भ की बात कही।

अव सारा नाटक राजा जी की समझ में आया। नाइन को वापस बुलाया, देख रांड क्या है मेरे पेट में। नाइन थर थर कांपने लगी बोली "हजुर गोला ठूठी फदकता है।" महल में सन्नाटा छागया सव की हंसी बन्द हो गई। मैना से पूछा उसने हंसा का नाम वताया, हंसा ने लवंगी का,

लवगीने, इलायची का, इलायची ने सुपारी का, सुपारी ने सव वात वावडी की कह सुनाई। अव तो सव की शामत आई। राजा की दासिया सिपाहियो के साथ घरो घरो मे फिरने लगे। शरवती और इलाइची वसती और अजना के घर जा पहुची। वह उसका नाम वताती थी वह उसका यो पता लगाते लगाते आखिर राम प्यारी और नाथी की मा का नाम पकडा गया। सिपाही जा पहुचे दोनो के घर। नाथी की मा ने डरते डरते सेठ धनसार की हवेली की तरफ इशारा किया और कहा कि सेठाणी ने मुझ से कहा था।

सेठजी के घर मे घुसने की हिम्मत सिपाहियो की नही हुई। राजा से जाकर सव निवेदन कर दिया। राजा ने सेठजी को वुला भेजा और शहर की चर्चा का मूल तुम्हारी हवेली है, सो क्या वात हे।

मेठजी वोले हजूर वात सच्ची है। आप गरीव की झोपडी पर पधारे तो मैं प्रमाणित कर सकता हू। राजा सेठजी की वोली की कीमत समझते थे। सेठजी झूठ वोलते नही थे और आदमी के गर्भ रह नही सकता है दोनो ही वाते वजनदार थी।

राजा की मवारी सेठजी की हवेली की तरफ वढी। पूरी सज-धज के साथ आवेश मे राजा साहव पधार रहे थे। शहर के प्रतिष्ठित नागरिक व राज्य के सन्मानित ओहदे दार कामदार फौजदार सव उनके साथ थे।

हवेली में सब प्रबन्ध सदा रहता था। राजा साहब के आसन पर बिराजने पर सबके समक्ष गाय और बछड़े की बात सेठजी ने विस्तार से कह दी, और राजा व दीवानजी को गाय बछड़े के खूटे के पास लेजाकर नौकरों से मिट्टी हटाकर घड़े बाहर निकलवाए। राजा के आश्चर्य का पार न रहा। घड़े सब के सामने लाकर रखे गए। सबने अपना अपना आसन ग्रहण किया। शांति फैल गई।

सेठजी बोले, "हजूर पेट या तो पृथ्वी के होता है या पेट राजा के होता है। पृथ्वी व पृथ्वीपाल दोनों के पेट भारी होते है। सब उनके पेट में समा जाता है। पृथ्वी के गर्भ में कितने ही सोने चांदी रत्नों हीरों के ढेर भरे है वह कहती नही फ़िरती। राजा के पेट में पूरी नगरी के अच्छे बुरे भेद भरे रहते है वे सव को गर्भ में रखते हैं किसी का किसी को बताते नहीं। सब पेट में रखते है।

औरत की जात के पेटा नही होता। इनके पेट में कोई बात नही टिक सकती इसी की परीक्षा आप कर चुके है। यदि सोने के घड़ों की बात मैं सेठाणी से कह देता तो कितना जुल्म हो जाता। धन तो जाता ही साथ में मेरे घर की इज्जत भी जा सकती थी इसीलिए हजूर के पेट होना मैने कहा। राजा व सभी दरवार सेठजी की बुद्धि की प्रशंसा करने लगे। राजा ने वह चरू सेठजी को देकर सरपाव अलग दिया।

राजा के सन्मान मे सेठजी ने भोज दिया। राजा अपने महलो मे चले गए। सेठानी ने सेठजी से क्षमा मागी कि अव मैं कोई घर की वात वाहर नही कहू गी। औरत की जाति अपने स्वाभाविक झूठ, साहस, सहन शीलता, पराई भाजगड, मूर्खता, ईर्षा, चतुराई व परिश्रम आदि गुणो से लाचार है। पश्चात सब आनन्द पूर्वक चलता रहा। धर्म ध्यान मे सेठाणी भी सेठजी के साथ रहने लगी। सेठजी ने वडे पुत्र को दुकान पेढी सोप दी और स्वय निवृत्त हो गए।



तुख़्म तासीर, सोहबत असर

रंभापुरी नगरी में देवकरण नाम सेठ रहता था। युवावस्था में उसका विवाह हो चुका था। शारदा सेठाणी सुशील और वुद्धि की प्रखर थी। स्वभाव दोनों पति पत्नि का न मिलता था सेठ की कुंडली में मंगल पागड़ी था, सेठाणी के मंगल चुंदड़ी न था। बात बात में जिद के कारण दोनों दुःखी थे। अभी प्रजा पति की कृपा नहीं हुई थी अर्थात् घर सूना था। पालणा नहीं बंधा था।

उनके यहां धन का आनन्द था। खेती बाड़ी व्यापार धंधा व्याज, भाड़ा सब प्रकार की आवक थी। परन्तु सच्चे सुख की देवी शांति घर से बाहर घूमती रहती थी।

होली के त्योहार के दो दिन पहले आपस में बोल चाल हो चुकी थी, इतने में शारदा के भाई का पत्र आया कि दो दिन के लिए आप दोनों यहां आ जाएं तो खूब होली खेलेंगे।

सेठ तो सेठाणी से तंग आए हुए थे। नेकी और पूछ पूछ। सेठाणी से कुछ दिन दूर रहना चाहते थे। सोचा, चलो इस अनुताप की पुड़िया को वहीं छोड़ आवेंगे। आग तो दूर ही भली।

रथ जोता, आवश्यक सामान जमाया। एक दो दिन का खाना साथ लिया, सेठाणी भी पीयर जाने की खुशी में पति

से प्रसन्न हो गई। हार मान कर वोलने मे पहल की। वन ठन कर दोनो रथ मे जा वैठे।

चलते चलते एक वट वृक्ष आया। वावडी पर चडस चल रहा था। दुपहरी विताने और भोजन करने की ऐसी सुविधा और कहा मिलेगी। रथ ठहराया। भोजन किया और दरी विछा कर दोनो लेटे ही थे कि एक गडरिया जो करीव १०–११ वर्ष का होगा अपनी भेड वकरियो को पानी पिलाने लाया।

नाली मे वहते पानी का स्वाद वकरिया ले रही थी। गडरिया भी नीचे झुककर नाली मे मुह लगाकर पानी पीने लगा। सेठ सेठाणी को हसी आ गई। सेठ बोले "तुखम तासीर" सेठाणी वोली, "सोहवत असर"। सेठ का कहना था कि इस जगली जाति का प्राकृतिक स्वभाव ही जगली है जो मा वाप का असर है। सेठाणी वोली, "यह तो पशुओ की सगति का असर है। जैसी सोहवत सगत वैसी ही आदत।" फिर दोनो मे सवाल जवाव, किट किट होने लगी। सेठाणी मुह फेर कर सो गई उसे नीद आ गई।

सेठजी की मन की वन्दूक पहले से भरी थी, इस राजपूत गडरिए ने उसमे आग लगादी। आव देखा न ताव। जल्दी जल्दी सामान समेटा और सोती हुई सेठाणी को वही छोड कर सेठ तो जा वैठा रथ मे और आ पहुचा अपने घर रभा पुरी मे।

इधर २-३ घन्टे की नींद के वाद जव सेठाणी की आँख खुली तो न सेठ, न रथ, न कुए जोतने वाला, न गडरिया न कोई आदमी न कोई आदम जात का वच्चा ।

वह हड़वड़ाई । शाम पड रही थी । जंगल था । जरा पास की ऊंची टेकरी पर गई तो एक भेड़ों का झुड उधर ही आता नजर आया । वह वहीं खड़ी रही । थोड़ी देर में भेड़ वकरियों को पानी पिलाने वही दुपहर वाला लड़का गाता हुआ चला आया । सवने पानी पिया । लड़के ने चकमक से चिलम सुलगाई । विश्राम लिया । सेठाणी उसके पास गई और कहा कि मैं आज तेरे घर चलूगी । सेठजी कुछ काम से चले गए है । लड़का राजी हो गया ।

सव चले गांव की तरफ । गरीवों के झौपड़े थे । भेड़ वकरियों की मैं मै सुनाई दे रही थी । औरते चक्की पीस रही थी । कुछ घरों में से धूआ निकल रहा था । मैले कुचैले कपड़ों वाले गंदे गंदे वालक हल्ला गुल्ला मचा रहे थे । यह सव सेठाणी को लुभावना लगा ।

मां, मां, देख कोई आया है, कहता हुआ लड़का अपने घर में घुसा । वकरियां वाड़े में जा पहुंची । सेठाणी ने देखा कि एक वूढ़ी मां वड़े प्यार से आगे बढ़ रही है । अपने लड़के की तरफ देखने लगी, लड़के ने सेठाणी की तरफ झांका । सेठाणी वोली, "मां मैं परदेशी हू मेरे आदमी कुछ काम से चले गए है २-४ दिन मैं तुम्हारे

यहा ही रहू गी' । उस रजपूत वुढिया ने कहा कि, "मेरा वडा भाग वेटी जो हम गरीवो के घर ऐसे पाहुने आवे । तुम खुशी से रहो । सव घर वार तुम्हारा है' ।

शारदा वहीं रहने लगी । धीरे धीरे वुढिया व लडके का उस पर प्र`म वढता गया । शारदा भी घर का सव काम काज करती थी । वढिया कपडो के वजाय जाडे कपडे पहने । जेवर तो रस्ते मे ही खोल दरी मे वाद दिये थे । यह खानदानी क्षत्रिय घर था । गरीवी के कारण लडका भेड वकरी चराता था ।

अव शारदा ने मा वेटो का पूरा मन जीत लिया है और घर का अग वन कर रह रही है । एक दिन उसने दोनो मा वेटो से कहा कि वकरी पालने की वजाय तो अपने एक भैम खरीद ले । दूध, दही, घी का आराम भी होगा और वचे हुए को वेचने से रोकड भी मिलेगी । खेती वाडी तो है ही । वुढिया ने कहा कि वेटी तेरी समझ मे आवे मो कर । वकरियो को नेच कर भैंस आ गई । लडके को पास के नगर मे पढने भेज दिया । शारदा ने इस घर की लगाम अपने हाथ मे ले ली । वकरियो के जाते ही घर मे स्वच्छता आ गई । रसोई व सोने की कोठरी अलग अलग वनवा ली । दूध दही लेकर लडका नगर मे जाता । शारदा वदी वाध आई थी । यो उमका धर्म भाई तेजकरण दोनो काम करता था । धधा और पढाई । ३-४ वर्प मे उस घर की रगत वदल गई । गाव मे सव स्त्री पुरुप भीड पडने पर शारदा की सलाह मानते थे ।

व्याज पर उधार रुपया भी ले जाते थे। कोशिश करने पर गाव में पाठशाला और दवाखाना खुल गया। सफाई का पूरा ध्यान दिया जाने लगा।

तेजकरण को वह स्वयं रात को पढाती थी। तरह तरह के उपदेश व नीति की कथाएं सुनाती थी। उसमें जागृति व क्रांति भरती थी। उसमें क्षत्रिय के गुणों के अंकुर भरने लगी। एक घोड़ा खरीदा और कहा कि तुम रोजाना नगर के राजा के पास जाया करो। पाठशाला की पढ़ाई के साथ २ घुड़ सवारी करना, तलवार वन्दूक चलाना सीखना तथा युद्ध विद्या में निपुण होना भी जरूरी है।

तेजकरण सव विद्या में तेज होने लगा। ढाल तलवार लटकाए, सिर पर साफा झुकाए, चूडीदार पजामे पर शेरवानी, पहने कमर बन्द मे पेश कब्ज और मखमली मोजड़ी पहने जव वह रकाब में पैर डाल कर घोडे को सरपट दौड़ाता था तव सव लोग दंग रह जाते थे। मानो कोई राजकुमार ही न हो। वह अपनी धर्म वहन की आज्ञा को देवी फरमान समझता था।

राज दरबार में भी उसका मान बढने लगा। उसकी बोल चाल, फुर्ती, गंभीरता ने सबका मन जीत लिया। गठा हुआ वदन, मुसकराता चहरा, वलवान भुज दंड, चौड़ी छाती और उन्नत ललाट ये सब राजाजी का मन जीत रहे थे। राजा तेजकरण को सदा अपने पास रखने लगे। जव कभी

मैर सपाटे घूमने शिकार खेलने जाना होता तेजकरण को साथ रखा जाता। लोगो ने खवर दी कि एक शेर पशुओ को रोजाना मार जाता है सव हैरान थे।

अत एक दिन उस शेर की शिकार का प्रोग्राम रखा था। राजा ने पहले से ही तेजकरण को हुकम दे दिया था कि वह भी मेरे साथ साथ रहेगे। वहिन उसका पूरा ध्यान रखती थी। उसके घोडे पर सदा वडे वडे दो थैले (खडिया) लटकाती थी जिनमे मामूली वर्तन शर्वत की वोतल, खाने का डव्वा, दरी और जल की वादली रहती थी।

राजाजी वडी तैयारी मे शिकार को निकले। सव सरदार उमराव भाई वेटो के सिवाय तेजकरण भी साथ था ही।

वातो ही वातो मे राजा और तेजकरण आगे निकल गए। शिकार गाह के करीव जाकर हाथी घोडे पैदल सव ठहर गए। शिकार की तैयारी होने लगी। भीलो के हाको से जगल गूज उठा। उधर शेर ने शोर गुल सुना और सावधान हो गया। वह लपाता छुपता झाडियो ही झाडियों मे नदी की तरफ वढ रहा था। राजा और तेजकरण के घोडे अपनी पूरी चाल मे भाग रहे थे। जव उन्हे ध्यान आया कि शिकार गाह तो उत्तर की तरफ रह गई है हम पश्चिम मे वढ आए हैं उनका मुडना हुआ कि उधर शेर की नजर इन पर पडी।

तेजकरण सावधान था उसकी पिस्तौल उसके हाथ में थी बन्दूक आगे पड़ी हुई थी। राजाजी का ध्यान और तरफ था। इतने में झाड़ी में हलन चलन हुई और राजा का ध्यान उधर गया। राजा ने झट बन्दूक निकाली और शेर काकूदना हुआ। राजा ने ताक कर बन्दूक चलाई पर निशाना पैर में लगा क्रुद्ध शेर राजा पर झपटा तेजकरण ने पिस्तौल ताक कर उसके कपाल मे गोली मारी। शेर ठंडा हो गया। गांव की गाय भैंसों की जिन्दगी के खातिर राजा को शिकार खेलना ही पड़ता है। अपराधी को दण्ड देना राजा का फर्ज है। निरपराधी की रक्षा, राज धर्म है।

शिकार के वाद राजा व तेजकरण वही एक चट्टान पर वैठ गए। गरमी से प्यास और थकावट से भूख के मारे राजा घवराने लगे। शेर से वचे तो भूख प्यास मारे डालती थी।

तेजकरण अपने दुपट्टे से राजा को हवा करने लगा। थैले में से जल निकाला राजाजी को पिलाया। खाना निकाल कर दोनों ने खाया। आज दोबार जान बचाने वाले तेजकरण की हिम्मत, साहस और खातिरदारी से राजा वहुत खुश हो गए।

इतने में राजा के अनेक सेवक और सरदार भी आ पहुंचे बन्दूक और पिस्तौल की आवाज छुपी नहीं रह सकती। सव ने दोनो को सही सलामत और शेर को मरा पड़ा देखकर खुशी मनाई।

राजमहल मे आकर राजा ने विश्राम किया। तेजकरण ने विदा मागी तो राजा ने अपना विचार प्रगट किया।

"तेजकरण तुमने मेरा आज दोवार जान वचाई है इस लिए मै अपनी प्यारी पुत्री ओर आधा राज तुम्हे देना चाहता हू"।

"हजूर मैं कुछ भी नही जानता, मेरी वहिन से आप कहलावें"। "अच्छा, मैं कल म्याना भेजूगा तुम्हारी वहिन को यहा वुलाकर वात करुगा"।

दूसरे दिन राजमहल से म्याना आया। रात को सव वात तेजकरण ने अपनी मा व वहिन से कह दी थी। दोनो मा वेटिया म्याने मे वैठी। तेजकरण घोडे पर सवार हुआ।

राजाजी ने खास खण्ड मे उनके लिए मुलाकात का इन्तजाम किया। परदे मे वहिन व मा वैठी। दासियो द्वारा राजाजी उन्हे सव वात कहलाते थे।

वहिन ने राजाजी की सव वाते मजूर की, साथ शर्ते भी रखी कि, "हम अपने गाव मे रहेगे। वहा अलग महलात वनवादे। शादी के वाद जव भी कुवरीजी को वुलाना हो २ दिन पहले सदेशा भिजाया जाया करे। आपके जवाई श्री तेजकरण सिंह वहादुर को आधाराज के सिवाय कस्टम के हाकिम का काम सौंपा जाय"। राजा ने सव मजूर किया। वडे ठाठ से विवाह हो गया। राजा ने दिल खोल

कर डच डाचया, हाथी घोड़े, रथ, पैदल ऊंट, सोना चांदी जेवर हीरा, माणक मोती, जवाहरात दिए और उनके गांव में महल बनवा दिए। वही कस्टम की कचहरी बनवा दी गई।

उस जमाने में कस्टम की चोरी बहुत होती थी। उस जमाने में क्या हर जमाने में सरकारी कस्टम, टेक्स, चूंगी, आदि की चोरी चलीआ रही है। परमिट देने व लेने वालों के पौबारे पच्चीस है पांचों अंगुली घी में है। एक दिन कस्टम चोरी के अपराध में एक सेठजी पकड़े गए। सिपाही उन्हें घेरे हुए हथकडी डाले जमाई राज की कचहरी में ला रहे थे। शारदा झरोखे में बैठी प्रकृति की शोभा देख रही थी। बाहर खुशी छाई हुई थी। गांव स्वर्ग बन रहा था। उसकी खूब प्रशंसा हो रही थी। सब जगह प्रकाश था मगर उसके दिल मे अंधेरा था। उसका जीवन सूना था। उसे रह रह कर अपने घर व घर वाले की याद आ रही थी।

कस्टम की कचहरी होने से रोजाना अपराधी यहा लाए जाते थे। सब की सुनाई वही करती थी। तेजकरण तो नई दुल्हन के नशे में मस्त रहते थे। चाद को चांदनी से फुरसत नही थी।

शारदा ने देखा कि चाल ढाल, चेहरा मोहरा तो सब सेठजी जैसा है। उसके रोम रोम में आनन्द छा गया। डावी आंख और डावी बाह फड़कने लगी। दिल बेकाबू हो गया यह तो डाण चोर के साथ मेरे दिल का चोर भी है।

सिपाही चोर को वाहर विठाकर अदर सूचना देने आए। शारदा ने हुकम दिया, हथकडिया खोल दो, इन्हे महमान भवन मे ले जाओ और सव तरह से आराम दो। स्नान ध्यान के पश्चात उन्हे यहा वुलाया जायगा।

तेजकरण को कहा कि उस डाण चोर की पूरी खातरी करना कोई तकलीफ न हो। तेजकरण को आज आश्चर्य हुआ। वहन का न्याय वह जानता था। अपराधी को वह पूरा दण्ड देती थी। आज क्या वात है। भाई ने वहिन से प्रेम पूर्वक सव पूछा शारदा की आखो मे आसू भर आए। पिछली सव वात उसे साफ साफ कह दी और कहा यही तेरे वहनोई जी है। शाम को खाना यही खिलाने चौके मे लाना।

तेजकरण की खुशी का पार न रहा। मा को अपार आनन्द हुआ। राजकुवरी ने नणदोई जी के लिए भोजन की खूब तैयारी की। सुशीला ने पास बैठकर पकवान वनवाए।

शाम को भोजन करने सेठजो को लाया गया। सेठजी की समझ मे नही आ रहा था कि चोरी के अपराध मे दण्ड के वजाय स्वागत कैसा। डरते डरते जीमने लगे। राज जवाई जी भी पास मे जीम रहे थे।

गरम गरम फुलके और पकवान तथा शाक सब्जी का स्वाद लेते लेते सेठजी विचार मे पड जाते थे। उन्हे भोजन करते करते अनुभव हो रहा था कि, "ऐसा भोजन तो शारदा वनाती थी, वह कहा होगी, जिन्दी भी है कि नही, "मुझ

पापी ने क्रोध में उसे सोती हुई को छोड़ा और घर चला आया। दूसरे दिन खवर करने आया तो वहां पता भी न चला। अपने सुसराल गया तो वहां भी पता न चला। सव जगह ढूढ मारा कही पता नहीं"। आज उसके जैसा भोजन १० वर्ष वाद मिला। सोचते सोचते गला रूंध गया, हाथ का कोर हाथ में मुह का मुह में, गले के नीचे नहीं उतरता था। उधर शारदा प्रेम सरोवर में नहा रही थी। श्रावण भादों वरसा रही थी। भाई खिसक गया। वहिन वाहर आई पति को प्रणाम किया। सव ने शान्ति पूर्वक भोजन किया। रात को सेठजी को महलों में ही ठहराया गया। शारदा ने कहा कि, "आपको चोरी के अपराध में मृत्यु दण्ड भुगतना पड़ता पर जंवाई जी ने माफ किया है सेठ वोला ये डाण हाकिम व राजजंवाई की कृपा है।" शारदा वोली, "भेड़ों की तरह झुककर पानी पीने वाला यह वही गडरिए का लड़का है जिसको देखकर आपने कहा था, तुखम तासीर, मैने कहा था सोहबत असर। ये ही राज जवाई है।"

आप ही देख लीजिए सोहवत का क्या असर हुआ है। सेठजी दंग रह गए। सेठाणी बोली, आपने मुझे छोड़ दिया मै यहॉ आई और इस घर की व इस लड़के की कैसी दशा सुधरी है। यह सव सोहवत का असर है। सेठजी ने अपनी गलती मंजूर की, सेठाणी से माफी मांगी। दूध पानी की क्या लड़ाई। सूई विना धागा की, धागा विना सूई की क्या शोभा।

शशि बिन सूनी रैंन, ज्ञान बिन हिरदो सूनो
कुल सूनो विन पूत पत्र बिन तरवर सूनो ।
मन सूनो विन नेह, तेज बिन नैयन सूनो
घर सूनो बिन नारी, नारी विन पति मन सूनो ॥

सुवह पूरे नगर को शणगारा गया। गज सी ठाठ से वहनोई जी का जलूम निकाला गया। राजा ने खूब स्वागत किया। कुछ दिन ठहरकर भाई से विदा लेकर शारदा अपने घर गई। वहा उसका परिवार वढा मताने हुई आनन्द पूर्वक जीवन वीता। सेठजी ने भी स्वभाव वदला सौहवत का अमर उन पर भी हुआ।

आज हमारा देश भारतीय सस्कृत को नष्ट करने वाली पादरी सस्थाओ के प्रति आकर्पित है। छोटे छोटे वच्चो को ईमाई स्कूलो मे भेजा जा रहा हे। यह पढाई व सम्कार मा वाप को मेहगे पडेंगे। वालको के जीवन मे से भारतीयता व अहिसा आदि गुण नष्ट होंगे। हिन्दु मस्कृति, हिंदु व जैन, सनातन धर्म के वीज उनमे मे लुप्त होंगे। परिणामत मानमिक गुलामी फिर से घर करती जाएगी। अत भारत की भावी पीढी को भारतीय शालाओ मे शिक्षित कराना चाहिए। विपरीत सस्कार वाले वालक माता पिता व देश धर्म के प्रति अनादर करेंगे व उनमे विमुख निकलेंगे। मगति का फल होना है।

——

हीरा परख जी—पुण्य का फल

सदा न फूले तोरई सदा न सावन होय,
सदा न जोवन थिर रहे सदा न जीवे कोय।

हाय दई कैसी भई बिन चाहत को संग।
दीपक को भावे नहीं जल जल मरत पतंग ।।

वेगवति नदी के किनारे एक छोटा सा गांव, राजपूतों की वस्ती। खेती और पशु पालन यही सब का काम। रामसिह ठाकुर जब तक जिये ठाठ से जिए। ठकुराई-में कमी न आने दी। अलबत्ता अपनी शान के पीछे करजदार हुए हवेली गिरवी रखी पर मूंछों के वंट बराबर बनाए रखे। उनके जाने के बाद जो कुछ साज सामान जेवर बर्तन था उससे मौसर आसानी से हो गया। अपनी पुरानी रीति रसम के कारण ठिकाना बर्बाद हुआ। लोगों में वाह वाह हुई पर उनके चारों लड़को को गांव छोड़ दूर खेत पर झौपड़ी में रहना पड़ा। हल चलाना, बैल चराना, खेत जोतना, कोस खीचना वे स्वीकार न करते तो पेट कैसे भरता। तीनों भाइयों ने विचार किया कि हम तो नही पढ पाए है इस हीरासिह को तो सामने वाले गांव की पोशाल (पाठशाला) में पढ़ने भेजें तो ठीक रहेगा। निदान हीरासिह गुरूजी के यहां पढ़ने

जाने लगे। बुद्धि तीव्र थी, पढने की इच्छा थी, शादी नही हुई थी इसलिए सरस्वती देवी शीघ्र प्रसन्न हो गई २–४ साल मे ही वह पढकर होशियार हो गया।

विद्या आडी बीन्दणी, बलदां आडी भेंस।
संपत आडी ऊघणी, उधम आडी तैप॥

कुछ वर्षो वाद, तीनो भाइयो की शादी हुई, घरवार जमाए और मिल जुल कर एक ही साथ आनन्द पूर्वक वे रहते थे। होली नजदीक आ रही थी। गावो मे यह त्यौहार अधिक प्रिय होता है। १०–१५ दिन पहले से ही फाग गाए जाते है, डफली और ढपली पर थापे पडते है। नव यौवन का सचार होता हे। हवा मस्त हो जाती है। खेतो मे सरसो फूली थी। केसु या टेसु के रगीन फूलो को पानी मे भिजो कर वासन्ती रग तैयार किया जाता है। सब तरफ से राग रागनी के आलाप सुनाई देते है। एक रात चारो भाई और तीनो भोजाइया आने वाले त्यौहार के वारे मे चर्चा कर रहे थे। इस वार होली पर कौनसा खाना वनाया जाए। एक वोला हलवा पूडी, दूसरा वोला लड्डू पूडी, तीसरा वोला वाजार से मिठाई व नमकीन लावेगे घर पर खीर पूडी वना लेंगे। एक वहु वोली मैं घर पर ही माल पूए वना दूगी दूसरी वोली मै मोहन भोग वनाना जानती हू। सब हसी मजाक मे मस्त थे। हीरासिह चुप चाप सुन रहा

था सवने पूछा क्यों हीरा तुझे कोनसी चीज अच्छी लगती है तू भी तो वता क्या वनाया जाए ?

हीरा वोला, मेरा क्या जो वनेगा सो खालूगा। सवने जिद पकड़ी कि तुझे भी अपने मन की वात कहनी पड़ेगी, भोजाईयों ने उसे प्यार से अपने पास खीचा और मिन्नते करने लगी। "लाला कुछ तो वोलो" हीरासिंह वोला, "मुझ से न पूछो भाभी, यदि मैं कह दूगा तो तुमसे कुछ वनेगा नहीं उल्टा मुझे घरवार छोड़कर चला जाना पड़ेगा।" सवने जिद की, आखिर उसे मजवूरन कहना पड़ा, "लापसी, वापसी, लाडुवाडु का खाना क्या ? खाना तो उसे कहते है कि घर में चार सुन्दर रानियां हों, एक सोने की चौकी विछा जाय, दूसरी जल की झारी रख जाए, तीसरी वड़े थाल में वत्तीस भोजन और तेतीस सारना (शाक) परूस जाय चौथी खड़ी खड़ी पंखा झलाये। इसे कहते है जीमना वाकी तो पेट भरना है।" सव को खल वलाहट हुई। "वेटमजी को पढ़ाया तो दिमाग ही चढ़ गए। रानियो के सपने देखने लग गया। जा चला जा घर से, न खेती करता है न वैल चराता है, न सीधा किसी से वोलता है, तू हमारे काम का नहीं। वड़ा भाई तड़प उठा।"

हीरासिह उठा, ले भगवान का नाम, संभाली अपनी धोती चल पड़ा जिधर पैर ले जाए। रातों रात ४—५ कोस चला और एक दरखत के नीचे उसने वाकी रात विताई। सुवह उठते ही स्नान से निपटकर वह वस्ती की तरफ चला। गजपुर

नगर मे जा पहुचा। चलता चलता बाजार की शोभा देखता हुवा वह चौहटे मे आ पहुचा। एक बडी दुकान थी, सेठजी बैठे थे २–४ ग्राहक सोदा ले रहे थे। वह पास ही चबूतरे पर जा बैठा। वह बैठा ही था कि दुकान पर गाहकी बढने लगी। उनका ताता लगने लगा। दो गए और चार आये। चार गये और आठ आए। अकेला सेठ उनको पोच नही पा रहा था। हीरासिह को उसने आवाज दी, "अरे भाई जरा यहा आना, यह डबा उतारना, वह बोरी इधर लाना, उसमे काजु है, ऊपर बदाम रखी हे, खोपरे की बोरी मुझे दे देना, सिदुर उस छोटे डिब्बे मे हे।" यो एक आध घन्टे मे सेठ ने सौ रुपये का बिकरा कर दिया। उसे आश्चर्य हुआ। इतनी ग्राहकी कभी नही हुई। हो न हो यह लडका किस्मती हे। हीरासिह को पास बिठाया, पूछा कहा रहते हो बोला दूर के गाव मे। पढे लिखे हो, "नही" मा बाप हैं, "नही",

कहा जा रहे हो, " जहा रामजी ले जाए।" "मेरे यही रहो खाओ पीओ और दुकान का काम करो" "जो हुकम" हीरा तो हीरा था, पिछली पुण्याई भुगतने के लिए जन्मा था। रहने लगा सेठ के यहा। घर से दुकान, दुकान से घर, न किसी से ज्यादा बोलना न हसी मजाक, अपने काम से काम। सेठ ने नाम पूछा "खेमसिह" बताया। वह अपने आप को छुपा कर रखना चाहता था शायद भाई तलाश करने आवे नाम ठाम से पता लग जाय इसलिए काम के साथ नाम भी बदल लिया।

सेठजी के एक ही पुत्र था। संपत्ति का कुछ पार नहीं। सेठाणी का शरीर भारी था। काग के एक ही संतान होती है अत. सेठाणी भी काग वंध्या समझी जाती थी। स्वभाव भी जरा वाजरी के आटे की तरह खुरदरा था। कुंवर साहव लाड़ प्यार के मारे पढ़ने में पीछे थे परन्तु पाठशाला में धाक थी, सवको कुछ न कुछ खाने को दे देते थे, हाथ पोला और मनक गोला। इसलिए वह वड़निशालिया (मोनीटर) वन वैठे थे। गुरांजी को जन्म पत्री दवा दारू से कभी कभी फुरसत कम मिलती थी। अतः कुंवर साहव की वहां हकुमत थी। गांव के सव लड़के लड़की पोशाल में पढ़ने आते ही थे यह प्राचीन पद्धति थी। राजा हो या रंक, गरीब हो या अमीर सव के लिए यह पोशाल समान रूप से सरस्वती मन्दिर था। गुरूजी भी मन लगाकर पढ़ाते थे, अलवत्ता ज्योतिप या इलाज के लिए वाहर गांव जाने पर पाठशाला का भार तोर सेठजी के पुत्र को सोंप जाते थे।

राजा की कुवरी हंसावली भी वहां पढ़ने आती थी, लड़के और लड़कियो के वीच कपड़े का परदा रहता था। राजा की वैसी ही आज्ञा थी। राजघराने के लिए कुछ सन्मान तो रहना चाहिए। गुरूजी के वाहर जाने के कारण कुवर साहव प्रायः पाठशाला मे अधिक देर तक ठहरते थे इसलिए उनका भोजन खेमसिह वहां ले जाता था। मैं विना पढ़ा लिखा होने से खेमसिह का नाम पाठशाला मैं ठोठीराम रखा गया था। कुंवर साहव की सलेट धोना, दवात

कलम साफ करना। लडकियो की सलेट कुवर साहब को जचाने लाना, वापस उन्हे देने जाना, कभी कभी जल पिलाना, सफाई करना इस तरह से खेमसिह सरस्वती मदिर का पुजारी भी था।

लडको की अपेक्षा लडकियो का शारीरिक विकास जल्दी होता है। राजमहल का वातावरण रग रगीला रहता है। दास दासिया आपस मे अश्लील चेष्टाए करती हैं। इस का असर हुए विना नही रहता और खुराक भी राजसी। कुवरानी हसा अभी १४–१५ साल की थी, उसमे भी विकार के बीज पनप रहे थे। उधर सलेट जाचने के बहाने सेठजी के कवर से कभी कभी दो बात चोरी छुपे हो जाती थी। यो प्रेमाकुर पनप रहे थे। अब तो सलेटो पर इशारे बाजिया भी होने लगी। ठोठीराम पढा लिखा नही है, इस विश्वास से प्रेम पत्रो का आदान प्रदान परदे की आट मे सलेट पर ही होने लगा। जब जब गुरुजी बाहर गाम जाते तब-तब उन्हे अपने मन की बात लिखने का मौका मिल जाता था। ठोठीराम सावधान था। एक दिन उसने पढा, "मैं अब आपके विना तडपती हू, कही भाग चले।" "आज रात को गाव के बाहर घोडा ऊट लेकर तैयार रहना"। ठोठी राम ने दोनो की सलेटें पढ ली। वह विचार मे पड गया, "देखो एकात कितना बुरा है। लडके लडकियो का साथ पढना कितना भयानक है। अगर राजकुवरी के साथ मेरे कुवर साहब भाग जाएंगे तो परिणाम बुरा होगा। मेरे पेट

में सेठ का नमक है । इस आफत में से सेठ को वचाना चाहिए" ।

वह घर गया । सेठजी से सव वात कही । सेठजी को पसीना हो गया, धोती की गांठ छूट गई । राजकोप अग्नि से भी भयंकर होता है । उसने संतोष दिया कि "आप धवरावें नही । रात को कुंवर जायगा उससे पहले अन्दर की तिजोरी में से हार लेने उसे भेजना, मैं वाहर छुपा रहूंगा और उसे कमरे में बन्द कर वाहर ताला लगा दूंगा और मै कुंवरी के साथ भाग जाऊंगा । मै परदेशी ठहरा किसी को शक भी नही होगा । मै असली राजपूत हूं हीरासिह मेरा नाम है, पढ़ा लिखा भी हूं । आप ने मुझे आसरा दिया, अव मेरा फर्ज आपको इस जंजाल में से वचाना है ।"

हल्दी जरदी न तजै खट रस तजै न आम ।
असली तो औगुण तजे गुण को तजे गुलाम ।।

सेठ गद् गद् हो गए । वे अपनी पगड़ी में सदा चार सच्चे हीरे सवा सवा लाख के बांधे रहते थे । झट से अपनी पगड़ी उसके सिर पर रख दी और प्रेमालंगन में उसे कस लिया । हीरासिंह ने उन्हें प्रणाम किया । रात बीत रही थी, कुंवर तैयारी कर रहा था । सेठजी ने पास बुलाकर हार लाने को चाबियां दी । कुंवर का अन्दर जाना हुआ और पीछे से किवाड़ बन्द । पंछी पींजरे में तड़फड़ा रहा है । पंखिनी रात को ऊंट और घोड़ा लिए गांव वाहर आ पहुंची ।

हीरासिंह जब कभी पाठशाला मे जाता था गुरुजी हमेशा "असि आ उसा" का जाप करते थे, जिसे वह भी सीख गया था। आज भी रवाना होते वक्त उसने श्रद्धा पूर्वक असि आ उसा मन्त्र का जाप किया और चला मौत के फंदे मे। रात अंधेरी थी। राजकुवरी हंसावली एक छोटी दासी के साथ ऊंट पर बैठी थी। कुवरजी के लिए घोडा तैयार खड़ा था। हीरासिंह ने आव देखा न ताव। पेड से घोडा खोला मारी छलांग और दी घोडे के ऐड। घोडा हवा से बातें करने लगा। पीछे पीछे ऊंट झपटता आ रहा था। रात का सन्नाटा, बात करने मे जोखम थी। घोडा अरबी था। एक ही चाल से उसने १२ कोस की मंजिल पूरी की। पवन वेगी साड रेगिस्तानी जहाज था।

ऊषादेवी अपने प्राणनाथ सहस्र रश्मि को प्रणाम कर विश्रांति के लिए विदा ले रही थी, अतः अन्धकार मिट रहा था। थकान भी आ रही थी। कुवरानी ने दासी से कहलाया कि जरा घोडे को ठहरावे। हीरासिंह भी प्रातर्वंदना के लिए ठहरना चाहता ही था। एक घने वृक्ष के नीचे चबूतरे के पास घोडा ठहराया और मुंह फिराकर हीरासिंह खडा हो गया। ऊंट भी झुका और कुवरानी व दासी नीचे उतरी। कुवरी को अचम्बा हुआ कि कुवर साहब रास्ते मे तो भय के मारे नहीं बोले अब दूर क्यों खडे हैं। उसने उधर झांका तो ठिठक गई, "अरे बाप रे यह तो ठोठीराम," उसके मुंह मे से चीख निकली वहीं बैठ गई और बेहोश हो गई।

ने कहा कि हजूर मेरा एक लाख का हीरा है यह सेठजी ६० हजार देते हैं। राज जौहरी ने हीरा तपासा ७५ हजार की कीमत बताई। राजा की नजर हीरासिह पर पड़ी। वह मुस्करा रहा था। राजा ने गुस्से से उसकी तरफ देखा और कहा, "क्यों बदतमीज यहा भी हंस रहा है"। हजूर बहुत रोकने पर भी हंसी आ गई। "है कोई हाजर इस परदेशी को पकड़ो और मुश्के बांद दो"। परदेशी बोला, हजूर एक काच के टुकड़े के ६० से ७५ हजार की कीमत राज दरबार मे हो रही है इसी से हंसी आ रही है"। मंगाइए आपके खजाने के हीरों को, मै परख करता हूं यह टुकड़ा कांच का है, हीरा तो इसे कहते हैं। अपनी पगड़ी में से एक हीरा निकाला और हथौड़ा मंगाया, पूरी सभा चित्रवत हो गई थी। हीरासिह ने हथौड़े की खूब चोटे अपने हीरे पर मारी। हीरा चिपक गया टूटा नहीं, हुकम हो तो ७५ हजार के हीरे पर भी एक चोट करूं, राजा ने हां कहा! चोट पड़ते ही हीरा चूर चूर हो गया। वह परदेशी खिसकने लगा राजा ने उसे रोकने का हुकम दिया। अपने खजाने के सब हीरे मंगाए। कई पुराने असली और बाकी नई खरीद के नकली निकले। अपने जौहरी को व उस परदेशी को जेल में डाला। हीरासिह जी को राजा ने सन्मान दिया। शहर में हीरासिह जी की बड़ाई हो गई। राजा ने परिचय पूछा तो कहा कि "परदेशी राजपूत हूं। मेरे साथ वाले गांव के बाहर बैठे है। रहने का प्रबन्ध करने आया था इतने में यह हीरो का

मामला सामने आ गया।" राजा गुणवान थे। रहने के लिए गाव के पास वाला महल दे दिया, नौकर चाकर दास दासी भी। खाना पीना सब वहा पहुचा दिया। एक रथ दे दिया। भोजन व अन्य सामग्री रथ मे रखवादी। ५–७ दासिया रथ के साथ चलती हुई गाव के बाहर आई। वृक्ष के नीचे पछतावा करती हुई कुवरानी जी भूख प्यास से व मन के सताप मे उदास बैठी थी। हीरासिह जी आगे बढे और दासी को सब समझा दिया। भूखा तो भूखा है, खुशी मे हो या गमी मे, पेट तो भरना ही पडता है। यो सब जनें खा पी कर शहर में आए। चार खडिये महल में ऊपर ही ऊपर वाली मजिल मे राज कुवरी के लिए प्रबन्ध किया था। दूसरी मे दासिया रहती थी। तीसरी मे हीरासिह जी, चौथी मे नौकर चाकर। हीरा परख जी राज जौहरी पद पर शोभने लगे।

राजा ने हमेशा दीवाने खास मे आने का फरमान हीरा सिह जी को फरमा दिया। इस नगरी के लोग इन्हें हीरा परख जी कहने लगे। यथा गुण तथा नाम।

लक्ष्मी थारा तीन नाम।
परश्यो, परशु, परशराम॥

हीरा परखजी को जब एकान्त मिलता वे अपने जीवन के बनावो को याद करते हैं। अन्त में सोचते है, "जेहि विधि राखे राम तेहि विधि रहिये।" यो शहर मे और

राजमहलों में जिधर जाओ हीरापरख जी की ही प्रशंसा सुनाई देती थी। राजा के तो वे मूंछ के बाल बन गए थे। हर काम में उनकी सलाह ली जाती थी। कदर ज्ञान की होती है इनसान की नहीं।

उधर गज़पुर नगर में हंसावली राजकुमारी की पूरी तलाश हुई। गांव गांव सिपाही फिर गए पर पता न लगा अन्त में सब निराश हो गए। यह भाग दौड़ का भेद अन्तस्तल में जा छुपा। पृथ्वी और आकाश अनंत हैं। ऐसे तो कई नाटक रोजाना इन दोनों पाटों के बीच में होते रहते हैं। प्रकृति के लिए ये बातें कोई वक़्त नही रखती थी।

हीरा परख जी के गुणों से प्रसन्न होकर राजा ने ५०) दिन का वेतन और सब खर्च महलों से पहुंचाना निश्चित किया।

जहां रहे गुणवंत नर ताकी शोभा होत।
जहां धरे दीपक तहां निश्चय होत उद्योत॥

घर बार जम जाने के बाद हीरा परखजी ने आड़त का काम शुरू किया, मुनीम गुमास्ते रखे। दुकान में गादी तकिये लगवा दिये। नामेदार कामदार नियुक्त किए। स्वयं भी व्यापार देखा करते थे। यों लक्ष्मीजी महाराज बिना बुलाए ही आने लगी थी। संपत्ति आती है तो चारों तरफ से, पुण्य के आधीन जो है, जाती है ऐसे मानों साइकल का पैया वस्ट हुवा।

हीरा परखजी के पुण्य प्रभाकर तेजी मे थे इसलिए कचन और कीर्ति वढती जा रही थी। कामिनी अभी तक एक भी नही थी। उनकी कामना भी न थी।

हसावली अपने ही विचारो मे दिन पूरा करती थी। आज छ छ माह घर छोडे हो गए एक वार भी उसने ठोठीराम से भापण तक नही किया। कुछ काम ही नही पडता था। अलवत्ता वह अपने झरोखे मे सदा उसे देखती रहती थी। खासकर जव वह वना ठना राजमहलो को जाता था, दोनो तरफ पागडो के नौकर लगे रहते थे। कनोज (कावुल) देश का अवलक घोडा सवारी के लिए राजा ने दे रखा था। उडती खवरो से वह भी अनजान न थी पर आखिर वह था तो वही मलेट धोने वाला ठोठीराम। उसे अपने आपको समर्पण कैसे किया जाए। हा, अव पहले जितनी नफरत उसके लिए दिमाग मे नही थी, छुपे छुपे मोह चोर भी एक कोने मे जा वैठा था।

राजा साहव की जन्म गाठ (साल गिरह) नजदीक थी। हीरापरखजी से अव तकुल्लुफ कम हो चुका था। राजाजी ने अपने यहा उस दिन जीमने का न्योता दिया। हीरापरख जी को अव राजा हीरजी कहने लग गए थे। हीरजी ने अर्ज की, "घर पर पूछ कर निवेदन करू गा, हम परदेशी है आपरा ही अजन लेते हैं फिर भी घर पर चान करला मुनासिव है"। हसावली की दोनो समय की झरोखे वाजी

अचूक थी। आज भी वह झरोखे में आ बैठी। चिक को तिरछा किया, सामने से हीरजी चले आ रहे थे चहरे पर कुछ उदासी प्रगट हो रही थी, उसे भी खटका हुवा,। "क्या बात है सदा कमल जैसा खिलता हुवा मुख आज उदास क्यों ? आखीर है तो यह आदमी नेक व धर्मात्मा, मै अकेली हूं, मैं इसके साथ भागकर आई हूं लेकिन इसने सत नहीं छोड़ा, कभी भाषण तो दूर छांया भी नही बताई।"

छोकरी दासी झमकु को आवाज दी। जा ठोठीराम को ऊपर बुला ला। पुछाया, "आज उदासी क्यों है"। "पेट में दर्द है" "पेट का दर्द राजमहलों का है जो हो सो पूछ ले छोरी झमकुड़ी" "राजा साहब ने जीमने का निमन्त्रण दिया है, कभी यहां भी उन्हें निमन्त्रण दिया जा सकता है, मै उनके लिए कैसे प्रबन्ध कर सकता हूं, घर में कोई औरत तो है नहीं जो रानियों के पास बैठे उठे। हंसा बोली, "कह दे दासी झमकुड़ी, निमन्त्रण स्वीकार कर लें और १५ दिन बाद अपने यहां जीमने की अरज राजा से कर दें।"

आज राजा जी की साल गिरह है। बड़े बड़े अमीर उमरावों व जागीरदारों की महफल है। तरह तरह के नाच गान मुजरे और अमल कुसुंबे के दौर चल रहे है। नगर में रोशनी का प्रवन्ध है। राजमहल ही क्या पूरी नगरी असली अलकापुरी सी हो रही है। शहर में विविध नाटक हो रहे हैं।

हीरजी को देखते ही राजाजी प्रसन्न हुए। अन्दर से दासी आई कि रानी साहवा ने पुछाया है हीरजी अकेले क्यो पधारे, अभी पालकी भेजी जाए और कुवरानी साहवा को भी बुलाया जाय। हीरजी क्या जवाव दें, चुप। पालकी हीरजी के महलो पहुची, मजबूरन हसावली ने सिर दर्द का वहाना वता कर पालकी को वापस फेर दिया।

अव भोजन का समय हुवा। सव के जीमने के वाद राजा साहव हीरजी को साथ लिए अपने भोजन गृह मे पधारे। वहा की शोभा ही निराली थी। हीरजी से अव पर्दा नही रहा था।

दो सुन्दर आसन विछाए गए। एक रानी जी आई सोने की दो जडाऊ चौकी विछागई, दूसरी आई सुगधित जल की झारी रख गई, तीसरी आई वडे वडे थालो मे ३२ पकवान और ३३ सारने परोस गई, चौथी आई खडी खडी पखा करने लगी।

हीरजी मानो सपने की दुनिया मे थे। यह सव नाटक उन्हे सच्चा नही मालूम दे रहा था। राजा के भाग्य को सराह रहे थे। राजा साहव ने शुरु करने की मनुहार की और उनकी तद्रा टूटी। जीम चूट कर आराम कर अपने महलो रवाना हुए और राजा साहव से १५ दिन वाद अपने यहा जीमने पधारने की अरज मजूर कराली।

घर आकर सव हकीकत विस्तार पूर्वक झमकु द्वारा वाई साहव से अर्ज करा दी। वाई साहव भी एक राजा की लड़की थीं। सोचने लगी जिसका राजा सन्मान करे वह आदमी मामूली नहीं हो सकता, धीरे धीरे ठोठी राम के प्रति उनकी सहानुभूति व स्नेह वढ़ रहा था। राजा साहव महमान होने वाले थे अतः जीमन आदि की तैयारी भी करनी थी। उसने अपने लिए चाररंग की पोशाकें तैयार कराईं, चार प्रकार के कंकन आदि आभूपण तैयार कराये। पंद्रह दिन हां कहते कहते निकल गए। कल राजा साहव के साथ ५०० आदमी जीमेंगे इसकी चिंता हीरजी को सता रही थी। हंसावली बड़ी चतुर व समझदार थी वह मात्र परदा ठोठीराम से करती थी वाकी को किसी हिसाव में नहीं गिनती थी। स्वयं ने सव प्रकार का प्रवन्ध खड़े रहकर करवा लिया था अतः निश्चिंत थीं।

राजा जी की सवारी वाजते गाजते आ पहुंची। राजाजी के अनुरूप ही बाजे गाजे से स्वागत हुवा। विशेष खंड में राज सिंहासन लगाया गया। नर्तकियों के नाच मुजरे सव राजसी ढंग से हुए। इत्रपान के पश्चात सुपारी फिरी। अमल कसुबा गला। राजा जी के दोनों तरफ सुनहरी चंवर ढुल रहे थे। महल की शोभा अवर्णनीय थी। राजा तो दंग रह गए, वाह रे हीरजी वाह। किसी बात की कमी नहीं। सब को आनन्द पूर्वक जिमाया गया। महल के विशेष खंड में भोजनालय था। राजा साहब को लिए हीरजी वहां जा पहुंचे।

ढाका बगाला का असली काम का गलीचा व चीनी कालीन बिछा था । एक रानी जी आई और सोने की चौकी बिछा गई, दूसरी आई और झारी रख गई तीसरी आई और भोजन थाल परूस गई चौथी आई और पखा झलकर चली गई । राजा के अचवे का पार नही । हीरजी का सौभाग्य सराहने लगे । ठीक मेरे महलो जैसा ठाठ हीरजी के यहा भी है । चार सुन्दर रानिया महल की शोभा मे चार चाँद लगा रही है ।

भोजन के पश्चात आराम कर राजा साहब महलो पधारे । नगर मे हीरापरख जी की प्रशसा के पुल बधने लगे । हीरजी अपने खड मे जा लेटे । जादू का खेल । देखने सुनने को हीरजी के चार रानिया, वास्तव मे एक भी नही । सब इन्द्रजाल सा लग रहा था । ऊँ असि आ उसा का जाप कर के वह सो गए ।

यो हीरजी के मान सन्मान राजा प्रजा मे बहुत बढ गए थे । राजा की कुवरी मैना भी कभी कभी हीरजी के मुख कमल के दर्शन चोरी छिपे कर लेती थी । मन मे वह उनको वर चुकी थी ।

श्रावण के त्योहार आए । तीज तो सधवा स्त्रियो का सर्वश्रेष्ठ प्यारा त्योहार । अत पुर से राजा को मालूम कराया गया कि इस वार तीज का त्योहार चपाबाग मे मनाया जाय । वही झूले पडे और हीरजी की चारो रानिया भी हमारे साथ झूला झूले । राजा साहब ने हीरजी की तरफ

देखा। आंखों ही आंखों सब प्रोग्राम पक्का हुआ। हीरजी हां कहें तो भी दुःख ना कहें तो भी दुःख। सबसे भली चुप।

घर आए तो आज फिर दासी बुलाने आई। पुछाया "आज फिर चहरा उदास क्यों, कहलाया, चम्पा बाग में झूले पड़ेगे राजा की चारों रानियों ने ठोठीराम की चारों रानियों को वुलाया है, इसलिए सिर में दर्द है"। कहदे झमकु, "सब हो जायगा"।

चंपा बाग में आज खास इन्तजाम था। जनता एक तरफ जा रही थी आधा बाग राज घराने के लिए रुका था। पहरेदार खड़े थे। ठीक समय पर राजा साहब की सवारी हाथी पर निकली। दूसरे हाथी पर हीरजी सवार थे खमा खमा के फटकारे उड़ रहे थे मागध और चारण, भाट और मिरासी विरूदावली गा रहे थे। हाथियों के पीछे आठ रथ थे। चार राजा की रानियों के चार हीरजी की रानियों के।

दास दासियों को दूर भेज दिया। सुंदर तखत पर राजा साहब और हीरजी बिराजमान हुए। रेशम की डोर के झूले लटक रहे थे' रतनों जड़ी सोने की पाटकड़ी थी। पहले वड़ी रानीजी अपने रथ में से निकलीं। उधर से हीरजी की एक रानी निकलीं। दोनों की उम्र ३५-४० तक की लगती थीं। थोड़ी देर झूल कर दोनों थक गईं। ५ मिनट वाद दूसरा जोड़ा झूला जो २५-२७ की उम्र का लगता था। फिर थोड़ी देर से तीसरा जोड़ा हंसता मुस्कराता झूला झूलने लगा उम्र २२-२४ की होगी। काफी देर झूलकर

तीसरा जोडा भी रथो मे जा पहुचा। अव चौथा जोडा अपनी निराली शान और हस गति से झूले के पास पहुचा १८–२० से अधिक उम्र दोनो की न होगी। खूव मजे मे वे दोनो झूलीं। गाती भी जाती थीं, हसतीं भो जाती थीं। वहा कोई वाहर का तो था नही। मन की मुरादे पूरी की। २० मिनट तक झूलकर अन्तिम गोडी इतनी जोर से ली, झूले को इतना ऊ चा चढाया कि हीरजी की रानी का नौलखा हार गले मे उछल कर वृक्ष की सवसे ऊ ची डाली पर जा अटका। रानीजी ने याद दिलाया तो वोली, "आपकी दया से घर दूसरे रखे है। यह वृक्ष देव के भेट रहा।" साँझ पडने को थी। मेला समाप्त। सव अपने अपने घर जाने लगे। घर आकर हसावली ने झमकु के द्वारा हीरजी को वुला भेजा और कहलाया, "आज हमारी आखे खुली आपका मैंने वहुत अनादर किया, अव अपने चरणो मे स्थान दीजिए।" मैं पलग की तैयारी कराती हू एक मेरा काम कीजिए कि झूलती वक्त नौलख का हार उसी वृक्ष पर जा पडा है उसे ला दीजिए, मेरी प्यारी मा की वह यादगार है मैं जीवन भर आपकी दासी हू।"

तुम चदा हम चांदनी रचो श्राप करतार।
अव वंदी को जानिए श्रपनी तावेदार॥

हीरजी वोले, "मैं भी असली राजपूत हू," सेठ के लडके की जान के खातिर मैं स्वय आग मे कूदा हू आपको

पढ़ाने वाले गुरूजी ने एक बार आप लोगों को पढ़ाया था कि:—

त। दे मन दे धन दे रखिए धर्म बचाय।
एक धर्म के कारने सर्वस्व देओ गंवाय ॥

आप चिंता न करें। मैं हार लेने जा रहा हूं, लौटकर गधर्व विवाह कर हम एक बनेंगे।" घोड़े पर बैठ कर हीरजी चंपा वाग के अन्दर गए। अन्धेरे में हार चमक रहा था फुर्ती से ऊपर चढ़ गए और हार को गले में डालकर उतरने लगे। चढ़ने में जितनी सावधानी की जरूरत है उससे अधिक सावधानी उतरने में चाहिए, यह तो अनुभव की वात है, अत: काफी देर लग गई।

रात काफी जा चुकी थी। १२ बज गए थे। चौकीदार बाग के सब दरवाजे बन्द कर बाहर निकल जाते थे। द्वार-बन्द करते वक्त हीरापरख जी का अकेला घोड़ा देखा उसे भी बाहर निकाला और बांध दिया। सोचा शायद भागकर आया होगा, हीरजी के आने की खबर उन्हें नही थी। बारह के ऊपर थोड़ी देर हो चुकी थी बाग में सन्नाटा, हीरजी ने देखा घोड़ा नही सो नही दरवाजे ही बन्द वह चक्कर में पड़ गए। मिलन की पले बीत रही थीं। हंसावली का मुख कमल याद आ रहा था। उधर हंसावली के लिए एक एक क्षण एक एक घन्टे के बराबर हो रहा था। वह सोलह शृंगार किए आरती का थाल लिए शयन खंड में प्रतीक्षा कर रही थी। आज उसकी सुहाग रात थी।

हीरजीने बाग के अन्दर चारो तरफ चक्कर लगाये। दीवार फादने के भी प्रयत्न किए। कही भी रास्ता नजर नही आया एक पानी जाने का चौडा परनाला नजर आया उसमे पैर डाले और ओधे सोकर निकलने लगे, मगर नाला आगे २ सकडा था, वही फस गए। न निकलते वनता है न छूटते। थोडी देर के वाद वहा वाग मे खुशवू ही खुशवू फैल गई। तरह २ की आवाजे आने लगी। पायलो की झनकार और नूपरो की रणकार से वगीचा गूज उठा। वात यह थी कि यह चपा वाग नाग कन्या की चौकी मे था। वह हर रात को यहा घूमने फिरने आती थी। आदम जात से उसे नफरत थी, अत २० वर्ष की होने पर भी कुवारी थी। सब सखियो सहित घूमती सैर सपाटे करती हसती ताली बजाती सीटी वजाती वाग मे फिर रही थी थोडी देर वाद वह सब को एक तरफ वैठा कर अकेली घूम रही थी, एका एक उसकी नजर उस परनाले मे पडी जहा वेहद चमक नजर आ रही थी। वह वहा जा वैठी और देख कर हैरान। यह कोई इद्र है या नरेंद्र, विद्याधर है कि देवेंद्र उसे वाह खीच वाहर निकाला। मरूपवान कुवर को देखते ही नाग कन्या मोहित हो गई —

चितवन ने मन हर लियो कहि नहीं कछु वेन।
मुझको घायल कर दिया मार विरह के नैन ॥

उसने अपने गले मे से एक धागा निकाला और वांध दिया हीरजी के गले मे। वन गए वह तोता, ले भागी वह पाताल

लोक में। एकांत पाकर धागा खोल दिया, हीरजी कन्हैया कुंवर जैसे प्रगट होगए। गांधर्व विवाह किया और बन गई हीरजी की पटरानी। हीरजी ने कहां, मै विदेश में हूं छः माहतक ब्रह्मचारी रहने का मेरा नियम है इसलिए हम मित्रवत रहेगे। समय आने पर गृहस्थी बनेंगे। हीरजी के लिए सोने का पिंजरा आ गया। रत्नो जड़ित कटोरियों में दाखें और अमरूद रखे जाने लगे। पानी भी वह अपने हाथ से पिलाती है। पिंजरे को कभी सूना नही छोड़ती है। उस का प्राण कहो या प्राणनाथ सब उस पिजरे में ही था। अब सैर सपाटे दिन में होने लगे। दिन फाल्तू जो था। रात कीमती थी। यों तीन माह किधर बीत गए मालूम ही न हुवा। राजा ने हीरा परखजी की खूब तलास कराई पर कुछ भी पता न चला। एक रात को नाग कन्या चंपा बाग में घूमने आई थी। उसे जरा नींद आ रही थी वही लेट गई और गहरी नीद में खो गई, सखियां उस पिंजरे के तोते से खेलने लगीं। एक ने तोते को निकालकर अपने हाथ पर बिठाया। यह अवसर भला हीरजी कैसे जाने देते। उड़े वह वहां से और जा पहुँचे एक डाल पर। अंधेरा तो था ही वहां से उड़े और बाग की हद पार कर एक वृक्ष पर जा बैठे। नाग कन्या की जब नींद खुली उसने पीजरा खाली देखा। वह बहुत बेचैन हुई। सखियां बोली कल एक क्या १२ तोते पकड़ मंगा देंगी आप चिंता क्यों करती हैं। उन्हें क्या मालूम कि ऐसा तोता तो तीन जगत में नहीं था। करती क्या लाचार खाली पिजरा लिए पाताल लोक मे पहुँची।

इसी अलकापुरी मे दो आँखें ऐसी थी जो रोजाना हीरजी को राजमहल जाते और आते लुक छिपकर देखा करती थी। उन्हे देखे विना उन्हे चैन नही पडता था। राजमार्ग पर एक सेठ का घर था उनके कोई सतान न थी अत सेठानी अपने पियर से एक पडौस की अनाथ राजपूत कन्या को ले आई थी। विचारी के मा वाप ३-८ दिनके अन्तर से मर गए थे। सभालने वाला कोई न था घर मे सपत्ति न थी। जागीरदार की सपत्ति तो कर्ज होती है जो वहा थी ही। उन ६ वर्ष की अवोध वालिका कोकिला के सब रिश्तेदार उसे अपने घर ले जाने को इन्कार थे। आखिर सेठानी का दयालुजीव और वालक विहोना सूना घर कोकिला को अलकापुरी मे ले आया। अव वह सयानी हो चुकी थी हीरा पारखजी की तरफ उसका मन खीचने लगा। सेठ सेठानी भी यही चाहते थे कि किसी न किसी तरह यह राजपूत कन्या क्षत्रिय हीरासिहजी के पल्ले पटक दें पर किसी के चाहने से तो कुछ होता नही —

लाख तदवीर करे कोई तो क्या होता है।
वही होता है जो मजूरे खुदा होता है॥

सुवह होते ही तोता उडा और वजाय अपने महल के भूल से राजमहल की छत की मुडेर पर जा वैठा। सर्दी की शुरुआत थी। राजकुमारी मैना हमेशा गरमजल से ऊपर छत पर वने स्नानागार मे अकेली सुगधित जल से स्नान करती

रहती थी। शरीर में यौवन का संचार हो रहा था। आकार भी वदल रहा था। गदराया गदराया गात्त गरम पानी के स्पर्श का आनंद ले रहा था। स्नान कर कपड़े पहने कि अचानक उसकी नजर उस तोते पर पड़ी। झट उठी और तोते को पकड़ स्नान घर में आ बैठी। बड़े प्यार से उसे भी नहलाने लगी। स्नेह से हाथ फेरती जाती है और पुचकारती जाती है। पानी के पड़ने से और वार-वार हाथ फिराने से वह गले का धागा टूट गया और हीरापरखजी प्रगट हो गए। वह अचकचाई और सुधवुध भूल गई। जिसके नाम की रोज माला फेरती है वह तो सामने खड़ा है। उसे जरा होश आया और फौरन उसे टूटे हुए धागे में अपनी चोटी का धागा जोड़ा और हीरजी के पैरों में वांध दिया। फिर से तोता वने हीरजी को वह अपने खंड में ले आई यहां भी वही दशा। दिन में तोता, रातमें न सोता। गांधर्व विवाह कर मैना ने मन पंसद तोता पालिया। हीरजी वोले मेरे ३ माह का संयम का नियम है वाद में गृहस्थ जीवन शुरू होगा। यहां भी २-२॥ माह किधर निकल गए जिसका पता ही न चला। दोनों मित्रवत रहते थे।

उधर हंसा की हालत दिन २ कमजोर होती जा रही थी वह आशा के वल जी रही थी उसकी दशा थी:—

पटका रही है कामिनी सज सोलह शृंगार।
छोड़ चले मंझधार में कहां मुझे भरतार॥

नाग कन्या का विलाप निराला था —

न छेडो हमे दिल दुखाए हुए हैं।
जुदाई के सदमे उठाए हुए है।।

कर्म गति विचित्र है इसमे किसी का जोर नही चलता है। हीरजी तो हर हालत मे मस्त है। जो वीते से वीतने दो।

भव मडपमा रे नाटक नाचवो।
जैसो लिखायो रे लेख।।

राजकुमारी मैना हमेशा फूलो से तोली जाती थी। फूलों की सेज पर वह सोती थी। वह वहुत वाचाल और नखखट थी एकाएक उसके स्वभाव मे परिवर्तन देख कर और हर समय अपने खड मे एकात रहने के कारण सखियो को कुछ खटका हुआ। उसे अव घूमना फिरना पसद नहीं था उसके लिए तो सवमे प्यारा उसका तोता था उसी से बोलती और खेलती थी। स्त्री के स्वभाव मे डाह और ईर्पा तो प्रकृति ने भरही रखी है। सखियो ने सावधानी से चोरी छुपै उसके खड का पहरा देना शुरू किया। एकरात को किसीके साथ वाते करते सुनाई दिया। उन्हे वहम हो गया कि जरूर रात को कोई आदमी यहा आता है। सखियो ने रानी से कहा, रानी ने राजा से कहा। राजा को वहुत क्रोध आया। वह रात होने की फिक्र मे था। रात हुई और राजा साव-धान होगया। उधर रात को हीरजी का वागा मैना ने

खोला ही था और बात चीत शुरु की ही थी कि दासी ने जाकर रानीजी को जगाया। रानी खुद आकर किवाड़ के पास कान लगाकर सुनने लगी, किसी आदमी की स्पष्ट आवाज आरही थी। रानी और दासी राजा के पास गए। उनके पैर जोर जोर से पड़ रहे थे मैना को शंका हुई और एक क्षण में सब मामला समझ गई। उसने झट से खिड़की खोली और हीरजी धीरे से एक छत पर कूद गए। छत ही छत को लांगते वे आगे चले जा रहे थे। दो क्षण बाद राजा आए और मैना का किवाड़ खटखटाया। मैना ने किवाड खोला, पिताजी ने क्रोध में आकर बुराभला कहा मगर वहां किसी को न पाया। रानी और दासी कह रही थी कि जरूर कोई आदमी था शायद उधर खिड़की से कूद गया हो। मशालें लेकर सिपाही दौड़े मगर कोई नजर नही आया। हीरजी छते कूदते फांदते काफी दूर जानिकले, पीछे देखा तो सिपाही मशाले लिए गलियों बाजारों में आरहे थे उन्होंने समय की कीमत समझली और झट छत से एक घर के आंगन में जा कूदे। घर में एक पलंग पर बूढे सेठ सो रहे थे। धमाके से सेठ उठे और साथ ही दूसरे पलंग से सिठानी उठी। बाहर शोर गुल होरहा था। दीये की मधिम रोशनी से सेठ सेठानी पहचान गए कि यह तो हीरापरखजी है। हीरापरखजी की बुद्धि इसवक्त पूरी तेजी से दिमाग के चक्कर काट रही थी उन्हे अपनी जान और इज्जत बचानी थी। जोंही सेठानी ने बिस्तर छोड़ा, वे घुसगए सेठानी के खाली बिस्तर मे और खेचली दोवड़। बाहर का शोर बेहद बढ़गया था

सिपाही हर घर के किवाड़ खुलाकर चोर की तलाश कर रहे थे। एक सिपाही ने सेठजी का किवाड़ खटखटाया, सेठाणी ने दरवाजा खोला, "क्योंजी यहां कोई अभी चोर तो नहीं आया।" बोली आप देखलो पूरा घर, "ये दो पलंग हैं एक में हम दोनो सोए हैं दूसरे में हमारे बेटी जवाई सो रहे हैं।" सिपाही ने मशाल लेकर कोना २ ढूंढ मारा, चार के सिवा पांचवा प्राणी हो तो मिले। जवाई तो चोर होही नहीं सकता, लाचार सिपाही आगे बढ़े। सेठानी भी दीया बुझा कर सेठ के पलंग पर सोगई। हीरजी करवट फेरे चुपचाप बिल्ली के बच्चे की तरह दुबके सो रहे थे। सोते ही उन्हे मालूम हो गया था कि बिस्तर में कुछ न कुछ गीला २ है जिसके हाथ पैर और सिर सब है, पर लाचारी थी, उठने तो मौत सामने खड़ी थी। सब १-२ मिनट में होगया। गंगा में ज्वार आया और भाटा (उतार) भी होगया। वे चुपचाप उठे और पर तरफ जाकर सिकुड़ कर बैठगए। मन में [illegible] गिनते रहे।

सब की नींद हराम थी। सेठ सेठानी सोते पर रहे थे देखो कैसा चोर मिला है, बिटिया का भाग जोरदार है जो हीरजी सो वर खींच लाया है। लेकिन सब ही सब प्रसन्न थी। दैव ने जोड़ी मिलते मानली है। यह याद कर रही थी —

तुलसी जस भवितव्यता तैसी मिले सहाय,
आप न आवे [illegible] हि तहां ले जाय ॥

हीरजी कौने में चुपचाप बैठे थे। वह अपने जीवन की धटनाओं की विचित्रता को सोच रहे थे। हंसावली और नागकन्या की याद सता रही थी। मैना की मीठी बातों की भनक अब भी कान में पड़ रही थी। कुदरत को क्या मंजूर है समझ नहीं आता। मेरे भाइयों का क्या हाल होगा। कब इस गोरख धन्धे से छुटकारा होगा; और कब अपने परिवार में जा पहुँचू। पर क्या कर सकते थे। समय बलवान है।

ज्यों त्यों रात बीती। सुबह सेठ सेठानी जल्दी उठे तो क्या देखते है हीरजी एक कोने मे बैठे २ ही ऊघ रहे हैं वे समझ गए कि इन्होंने सारी रात यही बैठकर बिताई है पिछली रात में नीद आगई है। कोकिला भी उठ गई थी। वह चुपचाप घर का काम करने लगी। दिल तो रात से ही धड़क धड़क कर रहा था, घड़ी के कांटे की तरह जाग रहा था, उसकी नीद उड़ाने वाला उसीके घर में कैद है। जो खुद नीद ले रहा है।

सेठजी ने हीरजी को जगाया वे उठखड़े हुए और जाने लगे, सिठानी बनावटी क्रोध से बोली, "क्योंजी तुम्हें शरम नही आती, रात भर मेरी बेटी के पलंग पर सोए अब कहां जा रहे हो।" सेठजी बोले, "बेटा यही रहो मेरे बेटा नही है यह घर बार दुकान संभालो खाओ पीओ मस्त रहो।" बेटी का हाथ पकड़ कर हीरजी के हाथ में देदिया और वही खड़े २ फेरे फेर दिए। सूरज के उदय के साथ ही कोकिला के सौभाग्य सूर्य का उदय हो गया।

सिंहपड़ा कटाजरे क्या करे बलवत।
होरापरखजी बनगए चौं नारी के कत ॥

सेठजी की हवेली बहुत बडी थी। एक दरवाजा राजमार्ग पर था दूसरा दरवाजा पिछले बाजार मे था। राजमार्ग वाले दरवाजे को बद किया। पिछला दरवाजा खोलदिया। उधरही एक कमरे को ठीक कर दुकान बनवाली। हीरजी अब व्यापारी बनगए ढीली धोती और पतला कमीज, सिर पर पगडी और पैर मे मोजडी। सुबह से शाम आटा-दाल नमक तौलते हे। खाते पीते मस्त रहते है —

किस किस को याद कीजिए किस २ को रोइये।
आराम बडी चीज है मुंह ढक के सोइये ॥

लक्ष्मी तो सदा से प्रसन्न थी। दुकान का मुह इधर फेरा तो वह इधर भी ढूढती आगई। दीयो और फुलछडियो की रोशनी से, थाल भरे मेवामिठाइयो के पूजने से और आरती उतारने फूल चढाने से वह थोडे ही आती हे। वह तो आती है पुन्य के पीछे पीछे धर्म के पैर देखती देखती। यहा भी २।–२॥ माह बीत गए।

हसावली को आज इन्तजार करते २ करीब ६ माह होने आए है, उसके धैर्य का बाध टूट रहा है अब वह खुद वेश परिवर्तन कर नगरी मे घूमती है। आज इस बाजार तो कल उस बाजार, आज इस गली में तो कल उस गली मे। नाग कन्या भी बेचैन; वह भी ढूढती फिरती है। राज कन्या मैना तो बिचारी किधर की भी नही रही,

न खुदा ही मिला न विसाले सनम ।
न इधर के रहे न उधर के रहे ।।

हंसावली का खाना पीना हराम है उसने ठोठी राम के पीछे भेख लेलिया है। आखिर महनत वेकार थोड़े ही जाती है। एक दिन वह जा पहुँची उधर ही जिधर हीरजी आटा दाल तोल रहे थे। दूर से देखते ही पहचान गई। झटपट घर पर आई बनाव श्रृंगार किया, रथ जुताया और ४ नौकर ४ दासियों के साथ आ पहुंची हीरजी की दुकान पर। रथ रोका। दासी ने सलाम की, दासियों ने ओवारने लिए। खमा खमा, महला पधारों मारा पृथ्वीरा नाथ। इतने सारे आदमी और दासियों को देखकर कोकिला भी बाहर आगई उधर से नाग कन्या भी हीरजी को ढूढती तलाश करती वहां आ पहुंची। राजा की दासियां पानी भरने आई थी उन्होंने बाजार की रंगत मैना कुंमारी से बयान की, वह भी लोक लाज छोड़ कर आ पहुंची कोकिला के घर।

नैनन को यह धर्म है जो कहुं ये लगजांय।
लोक लाज कुल काण को छन में देत विहाय ।।

खूब झमेला रहा। आते जाते राहगीर वहां जमा होगए। हंसा कहती है चलिए पृथ्वीनाथ महलों में, मैना कहती है चलिये प्राणनाथ राज महलों में ।

नाग कन्या कहती है चलिए पाताल लोक में। कोकिला कहती है चलिए घर में दरवाजा वंदकर।

हीरजी क्या जवाव दें। उनका तो एक ही औजार है जुवान वद, न वोलने मे नौ गुण। ऐसे मौके पर वह लाली वाई को (जीभ) वत्तीस पहरे गीरो वाले कमरे मे विठा देते थे। वात खूव वढ गई। चारो शोकें विकराल रूप से विवाद कर रही थी। सुनने वाले दग। चारो का चोर वह साहूकार कुछ भी जवाव नही दे रहा था।

ज्यादा हल्ला गुल्ला होता देख कोतवाल साहव आगए। राजकुमारी ने आज्ञा दी जाओ दाता हुकम को (राजाजी) यहा वुलालाओ। राजाजी की सवारी आगई। सेठजी ने हवेली मे विछात करा रखी थी। आसन ग्रहण करके राजा ने चारो का वयान लिया। हसा की वात सुन कर राजा को आश्चर्य हुआ कि हीरापरखजी इतने सच्चरित्र है, इतने नेक व वफादार हैं। राजाजी जीमने आए तव और रानिये झूला झूलने चपा वाग मे गई तव कैसी चतुराई हसा ने की और हीरजी की इज्जत वनाए रखी। राजा ने न्याय किया। हसा-वली पटरानी। नागकन्या की वात भी मान्य रही। वह दूसरी रानी। अव अपनी वेटी मैना की वारी आई। राजा सव समझ गए। वह तीसरी रानी। अव कोकिला के पिता ने भी उस रात वाली वात कही, राजा के आश्चर्य का पार नही, हीरजी कितने साहसी व नीतिवान शीलवान पुरुष हैं। सव के समक्ष कोकिला के पिता ने कोकिला का जीवन वृतात सुना दिया कि वह राजपूत कन्या है। चारो राजकन्याओ को राजा अपने महलो मे ले गए। ८ दिन तक आराम मे

रखा, तीनों को धर्म पुत्री बनाया और चारों का विधिवत विवाह किया।

हीरजी ने अब अपने गांव जाने की तैयारी की। राजा ने खूब मना किया, पर अपनी जन्मभूमि की याद किस अभागे को नही सताती है। विदेश में लाख सुख हों तो भी जीव तो मातृभूमि में ही रहता है।

"जननी जन्म भूमिश्चस्वर्गादपि गरीयसि"

नागकन्या के पिता राजा वासुकी ने तरह तरह की मणियां, जवाहारात और असली मोतियों के हार आदि नाना विध आभूषण उसे दिए। चतुरांगनी सेना सजा कर राजा हीरासिंह अपने गांव की तरफ लौट रहे हैं। कुछ दिनों में वह राजपुर नगरी के पास जा पहुँचे।

नगरी से दूर उन्होंने पड़ाव डाला। नगरी में खलबली मच गई। सब को डर बैठ गया कि कोई बड़ा राजा चढ़ आया है।

राजा हीरासिहजी ने अपना दूत भेजकर राजा को मित्रता के समाचार दिए कि हम अपनी नगरी को जा रहे हैं, तीर्थ करते २ आ रहे हैं आज आप हमारे महमान बनने की कृपा करे। रनिवासा भी साथ होना चाहिए। राजपुर के राजा ने निमंत्रण स्वीकार किया! उच्चाधिकारी नगर सेठ व सामन्तों को बुलाया। पौशाल से राज्य गुरुजी को भी बुलाया। सजधज कर सवारी गांव के बाहर पहुँची। हीरासिंहजी राजा के सामने गए। बड़े आदर से उन्हें सिंहासन पर बिठाया। कुशल समाचार पूछे। राजा ने प्रसन्नता तो प्रगट की फिर भी एक दुःख की

आह् अनायास मुहसे निकल गई। हीरासिहजी के वहुत पूछने पर अपनी कुवरी हसावली के वर्षो पहले गुम जाने के समाचार राजा ने कहे। हीरासिहजी हस दिए। उधर रानीजी भी हीरासिहजी की रानियो के बीच वैठी हुई ऊपर से खुशी वता रही थी अन्तर मे आग थी जो छुपी न रही। वेटी की चिंता उसे सता रही थी। आखो मे आसू भरे थे।

हीरासिहजी ने यह अवसर उपयुक्त ममझा और दासी द्वारा हसारानीजी को सकेत कराया। हसावली उठ कर पिताजी के पैरो पडी और माता की गोद मे जावैठी। राजा राणी के कुछ समझ मे न आया यह कौन है ?

हीरासिहजी ने अपना पडाव लगाते ही माहण गुरुजी को वुला लिया था और उन्हे अपना सम्पूर्ण चरित्र कह सुनाया था। इसी अवसर पर आज राज सभा मे गुरुजी ने सेठ के लडके और राज कन्या वाली अपनो पोशाल की वात प्रकट की, किस तरह ठोठी राम वने हुए हीरासिहजी ने दोनो कुलो की रक्षाकी। यहा विराजमान राजाजी हीरासिहजी ही है और उनकी चार रानियो मे पटरानी ही हसावली कुमारी है। नगर सेठ व उनका पुत्र भी वही थे, वे शीघ्र ही हीरासिहजी के पास आए और वडे प्रेम से मिले। हीरासिहजी ने वही सेठजी वाली हीरो वधी पगडी सेठजी के पुत्र को पहनादी। हीरासिहजी ने चार के वजाय पाच हीरे उसमे पहले से वाध दिए थे।

वडो वड़ाई न करे, वडो न बोले बोल।
हीरा मुखसे न कहे लाख हमारा मोल॥

राजा रानी की प्रसन्नता का पार नहीं रहा। सारी गजपुर नगरी को सजाया गया। वेटी और जवाई को हाथी पर बैठा कर नगर में फिराया, खूब खुशी मनाई गई। ४ दिन वही ठहर कर सबके सब आगे बढ़े। राजा ने खूब धनमाल, हाथी घोड़े व सैना हंसा को दी।

चलते २ कोकिला रानी का पियर का गांव आया। नगर के बाहर पड़ाव डाला। पूरी नगरी को जीमने का न्योता कोकिला कुमारी के नाम से दिया गया। साधु ब्राह्मणों को वस्त्र बांटे गए। सब मंदिरों में १०१)१०१) रुपए भेंट किए गए। अपनी पड़ौस की औरतों को और संबंधियों को बुलाकर कोकिला ने माला-माल कर दिया। सबने कोकिलारानी के भाग्य की सराहना की।

तीनबेर खाती थी सो तीन बेर खाती है।
बीन बीन खाती सो बीन बीन खाती है॥

अर्थात्—जब गरीब थी तब खाना नसीब न था अतः कभी २ जंगली बेरही बीन कर वह खाती थी अब मेवा मिठाई भी बीन कर पसन्द कर वह खाती है।

अब हीरासिंहजी अपनी मातृभूमि की तरफ चल दिए। दूर दूर तक सेना ही सेना नजर आती थी। सैकड़ों हाथी, हजारों घोड़े और ऊंट, रथ और घोड़े, पैदल सेना का तो कोई पार ही नहीं था।

ठीक वही जगह आई जहां उनके तीनो भाई खेती करते थे। उनकी झोपड़ी के सामने अपना खास तम्बु खड़ा कर-

वाया, पूरी सेना का वहा आस पास पडाव लगगया। तीनो भाइयो का परिवार और अन्य राजपूत भी हैरान होगए कि यह कहा के राजा हे और यहा पडाव क्यो किया है ?

सुवह उठते ही तीनो भाइयों को बुला मगाया। बड़े को हुक्म दिया कि ठीक १२ वजे हमारे घोडे के पैरो की मालिश करो, दूसरे को कहा कि घोडे के लिए घास काट कर खिलाओ, दाना, चदी दो, तीसरे को कहा कि घोडे को पानी पिलाओ, उमे सहलाओ। तीनों ठकरानिया हमारे रसोडे मे काम करें।

इधर बारह वजते हीं तीनो हाजर हो गए। नौकर ने सर्व श्रेष्ठ घोडे को लाकर मैदान मे खडा किया। तीनो भाई अपने अपने काम मे लग गये। कुछ देर वाद थोडी दूर पर ही राजा के लिए भोजन का प्रवन्ध हुवा। मुन्दर वनात की कॉलिन विछाने के वाद एक रानीजी सोने हीरे व जवाहरात से लदी हुई आई, सोने की चौकी रख गई, दूसरी आई जल की झारी रख गई तीसरी आई वटा स्वर्ण थाल रख गई राजा ने जीमना शुरु किया और चौथी खडी खडी पखा झलने लगी। ये ठाठ देखकर तीनो भाई अचम्रे मे आगए। राजाजी जीमते रहे, रसोडदार सोने की थाली मे विचित्र पकवान लाकर थोडा थोडा रखते जाते थे। यह काम आधे घटे तक चलता ही रहा। राजा भोजन करके उठ गए। घोडे की सेवा को वद करादी।

दूसरे दिन दूसरा घोड़ा लाया गया और बारह बजते ही सब कलका कार्यक्रम शुरु हुवा। तीनों भाई देखते रहे और अश्व सेवा में लगे रहे। यह क्रम ५ दिन तक चलता रहा।

पांचवें दिन शाम को हीरजी ने अलग दरीखाने में तीनों ही भाइयों और आसपास के राजपूतों को बुलाया।

राजा हीरासिहजी ने बड़े भाई से सब पूछ ताछ की कि तुम किसके लड़के हो, कितने भाई हो, क्या काम करते हो। बड़े भाई ने सब बताया। भाइयों की बाबत कहा कि हम चार थे एक कही चला गया ! राजाने चले जाने का कारण पूछा, "बड़े भाई ने कहा", "हजूर जो ठाठ हम पांच दिन से देख रहे हैं उसी ठाठ से खाना खाने को उसने वर्णन किया था। होली के त्योहार की चर्चा चल रही थी वह कुछ नही बोला था हमारी जिद्द से उसने अपने मन की बात कही थी हमने नाराज होकर उसे घर से बाहर निकाल दिया था अब न मालुम वह कहां होगा। आज ५-५ वर्ष हो गए है उसका कोई पता नहीं।"

राजा हीरासिंहजी खट से उठे और सब को देखते देखते अपने बड़े भाइयों के चरणों में पड़े। बहुंए भी उठीं और सब को प्रणाम किया। पूरा परिवार आनन्द में मस्त हो गया। अपने भाई को पहिचान गए। उसकी फौजपलटन, धन संपत्ति देख् कर गद् गद् हो गए।

दूसरे दिन अपने जन्म के महल में गए। उसकी मरम्मत कराई। अन्य तीन वैसे ही महल बनवाए। सब सेना के

सिपाहियों के लिए आसपास मकान बनने शुरु हो गए। सब को जमीनें देदी। पूरी नई नगरी बसा दी। दूर दूर से व्यापारी आकर बसने लग गए। नगरी का नाम राजा ने अपनी पटरानी हंसावली के नाम से हंसपुरी रखा। वहा जो रहने जाता था राजा की तरफ से उसे मुफ्त प्लोट मिलता था और नगरी की तरफ से एक एक सोना मोहर हर घर से मिलती थी।

राजा हीरासिंह के चारो रानियों के चार कुवर हुए। गजपुर से गुरुजी के दूसरे पुत्र को यहा बुलाकर पोशाल स्थापित की। लडके पढने लगे। नवीन प्रासाद बनाया ॐअसि आ उसा का जाप तो राजा ने कभी छोडा ही नही था।

कुछ काल बाद एक ज्ञानी महाराज पधारे। राजा रानी सब वदन करने गए। हीरासिहजी ने अपना पिछला भव पूछा, महाराजजी ने फरमाया, "प्राचीनकाल मे एक माहण (ब्राह्मण) था। जैन धर्म के संस्कार उसके रोम रोम मे भरे थे। गरीब होते हुए भी वह उदार, दयालु और परोपकारी था। एक दिन वह किसी तालाव के किनारे होकर जा रहा था वहा रोने की आवाज सुन कर ठिठक गया। क्या देखता है एक नवयोवना रोरही है और रोते रोते कहरही है हाय मेरी नन्ही नरवदा पानी मे डूब रही है। ब्राह्मण जल्दी से पानी मे कूद पडा और नरवदा को बाहर खींच लाया। उसे जीवित दान दिया। दोनो सखिया प्रसन्न हुई। एक बार एक गाव के पास की झोंपडी मे आग लग गई थी वहा के

पशुओं और दो औरतों को उस माह्ण ने बचाया था। शिक्षक का काम कर वह उदर पूर्ण करता था। जातिपांति के भेद भाव विना वह दुःखी का दुख दूर करने का प्रयत्न करता था। भूखे को भोजन, प्यासे को जल देना उसका स्वभाव हो गया था। साधु संत की भक्ति, देव पूजा अर्चा, प्रार्थना, आदि शुभ काम वह करता था। सरल परिवार भी था अतः सदा उत्तम विचार उसे आते थे। अपने परिवार को भी उसने उसी तरह से शिक्षा दी थी।

वहां से काल कर स्वर्ग का सुख भोग कर वह माह्ण तुम हीरासिह राजा हुए हो। वे दोनों डूबने वाली सखियां और आग से बचाई जाने वाली दोनों औरते ये चारो तुम्हारी रानियां हुई है। तुमने हर प्रकार का शुभ काम कर पुण्य उपार्जन किया था। दया, दान, शील तप, शुभ भाव रूप धर्म का ही परिणाम तुम देख रहे हो।

पूर्व पुण्य के प्रभाव से ही तुम्हें ॐ अ सि आ उ सा मंत्र अनायास गुरुजी से प्राप्त हुवा जिसके प्रभाव से तुम दिन दिन सुखी हुए हो।

हीरासिह ने इस मंत्र का भेद पूछा, गुरु देव ने कहा, "इस मंत्र मे अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु का समावेश है। इन पांचो के प्रथम अक्षर ही अ सि, आ, उ, सा मंत्र है। सर्व शास्त्रों का व सर्व आगमों का यही सार है। जो कोई भयंकर कष्ट में हो, विपत्ति में हो, निर्धन हो निसंतान हो, रोग से पीडित हो यदि वह हमेशा अ सि,

आ उ सा के मत्र की तीन माला गिनेगा तो उसे मनवछित की प्राप्ति होगी"।

हे राजा तू भी अपनी नगरी मे न्याय नीति, धर्म, और सदाचार का प्रचार कर। सुखी रह और प्रजा को सुख मे रख। धर्म की प्रभावना कर शासन की उन्नति कर।

हीरासिह अपने समस्त परिवार के साथ आनन्दपूर्वक राज्य करने लगा। धर्म का मार्ग उसने कभी नही छोडा। उसके राज्य मे सब सुखी थे। तीनो भाइयो को भी उसने अपने समान सुखी व धर्मशील बनाया।

पिछले पुण्य का उत्तम फल उसे इस भव मे मिला। अत पुण्य का उपार्जन करने और क्रमश शाश्वत सुख की प्राप्ति के लिए इस मानव देह का उपयोग करना चाहिए तब ही हम सदाकाल सुख मे रह सकते है। सब सुखी हो। सब की धर्म मे श्रद्धा हो, सदा धर्म का आचरण हो।



लेताण, लेताऽण

आगल बुद्धि वाणियो पाछल बुद्धि विप्र।
सदा बुद्धि सेवड़ो तुरत बुद्धि तुर्क ॥

एक सेठ के लड़के का विवाह जेष्ठ महीने में हुआ था जब वह १८ साल का था। पढ़ने की वजह से गौना (मुकावला) अभी नहीं कराया था। दो साल वाद जब उसकी पढ़ाई पूरी हुई तो माता पिता ने उसे गौना कराने को मजबूर किया। अन्त में वह एक नाई को साथ लेकर अपनी दुलहन को लेने सुसराल चला। सुसराल का गांव ४-५ कोस से अधिक दूर नहीं था और उस समय वसों का साधन भी इतना नहीं था जितना आज है। फिर घोड़ा तो घोड़ा है उसकी शान निराली है। हर शुभ काम में घोड़े की सवारी ही उत्तम समझी जाती है। आज भी शादी करते वक्त वर राजा घोड़े पर बिठाकर ही तोरण पर लाया जाता है। १००-२०० मील ट्रेन या वस से बरात आती है पर दुलहन के घर पर तो घोड़े पर सवार होकर सजधज कर मूंछों पर ताव देकर बाजे गाजे से ही जाया जाता है। चाहे घोड़ा तांगे वाले से किराये पर लाया हो वहां छोटे बड़े का प्रश्न नहीं(अवतो मूंछे नजर नही आती है शायद दुलहन खींच न ले इसलिए वर सफा चट मैदान रखते है)

हा, तो सेठजी के सुपुत्र दीवानचन्दजी गौना कराने चले। मोहन नाई साथ था, घोडे की सवारी। ४–५ घटे का रास्ता, बातो ही बातो मे पूरा हो गया। आगया सुसराल का गाव।

नाई ने घोडा पकडा और कुवरजी चले पीछे पीछे। सुसराजी व सालाजी बहुत खुश हुए। सजे सजाए कमरे मे गादी तकिया बिछा था। वहा विश्राम किया, और शौच से निवृत होने मोहन को साथ लिए जवाई राज जगल की तरफ गए अब तो जगल बगल का जमाना गया फ्लश की लैटरिन हो तो मकान वाले सभ्य, नही तो अभी जमाने से पीछे गिने जाते है। किरायेदार भी सबसे पहले आते ही लेटरिन मे मन दौडाते है कि देखें लेट्रिन कैसी है। बाकी सब बाते बाद मे हम भी भुगत भोगी है।

कुवरजी पढे तो बहुत थे पर व्यवहार मे ० (शून्य) थे। इसलिए मोहन समझा रहा था कि किस तरह बैठना, किस तरह बात करना, ज्यादा हसना नही। खाने का थाल आए तो सिर्फ एक कौर लेकर बाकी थाली मेरी लागत की होती है। आपका खाना तो रात को दुलहनजी के साथ कमरे मे आता है। आदि आदि

रसोडे मे काफी दूर वाले कमरे मे जवाईजी को जीमने बिठया गया। बडा थाल मिठाइयो का भरा हुवा परुसा गया। नाई के लिए भी थाली भेजी गई। जवाईजी पढे थे पर गुणे नही थे, अनुभव नही था। यह उस पडित की तरह

थे जो काशी से ज्योतिप विद्या पढ़ कर आया था। गांव के राजाने १२ वर्ष तक विद्या पढ़कर आने वाले नए पंडित को हाथी पर बिठा कर जलूस निकाला। राज महल में पहुंच कर सभा के समक्ष पंडित को ऊंचे आसन पर विठाया। अपने हाथ की मुट्ठी बंद की और पूछा कहो ज्योतिषीजी मेरी मुट्ठी में क्या है।" पंडित ने इष्ट लग्न निकाला कुण्डली बनाई और बोला "चक्की का पाट।" राजसभा मारे हंसी के लोट पोट होगई। राजा ने मूर्ख पंडितजी से पूछा तुमने यह जवाव कैसे दिया, पंडित वोला लग्न के अनुसार वस्तु गोल और बीच में छिद्र होना चाहिए सो चक्की का पाट भी गोल होता है और वीच में छिद्र होता है।" राजा वोले भोले पंडित हाथ की मुठ्ठी में चक्की का पाट समा सकता है, इतनी तो वुद्धि होनी चाहिए कि यहां वैठे २ मेरी जेव में चक्की का पाट लाया कौन। देखो यह अंगूठी भी गोल है और बीच में छिद्र हैं। वास्तव में पढ़ाई के साथ अनुभव की आवश्यकता पड़ती है। पर "वेदिया ढोर" का नाम जगत की डिक्शनरी मे अमर रखने के लिए ऐसे महापुरुषों की भी आवश्यकता पृथ्वी पर रहती है।

जंवाई जी ने एक टुकड़ा मिठाई का उठाया, मुंह में रखा और पानी पी कुल्ला कर लिया। मोहन ने थाल उठाया और अंगोछे के हवाले सब मिठाई करदी। खाना पूरा हुआ। रात पड़ी। जंवाई जी का बिस्तर सड़क की तरफ वाली दुकान के ऊपर के कमरे में किया गया जिसकी छत बांस की

थी। ठीक वक्त बाई साहब को उसके भोजाईजी जवाईजी के कमरे मे धकेल गए, वह अलसा रही थी। मेहदी लग हुई थी। आई और बैठ गई। जवाई ने किवाड बद किए। दीवा जल रहा था दुलहन भी भोली थी। १६-१७ वर्ष की थी पर अक्कल मे ८ वर्ष की थी। न पानी लाई न मिठाई। बोलना तो दूर उसकी आखो मे कुभकरणी नीद लका से आकर घुसगई थी।

जवाई जी का अजब हाल। सुबह मे जो कुछ खाया पीया था सब घोडे की सवारी से हजम हो चुका था। भूख सता रही थी। वहा तो खाना छोड पानी का भी पता नही था। मोहन पर गुस्सा आया, बदमाश ने कुछ खाने भी नही दिया और सब समेट लिया। अब क्या किया जाय। रात काफी जा चुकी थी। खाए बिना पेट मे चूहे फुदक रहे थे। उन्होने शरम बरम को झटक कर दुलहन को झकझोरा। वह मुश्किल से जागी। पूछा खाना पीना कहा, भूख सता रही है ? मेरे थैले मे मिठाई है वह भी अन्दर कमरे मे बन्द। लडकी बोली मैं क्या जानू मुझे तो नीद सता रही है। तेरी नीद जाय भाड मे, ला खाना, अरे कुछ भी ला बासी कूसी, चना चबैना जो भी हो, ला। वह बोली मैं तो अब जा नही सकती रसोडा दूर है सब सो रहे है। मुझे लाज आती है। एक उपाय है, इस कमरे के नीचे वाली दुकान हलवाई की है यह छत है बास की कच्ची। वह रही करोत। मन पडे तो रास्ता करलो। यह रहा रस्सा इसके सहारे उतर जाना

खा पीकर रस्सी हिलाना मैं ऊपर खींच लूंगी और तो कोई उपाय नहीं। मरता क्या न करता। पेट की ज्वाला ही ऐसी होती है। पेट के लिए वुद्धि और लाज का लिलाम करना पड़ता है। दीवानचन्दजी ने ली करौती और काट डाले वांस, खासा रास्ता हो गया। मोम वत्ती व आग पेटी जेव में रखी और रस्सी के सहारे जा पहुंचा दुकान में। जलाई मोमवत्ती और उड़ाया मोहन भोग, जलेवी, रस गुल्ले, गुलाव जामुन, एक फक्कीमारी सेव की, कचोरी तो पूरी की पूरी मुंह में। लपालप, लपालप खाकर पेट भरा। वरफी भी साफ की। दही भी थोड़ासा शुकुन के लिए चखना जो जरूरी था। पूड़ी को हाथ नही लगाया। चवाने में टाइम लगता है। यों टंकी फुल करली और रस्सी हिलाई, वोला "ले ताण" अर्थात ऊपर खीच। एक वार नही सुना, दुवारा कुछ जोर से वोला "ले ताण"। कोई जवाव नहीं। कुंभकरण को छः माह सोने का वरदान ब्रह्माजी ने दिया था वह भी खर्राटे खीच कर मजे नींद ले रही थी। ज्यों २ टाइम निकलता जाता था त्यों २ जंवाई जी की वेचैनी वढ़ती जाती थी। ऊपर पहुंचने का उपाय सिवाय रस्सी के और कुछ न था। वाहर ताला लग रहा था। कुछ कुछ देर के वाद वे फिर "ले ताऽऽण" "ले ताऽऽण" चिल्ला रहे थे। रात अंधेरी और गांव का सन्नाटा। करीब चार बजने को आई थी। एक आदमी शौच को निकला। दुकान के पास से गुजरा तो सुनाई दिया "ले ताण" वह चुपके से वापस घर लौट चला और दुबक कर रास्ते में ही शौच से

निपट कर घर पहुचा, लडके को जगाया और बोला। चन्दू हलवाई की दुकान मे कुछ वहम है वहा जरूर कोई न कोई है। वेटे ने लठ्ठ उठाया दिया जलाया और जा पहुचा दुकान के पास, वहा आवाज आ रही थी, "ले ताण" "ले ताण" अरे इसमे तो चुडैल है। उसने शोर किया, भूत रे चुडैल रे। आस पास के काफी लोग जाग चुके थे। खूब शोर गुल मच रहा था। उधर जवाई जी के होश खट्टे हो रहे थे, अच्छा गौना आया। आज जिदा बचे तो खैर। बाहर सैकडो आदमी जमा हो गए थे।

अब दिन उगने लग गया था, थोडा थोडा अधेरा बाकी था। वह बार बार रस्सा हिला हिलाकर चिल्ला रहे थे "ले ताण," "ले ताण"। दुल्हन तो निद्रादेवी के आधीन थी। उसकी सुने वला। आखिर बाहर के हगामे ने दुकानदार चदु को चाबी लेकर बुलाया। पुलिस के सिपाही और रात को नए आए हुए थानेदार भी वहा आगए थे।

जवाई जी सव समझ गए। अव हिम्मत हारने से काम न चलेगा। आखिर कौम तो बनिये की। बुद्धि का ठेका जो हे। रावण ने विना वनिया बुद्धि के राज खोया सोने की लका जलवादी। चूहे को विल खोदना कौन सिखाता है। बाहर खटखट बढ रही थी शोरगुल मचरहा था। सब डर रहे थे कि कही चुडैल चिपक गई तो। वापरे बाप भूत के नाम से ही मेरा मूत उतरता हे मैं तो अदर नही जाता। यो कोई अदर जाने को तैयार न हुवा। नए थानेदार साजुखा हिम्मतवाज

थे। उन्हें कोई पहचानता न था। पड़ाक से किंवाड़ खोला कि दही की चौड़े मुंह की हंडिया तड़ाक से सिर पर पड़ी। मुंह ढंक गया दही से। हंडिये का गरगा (हंसिया) गले में फंस गया, वह हडबडाए। इधर जंवाई जी बाहर खिसके, नौ दो ग्यारह। भीड़ ने नजरों नजर देखा कि चुडैल के गले में काली हांसली है। चहरा चमक चमक कर रहा है। किसी ने जूता मारा किसी ने लात। घूसों की तो कमी थी नहीं, सबने बारी बारी अजमाइश की। खाजुखां चिल्लाए मैं थानेदार हूँ। लोग बोले, रात भर "ले ताण" ले ताण" चिल्ला रहे थे अब मार पड़ी तो थानेदार बन गए। मार मार कर चुडैल को गांव बाहर निकाल दो। खबरदार जो फिर गांव में आई तो। मारे ताप के सिपाही तो पहले ही खिसक गया था।

जंवाई जी सीधे पहुंचे ऊपर कमरे में। रस्सी खींचकर तपड़ ढक दिया और चुपचाप घोड़ा खोलकर नहाने के कपड़े लिए और चल दिए। जाते वक्त सुसरालवालों से बोले हमें आज ही जाना है जल्दी तैयारी करें। उधर 'ले ताण' का जलूस निकल ही रहा था। वहां जाकर बोले अब तो छोड़ो दिन में भूतपलीत चुडैल सब भाग जाते है। यह तो हमारे गाव के खाजुमियां हैं।

सेठ के पुत्र दीवानचंद से वे लिपट गए। नहा धो तैयार हुए। खाजु खां की खोपड़ी में ढूढों तो एक बाल नहीं। जंवाई जी उसे भी अपनी सुसराल लाए और खा-पीकर दुलहन को रथ में बिठाकर गौना लिवा लाए। खाजुखां ने सोचा बुरे साइत

मे इस गाव मे पैर धरा चलो तवादला करा आऊँ। अभी तक उसका रोम रोम दर्द कर रहा था फिर भी जवाई जी की महरवानी से गरम गरम खाना मिल गया और जान वची सिवाय को। उम्र भर दीवानचद का अहसान मानते रहे।

घर आकर वीवीजी को सव माजरा वयान किया कि अच्छी तुम्हारी नीद यह तो गुरुजी ने मुहूर्त ठीक निकाला था वरना उम्र भर तुम पीअर मे चक्की पीसती रहती।

तमीजे नदारद कमदे हवा।
फकीर की लडको वादशाह से निकाह॥

दीवानचद इस घटना के वाद वहुत होशियार होगए। खूव मजे मे धधा करते खाते पीते मौज करते थे। सत् सगत भी करते थे।

किसी नए दुल्हे को गौना करने जाते सुनते तो अपनी वात याद आ जाती। विचारा खाजुखा तो अव भी होली दीवाली सलाम भर जाता है और इनाम पा जाता है। वर्षों तक ले ताण का भेद छुपा रहा, आप भी छिपा रखें। जव तक खाजुखा की खोपडी मे नए वाल न ऊग आवें तव तक।

——

धर्म पर श्रद्धा रखने वाली लक्ष्मी देवी

"जो दृढ़ राखै धर्म को ताहि राखे करतार"

लावण्यपुर नगर में एक सेठ रहता था जिसके चार पुत्र थे। तीन का विवाह हो चुका था चौथा अभी छोटा था और विद्या प्राप्त कर रहा था। सेठ के यहा मंत्रीपद पांच पीढ़ी से चला आता था। नगर सेठाई और दीवानगिरी दोनों के मद ने उस क्षत्री सेठ को जीत लिया था अतः धर्म के प्रति उदासीन और आलसु होना स्वाभाविक था। सेठ के रंग में सेठानी, चारों पुत्र और तीनों पुत्र वधु रंगे हुए थे। यथा राजा तथा प्रजा। नित्य नए पकवान बनते, नगारे गुड़ते, नाच मुजरे होते और हर तरह से सुख वैभव में ही वह कुटुम्ब मस्त रहता था।

गृह मन्दिर था पर वहां पजुषण या दीवाली को ही वे दर्शन करने जाते थे। बाकी तो प्रभु जाने और पुजारी जाने।

राजा की तरफ़ से काफी जमीन जागीर थी, कुछ और बढ़ा ली थी। राजा भी नई उम्र के व अनुभवहीन थे उन्हें भी जीवन में आनन्द ही लूटना पसंद था, राज्य भार दीवान साहब के सुप्रत था। यों ठण्डी मीठी गाड़ी चल रही थी।

सेठजी के चौथे लड़के की विद्या पूरी हो चुकी थी सगाई के लिए ऊपरा ऊपरी मांगें आ रही थी। अभी कही निश्चित

नही था। एक दिन छोटा भाई घूमते हुए अपने मित्रो महित राज उद्यान मे जा पहुचा। वहा आनन्द से सैर सपाटे किए, खाया पीया और चलने वाले थे कि समीप ही मे एक सुरीली राग उमके कानो मे पडी। कोई पोडशी कोकिल कठा प्रभुजी का स्तवन गा रही थी। स्तवन के भाव और राग से सेठ का लडका चित्रवत होगया, पौदो की आड से उमने गाने वाली को देखा तो चकित रह गया। चाद सा मुखडा उमके हृदय मदिर मे जा छुपा।

अधेरा हो जाने से मव लोग उद्यान मे से निकल २ कर अपने घर जा रहे थे। सेठ पुत्र की मित्र मडली वही टिकी रही। इतने मे वह गाने वाली वाला भी अपनी सखियो महित वाग मे से वाहर निकली। मेठपुत्र ने अपने एक अभिन्न मित्र मे उनका नाम पता जानने को कहा। वह मित्र लुके छिपे उन मृगियो के पीछे २ लग गया, वाकी सव अपने २ घर पहुच गए।

दूमरे दिन मित्र ने सेठ पुत्र से निवेदन किया कि दूर गाव से एक सागरदत्त सेठ कुछ ही महीनो से व्यापार के लिए लावण्यपुर मे आए हैं उनकी यह लक्ष्मीदेवी कन्या है जो अभी तक कुआरी है।

सेठ पुत्र के मित्रो ने सेठानी से अपने मित्र के मन की वात कही। सेठानी किमी वहाने मे मागरदत्त के यहा गई, कन्या को देखा, उसके शील व स्वभाव का सेठानी पर वहुत प्रभाव पडा, सौंदर्य और सुघडपन मे वह पहले की तीन वहुओ से वढकर थी। सेठाणी ने कन्या रत्न की मागनी की

औरतों से बात मर्दो में पहुंची। दोनों कुटुम्ब में पारस्परिकों प्रेम बढ़ा, आना जाना शुरू हुवा। सागरदत्त भी यही चाहते थे कि कन्या का किसी सम्पन्न घर के योग्य वर के साथ पाणिग्रहण करा दें, नगर सेठ व दीवान का घर यह तो सोने में सुगंध।

धूम धाम से, ठाठ बाठ से विधिवत लग्न हुए। दोनों घरों में उल्लास छा गया। नई बहु लक्ष्मी, साक्षात लक्ष्मी थी। वह केवल रूपवती ही न थी, गुणवति भी थी। शनैः शनैः घर के सब लोगों के स्वभाव से, नौकर चाकरों से, घर की संपत्ति और सन्मान, आय और व्यय, व्यापार और हानि लाभ इन सबका उसने अभ्यास किया। उसे मालूम हो गया कि यह घर प्रमाद वश आमोद प्रमोद में वाह्य ठाठ वाठ से व आडवंर से बह रहा है गांव के लोग धीरे धीरे शत्रु बन रहे हैं। धर्म की तरफ किसी एक की भी रुचि नही है। गृह मन्दिर और कुलदेवी को कोई पूजता या मानता नहीं है, सब उदासीन व उपेक्षित हैं। घर के कई कोठे व स्थान ऐसे हैं जहां वर्षो से सफाई नही हुई है।

अब लक्ष्मी इस घर की गृहलक्ष्मी है। उसके संस्कार स्वावलंबन, स्वाभिमान, सचेतनता, सावधानी के थे अतः वह समय मिलने पर सब जगह की सफाई व व्यवस्था में लगी रहती थी। प्रतिदिन पूजा पाठ कर नौकारसी पचखान करती थी। तिथियों को दासी के साथ बारी बारी से शहर के जिनालयों में भी जाती थी। दीन दुखी को अन्न वस्त्र देती

थी। साधु माध्वी को आहार देती थी। दिन मे सोना, रात मे अधिक जागना, ज्यादा जोर से हसना, पर पुरुप से बोलना, ताश आदि खेलना, उसे पसद नही था। इन्ही कारणो से उस घर वाले उसमे खीचे २ रहने लग गए, उसे धर्मात्मा कह कर पुकारते थे। उसका वर्ताव इन सबसे अलग था। ये सासारिक सुख भोग मे मानते थे इसे धर्म मे श्रद्धा थी इसलिए वह ३६ का आक थी।

चैत्र की ओली की शुरुआत थी, लक्ष्मी के आयबिल था। आठम का दिन था। रात को स्वप्न मे शासनदेवी ने पूरे के पूरे घर वालो को दर्शन दिए और कहा कि "मैं जा रही हूँ।" सुवह सबने परस्पर स्वप्न की बात कही और हसी मे टाल दी। सेठ सेठाणी बोले रात को खूब मीठा खाया था देर से सोये थे इसलिए स्वप्न आया है।

लक्ष्मी सावधान हो गई। उसने अपने पति द्वारा सबको सूचित किया कि यह स्वप्ना आप सबको सचेत कर रहा है आप लोग धर्म ध्यान व्रत तप नही करते हैं इसलिए कष्ट आने वाला है अब भी सावधान हो जाय। वहा ऐसी बाते सुनने को आदी कौन था। यह गावडे गाव की लडकी टाय टाय करती रहती है, इसकी वात मे कौन ध्यान दे।।

लक्ष्मी सावधान है। ओली पूरी होने पर उसने पूनम के दिन नवपदजी की पूजा पढाई, सुपात्र को दान दिया, पौशाल मे जाकर अपने घर के गृह गोचर वताए। गुरुजी ने सावधान किया तुम्हारे कुल पर ५ दिन मे भारी सकट आने वाला है

तू सबको तार लेगी । सदा भक्तामरजी का पाठ कर भोजन किया करना।

लक्ष्मी ने घर आकर पांच अमूल्य हीरों को एक कपड़े में बांधकर अपने अंवोड़े में (वालों) रख लिए। दुपहर को वह घर की वगीची में वने गृह मन्दिर में जाप करने बैठी। १ घंटे के बाद जव वह अपने कक्ष में जा रही थी उसका ध्यान नीचे था। वह फर्शी को देखते हुए जा रही थी, सब पत्थरों में से एक पत्थर निराले रंग का पीला था, उस के ऊपर वह खड़ी हुई तो वह पत्थर कुछ पोला २ प्रतीत हुवा। उसे कुतुहल हुआ। सब फर्शी चूने से वंद, वही पत्थर योंही विना मसाले के रखा था। दुपहर को गर्मी के मारे सब नौकर चाकर भी अपने २ कमरों में थे। वह कुदाली लाई पत्थर हटाया तो गजब ! नीचे सीढ़ी ! ! उसके कुतुहल का पार नहीं, कुछ अंधेरा था। वह दीपक लाई। नीचे उतरी चलती गई, चलती ही गई, कोई ३५ मिनट चलने के बाद एक पत्थर के पास पहुंची उसे हटाया तो वह गांव बाहर जंगल में जा पहुंची।

लक्ष्मी वापस आई। पत्थर को ठीक किया और मन ही मन हंसने लगी। अपने पूर्व पुरुषो की बुद्धिमानी का उसे गौरव हुवा। अपने सासु सुसर व जेठों के लिए वह विचार में पड़ गई कि कौन से अशुभ कर्म से ये लोग धर्म से विमुख हो रहे है। तीन दिन बाद ऐसी कौनसी आपत्ति आने वाली है, गुरुजी का ज्योतिष पूरे शहर में प्रसिद्ध है। उसे भय छा गया।

इन ४-५ दिनो मे दीवान साहब महलो नही गए थे। तबीयत नरमी का बहाना था। बाहर गाव से एक अलबेली नर्तकी आई थी वह दीवान साहब की कृपा चाहती थी, गाव मे अपना अड्डा खोलना चाहती थी अत नाज नखरे और मुजरो से नगर सेठ दीवानजी को प्रसन्न रखना चाहती थी। राज्य घराने का कायदा है कि जाजम की कोर खाली कि तलवार दुश्मनो की। दीवान साहब की शान शौकत व बढती हुई धन दौलत से लोग पहले ही जल रहे थे। लक्ष्मी के आने के बाद तो और भी चिढने लगगए थे। वह दान पुण्य मे सबसे आगे थी। कानो ही कानो नई नर्तकी की बात दुश्मनो ने राजा के कानो तक पहुचा दी और भी बातो से राजा के कान भर दिए कि दीवान साहब ने अमुक गाव पर जबरन कब्जा किया है, खजाने से अमुक रकम घर पहुचा दी है, इतने घोडे खरीदे उसमे इतनो का गोटाला है। शर्म आख की होती है, दीवानजी के अनेक राज व कारस्तान लोगो ने राजा को नमक मिर्च मिलाकर बयान किए। राजा पूरे खिचगए, नाराज होगए थे।

हमेशा की तरह राजा की सवारी निकली। चुगलखोरो ने रास्ता दीवानजी की हवेली के पास वाला लिया। हवेली मे नाचगान की महफिल जमी थी। पायल की रुमझुम और तबले की थाप सुनाई दे रही थी। राजा वही ठिठक गए। चुगल खोर साथ थे ही, अर्ज की, आपकी सवारी की भी दीवानजी को परवाह नही है, सन्मान तो दूर नीचे भी नही

पांच-सात कोस चलकर थोड़े सुस्ताए ही थे कि अचानक १० आदमी काले कपड़े पहने तलवार बंदूक से लैस, मुंह वांधे हुए, आंखें चमकाते हुए आ धमके, "जो हो सो रखदो वर्ना यह तलवार ?" पल भर में सव लूट ले गए, औरतों के तमाम जेवर और मर्दों के हाथ की अंगूठियां भी न छोड़ी, सव कुछ साफ।

सेठ व सेठानी खूब घवराए मर्द भी लाचार । कैसी मुसीबत आई। भीख तो मांग नही सकते थे।

"सिंह लांघना सौ करे पर घास न खाय"
चातकड़ो धरती रो पाणी पी लेसी ?
पास अधेला भी नहीं, चांदी का तार नहीं,
तो कई वणियारो बेटो भीख मांगसी ?

खैर सब के सब चल पड़े। कुछ दूर जाकर एक बावड़ी पर पानी पीया, थकावट उतारी। लक्ष्मी ने कहलाया पिताजी, अब भी भगवान का नाम लेना शुरू करें तो इस मुसीबत में से बच सकते हैं।" बेटा तू वास्तव में सच कहती है, तेरी बात मानी होती तो आज यह दिन न देखना पड़ता, अब से मैं सच्चे दिल से भगवान का नाम जरूर लूंगा।"

दुःख में सुमरिन सब करे सुख में करे न कोय।
जो सुःख में सुमरिन करे तो दुःख कायेको होय ॥

लक्ष्मी ने एक तरफ जाकर अपने बाल (चोटी) में रखे ५

हीरो मे से ४ निकाले तीन को छुपाए, एक हाथ मे लाई और सासुजी से कहा, "पिताजी से कहे कि वह सामने नगरी है वहा जाकर इसे वेचे और सब प्रबन्ध कर हमे यहा से ले जावें ।"

सेठ और सिठानी चल पडे । वडा लडका साथ जाने लगा पर थकावट के मारे न जा सका ।

मायावति नगरी मे पहुचते ही दो आदमी सेठजी के सामने आए । आइये पधारिये । जल पीजिए भोजन कीजिए, कुछ काम हो तो कहिए । हम आपके ही है । सेठ उनकी मीठी बातो मे आगए बोले, "हमे एक हीरा वेचना है यह देखो, इसकी क्या कीमत आएगी ।" उन दोनो मे से एक ने हीरा लेलिया, साथ २ वाते करते जा रहे थे कुछ दूर जाकर एक आदमी बोला आप यही ठहरिये मै हीरा बताकर आता हू मेरा भाई आपके साथ है । मैं अभी आया । सेठजी भोले वह आदमी गया और एक गली मे मुडगया, उसको मुडते देख दूसरा चिल्लाया अरे उधर नही इधर जा इधर और वह भी उसके पीछे भाग गया । सेठ-सेठानी ताकते रह गए । हीरा चपत । शहर वहुत वडा था । एक जैसी कई गलिया व दुकानें थी । किसको पूछो न नाम न ठाम । वे दोनो इधर उधर भटकने लगे ।

सेठजी को गए काफी देर हो चुकी थी इसलिए वडा लडका उनकी तलाश मे जाने लगा, उसे भी एक हीरा लक्ष्मी

ने दिया, वह भी गया सो फिर आया नहीं एक घन्टे वाद दूसरा और तीसरा भाई हीरा लेकर गए वे भी उस माया नगरी में जा फंसे। अव रहा सव से छोटा भाई उसने कहा मै अवश्य पीछा आऊंगा ला यदि कुछ हो तो मुझे भी दे। चौथा हीरा उसे भी दिया और गायव होगया।

रात नजदीक थी। चारों औरते ही रह गई थीं। सव लोग गए सो एक भी वापस नहीं आया। मारे भूख के दम निकल रहा था। औरत की जात, बड़े घर की वहु बेटी सदा दास-दासी सेवा में हाजर रहते थे। पैदल चलना तो दूर, राह की हवा भी इन्होंने नहीं सही थी पर कर्म गति विचित्र है।

लक्ष्मी बोली, बहनों उठो, रात पड़ रही है हम भी इसी नगरी में चलें सुबह उनका पता लगालेगी। सब थक कर चूर हो रहीं थी, पेट में कुछ था नहीं पर क्या करती। चलने लगी। १–१॥ माइल चलने पर नगरी नजर आई। सामने ही बड़ा बाजार का चौड़ा रास्ता नजर आ रहा था दोनों तरफ दुकानें थी। बड़ी बहु उधर जाने लगी, लक्ष्मी बोली नहीं, उधर नही। शहर के बीच में सब मालदार सुखी आदम रहते है वे परदेशी को देखते ही घर में घुस जाते है कहीं पानी या बीड़ी चिलम पिलानी पड़ेगी, ठहरने या भोजन की बात तो दूर रही, पानी भी नही मिल सकता। चलो नगरी के किनारे के गरीब बस्ती वाले–घरों

मे चलें उधर मिट्टी के वर्तन पक रहे है वह कुम्हार वास है। सब वहा जा पहुंची। एक घर के पास गई और इशारे से एक औरत को पास बुलाया। लक्ष्मी बोली, "तुम्हारे आदमी से पूछो हम रात ठहरना चाहती हैं विश्राम मिलेगा? औरत बोली इसमे आदमी से क्या पूछना, तुम्हारा घर है आओ आओ अन्दर आजाओ। उन्हें हाथ पकड़कर वह आगन मे ले आई। कुम्हार भी पास आगया, बोला, "परदेशी पाहुने हमारे नसीब मे कहा। यह मटका ताजा और कोरा है, पानी पीओ। भोजन बनाओ और एक रात क्या चार रात रहो मेरी धर्म की बहनें हो।"

लक्ष्मी ने कहा, "हम राजपूत हैं, किसी को तकलीफ न देंगी, तुम मिठाई पूरी बाजार से ले आओ भूख लगी है सुबह उसके दाम देदेंगी।

कुम्हार खाना लाया। खाना खाकर एक कमरे मे तीनों जेठानियों को सुलाकर लक्ष्मी बाहर आई। कुम्हार से बोली हम परदेशी हैं, मैं जग नगरी देखना चाहती हूं तुम्हारा अच्छा साफा, पजामा, कोट, कमीज और जूते ले आओ। मैं घूम कर आती हूं। मेरी तीनों बड़ी बहिनें सो रही हैं उनका ध्यान रखना।

मर्दाना भेष धर वह चली माया नगरी की शोभा देखने। बाजार और चौहट्टे बड़े सुन्दर थे। अच्छी अच्छी हवेलियां और दुकानें थी। वह जा पहुंची जौहरी बाजार मे जहा हीरा जवाहरात का ही काम होता था। दो आदमी झट से आगे

बढ़े । बड़ी नम्रता व विनय से झुककर नमस्कार किया, बोले कोई सेवा फरमाइये ।

लक्ष्मी बोली, "यहां सबसे इमानदार और खानदानी कौन से जोहरी हैं ? उसने बात कुछ जोर से कही थी जिसे बहुतों ने सुनी थी, वे दोनों परदेशी को एक दुकान पर ले गए । बातचीत शुरू हुई । उसे यह जोहरी मायावी प्रतीत हुवा, वह उठ खड़ी हुई । यों ३-४ दुकानों पर गई । कुछ सौदा बैठा नहीं । वापस चली आई ।

सुबह जल्दी से निवृत्त होकर बाजार में आई । मन्दिर पास ही था दर्शन किए । वहां एक वृद्ध पुरुष पूजा करके घर जा रहे थे । परदेश में साधर्मी भाई के सिवाय किसका विश्वास किया जाय । वह बोली, "पिताजी मैं परदेशी राजपूत हूं । मैं एक हीरा बेचना चाहता हूं । मुझे अभी ही रकम की जरूरत है । विदेश में आप जैसे वृद्ध साधर्मी के सिवा किसका भरोसा । 'सेठजी ने एक पर्चा लिखकर इशारे से एक दूर की दुकान बतादी । लक्ष्मी वहां गई । हीरा बताया । सेठ ने सवालाख की कीमत बताई । लक्ष्मी बेचने को राजी होगई । बोली, "हम परदेशी हैं अभी इतनी रकम हमें नहीं चाहिए, जरूरत के अनुसार मैं ले लूगा । सेठ बोला हीरा अपने पास रखिए जो चाहिए सो ले जाइए । आपको जिस सेठ ने मेरी दुकान बताई है वह नगर सेठ हैं उनकी परची ही सवा क्रोड़ की है ।

लक्ष्मी ने सर्व प्रथम पूछा कि क्या हमारे लिए आज ही

एक हवेली किराए, गिरवे या मोल मिल सकती है। सेठ ने कहा मैं तलाश करूंगा आपको जल्दी हो तो जाइये। उसने मात्र १००००) लिए और रास्ते मे से ८ मर्दाने लिबास खाद्यसामग्री और एक रथ मोल लिया। सब आवश्यक वस्तुए खरीद कर रथ मे बैठकर कुम्हार के घर जा पहुची। भोजन कर अपने कपडे पहन कुम्हार को खूब इनाम देकर वहा से चल धरी।

माया नगरी से थोडी दूर पर जाकर एक वृक्ष के नीचे रथ को ठहराया। तीनो जेठानियो को वही ठहराकर वह वापस जोहरी की दुकान पर मर्दाने वेश मे आ पहुची। सेठ ने हवेली बताने मुनीम को साथ भेजा। २५ हजार मे चार मजली हवेली तै हुई। उसने दो नौकर स्थायी रूप से सफाई करने और पानी भरने को लगा दिए। सेठ से ४ दिन के लिए मुनीमजी को माग लिया। मुनीमजी को रुपये देकर, सामान की सूचि उतार दी। देखते ही देखते शाम पडते २ हवेली मे गादी, तकिए, पलग, गलीचे, बर्तन बिस्तर, साज सामान की व्यवस्था हो गई। रसोइदार ब्राह्मण आगया। भोजन की सब सामग्री से कोठार भर गया। वह हीरा उसने सेठजी को दे दिया और खाता खुलवा लिया। सेठजी को कह दिया कि आपके किसी विश्वास पात्र चाबुक सवार की मारफत चार उत्तम घोडे व जीन सामान आदि खरीदावादें। "जेब मे होवे नगदुल्या, नाचे बेटा अब्दुल्या"

चार पाच दिन मे हवेली का रग बदल गया। नगार खाने वक्त पर गुरते हैं। गृह मदिर मे पूजा आरती होती है।

बाहर दुकान पर आड़त का काम शुरू हो गया। मुनीमजी को हमेशा के लिए सेठजी से मांग लिया, सेठजी ने दूसरा आदमी रख लिया। दो महीना होते होते तो शहर भर में इनकी धूम मचगई। गरीबों का तांता लगा रहता था। भुने हुए चने और पानी की परब चालू करदी थी। अंधे लंगड़ों की भीड़ आशीर्वाद देती ही रहती थी।

हमेशा शाम को चारों कंवर, केसरिया साफा झुकाए, कमरबंधा बांधे, कटार लगाए, तलवारें लटकाए घोड़े पर सवार होकर पान चबाते हुए निकलते तो गांव के लोग देखते ही रह जाते थे। आज मोती बाजार में से निकल रहे हैं, कल चाँदनी चौक के सराफे में से निकले, परसों धानमण्डी में से गुजरे दूसरे दिन कपड़े बाजार में उनकी चर्चा चल रही थी। यों पूरी ही माया नगरी उन्होंने देखली। नगरी प्राचीन थी, बहुत ही बड़ी थी। उनके घर के लोग आज तक कहीं भी नजर नही आए। विश्वास हुवा कि है यही पर है, कारण कि मजदूरी मिल जाती है।

एक दिन ये चारों कुंवर घोड़े फिरा कर लौट रहे थे उधर से राजा साहब की सवारी नगरी के बाहर जा रही थी। इनको शान से बने ठने और दोनों पागड़े दो दो चरवा दार दौड़ते आते देखकर राजा अचंभे में पड़ गया।

राजा को सामने देखते ही इन्होंने मुजरा किया। राजा मुसकराए। अगले दिन दीवानजी को भेज कर इन्हें महलों

मे वुलाया । लक्ष्मी ने तीनो को सव राज रीत समझादी, वहुत सावधान कर दिया और वैठ घोडो पर जा पहुचे महलो मे ।

राजा ने वहुत ही मान सन्मान आदर से उचित आसन पर विठाया पूछा, "आप जैसे नर रत्नो को पैदा करने वाली वह कौनसी नगरी है ।" लक्ष्मी वोली हजूर "आपके सेवक कचनपुरी के राजघराने की औलाद हे । तीर्थटन और विदेश भ्रमण का शौक था, परन्तु आपकी माया नगरी की मोहनी ने हमे मोह लिया, कुछ मास यही रहने का विचार है अत व्यवसाय भी शुरू किया है ।"

राजा, "मेरा अहो भाग्य जो आप जैसे हीरे मेरी नगरी की शोभा वढाएगे, मैं जरा नाम जानना चाहता हू । "आप हमारे सवसे वडे दात्ता हुकम शेरसिहजी हैं, आप दिलावर-सिहजी, आप तेजसिहजी, मैं तुच्छ लक्षणसिह कहलाता हू ।" राजा ने वडे प्रेम से पान वीडे दिलाए और हमेशा दरवारे आम वदरवारे खास को रोशन करने का हुकम इनायत किया । (हमेशा राज सभा मे आने को कहा) । सव मुजरा कर चले आए ।

घर आकर एकात मे नए नामो पर उन्हे खूव हसी आई। आज अच्छी रही । अव तो भगवान ही मालिक है । लक्ष्मी वोली फिक्र मत करो मैं सव निपट लूगी । आप लोग गोखडे मे वैठे २ चारो तरफ रास्ते मे देखा कीजिए, यदि अपना कुटुव मिल जाय तो यहा से चल दें ।

इधर व्यापार वढ़ रहा था। दूर २ से माल के गाड़े आने लगे। ऊपर लक्ष्मी का राज्य नीचे महा लक्ष्मी का साम्राज्य ।

सदा की तरह वन ठन कर घोड़ों पर निकलना, घूमना सैर सपाटे करना, गायों को घास डलवा देना, स्कूल की तरफ गए तो सब बच्चों को मिठाई वंटवादी, गरीव घरों की तरफ जा चढ़े तो सव को थोड़ा २ कपड़ा वंटवा दिया, यह सदा का काम था। यों लक्ष्मी के साथ कीर्ति भी वढ़ती जारही थी।

राज दासियां महलों में आकर हमेशा इनके गुण गाती थीं। एक दिन राणी ने राजा से कहा, अपनी चारों कुंवरियें बडी होगई हैं ये कंचनपुर वाले कुंवर बहुत ही गुणी व सुंदर सुनने में आरहे हैं। राजकाज में उलझे रहने से आपको कुंवरियों की चिंता ही नही है।

राजा ने कहा, "२-४ दिन में उन्हें यहां आमन्त्रित करेंगे फिर देख लेना और पसंद आगए तो रुपया नारेल भेज देंगे।"

अगले रोज राजा ने दो दिन बाद का भोजन का निमन्त्रण दिया। उन्हें स्वीकार करना पड़ा। घर आकर लक्ष्मी ने सब को समझा दिया, "देखना औरतों की तरह से ज्यादा नमकीन न खाना, मीठा अधिक खाना, वह भी सेर सवासेर नही हो, हां, औरतों की 'खुराक आदमी से दूनी होती है। बस ध्यान से"

राजा ने अपने पास ही चारो आसन लगवाए। तरह २ के पकवान व नमकीन बने थे, स्वादिष्ट होते हुए भी उन्होने उचित से भी कम भोजन किया। राजा ने खूब मनुहार से जिमाया। राजा के घर की सब औरतें उन्हे देखते ही रीझ गई। कुवरिया मन ही मन पुलकित हो गई। सबकी सलाह पक्की हुई।

राज गुरुजी को पोशाल से बुलाया गया। मुहुर्त पूछा गया। चैत्र सुदी ज तीको मुहूर्त सगाई का आया और चैत्र सुद पूनम के लग्न तै हुए। राजा प्रजा सब प्रसन्न। खूब सज-धज से तैयारी होने लगी। माया नगरी किन्नरपुरी प्रतीत होती थी।

इस बीच मे नाई के कहने से राजा ने उनकी चतुराई की परीक्षा की। बाजार मे खरीदी करने उनको साथ रखा था वे सीधे ढाल तलवार बदूक खरीदने पहुचे। शृ गार के साधन या कपडो की दुकान पर वे ठहरे भी नही। शिकार करने व घोडे दौडाने को बुलाया तो भी चारो कुवर सबसे आगे। नाई के मन की शका निकली नही। घर पर वह नायन से कहता है हो न हो ये जरूर लडकिया है। अपना क्या, जो होता है सो देखे जाओ। आनन्द पूर्वक बाजते गाजते सगाई हुई।

शादी की तैयारी तडा मार होरही थी। राजा के भाई बेटे सुसरालवाले और दूर २ के महमान आ रहे थे। चारो तरफ तम्बु छोलदारिया लग रही थी। बाजे गाजे नाच और

जीमने का काम समाप्त कर जंवाईजी घर आए। रात को उन सबको एक कमरे में इकट्ठा किया। वे आपस में खूब मिले फूटफूट कर रोए। रो-धोकर शांत हुए। सबके विस्तर लगे हुए थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था ये राज जंवाई हमें यहां क्यों लाए है हमारे साथ कैसा बर्ताव होगा। प्रभु जाने कितनी मुसीवत बाकी है। बाकी आज सुनहरा दिन है कि हम सब छः माह से मिले हैं। इन जंवाइयों का प्रभु भला करो जो हमें मिला दिया।

रात चली जा रही थी। लक्ष्मी किंवाड़ के पीछे बैठी हुई सब सुन रही थी। सबने अपनी २ बारी से आप बीती सुनाई। सबसे छोटा लड़का बोला मैं उन चारों को गांव के बाहर बिठा कर आया था, आपका किसी का पता नहीं चला, मैं रात को वहां गया पर वे वहां नहीं थी ! और तो कहां जावें हमारी तरह से वे भी कही इसी नगरी में मजूरी करती होंगी। पिताजी बोले, "मेरा मन कहता है लक्ष्मी कभी दुःखी नहीं हो सकती, धर्म के प्रभाव से वह सुखी होगी और तीनों को सुख से रखती होगी।" वह रोकर बोला "हे प्रभु उन बेटियों को कहां ढूंढें। देवी, कुलदेवी ने स्वप्ना देकर हमें सावधान किया, लक्ष्मी ने चितावनी दी पर मुझ बूढ़े ने कोई बात न मानी। गांव छूटा घर छूटा, धन माल गए, इज्जत गई। मजूरी कर पेट भरना पड़ रहा है यह सब मेरे पाप से, यदि मैं पूर्वजों की तरह धर्म करता रहता तो आज यह दशा न होती। मेरे पिछले जन्म की मां मेरी बेटी लक्ष्मी न होती तो राजा सबको हथकड़ी डालकर बाजार में फिराता। देखो सबसे छोटी थी

परन्तु अक्ल व धर्म मे सबसे बडी थी। मैं ६० वर्ष का हुआ परन्तु गुप्त मार्ग नही जानता था, वह न मालूम कैसे जान पाई। हे बेटा तू कहा है।" यह कह कर सेठ बेहोश हो गए। सेठानी भी रोने लगी। चारो लडके भी दुख के आसू बहाने लगे। पानी छाटने और हवा करने से पिता को चेत हुआ। वह बोला, "हम जैसे ही इस नगरी मे आए दो मीठे बोले ठग हमे हीरा बिकाने ले गए और हीरा लेकर लापता हुए। हम वही पास की खाली दुकान मे पडे रहे। सुबह उठ जगल मे गए। घास काट कर लाए और पेट भरा। गाव के बाहर एक किसान की झोपडी मे रह रहे है। चारो लडको ने भी हीरो के बाबत यही कहा कि बाजार की पक्की ऊची दुकान से दो आदमी हमे देखकर उठे और पिताजी की तरह हमसे हीरे लेकर गायब हो गए। एक के चेहरे पर चेचक के दाग थे। दूसरे के हाथ मे दो अगूठे थे। दोनो चालाक थे"। यो बाते करते करते पिछली रात को उन्हे नींद आई।

सुबह उठते ही सिपाही भेजकर लक्ष्मी ने सब जोहरियो व दलालो को अपनी हवेली बुला लिया। कोतवाल और कोडे-मार को भी बुला लिया था। सबसे पहले जो सेठ मदिर मे लक्ष्मी को मिले थे,उन्हे और अपने पाचवे हीरा खरीदने वाले सेठजी को बुला लिया। आज राजासाहब भी यही पावने थे।

सब के आने के बाद राजा साहब भी पधार गए। राज सिंहासन वही लगाया गया। चारो जवाई भी सिंहासन पर

बैठे । लक्ष्मण सिंह ने उन दोनों अच्छे सेठों को तिलक करा कर सरपाव वक्षा । उस सेठ ने वही हीरा नजर कर दिया । कुछदूर वह चेचक के दाग वाला और छः अंगुली वाला जोहरी ठाठ से बैठा था । दोनों को समीप बुलाया वे समझे कि अब तिलक और बक्षीस का हमारा नम्बर है । लक्ष्मणसिंह ने कोतवाल को इशारा किया, कोड़ेमार को भी पास बुलाया । राजा चुपचाप देख रहे थे ।

लक्ष्मणसिह ने पूछा, "क्यों जी तुम जवाहरात का धंधा करते हो । कहो सबसे अधिक कीमत के कितने हीरे तुम्हारे पास है ? उन्होंने अर्ज की, "हम दोनों के पास दो दो हीरे सवा सवा लाख के हैं ।" "तुमने कहां से खरीदे सच सच कहना ।" हम व्यापार के लिए रत्नद्वीप गए थे वहां से लाए है । सिपाही को भेज कर अपने घर में ठहराए हुए अपने घरवालों को लक्ष्मणसिंह ने वहां बुलाया । पूछा, कहो तुम लोग कौन हो और इस नगरी में कब से रहते हो? बूढे ने वहां अजब ठाठ देखा । राज दरबार लगा हुआ है । सारी सभा भरी हुई है । बूढा बोला, "हजूर यदि मैं अपनी सच सच बात सुनाऊंगा तो यहां किसी को विश्वास भी न होगा ।" राजा बोले, "तुम डरो मत सब सचसच कहो" बूढे ने अपनी आप बीती कह सुनाई और कहा कि छोटी वहु जो चार हीरे लाई थी उसमें से एक तो इन दोनों ने मुझ से कपट से लिया था । चारों लड़कों ने कहा हां यही दोनों आदमी हैं जो हमें दगा देने वाले हैं । राजा ने कोतवाल

की तरफ इशारा किया। दोनो के कोडे पडने लगे। मार के आगे भूत भागते हे। दो चार कोडे पडते ही वे सच बोल गए कि हमने ही इनसे चारो हीरे छीने है। ये रहे। पगडी मे खोल कर हीरे राजा के सामने घरे। यो पाचो हीरे लक्ष्मी के पास पहुच गए।

जवाईजी ने उस हीरा खरीदने वाले सेठजी के लडके को बुलाया और कहा कि हम जब इस नगरी मे आए थे तब हमारा विश्वास तुम्हारे पिताजी ने किया था इसलिए तुम्हे हम अपनी सब जायदाद सभालने को देते है। दुकानें भी तुम सभालना। आधा नफा तुम्हारा आधा हमारा। तुम हमारे कामदार और दीवान।

दो दिन बाद राज दरबार भरा। सभी लोग जवाई राजो को भेंट देने आए। राजा ने उचित समझा वैसा किया। सबको राज्य की तरफ से उचित पुरस्कार भेट आदि दिए गए। उस भेट के दिन रात को लक्ष्मी ने अपनी जेठानियो से कहा कि अब घर चलना है। यह तमाशा खतम कर असली वस्त्र पहनने हैं।

गृह मन्दिर मे आरती के वक्त चारो बहुओ ने असली जनानी वस्त्राभूषण पहनकर प्रभुजी की आरती की। बाहर निकल कर सासुजी के पैरो लगी सेठजी को प्रणाम किया। वहा आनन्द ही आनन्द छा गया। पूरा कुटुम्ब स्वर्गीय सुख मे विभोर हो गया।

दूसरे दिन राजसभा में चारों जंवाई गए। अर्ज की कि अब हम कल यहां से देश में लौट रहे है। कल का ही शुभ मुहूर्त है अतः आज सायंकाल जीमन अरोगना हमारे यहां हो। पूरा अन्तःपुर वहीं अरोगे। वहीं से हमारी विदाई है, अतः आज दुपहर तक सब तैयारी कराकर हम गौना करने आवेंगे। रात को हमारे ही महलों में राजघराने का पौढ़ना होगा।

राजा ने गौना की पूरी तैयारी पहले से करा रखी थी। सब प्रकार के वस्त्राभूषण, हाथी घोड़े, दास दासी नौकर चाकर फौज पलटन दिए। चारों दुल्हनों के म्यानों सहित कुंवर अपनी हवेली में आए। शाम होते होते रानीजी की पालकी भी आ गई। राजा साहब भी संध्याकाल पश्चात वहां पधार गए।

भोजन के पश्चात एक नाटक का प्रोग्राम रखा गया था। दर्शक मात्र दोनों राज घरों के सदस्य ही थे। पूरा प्रबन्ध था। बाहर वालों का प्रवेश निषिद्ध था।

लावण्यपुर नगर के राजा ने किस प्रकार घर को घेरा था। वहां से कैसे लक्ष्मी ने बचाया। चोरों ने लूटा। हीरों को खोया। मायापुरी में चारों औरतों का आना। मर्दाने वेश में रहना। घोड़ों की सवारी। राजा का दिया हुवा सन्मान। राजा के अतिथि होना। सगाई करना और शादी होना। जंवाइयों का नगरी को जिमाना अपने घर वालों का पता लगाना। हीरों की प्राप्ति और राज्य दरबार में भेंट ग्रहण करना। गौना लेने जाना।

राजा रानी और कुवरिया सव दग है कि यह सव वाते तो हमारे यहा की है। वाद मे आरती के समय कपडे वदलने वे चारो जमाई जाते है कपडे वदलकर वे स्त्री वेश मे अपने २ पति के पास आ खडी होती है।

वाद मे वे चारो सेठ के लडके अपनी पत्नियो सहित राजा रानी को वन्दन करते है। वे चारो राज कुवरिया भी अव भेद समझती हैं वे भी अपनी अपनी वहनो या नकली पतियो के पास जा खडी होती है।

राजा रानी वहुत प्रसन्न होते हैं। वे लावण्यपुर के दीवान और नगर सेठ के यहा अपनी लडकियो का व्याहना अपने लिए सौभाग्य समझते है। वे जानते थे सेठजी के यहा (क्षत्री होने से) पाच पीढी से मन्त्री पद चला आ रहा है।

सीख विदा हो चुकी थी। अव प्रयाण करना था उत्तम शुकन देखकर सवने प्रयाण किया। चारो हाथियो पर नकली जवाई राज वैठे थे चारो म्याने पीछे आ रहे थे। पूरी सेना साथ चल रही थी। लक्ष्मणसिंह सव का नियन्त्रण कर रहे थे। सेठजी व चारो पुत्र घर का साज सामान डच डायचा रोकड आभूषण को लाने का प्रवन्ध करने मे लगे थे। अत वे छ ही जने पहले पडाव मे आकर मिलने वाले थे। विदाई के वक्त पूरी नगरी मे शोक छाया हुवा था। जवाई राज सव के प्यारे हो चुके थे।

गांव के वाहर निकलते ही उस कुम्हार और कुम्हारिन को जल का घड़ा लेकर लक्ष्मी ने शुकन वास्ते वुलाया और अशर्फियों से घड़ा भर दिया। उत्तम लोग कभी भी गुण को नही भूल सकते। पहला पड़ाव गांव से १-१।। मील दूर किया जहां से वे सब माया नगरी के लिए हीरे लेकर अलग अलग विदा हुए थे। वहां एक पक्का कुवा, जानवरों के लिए हौज और जल की प्याऊ व एक धर्मशाला वनवाने वा हुकम दिया।

यों धरमंजला धरकूचा, चतुरंगनी सेना लावण्यपुर नगर की तरफ चली जा रही है। जव शहर १ कोस दूर रह गया तव राजा के पास दूत भेजा कि या तो युद्ध की तैयारी करो या नंगे पैरों सामने आकर मिलो। यहां आकर सेठजी राजा बने हैं और औरतें जनाने में चली गई है। राजा ने अपना बलाबल विचार कर नंगे पैर सामने जाना स्वीकार किया। प्रातः काल राजा और सामंत सव नंगे पैर सामने चले। राज्य सिहासन पर राजा और चार ही कुंवरजी वैठे है नंगे पैरों राजा के समीप पहुंचने पर सब सिहासन पर से उठ खड़े हुए और सामने गए। अभिवादन किया, और राजा साहब को राज सिहासन पर बिठाया स्वयं पांचों ही जने पास के तखत पर वैठ गए।

राजा ने अपने नगर सेठ व मन्त्री को पहचान लिया; बड़े शर्मिन्दा हुए। हवेली लूटने आदि का अफसोस जाहिर करने लगे। दीवानजी बोले बीती तिथि तों पंडित भी नही देखता। उसे भूल जाइये। यह सब आपके'आशीर्वाद से और छोटी बहु लक्ष्मी के धर्म व बुद्धि के प्रभाव का परिणाम है।

राज घराने की और नगर के प्रमुख घरो की नारियों को भी वहीं बुला लिया गया। चारो बेटो के सासु सुसर व पूरा परिवार भी वहा बुला लिया गया। सब का भोजन आदि से सत्कार किया गया। राजा साहब को भेट नजराना कर उन्हे विदा किया गया।

दूसरे दिन सेठजी को बाजे गाजे से हाथी पर बैठा कर राजासाहब स्वय साथ जाकर उनकी हवेली तक पहुचा आए। सेठ सेठानी वही रहे। लक्ष्मी की सलाह से बडे पुत्र को मत्री पद दूसरे को नगर सेठाई तीसरे को मायापुरी का काम काज सौंपा, चौथा तो वही गाव के बाहर लक्ष्मीपुर नगर बसा कर रह गया।

लक्ष्मी के कहने के अनुसार सब व्यवस्था हो गई। सब अब नियम मर चलते है। धर्म के प्रति अभिरूचि है। चारो, भाई अपनी दो दो धर्म पत्नियो के साथ सुख व सपत्ति का आनन्द लूट रहे है। लक्ष्मी ने फुरसत पाकर पोशाल से गुरूजी को बुला भेजा उनके पगे लागी आशीर्वाद पाया और उन्हे जमीन जागीर व नकद देकर सन्मान किया। पोशाल नई बधवादी। अब वह राज्य गुरूजी की सलाह से चल रही थी।

अपने गाव लक्ष्मीपुर के निवास के समय उसने लावण्यपुर नगरी व मायापुर नगरी के राजाओ को निमत्रित किया। अपने परिवार को और सब नागरिको को सत्कार सहित जिमाया। दिन दिन धर्म मे वृद्धि थी। मन्दिरो की शोभा अपूर्व थी।

अन्तराय कर्मपर दुर्लभ सेठ की कथा

सुघोषा नगरी में सुलभ सेठ के पुत्र दुर्लभ सेठ की चतुराई नगरी में प्रसिद्धि पाचुकी थी। चाहे कैसी ही उलझन हो दुर्लभ की बुद्धि उसमें से मार्ग निकाल लेती थी।

सुलभ सेठ उदार थे पैतृक सम्पत्ति और कीर्ति में उन्होंने चार चांद लगाये थे। ढलती उम्र में देवी देवता की मनोती कहो या कर्म के अन्तराय के क्षय से कहो सुलभ सेठ के एक ही पुत्र दुर्लभ कुमार का जन्म हुवा था। दुर्लभ के होश संभालते संभालते ही उसे २० वर्ष का छोड़ ३-३ माह के अन्तर में, माता, पिता स्वर्गवासी हो गए थे।

दुर्लभ सेठ ने पेढ़ी संभाल ली थी। व्यापार कला में वह कुशल थे लाखों का लेन देन था मुनीम गुमाश्तों से कस कर काम लेते थे। पिता के जाते ही सब मुनीम गुमाश्तों को अलग किया। सब काम भुजा के बल पर करने लगे। यहां तक कि भोजन भी हाथ से पकाते और खाते थे।

कुछ स्वभाव भी कंजूस था इसलिए घर गृहस्थी के प्रतिदिन के खर्चे भी कम कर दिए थे।

शादी अभी हुई नहीं थी। मांगे पर मांगे आते थे पर वे टालते जाते थे। यों २५ वर्ष की उम्र हो जाने पर भी उन्होंने इस तरफ लक्ष ही नही दिया था। बस काम काम

और काम । काम और दाम के सामने वे चाम की परवाह नही करते थे ।

पिछले भव के कर्मो का उदय कहो कि स्वभाव का असर वे दिन प्रति दिन कजूस बनते जाते थे। सगाई की हवा अब समाप्त हो गई थी । जो आगे बढकर लडकी देने को तैयार थे वे भी अब उनके स्वभाव के कारण बात तक नही करते थे । दिन तो किसी के काबू मे नही होते है । ३० वर्ष की पक्की उम्र हो गई । सुबह से शाम तक महनत करते दुपहर को एक टाइम जौ की रोटी, कुलथी की दाल । तेल मे शक्ति ज्यादा होती है इसलिए घी का प्रवेश उनके चौके मे न था । दूध दही मक्खन का सेवन तो वह कमजोरो के लिए मानते थे । जाडा पहनना और जाडा खाना खानदानी पन की निशानी थी ऐसा मानते थे ।

सुघोपा नगरी व्यापारिक केद्र था । आसपास व दूर के गावो से व्यापारी वहा आते जाते रहते थे । कोई २ तो वहा बस भी जाते थे । चन्द्रभान सेठ भी यहा बस गए थे । चन्द्रकान्ता उनकी एकाएक प्रियपुत्री थी । माता, उसे ६ वर्ष की उम्र मे ही पिता की सेवा का भार डालकर परलोक सिधार गई थी । बचपन से काम का बोझ और पिता की सभाल व सहवास से वह सद्गुणी सुशील, गभीर और स्वावलम्बी बन गई थी । २२ वर्ष की उम्र हो चुकी थी । जिसका उसे ध्यान भी न था । पिता ने सुघोपा नगरी मे बसते ही उसके सबन्ध के लिए आख दौडाई । कई जगह बात चीत की, पर

कहीं घर ठीक नही था तो कही वर ठीक नहीं था तो कहीं तिलक की रकम कमर तोड़ थी । एक दिन अचानक वे मन्दिर में दर्शन करने गए थे वहां दुर्लभ सेठ पूजाकर चैत्य-वंदन कर रहे थे। दुर्लभ सेठ के पिता से उनका पुराना व्यापारिक संबंध था। छानबीन पूघताछ के बाद पता लगा कि सुलभ सेठ गुजर गए थे दुर्लभ अभी तक कुवारे थे।

उन्होंने एक मित्र के द्वारा दुर्लभ सेठ के मनोभाव जाने। दुर्लभ की इच्छा गृहस्थी के चक्कर में पड़ने की न थी आखिर मित्रों के दबाव से उन्होंने सगाई मंजूर की। ठीक समय पर विवाह हुवा। चन्द्रकान्ता अपने नए घर में आई।

इतनी विशाल हवेली, इतने बड़े बड़े खंड, सब प्रकार की साधन सामग्री फिर भी सूनापन उसे खाए जाता था। घर में उदासी, एकान्त, निरालापन और कंजूसी की छाया फैली हुई थी ।

शादी के १०–१२ दिन बाद सब महमानों के चले जाने पर दुर्लभ सेठ चन्द्रकान्ता से बोले कि तुम्हारे लिए गेहूं की रोटी बनाकर घी से चुपड़ा करो। मुझे तो जौ और तेल ही पसन्द है। बिचारी क्या करती पति देवता के स्वभाव के अनुरूप उसने भी जौ और तेल कुलथी खाना शुरू किया। काम से तो वह थकती न थी। यों उनकी गृहस्थी मरुस्थल की सूखी हवा के अनुरूप चलती रही। उनके लिए सब दिन

वरावर थे। वार त्यौहार और पर्व ये सव ढोग तथा अमीरो के चोचले है।

एक दिन सेठजी को कुछ काम से ५–७ माइल के गावडे मे जाना था। अधेरे अधेरे ही चलकर जाना चाहते थे। कव लौट कर आवे कुछ ठीक न था इस लिए खाना साथ वाधने को सिठानी को कह दिया था।

वडे सवेरे अपना थैला और खाने का डिव्वा लिया और सेठ चल दिए। काम तो हुवा नही फालतु चक्कर हुवा। वापस लौटते १२ वजे के करीव एक वृक्ष के पास वाली वावडी के समीप वैठ कर खाना निकाला। देखा डिव्वे मे सुगधित चूरमे के लड्डू थे, घी तर्मतर्रा था जलभुन गए, थैले मे हाथ डाला तो शर्वत की वोतल मे से गुलाव जल की सुगध आ रही थी मन मे वोले, रुखिणी मेरे घर का सत्यानाश मिलाने को आई है, शक्कर के लड्डु और इतना घी, वदाम पिस्ते चारोली !! और यह शर्वत की वोतल जिसमे कीमती गुलाव जल। यो तो थोडे दिनो मे घर चौपट कर देगी मेरा दिवाला निकाल देगी। गुस्से ही गुस्से मे वोतल को भन्नाट फेंकमारी। डव्वे को उठा कर पटक दिया जले भुने खाख हुये दो मिनट वैठे रहे वाद मे उठाया खाली डिव्वा और चले औरत की खवर लेने। मन ही मन वुड वुडाते जाते थे। सकल्प विकल्पमे आगे वढ ही रहे थे कि पीछे से किसी ने आवाज दी, "ठहर जा जाने वाले, रुकजा" सेठ पीछे मुडे तो कोई नजर ही नही आया। फ़िर आगे वढे तो वही आवाज। वह रुक

गए। पास में एक वड़ा सर्प फन उठाए दिखाई दिया, वह सर्प वोला, "हे मानवी तूने मेरी भक्ति की है, कई दिनों से मेरी प्यास ऐसे सुगंधित अमृत से शांत की है मेरी आत्मा तृप्त हुई है मैं तुझ पर प्रसन्न हूं, मांग मांग जल्दी मांग तुझे वर देता हूं, वोल वोल जल्दी वोल तुझे क्या चाहिए ?"

सेठ तो क्रोध मे थे, उन्होने कहा पहले मैं अपनी औरत का दिमाग ठीक करके आऊं तव कुछ मांगूंगा। नागदेव वोले "अच्छा जा मैं यहीं तेरी राह देखूंगा। हम देवता है किसी का एहसान नहीं रखना चाहते हैं। तेरी भक्ति का वदला देकर यहां से जाऊंगा तू जल्दी आना।"

सेठ घर पहुंचे पत्नि को खूव जली कटी सुनाई। स्त्री रूंआं सी हो गई उसने कभी इतनी गालियां अपने पिता से नहीं सुनी थी। उसने अपने लिए नहीं उन के लिए लड्डु वनाए थे। वह बहुत दुःखी हुई। गुस्से की मात्रा कम होने पर सेठ फिर वापस जंगल की तरफ जाने लगा और जाते जाते बोला कि उस नागदेव से क्या मांगू। वह सव घटना स्त्री से कह सुनाई। स्त्री वोली अपने यहां सब कुछ है किसी चीज की कमी नही है आप तो यह मांगो कि, "मेरा है सो मुझे खाने दो"। सेठ चले और विचारने लगे, "कैसो बेवकूफ औरत है मांग मांग कर क्या मांगा, "मेरा है सो मुझे खाने दो" अरे कही का राज ही मांग लिया होता। यों सोचते सोचते वह वहीं पहुंचा जहां नागदेव से भेंट हुई थी। नागदेव बैठे थे। उनसे कहा कि "मुझे यह वर

दीजिए कि, मेरा है सो मुझे खाने दो।" नागदेव बोले यहतो असम्भव है, तू और कुछ माग, चाहे तो राज दे दू, खजाना दे दू, हीरे माणक मोती से लदे गहने दे दू पर यह वर देना कठिन है"। सेठजी ने भी जिद पकडी, "नही यदि आपको देना है तो यही दीजिए वरना मना करदीजिए"। नागदेव बोले अच्छा बैठ जा मेरी पीठ पर, यो कहकर सर्प मानव शरीर धारण किया और उड कर एक तलाव के पास पहुचे, बोले, "यह धोबी पिछले जन्म का तेरा मित्र है तेंने विश्वासघात करके इसके ५०) (पचास रुपए) पचा लिए थे इसकी रुकावट से तेरी सब इच्छाओ और भोग सामग्री पर रुकावट है तू कमा सकता है पर खा नही सकता यही अमानत मे खयामत का फल है। वह पचास रुपया ब्याज सहित बढकर २५००) हो गया है। जब तू इसे २५००) दे देगा उसी दिन से तेरा मागा वर्दान फलेगा। यो कह कर देव अन्तर्धान हो गए। सेठ पास की नगरी मे गए। वह उनके मामा की नगरी थी। मामा ने स्वागत किया। कुशल क्षेम पूछा और विश्राम के लिए खाट बिछा दी। भोजन के बाद सेठ आराम सेसो गया। दूसरे दिन दुर्लभ सेठ मामा मे बोला कि २५००) मेरे नावे माड कर दीजिए। मामा ने दे दिए। रुपए लेकर दुर्लभ सेठ तलाव पर गए, जहा धोबी कपडे धो रहा था उसके पास वह थैली रखकर चल दिए। वापस मामा के घर आए भोजन कर मामा का घोडा लेकर अपने घर आए। रास्ते मे विचार करते है कि आज तो एकादशी है कुछ दान पुन्य करना चाहिए। घर आते ही सेठानी से बोले कि तुम

घर का सब काम हाथों से क्यों कर रही हो, ठहरो मैं नौकरानी वुलाता हूं, वाहर गायें खड़ी हैं उन्हें घास डालो, कबूतर चोतरे पर १। मण मक्की पहुंचाओ। देखो वे विचारे गरीव खड़े हैं उन्हें खाना कपड़ा दो। घर का क्या हाल कर रखा है? यह जौ के भरे थैले किसलिए हैं? इन कुलथों के डब्वों की यहां क्या जरूरत है?"

"मै मन्दिर जी जा रहा हूं पूजन का थाल जमाओ। वदाम, साकार नैवेद्य, फल, फूल केसर, घी, दूध सव तैयार करो।"

यों कहकर पडौस में रहने वाले ब्राह्मण को वुलाकर घर की सफाई आदि कराने व पूजन की सामग्री मन्दिर जी में पहुंचाने को कहा। उसकी पत्नि को भी वुला लिया था। बाजार से घी, शक्कर, गेहूं का आटा आदि मंगवाया, ब्राह्मणी से चौका लगवाया भोजन आज से ब्राह्मणी बनाएगी। सेठ सेठाणी मन्दिर जी को गए। बहुत ही भक्ति भाव से जिनेश्वर की पूजा की। रास्ते में पौशाल मे लड़के पढ़ रहे थे। गुरूजी अन्तराय कर्म का स्वरूप समझा रहे थे। सेठ सेठाणी गुरुजी के पास गए। जो कर्म का स्वरूप चल रहा था सुना। सब लड़कों के लिए मिठाई मंगाई गुरुजी से शाम को घर पर आने को विनंति की। यों घर आए तब तक भोजन तैयार था।

सेठजी की मनोवृत्ति बदली देख कर आज पहली बार सेठाणी चन्द्रकान्त प्रसन्न हुई। भोजन की पुरस्कारी हो रही

थी कि एक मुनिराज गोचरी के लिये पधारे, "धर्मलाभ" । सेठ सेठाणी के आनन्द का पार न रहा। उन्होने वडे ही भक्ति भाव से उल्लास पूर्वक साधु महाराज को गोचरी कराई। आज वर्षो के वाद एक पुण्यात्मा के पैर इस हवेली को पावन कर रहे थे ।

जिन पूजा जिसघर नहीं, नही सुपात्रे दान ।

ते किम पामे वापडा विद्या रूप निधान ।।

भोजन के पश्चात सेठजी पेढी पर गए। पुराने मुनीमजी को बुलाया। सव भार तोर पूर्ववत उन पर डाला। सव मित्रो को बुलाकर सत्कार किया।

सेठाणी वहुत ही प्रसन्न थी। वह अपने पिताजी के घर गई और सव घटना कह सुनाई कि आज से मेरा पति मुझे मिला है, वह घर आज से मेरा घर है आप चिन्ता दूर कीजिए।

शाम को पाठशाला से निवृत होकर गुरुजी सेठजी की हवेली आए । वडे प्रेम से धर्म चर्चा की। सेठजी ने कहा गुरासा, वर्षो वाद आप की कृपा हुई। मैं आपकी कृपा से पढा लिखा और लाखो का धन कमाया हू परन्तु सच्चे सुख का अनुभव आज हो रहा है। जगल वाली सव घटना कह सुनाई। सेठाणी की वुद्धि की प्रशसा की। पुण्योदय से ही ऐसी सुशील व धर्मानुरागिणी स्त्री मिलती है।

तीन दिन बाद चतुर्दशी थी। सेठजी ने गुरुजी से कहा कि उस दिन आपके उपवास रहता है मैं भी उपवास करूंगा आप कृपा कर यहीं पधार जाना, तमाम दिन धर्म चर्चा करेंगे।

बीज, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी ये पर्व के दिन कहलाते है। पर्व अर्थात् गांठ। जितना जिसका कुल आयुष्य होता है उसके तीसरे भाग के आयुष्य में इन तिथियों को आते भव की आयु का बंधन होता है। अतः यदि इन तिथियों में शुभ भावना युक्त शुभ क्रियाएं की जावें तो शुभ आयु का वंधन होता है। अशुभ विचारों और अशुभ आचारों से ये तिथियां बिताई जांय तो अशुभ आयु का बंधन होता है। भगवान ने इन तिथियों को पुण्य तिथियां, शुभ आराधन तिथियां, पर्व तिथियां इसी कारण से वताई हैं।

चवदश के दिन दोनों सज्जनों ने पौषधव्रत लिया। खूब धर्म चर्चा की। गृहस्थ गुरूजी विद्वान सदाचारी व धर्म क्रिया में श्रद्धालु थे। सेठजी को जैन दर्शन का ज्ञान कराया। कर्मो का बंधन और कर्मक्षय का वर्णन विस्तार से समझाया।

अंतराय कर्म का विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि, "अंतरायकर्म की उत्तर प्रकृति पांच है। दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय, और वीर्यान्तराय।"

अठारह प्रकार से जीव अन्तराय कर्म बांधता हैः—

(१) करूणा दया से रहित होवे (२) दीन हीन जीवों को कोई कुछ देता हो उसमें आड लगाए (३) असमर्थ जीवों

पर क्रोध करे (४) सच्चे अनेकांकि गुरु को वदन पूजन को मना करे (५) तपस्वी को नमस्कार न करे, वदन पूजन का निषेध करे (६) जिन भक्ति का निषेध करे (७) जिन सिद्धान्तो की उत्थापना करे (८) जैन धर्म पालने मे, जिन धर्म के धारण करने मे विघ्न करे (९) सिद्धान्त की अवहेलना व आशातना करे (१०) धर्म के सूत्र और अर्थ को पढने मे अन्तराय करे (११) स्वय दान न देवे तथा औरो को भी देने से मना करे (१२) अपने धर्म के मार्ग मे चलने वाले को अन्तराय करे (१३) धर्म व उपकार की वात पर हसी करे (१४) विपरीत उपदेश देवे (१५) असत्य वचन वोले (१६) न दी हुई वस्तु ग्रहण करे, अमानत मे खयानत करे (१७) किसी जीव के दान, लाभ, भोग उपभोग और वीर्य (पराक्रम) मे विक्षेप (अतराय) डाले (१८) किसी जीव के गुण छिपावे, उसके दोषो को प्रगट करे।

इन कारणो से जीव दरिद्री होकर महा दुःख भोगता है। इसे ही अन्तराय कर्म कहते है।

सेठ ने गुरुजी से पूछा कि अन्तराय कर्म के क्षय का उपाय क्या है? गुरुजी ने समझाया कि, ज्ञानान्तराय के लिए पाठशालाए खोलना, विद्यादान देना, विद्यार्थीगण को सहायता देना, पुस्तकें व शास्त्र लिखवाना उनका दान करना। साधु को, जैन पडित को, ज्ञानी गृहस्थ गुरु, माहण, पडित महात्मा, को तथा साधर्मी को सुपात्र जानकर उनकी भक्ति करना उन्हे अपनी स्थिति के अनुसार पदार्थ देना। दीन हीन

को औषध भोजन वस्त्र आदि देना । अन्न व अन्य उत्तम वस्तु का वितरण करना । पशु पक्षी को घास दाना देना । अपने शरीर की शक्ति को न छुपाते हुए धर्म क्रियाएं करना । पाठशाला, ज्ञान मन्दिर पौशाल, गुरुकुल, पांजरापोल, अनाथालय विधवाश्रम आदि में सहायता देना ।"

दूसरे दिन दोनों महानुभावों ने पौषध पारकर जिन पूजन कर पौरसीका पच्चक्खान पारा एवं पारना किया और अपने अपने घर कामों में लग गए ।

अब सेठ–सेठाणी नियमित रूप से शुभ क्रियाएं करते है । "लक्ष्मी धर्मानुगामिनी" धर्म के प्रताप से लक्ष्मी विना ही वुलाए आ रही थी उसका सदुपयोग वे करते थे ।

सेठ पिछले भव में अमानत में खयानत करने के पाप का फल भुगत चुके थे अतः लेन देन में वहुत सावधान थे । सब तरह से उनका जीवन सुखमय था ।

जिस जिस घर में गृहस्थ गुरुजी का आवागमन था वे घर सदाचारी थे । सच्ची सलाह देना, बालकों का जीवन उज्वल बनाना, औषध भेषज द्वारा गृहस्थों का शरीर स्वस्थ रखना, समाज में अचानक आ पड़ने वाले विवादों का निपटारा करना ये सब गुरुजी करते थे । सबको उनके प्रति श्रद्धा थी । वे भी सबके थे सब उनके थे । यों पूरे संघ में सब अपना अपना कर्त्तव्य निभाते थे । गृहस्थ लोग माहण गुरुजी का सब भार आज तक उठाते आए हैं ।

दुर्लभ सेठ के समय पर सताने हुई थी उनका लालन पालन व्यवस्थित व सुमस्कारो द्वारा हुवा था। पिछली अवस्था मे सेठ ने अपने पुत्रो को सव गृह भार सोप दिया था। गृही गुरुजी ने भी अपनी योग्य सतान को पाठशाला, औपधालय आदि सोप दिया था। दोनो साधर्मी जन अपनी २ गृहस्थी से मुक्त होकर तीर्थ यात्रा आदि कर आये थे। अब पिछली उम्र मे यथा शक्ति धर्म क्रियाए करते हुए काल गमन कर रहे थे। उनका जीवन इन छ कर्त्तव्यो के अनुरूप था —

देव पूजा गुरु पास्ति, स्वाध्याय· संयम तप ।
दानचैति गृहस्थाणा पट् कर्माणि दिने दिने ।।

अर्थात देव पूजा, गुरू की सेवा, स्वाध्याय करते हुए नया पाठ पढना, सयम मे रहना तप करना और दान देना इन कर्त्तव्यो के सिवाय धार्मिक छ आवश्यक सामायिक, चौवीस भगवान की स्तुति, वदना, प्रतिक्रमण, काउसग, पच्चखान भी वे प्रतिदिन करते थे। यो वे अपना आदर्श जीवन आनन्द पूर्वक विता रहे थे।

—

अंध श्रद्धालु ब्राह्मण की चतुर पत्नि

एक ब्राह्मण बहुत भावुक थे। जो भी काषाय वस्त्र वाला (भगवे कपड़े वाला) साधु नजर आता उसके पैरों पड़ जाते। उसे घर लाते और खिलाते पिलाते। गुणी और दुर्गुणी सदाचारी व व्यसनी की उन्हें पहचान न थी। बिचारी ब्राह्मणी इन मुस्टंडों के मारे हैरान थी। एक बार घर देख लेने के बाद वे बाबाजी यदा कदा, बच्चा तेरा भला होगा, कर भला हो भला, अलख-निरंजन; शिव शिव; करते चले ही आते थे कभी दो, कभी चार, आते। बिचारी ब्राह्मणी अपने पति के स्वभाव से हैरान थी। खाने की कमी न थी खेती बाड़ी व जज़मान वृत्ति पूरी थी पर उन लट्ठभारतियों के २॥ सेर के चमड़े के डिब्बे को भरते भरते वह हैरान हो जाती थी।

हां कोई गुणवान हो, सच्चा भक्त हो धर्म रूचि वाला हो तो बात दूसरी थी। वे लोग तो मजे में चौपाल में बैठकर गप्पें हांकते थे, चिलमें फूकते थे गांजे के दम भरते थे, रूद्राक्ष की माला और गेरूए कपड़ों व जटाजूट से ही वे सन्यासी कहलाते थे बाकी अन्दर तो पोलंमपोल, खोखला ढोल दुर्गुणों का साम्राज्य था। मात्र वेश से ही साधु न समझना चाहिए संयम भी देखना चाहिए।

ब्राह्मण देव अंधश्रद्धालु थे। बचपन में पिता के गुजर जाने से शिक्षा तो मिली न थी हां कभी कभी संगत में जा

वैठते थे इसीलिए श्रद्धालु बने थे। उनका तो कुछ न विगडता था पर विचारी ब्राह्मणी अपने खट करम भी न कर पाती थी उसे वच्चो की सभाल दुस्वार हो रही थी। गौवें दुहना, पानी लाना, चक्की पीसना, खाना वनाना सफाई करना सासुजी की सेवा चाकरी करना ऊपर से इन पहुचे हुवे खुदा के फरिश्तो की टहल वदगी।

आखिर इन्सान इन्सान ही है मशीन तो है नही, वह अव इनसे उव गई थी। उसे भी अव निरात और विश्राम की जरूरत थी। आवश्यकता आविष्कार की जननी है। एक दिन एक जवान वावाजी घर पूछते हुए आए, दुपहर का वक्त था। ब्राह्मणी सव काम से निपट कर जरा लेटी ही थी कि नमो नारायण की आवाज सुनी। वाहर आई। वावाजी को प्रणाम किया। चवूतरे पर विठाया, जल पिलाया। रसोडे मे गई वरतन वजाने लगी मानो रसोई की तैयारी कर रही हो।

थोडी देर वाद वाहर आकर वोली, "वावाजी भोजन तैयार हो रहा है आप को स्नानादि करना हो तो कर आवें पर एक वात का ध्यान रखें, मेरे पति देव दिखने मे वडेभोले हैं,वे आपको नमस्कार करेंगे,आपके चरणो की धूली मस्तक पर लगाएगे आपको खिलाएगे पिलाएगे पर वाद मे आपको रस्से मे वाध कर मूसने मे पीटेंगे"। वावाजी उठने लगे, वह वोली,"वैठो वैठो वे आने ही वाले होंगे भोजन भी जल्दी ही वन जाएगा, आप उनको अपने ज्ञानामृत का भी पान कराते जावें और इस

तरह जल्दी नहीं जावें"। बाबाजी ने देखा कि नया रस्सा और मूसला पास ही पड़ा है। उन्होंने दण्ड कमंडल उठाकर चलने में ही खैर मानी। चल घरे। कोई १५ मिनट बाद ब्राह्मण देवता घर पर परशाद पाने आए। शिव शिव रटते आ रहे थे। स्नान करने में जरा देर हो गई थी भोजन ठण्डा हो या गरम, मीठा हो या फीका यह सब तो रांड जीभ के लटके है बाकी भोजन के लेटर बक्स में तो चुपड़े, लूखे, मीठे फीके, कैसे भी आटे के पत्र लिफाफे डालो वह तो मना नही करता है।

ब्राह्मण ने पूछा कि थोड़ी देर पहले मैने एक बाबाजी को भेजा था, वह कहां गए, "बोली, वह आए थे मैंने कहा महाराज बैठिए भोजन तैयार करती हूं, पर वे तो गाय बांधने के इस नए रस्से व इस मूसले पर लट्टु हो गए कि ये दोनों चीजें दो तो हम भोजन पावें। मैने कहा "महाराज ये दोनों चीजें आज ही मेरे मायके से मैंने मंगाई हैं मुझे इनके बिना भारी तकलीफ हो रही थी। गऊ ने रस्सा तुड़ाया था, चावल खांडने की तकलीफ थी कई दिनों के बाद आज ही ये चीजें आई है"। ब्राह्मण ने तो झट दोनों चीजें उठाई और भगे भगे गांव के बाहर निकले, देखा, बाबाजी चले जा रहे है, पुकारा, "ठहरो महाराज ठहरो, यह लो रस्सी और मूसला, आप ठहरो भोजन पाकर जाना"। बाबा जी ने मुड़कर देखा कि ब्राह्मण कंधे पर मूसल और हाथ में रस्सी लिए मेरी तरफ भगे आ रहा है। ब्राह्मणी ने सच

कहा था कि ब्राह्मण दीखता भोला है मगर रस्सी से बाधकर मूसले से पीटता है नारायण नारायण आज जान बची"। महाराज तो सरपट भागे, भागे भागे और जोर से भागे और आखो से ओझल हो गए। ब्राह्मण देव पीछे घर लौट आए। बाबाजी को आगे एक भगत मडली मिली भागने का कारण पूछा उन्होंने सब कह सुनाया कि बस्ती जइयो पर वा ब्राह्मण देव के घर न जइयो। वे रसवा मे बाधत है मूसल से पीटत है।

यों ब्राह्मणी का दुख दूर हुवा। अब वह स्वय ढूढ ढाढ कर अधे व गरीब आदमी को लाती है उसे भोजन देकर आत्मा को सतुष्ट करती है। अब घर गृहस्थी का काम भी ठीक तरह चलने लगा। फुरसत मिलने पर वह धर्म शास्त्र भी पढकर सासुजी को सुनाती है। पति की व अतिथि की सेवा भी करती है।

सुपात्र और योग्य की भक्ति करना उसका नियम था मगर हट्टे कट्टे निठल्ले साडो को और मोटा बनाना वह पाप समझती थी। गरीब दीन दुखी को देखकर वह अपना सर्वस्व देने को तैयार हो जाती थी। यों उसने चतुराई से काम लिया। ठग और बक भगतो की भक्ति मे जो पाप बघता था उससे अपने पति को उसने बचाया। सुपात्र और दीन दुखी नर की सेवा मे वह नारायण की सेवा मानती थी।

•

चाल मेरी टूंटी चारों बातें झूंठी

राजा भोज के दरबार में माधजी पंडित विद्वान तथा व्याख्याता थे । एक दिन उनका जाहिर व्याख्यान बाजार में हो रहा था । वहां पूरी जनता एकत्रित थी । राजा भोज भी अपने सभासदों सहित वहां विराजमान थे । पंडित जी गा गा कर बहुत जोर से यह पद ललकार रहे थे :—

फूल तो गुलाब का, और फूल काय का ।
दूध तो गाय का, और दूध काय का ।।
बल तो भाई का, और बल काय का ।
ज्योत तो तारों की, और ज्योत काय की ।।

सब श्रोता मुग्ध थे । एक गडरिया भी अपनी भेड़ों को लेकर उस मार्ग से निकल रहा था । उसकी एक भेड़ जरा लंगड़ी थी अतः धीरे २ चल रही थी वह पीछे रह गई थी उसकी प्रतीक्षा में वह भी खड़ा था जब कि ऊपर वाला पद माघजी सभा को सुना रहे थे। कुछ देर में वह भेड़ आ पहुंची वह गडरिया कुछ जोर से बोला ।

"चाल मोरो टूंटी चारों बातां झूंठी"

राजा का ध्यान उधर ही था उसनेसुन लिया और सिपाही से उस गडरिए को पास बुलाया और पूछा,

"तू ने क्या कहा कि चारों बातें झूंठो"?

वह बोला हजूर मैं तो गवार जगली ठहरा, पढाई लिखाई मे मैं क्या समझू पर ये बातें है तो झूठी। फिर वह जोर से गाने लगा—

फूल तो कपास का, और फूल काय का,
दूध तो माय का, और दूध काय का।
बल तो भुजा का, और बल काय का,
ज्योत तो नैनो की, और ज्योत काय की ॥

हजूर गुलाब का फूल तो सूखा कि निकम्मा हुवा उससे लाभ क्या,कपास के फूल से तो तन ढकता है। गाय का दूध तो बच्चे को कुछ बड़े होने पर चाहिए पर जन्मते ही मा का दूध न हो तो बच्चा जिए कैसे? भाइयो के पास रहते हो तथा आपस मे प्रेम रहे तब तक तो भाइयो का बल काम का है पर पहला बल तो खुद की बाह का हो तभी काम चल सकता है। आखो से दीखता हो तब तारो की या चाद सूरज की ज्योत काम की है अन्धे के लिए वह क्या काम की। पडितजी ने आसन से उठकर उसे गले लगाया राजा ने उसे इनाम दिया और उसकी बुद्धि की प्रशसा की। वह अपनी भेडो को हाकता हुवा चला गया।

ऊंट वैद्य

एक वैद्यजी गांवों में इलाज करते थे चतुर ज्यादा थे दवा का अनुभव कम होते हुए भी उनकी बुद्धि तेज थी। उनके पास एक लड़का काम सीखने के लिए रहा। जहां भी वैद्यजी जाते थे वह साथ जाता था।

एक दिन वैद्यजी बीमार देखने एक किसान के घर गए। नाड़ी देखी और कहा खरबूजे आम केला आदि भारी चीज बीमार को खिलाई गई है सो पेट में सूजन हो गई है खैर अच्छा हो जाएगा। यों कह जुलाब दिया, वह अच्छा होगया। घर आने पर उस लड़के ने पूछा, "आपको कैसे पता लगा कि बीमार ने अमुक खाया है"। वैद्यजी ने समझाया, "उन फलों के छिलके उसकी खाट के नीचे व आस पास पड़े थे सो मैने कह दिया"।

दूसरे दिन एक आदमी आया वैद्यजी गांव गए थे इस लिए कंपाऊंडर साहब (वह लड़का) ही उसके घर गए। बीमार खाट पर लेटा था उसे बुखार था वह खाट के नीचे झांके इधर उधर देखा खाट के नीचे घोड़े की जीण पड़ी थी, नाड़ी हाथ में ली और बोले, "इसने घोड़ा खा लिया है सो बुखार आ गया है"। लोगों ने धक्का देकर उसे घरबाहर निकाला।

कुछ दिनो के वाद एक रेवारी अपने ऊट के साथ वैद्यजी के पास आया और वोला यह खाता पीता कुछ नही है गला फूल गया है, वैद्यजी ने पूछा कव से ? रेवारी वोला खरवूजो के खेत मे चर रहा था न मालूम क्या हो गया। वैद्यजी समझ गए। रेवारी को कुछ दवा लेने के वहाने वाजार भेज दिया ऊट अन्दर चौक मे वैठा था घर के किवाड वैद्यजी ने वद किए और कपाऊडर से वडा सा पत्थर मगाया और उसकी गर्दन पर दे मारा। वात यह थी कि वेलडी के साथ छोटा सा खरवूजा ऊट के गले मे उतर गया था वही गले मे अटका था। पत्थर से खरवूजा फूटा और वह भला चगा हो गया। रु० ५०) फीस के मिले।

८–१० दिन वाद एक किसान वैद्यजी को वुलाने आया वैद्यजी वाहर गाव गए थे अत कपाऊडर साहव वडे ठाठ से वन ठन कर वीमार देखने गए। एक वुढिया के गले मे छाले हो रहे थे। नाडी देखी और आदमी को वाजारदवा लेने भेजा और खुदने किवाड वन्द किए, एक पत्थर लाया और वुढिया की गर्दन पर दे मारा, इतने मे किसान की वहु ने वाहर से किवाड खोले तो कपाऊडर के हाथ मे वडा पत्थर देखा उसने हल्ला गुल्ला किया, कई लोग आ गए। देव योग से वैद्यजी भी उधर से आ निकले सब समझ गए और फौरन मामला सभाल लिया।

बुढ़िया का इलाज किया उसे वचा लिया नहीं तो मामला और ही हो जाता। कंपाऊंडर साहब तो मौका देख कर भागे सो आजतक नजर नहीं आए।

ऐसे ऊंट वैद्यों के लिए कहावत प्रसिद्ध है:—

वैद्यराजः नमस्तुभ्यं यमराज सहोदरः।
यमोस्तु हरते प्राणः त्वं तु प्राण धन द्वेरपि॥

अर्थात्—वैद्य डाक्टर साहब आपको नमस्कार है, आप यमराज के भाई हैं, यम तो प्राण हरते है जब कि आप प्राण और धन दोनों हरते है।

ऐसे वेदिया ढोर या नीम हकीमों से इलाज कराने से जान भी आफत में पड़ जाती है। पूरी जांच कर विश्वास पात्र वैद्य या हकीम से इलाज कराना उत्तम है।

—

ज्ञानांतराय पर–रत्नमंजरी की कथा

त्रिविध अशातना (ज्ञाननी) जे करे रे, भणता करे अन्तराय।
अन्धा बेहरा बोबडा रे, गूंगा पागुला थाय ॥

खूब तलाश की, सब जागीरदारो की हवेलियो की धूल छानी, बडे २ नामधारी ठाकुरो के तलुए सहलाए, सोलह बत्तीसो मे भी गया परन्तु मेरी बेटी रत्नमजरी का कही भी ठिकाना नही पडा। ओहो कभी हमारे घर की वह इज्जत थी कि हमारी कन्याओ के लिए बीसो जगह से मगणी आती थी, हमारे कुवरो के लिए कितने ही बेटी वाले मुजरा करने बाहर दरीखाने मे हुक्के गुडगुडाते रहते थे। आज जमाना बदल गया, सब जगह रुपसिह जी का साम्राज्य है।

रूपा थारी रात जण्यो मांय एकलो भडवीरो रे।
सब नर ऊभा कर जोड थारे घर पाणी भरे ॥

सुना है इस गाव मे भी ठाकुर निरभैसिह जी अपने तीन भाइयो के साथ रहते है शायद कुछ ठिकाना पड जाय।

यो मन मे सोचते विचारते एक अधेड उम्र के राजपूत एक पुरानी हवेली के पास आते हैं। हवेली आज जीर्ण शीर्ण है तो भी उसका रौब और मान मरतबा किसी भी हालत मे कम नही है वह राजपूत राजगढो के समीप आते है। एक द्वारपाल

बैठा है। ठाकुर को आते देखते ही खड़ा हो जाता है नीचे झुक कर मुजरा करता है और सन्मान के साथ चौपाल में बैठाता है।

ठाकुर निरभैसिह जी के एक कुंवर साहव हैं जो २५ के लगभग पहुंच गए हैं न मालूम अभी तक वे कुंवारे क्यों है लोगों का ख्याल है कि कुंवर पढ़े लिखे तो नहीं सो नहीं परन्तु उनकी जीभ भी अटकती है और मृगी भी आती है। ठाकुर साहव ने उन्हें वचपन में ही ननिहाल भेज दिया था और शोहरत कर रखी है कि वे फौज में भरती है छुट्टी नहीं मिलती है। बात तो सच्ची थी। वह फौज चाहे भैंसों की ही हो उन्हें चराना भी कोई मामूली काम नहीं है। दूर देशान्तर के ननिहाल के इस गांव से लोगों का संपर्क न था इसलिए ठाकुर की सब बातें सच्ची थी।

परदेशी ठाकुरसाहव के पधारने की इत्तल्ला पाते ही ठाकुर निरभैसिंहजी बड़े ठाट से मिलने पधारे। अरस परस मिले। पूर्व पुरखाओं की शूरवीरता का प्रसंग चला किसी ने हाथ से नौ हथा शेर मारा था तो किसी ने अकेले ही तलवार से फौजकी टक्कर ली थी यों एक आधा घन्टा कब वीत गया कुछभी पता न चला इतने में से हवेली में से छोटे कुंवर साहब पधारे और वोले:—

कुवर—"दादाजी दादाजी साभरका ठाकर रिसाय गया है"।

ठाकुर—"घासीगजी ने कीजो के मनाय लावे"।

वात यह थी कि ठाकुर का नाम मोटा, दर्शन खोटा, घर मे आटे का भी टोटा था। आज आटा नही है इसलिए ठकुरानी ने मक्की की घाट वनाई है छास नही है, पानी मे सिजो रही है याद आया कि नमक भी नहीं है इसलिए नमक लाने को ठाकर को कहलाया है। वोली की चतुराई और वाहर के आडवर ने इसघर की लाज आज भीरखी हुई है ढक परदा रख वाजी का खेल यहा हो रहा है। वडो का कहना है घरकी इज्जत मत जाने दो अन्दर की पोल मत खोलो, खोखला ढोल वजते रहने दो कुदरत की कृपा से कभी न कभी तो वह पोल भर जाएगी, दिन फिरेंगे और सुख आने पर सव ठीक हो जाएगा परन्तु आप के घर की इज्जत एक वार गई सो फिर नही आएगी। आप लूखी मक्की की रोटी खाओ, पर महमानो को चुपडी गेहू की रोटी ऊपर से तर्रमत्तर्रा घी, सीरा, लापसी खिलाओ, चाहे करजदार वनो पर मौसर जरूर करो। व्याह मे भात का जीमण पाच पकवान से दो चाहे घर खेत गिरवी रखो पर इज्जत न जाने दो। अरे इस इज्जत ने तो पिछली पाच पीढी से कमर तोड रखी है, जो कमाते हैं सव साहूकार की तिजोरी मे जाता है, न होली आनन्द से निकलती है न दीवाली को मिठाई मिलती है वस एक ही ध्यान कव करज उतरे। वाह री घर की इज्जत तुझे लाख लाख सलाम। सादा रहना, सीधी वात करना, घर देखकर चलना और सतान को योग्य वनाना यह ज्यादा अच्छा है उस ढोग और ढकोसले से जो खून चूसता है। सादगी के पास वडे २

घर वाले रईस और धन्नाशाह नहीं आवेंगे तो उनकी बला से। आफत टली। उनके लायक खाने में दारू की बोतलें जंजीरे और क्या क्या आफत होती है सो तो न होगी।

हां तो कुंवर ने कहा है घर में नमक (सांभर के ठाकुर) नही है। ठाकुर ने जवाब दिया है घासिगजी से कहो कि मना लावें (अर्थात घास का एक पूला लेजा और नमक ले आ।) इधर बातों के झपाटे उड़ रहे है थोड़ी देर बाद कुंवर फिर आता है:—

कुंवर—"दादाजी दादाजी घोड़ी लगाम नी झेले"।

ठाकुर—"बेटा उल्टी दे दीजो"।

अन्दर का हाल यह है कि घाट बनाने के लिए तांबे पीतल के बर्तन तो कभी के गिरवी रखे जाकर रोटियां खाई हैं घाट बनाने के लिए पुराना मिट्टी का बर्तन जो संकडे मुंह वाला (चुकलिया) है उसमें लकड़ी की कुरछी (चाटु) नही घुसती है, कुरछी चौड़े मुंह वाली है बर्तन सकड़े मुंह वाला है इसलिए लड़का कहता है घोड़ी लगाम नही झेलती है जवाब मिलता है उल्टी दे देना अर्थात डण्डी से हिलाना। इधर आकाश पाताल की बातें हो रही है अब अपने अपने खजानों का वर्णन चल रहा है हीरे जवाहरात की गिनती हो रही है उधर से कुंवर फिर आता है,

कुंवर—"वह तो जावे"

ठाकुर—"कान्या परा करज्यो॥

अर्थात् घाट उफनउफन कर वाहरजाती है। ठाकुर ने कहा कि वर्तन के किनारे तोड देना, मुह चौडा हो जाएगा। परदेशी समझा अन्दर तेजतर्राट घोडी वधी हुई-है जो लगामनही लगाने देती है अत कानो पर से लगाम हटाने का ठाकुर साहव ने आदेश दिया है। वाह क्या ही ऊचा और पुराना खानदान है, इज्जत के सिवाय, साभर के ठाकुर, घासिंगजी आदि राजपून यहा नौकरी मे हैं। सवारी के लिए घोडी भी है। वेटी रतना का भाग जागेगा तो यहा ठिकाना पड जाएगा।

इतने मे कुवर जल्दी २ आता है और कहता है—

कुवर–लपटसिंह जी का झपटसिंह जी कुडल पै डेरा।
दौडनो वे तो दौडो दादाजी घाटचा उतरेगा डेरा॥

ठाकुर निरभैसिंह जी अन्दर जाते है। परदेशी ठाकुर को वही छोडकर, आइए आप भी अन्दर आइए।

अन्दर घाट सीज गई है मिट्टी के कुण्डे मे ठण्डी कर रखी है छोटे और वडे सभी मेवर सवोडे लगा रहे है सडासड सडासड लफट और झपट के साथ घाट मुह मे रखी जा रही है और एक्सप्रेस ट्रेन की तरह वह मुहके छोटे स्टेशन पर न रुकती हुई सीधी अन्दर वढती जा रही है। ठाकुर भी पहुचे और दो हाथ लगा दिए। लडके ने ठीक ही कहा था कि दादाजी जल्दी चलो (कुण्डल) कुण्डे मे रखी हुई घाट पर झपटे लगे रहे है आओ जल्दी आओ

नहीं तो डेरा घाटी उतर जाएगा अर्थात् कुछ भी हाथ न लगेगा।

बाहर वाले ठाकुर ने निश्चय कर लिया है कि अपनी बेटी इस घर में दे देनी है।

अन्दर से ठाकुर साहब मूंछों पर ताव देते हुए, गूंदे के पत्ते पर कथ्था लगे पान चबाते हुए बाहर आते हैं। बैठतेही परदेशी ठाकुर कहते हैं आपकी मूछों पर जमा हुवा घी जम गया है। बात यह थी कि एक कुलड़े में थोड़ा सा घी रखा रहता था। जीमने के बाद ठाकुर एक रत्ती घी मूंछ पर रखकर चौपाल में आते थे वह भी महमान आते तब, हमेशा नहीं।

महमानने सगाईकी बात रखी। ठाकुर निरभैसिहने मुशकिल से इस तरह स्वीकार की जैसे परदेशी पर अहसान करते हों। बातचीत पक्की हुई। महमानने रुपया श्रीफल सामने धरा ठाकुर ने सिर चढ़ाया। महमान से ठाकुर बोले आप स्नान संध्या कीजिए अन्दर जीमण की तैयारी हो रही है कुछ और भी भाईबेटों को निमंत्रण देना है सो आप निपटने की कृपा करें। महमान बोले कि अब तो आपके यहां का अन्न, जल मुझे नहीं लेना है, बेटी का घर हो गया इसलिए मुझे सीख फरमावें।

शादी की बात निकलने पर यह नक्की हुवा कि कुंवर साहब को मिलटरी से छुट्टी कम मिलती है फिर भी कोशिश की जाएगी। आप निश्चिंत रहें। लग्नों के ५ दिन पहले बड़े कुंवर सा नानेरे से पधार गए हैं, राखी बंध गई है।

वडे ठाट व आडम्वर से वरात चढी है। सव प्रवन्ध कु वर सा के ,मामा जी ने किया है। कु वर निर्भयसिह जी के पेट मे दर्द है इसलिए वे वरात मे नही गए हे। वरात का सुन्दर स्वागत हुवा है महमाननवाजी पूरी तरह की गई है। ठीक समय पर भवरे पडे है,गोरजी ने वर कन्या सावधान की टहल पुकारी है ३ ऊधे और ४ सीधे कुल सात फेरे फिरा दिए गए है। जोडी तो वरावर मिली हे। फेरे की रात ही सव दस्तूर अदा कर दिए गए हें। वेटी की विदाई भी उसीरात कर दी गई है जो भी कुछ कन्यादान मे देना था दे दिया गया है, जमाई जी को नौकरी पर जाना है, छुट्टी नही है सो १ दिन भी वरात नही ठहर पाएगी।

वाजते गाजते दुल्हादुल्हन का नगर प्रवेश किया गया है। हवेली के मुख्य २ खडो मे पुताई रगाई ठाकुराइन के हाथो से वनी जितनी चुपके २ हो पाई है। घर के वच्चो के पहली वार ही ये दो तीन दिन आनद व आमोद-प्रमोद मे वीते है, खाने मे कुछ नवीनता रही है।

रत्नमजरी तो रत्नो की खान थी। उसने सोचा था इतनी दूर और देर से सुसराल मिला है सव अच्छा होगा पर

"फूटे करम फकीर के भरी चिलम ढुल जाय"।

कु वर साहव की तुतलाती जीभ और उसमे से यदाकदा वचन मोती खिरते देखकर रतनमजरी ने करम ठोक लिया। नाम मोटा दर्शन खोटा। सव पोल खुल गई। नौकरी की वात

पूछो तो कुंवर अवाक बोले, "भैंसों के रंग और जात पूछो तो बता दूं बाकी मिलटरी फिलटरी मैं क्या जानू ।"

"हाय दई कैसी भई बिन चाहत को संग" ।

घर की हालत देखी तो रतनमंजरी दंग रह गई। जो बर्तन बासन यहां आए थे वह सब मांगे हुए थे। खाना पकाने और खाने को एक भी पीतल का बर्तन नहीं था। कोठार में गई तो चूहे दौड़ लगा रहे है। भूख के मारे वे चक्की चाट रहे हैं ।

आज चौथा दिन है घर में कुछभी खाने को नहीं हैं। अचानक एक भील बाड़े में जाता है और बेर के वृक्ष को बांस से झटकता है, कच्चे पक्के बेर एक टोकरी में भरकर वह ले जाता है आधे घंटे बाद आधी टोकरी मक्की लेकर आता है जिसे ठाकुराइन पीसकर घाट बनाती है। रतनमंजरी ने देख लिया कि इस घर की दुश्मन यह (बोरड़ी) बेर का वृक्ष है। वह दिन तो ज्यों त्यों बीता। पिछली रात को रतनमंजरी ने एक करोती से उस बेर वृक्ष को काट दिया, वृक्ष एकांत में होने से किसी को कुछ पता भी न चला और वह चुपचाप आकर सो गई।

सुबह भील बेर झाड़ने को आता है और बोरडी को कटा पाता है जिसकी सूचना ठाकुर को देता है। ठाकुर तो यह देखकर पंख कटे वृक्ष की भांति छटपटाने लग जाते हैं। हाय अब गुजारा कैसे होगा ? यह बोरडी ही आज तक पेट भरती आई है अब क्या होगा ?

आज सब के इग्यारस है। बाजार से पावआटा भी उन्हे उधार नही मिल सकता था। घर मे कुछ था नही कि बेच कर आज बच्चो का पेट भरा जाता। घर के सब सदस्य एक जगह उदास बैठे रहे। ठाकुर के तीनो भाई भी आ गए।

रतनमजरी भी वहा पहुँची। उसने छोटे कुवर साहब के द्वारा कहलाया, "आप लोग जवान होते हुए तथा हाथ पैर मौजूद होते हुए भी इतने उदास क्यो होते हे ? परदेश जाकर मेहनत मजदूरी कर कमा खावे। इस बोरडी ने आपको बर्बाद किया हे, इस तुच्छ सहारे से, आप आलसी बन गए हैं और सबने मेहनत करना छोड रखा है। जब तक शरीर मे हिम्मत और ताकत है काम कीजिए। यहा खेत कुऐ गिरवी रखे हैं तो किसी बडे शहर मे मजदूरी करे। लीजिए, ये मेरे मायके के जेवर, इन्हे बेचकर रेल भाडा और घर खर्च का जितना भी बन सके प्रबन्ध कर ले बाद मे मैं गृहस्थी सभाल लूगी। आप प्रभु का नाम लेकर परदेश सिधावे।"

सब अवाक्। अन्त मे बहू की बात मान्य रही और कुछ उपाय ही नही था। रतनमजरी ने गहनो के लोभ को तिलाँजलि दी। आई हुई आपत्ति मे से मार्ग निकाला। चारो भाई ठीक दिन देखकर चल दिये।

इधर रतनमजरी ने चारो सासुओ को सीना, पिरोना, भरत गूथण का काम सिखाया। सेंव पापड बडी करना आदि घर का काम वह अच्छी तरह जानती थी। अपने मायके मे दो अच्छी भैंसें मगाली। यो सीवन, गूथन व पापड बडी आदि

गृह उद्योग से घर खर्च ठीक तरह चल निकला, पड़ौसियों से हेल मेल बढ़ाया, गांव की लड़कियों के लिए हवेली में कन्या शाला चालू करदी, इस तरह हिम्मत से रतनमंजरी घर का भार संभाले हुई थी।

उधर चारों भाई समीप के शहर कलकत्ता पहुंच गए थे। रेल से उतरे और एक जगह बैठकर विचार करते हैं कि कहां जावें और क्या करें। उनके कुछ ही दूर पर ५–७ आदमी बीड़ी पीते बातें कर रहे थे कि आज जापान से जहाज आएगा। उसे खाली कराने और ट्रकों में माल लादने के लिए काफ़ी मजूर चाहिए। हम ५–७ क्या कर सकेंगे कम से कम ४–५ और मिल जांय तो हम ठेका लेलें। ठाकुर लोग सब सुन ही रहे थे। निरभैसिह उनके पास गए और बोले, "भाई कुछ काम हो तो हमें भी बताना" नेकी और पूछ पूछ। चारों को उस टोली ने अपने शामिल कर लिया। गोदी में (जहाज ठहरने की जगह) गए, बात चीत हुई और काम मिल गया। सुबह से दुपहर तक डट कर काम किया, अभी आधा काम बाकी था उस टोली के अगुआने कहा अब नास्ता पाणी करके काम करेंगे। इन्हें भी भरपेट भोजन मिल गया, फिर काम किया और शाम होते २ तो पूरा काम समाप्त। अगुआ होशियार था इन जवानों की फुरती और ताकत से खुश हो गया। रात को उन्हें अपने घर ले गया, पास में की एक कोठरी किराए से दिला दी और आवश्यक सामान भी दिला दिया। यों इनका काम जम गया। इमानदारी और मेहनत

से काम करने के कारण ये एक दिन भी घर पर खाली न बैठते थे। मजूरी हमेश की हमेश मिल जाती थी। ८ दिन मे ही इन्होने ५०) बचा लिए। अब तो काम का शौक लग गया। शहरकी रीतभात भी समझ गए,व्यसन कुछ था नही, चारो प्रेम मे रहते थे। सुबह उठतेही खाना बनाया खा-पी कर दुपहरी का नास्ता सग मे ले निकल पडते घर से, अब काम इन्होने स्वतत्र लेना शुरू कर दिया था इसमे लाभ भी अधिक होता था। १ महिने मे इन्होने २००) की बचत की और घर पर मनिआर्डर करवा दिया। रात को कुछ कथा कहानी करते कभी २ सतसगत मे जाते। किसी से लडते झगडते नही थे। मकान कुछ छोटा और गदी वस्ती मे था सो मौका देखकर बदल लिया यो इनकी गाडी चल निकली।

उधर रतनमजरी ने भी घर गृहस्थी अच्छी जमा ली थी, अब खाने पहनने की चिंता न थी, यदि दर्द था तो अपने पति की स्थिति का था। एक दिन वह झरोखेसे बाहर देख रही थी इनकी नजर एक साधु महाराज पर पडी। एक लडकी को भेज कर महाराज को बुलाया नमस्कार किया और भोजन के लिए प्रार्थना की।

साधु महाराज ज्ञानी थे, उन्होने उस नारी मे अनेक गुण देखे, उसका पिछला भव भी देखा और प्रसन्न मुद्रा मे कहा "तुम निश्चित रहो, धर्म करो सब अच्छा होगा"। रतनमजरी ने अपने पति के बारे मे पूछा कि, "गुरुदेव क्या मुझे पति सुख ऐसा ही रहेगा, कुछ उपाय हो तो बताने की कृपा

करें"। महाराज श्री ने फरमाया, "तुम्हारे पति ने पिछले भव में जैन धर्म की निंदा की थी और तुमने ज्ञान की आशातना की थी इसलिए यह योग मिला है पर डरो नहीं, हर महीने की सुद पांचम को व्रत रखो, "ॐ नमो नाणस्य" की माला फेरो, वने जितना सुपात्र दान दो धर्म के प्रभाव से सब अच्छा होगा ? रत्नमंजरी ने अपने पति को भी वहां बुलाया और उससे गुरू महाराज के चरणों में नमस्कार करवाया। गुरू महाराज, "धर्मलाभ" का आशीर्वाद देकर योग्य भिक्षा ग्रहण कर वहाँ से चले गए।

रत्नमंजरी में नवीन उत्साह जागा, अब वह नित्यस्नान कर शुद्ध कपड़े पहन कर पति को साथ लेकर उत्तम आसन पर बैठ कर "ॐ नमो नाणस्स" का जाप करती है, पति को भी सुनाती है यों छः माह हो जाते है और एक दिन फिर वहीं गुरू महाराज वहां पधार कर "धर्मलाभ" की पुकार करते है। दोनों पति पत्नि उनको वंदना करते हैं। गुरू महाराज को भक्तिपूर्वक दान देते है गुरू महाराज ने ज्ञान से देख लिया कि अब तो इनके कुकर्मों का क्षय समीप है फरमाया, "तुम दोनों नजदीक के तीर्थ समेत शिखरजी की यात्रा कर आओ सब अच्छा होगा"। गुरू महाराज के उपदेश से वे लोग कलकत्ता जाते है वहां पूजा भक्ति करते हैं। भाव भक्ति से स्तुति करने की इच्छा कुंवर की होती है और अचानक उसकी जीभ से सुंदर स्तुति निकलती है, जीभ का रोग नष्ट हो जाता है। वे दोनों

अनन्य भाव से प्रभु को नमस्कार करते है और घर वापस लौटते हैं, रास्ते मे जितने भी गुरु महाराज मिलते है बडी भक्ति से उन्हे वदन करते हैं, वे समझ रहे है कि ऐसे ही कपडे वाले किन्ही गुरू महाराज ने हमे सच्चा मार्ग बताया है और हमारा जीवन सफल किया है। कुछ धर्म की पुस्तके भी उन्हे वहा भेंट मिलती है। लौटते हुए वे कलकत्ता आते है, २ दिन वहा ठहर कर कलकत्ता देखने की इच्छा है पर ठहरें कहा पर सुयोग से पूजा करते वक्त एक सद् गृहस्थ से इनका साथ हो गया था और वह साथ अब भी नही छूटा था। स्टेशन पर उतरने मे १ घटा पहले ही कलकत्ता के बाबू बद्रीदास के मन्दिर की बात वह कर रहे थे कि वह दर्शनीय है। इस जोडे से उन्होने पूछा क्या आप लोग भी दर्शन करना चाहते हैं? रत्नमजरी ने कहा कि हम तो अवश्य उस मदिर मे जाना चाहते हैं पर ठहरें कहा? सेठ ने धर्मशाला का पता और एक चिट्ठी देदी। निदान धर्मशाला मे जा ठहरे और देव दर्शन किए और भी दर्शनीय स्थान देखे और चलने की तैयारी करने लगे। रत्नमजरी की खुशी का पार नही था उसे सच्चे धर्म और धणी (पति) की प्राप्ति हुई है सच्चे गुरू का आशीर्वाद फला है इतने मे क्या देखती है कि चार आदमी बातें करते करते आ रहे है बातो मे उसका भी नाम लिया है, वे सामने से आ रहे थे वह खिडकी पर खडी थी, उसने अपने पति को इधर देखने को कहा, पति ने अपने पिता और मामा को पहचान लिया, झट से वह नीचे उतरा और उनके पैरों मे जा पडा और धर्मशाला मे आने की विनति की।

चारों को आश्चर्य हुवा कि यह धर्मसिंह तो बिलकुल बोलता ही नहीं था आज सपाटे से बात कर रहा है इसके शरीर में भी परिवर्तन है, उन्होंने पूछा तू यहां कहां से आया ? उसने कहा ऊपर चलें वहीं सब बात करेंगे।

सब ऊपर आए। रत्नमंजरी ने चारों सुसरों को प्रणाम किया, सब वृतांत धर्मसिंह ने कहा कि किस तरह रत्नमंजरी ने घर की हालत बदल दी है, किस तरह गुरू कृपा से उसका रोग दूर हुवा है और अपनी यात्रा का सब हाल भी बताया। चारों की खुशी का पार नहीं रहा। वे इन दोनों को अपनी कोठरी में ले गए दो दिन आनंद से रहे, इन दिनों में रत्नमंजरी सब को जिनालयों में ले गई सद् गुरूजी का उपदेश सुनने भी ले गई। गुरू महाराज ने इन भोले जीवों के योग्य धर्म का उपदेश दिया व आचरण भी बताया कि, नित्य जिन मंदिर में दर्शन कर भोजन किया करो, बने जहां तक रात को न खाना, मांस मदिरा तो कभी काम में लेना ही नहीं"। सबने ये व्रत अंगीकार किए इतने में वे सद्गृहस्थ जो रत्नमंजरी के साथ शिखिरजी में थे वहां वंदन करने आए। रत्नमंजरी व उसके पति के साथ अन्य चारों को भी व्रत पच्चखान लेते देखकर उनमें धर्म स्नेह जगा, सबको अपने घर ले गए, विस्तार से परिचय पूछा ! ठाकुर निर्भयसिंह ने सब बता दिया। सेठ के यहां बहुत बड़ा व्यापार था इमानदार और विश्वासी आदमियों की जरूरत थी पांचों आदमियों को अपने

कारखाने मे काम पर रख लिया। उन्होने ८ दिन घर जाकर अपना सामान लाने की मोहलत मागी। यो छओ जणे घर आते हैं। कलकत्ते मे रहते एक साल बीत गया था। चारो ने ५०००) की बचत की थी। घर आकर खेत कुए छुडवाए घर की आवश्यक मरम्मत कराई और घर की भलामण रत्न-मजरी को देकर और घरवालो को सबको सदा जिनालय मे दर्शन करनेजाने की सलाह देकर पाचो आदमी वापस कलकत्ता पहुच जाते हे और सेठजी के यहाँ काम मे धधे मे जुड जाते है।

इधर रत्नमजरी ने अपने छोटे देवरो को पढने मे लगाया है, घर की पूरी व्यवस्था की। समय पर बारिश होने पर खेतो की बुआई करवाई। गाय भैस बैल आदि पशुओ की पूरी सभाल वह करती हे। अपने नियम मे पक्की है दिन प्रतिदिन जैन धर्म पर उसकी श्रद्धा बढती जाती हे।

माई जणे तो धरमो जन का दाता का शूर।
नहीं तो रहजे बाझणी मत गमावे नूर॥

हर दीपमालिका को वे पाचो आदमी घरपर आते हे और ज्ञान पाचम (काती सुद पाचम सोभाग्य पाचम) को मदिर जी मे ठाठ से पूजा पढाते हे। गुरू महाराज को विनति कर के लाते है और धर्म की वृद्धि करते हैं। अब गृह देरासर भी बनवा लिया हे। कलकत्ते मे१५ वर्ष रहकर अब उन्होने अपने गाव मे ही निजि व्यवसाय कर लिया हे, रत्नमजरी का धर्म सब को सुखदायी हुवा है उसके ३ पुत्र व २ पुत्रिया हुई हे। सब सुखी है। धर्म का प्रत्यक्ष फल सब भोग रहे हैं।

—

लेना-पावना, चार ठाकुरों की कथा

किसी गांव में चार ठाकुर रहते थे। मजे में खाते पीते और जीवन निर्वाह चलाते थे। देवयोग से चारों के एक एक कन्या के सिवाय और संतान नही हुई। इधर ऊपरा ऊपरी दुष्कालों ने उनकी हालत खराब करदी। धरती पर कहीं भी हरियाली नजर नहीं आती थी। वृक्ष भी क्रोधी पुरुष के परिवार की तरह अकेले खड़े थे। खेत मुनसान थे, कड़ाके की धूप पड़ती थी, तालाबों व कूओं का पानी आस्मान पर चढ़ गया था न मालूम वह नीचे उतरता ही न था। इस तरह जो कुछ घर में था सब खतम करके भी अपना और अपने बाल बच्चों का पेट भरना भी दुश्वार हो गया था इधर कन्याएं बड़ी होती जाती थीं।

अष्ट वर्षा भवेत् गौरी, नव वर्षा च रोहिणी।
दश वर्षा भवेत कन्या अथ उर्ध्व रजस्वला॥

उस जमाने में कन्या का चौके बाहर हो जाने से पहले पहले विवाह करना धर्म संगत समझा जाता था नहीं तो पाप माना जाता था। इसीलिए बाल विवाह की पद्धति थी पर आज की तरह २२-२४ साल की कन्याएं कहीं भी सुनी नहीं जाती थी। खैर जमाने ज़माने की खूबी है। अब तो कन्याएं भी पुरुषों की तरह चुस्त पजामे व पेंट पहनती

है नवीनतम वेश भूषा के द्वारा पाश्चात्य ढग से रहने मे गौरव मानती हैं, अगो का प्रदर्शन करना फैशन है, अविवाहित होते हुए भी किसी पुरुष के साथ सैर सपाटे करना सिनेमा देखना सभ्यता मे शरीक है। जैसी शिक्षा वैसा असर मा बाप ही क्या करें जमाना ही ऐसा है। बिचारी कुती ने कुवारे पने मे कर्ण को जन्म दिया उसमे सूर्य का अपराध था जो क्षम्य गिना जाता है पर अब तो वैसी घटनाओ का मानव समाज मे विशेष महत्व नहीं है।

चारो ठाकुर लाचार, पर करें क्या विवाह तो कन्याओ का करना ही पडेगा, पकाया हुवा धान कब तक घर मे रखा जा सकता है। एक परदेशी पाहुना आया और उसने कहा कि यहा से २५ योजन दूर पर एक सेठ रहते है वह हरेक को रुपया उधार देते हैं किसी की रोक टोक नही है जिसे चाहिए और जितना चाहिए वह देते हैं। अधो को दो आखे मिली। चारो चल पडे उस सेठ के गाव। चलते चलते चार दिन बीत गए। चौथी रात को उन्होने किसी गाव मे एक तैली के बाडे के पास विश्राम किया। गाव के बाहर कुआ था, वही तेली ने एक छोटी सी धर्मशाला बना रखी थी। आने जाने वाले परदेशी वही टिकते थे। चारो राजपूत वही रात रहे। बडा भाई नेम धरम वाला था। भगवान मे आस्ता रखता था कभी झूठ नही बोलता था इसलिए कुदरती करमात से वह पशुओ की बोली समझता था। उस रात को तेली के दोनो बैल बातें कर रहे थे।

पहला—अपने राम तो कल सुवह दिन उगने पर चल धरेंगे, इस तेली के यहां उमर भर करज उतारने को घाणी चलाई अब चार आने और देने हैं सो आधी घाणी करके मैं पूरा कर्ज चुका कर चल दूंगा।

दूसरा—यार मेरे में तो तेली अभी ५००) मांगता है पर मैं भी तीन दिन बाद तेरे पास आ जाऊंगा। बात यह है कि राजा के हाथी में मैं ५००) मांगता हूं वह तेली को दिला दूंगा। मेरी व राजा के हाथी की लड़ाई होगी मैं जीत जाऊंगा शरत के अनुसार ५००) राजा तेली को दे देगा और मेरा करज उतर जाएगा तब मैं भी फारिग हो जाऊंगा

बड़े ठाकुर को आश्चर्य हुवा देखो जिसका पिछले भव में करज लेकर चुकाया नहीं जाता है उसका इस तरह से भी चुकारा (लेना पावना) करना पड़ता है।

सब सुबह उठे, शौच से निवृत हुए, पास में तेली घाणी चला रहा था, आधी घाणी करके बैलों को छोड़ा तो काला बैल घास में मुंह भी नही डालता है वहीं बैठ गया है। थोड़ी देर बाद तेली भी घाणी जोतने आता है तो काला बैल उठता ही नहीं। वह उठे कहां से ? जिंदा हो तो उठे न ! उसका करज चुक गया था अतः वह अपनी लीला समाप्त कर चल बसा। तेली ने माथा ठोका। हाय ५००) का बैल मरा।

उधर चारों ठाकुर भी अपनी राह चले। तीनों भाइयों ने बैल के मरने पर अफसोस जाहिर किया बड़ा चुपचाप चलता

रहा। दुपहर होते होते सेठ के गाव मे जापहुचे। दानवीर सेठ का पता पूछा। गाव के सब लोग उसको जानते थे। सेठ ने चारो का स्वागत किया। एक अच्छे कमरे मे उन्हे ठहराया। भोजन के लिए बुलाया। तीन भाइयो ने भोजन किया, बडे ठाकुर ने कहा मुझे भूख नही है। उन्होने सेठ के घर पानी भी नही पिया, डोर लोटा साथ था गाव के कुए पर जाकर वह पानी पी आए, दो पैसे के चने चबा लिये।

दुपहर बाद सेठ ने चारो को पास बुलाया। उन्होने कहा कि हमारे कन्याए बडी हो रही हैं शादी के लिए दो दो हजार रुपया चाहिए। सेठ ने कहा, "आपको चाहिए उतना रुपया लीजिए पर एक शर्त है कि मैं रुपया देता ही हू पर वापस नही लेता हू आप देंगे तो भी मैं न लूगा। तीन भाइयो ने रुपए दो दो हजार ले लिए। बडे ने नही लिए।

वापस उसी रास्ते लौटते २ उसी तेली वाली धर्मशाला मे आकर वे टिके। रात को ढोल के नगारे से गाव मे एलान हो रहाथा, "कल सुबह राजमहल के चौक मे राजा के हाथी और रामा तेली के बैल की कुश्ती होगी सब देखने आवे"।

सुबह राजमहल के दालान मे खलक मलक इकट्ठी हो गई थी। देखते ही देखते राजा का बलवान हाथी सूड उठाये चला आ रहा था इधर से रामा तेली का बैल पूछ उठाये सरपट हाथी की तरफ दौड रहा था। दोनो का मिलाप हुवा। दो क्षण दोनो पास खडे रहे, आश्चर्य कि हाथी ने सूड नीचे की और पिछने पैरो सरकना शुरू किया। जाते २ वह अपने खूटे

तक पहुंच गया। महावत ने बहुत ललकारा पर कुछ भी असर नहीं हुवा। निदान शर्त के अनुसार ५००) राजा के खजाने से तेली को मिले। तेली रुपयों की थैली लेकर घर पहुंचा बैल बाहर ही खड़ा रहा अन्दर भी नही गया। तेली बैल की पूजा के लिए थाली में कंकु लच्छा और लाल कपड़ा और नारियल लाया पर बैल तो १। बेंत की जीभ बाहर निकाले लेट गया था। सब लोग जमा हो गए। हाय अभी का अभी इसे क्या हो गया। गाववाले विचारे हमदर्दी कर रहे थे कि एक बैल तो परसू मरा, एक आज मर गया विचारे का घर बर्बाद हो गया।

चारों ठाकुर भी राजमहल से ही तेली के घर तक सब के साथ में थे। बड़े ठाकुर विचार में पड़े थे तीनों ने दुःख प्रकट किया और चारों ने घर की राह ली। रास्ते में तीनों भाइयों ने बड़े भाई से पूछा कि आप शादी कैसे करेंगे रुपये मुफ्त मिल रहे थे वापस देने भी न पड़ेंगे अपना काम निकाल कर जो कुछ रुपए बचेंगे उससे खेती में मदद मिलेगी। बड़ा भाई चुप। समय पर चारों कन्याओं के लगन हुए। तीनों ने ठाट से शादी की। बड़े की चारों तरफ निन्दा हुई, उसके यहां न बाजे बाजे न मीठाभोजन बना न दहेज दिया और तो ठीक घर वालों को भी मीठा मुह नहीं कराया गया सिर्फ बरातियों को एक टाइम सादा खाना देकर बिचारी कुंवरी को बिदा कर दी गई।

शादी निपटने पर चारों भाई एक दिन निराँतसे बैठे थे, तीनों बड़े भाई का खूब आदर करते थे। कारण कि वह थोड़ा

वोलने वाले सत्यवादी और परिश्रमी थे। तीनो ने पूछा, "दादा वात क्या हे, आप उस तेली की धर्मशाला मे टिकने के वाद से आज तक उदास हे न हसकर वोलते है न खुलकर वात करते हे। न आपने रुपया उधार लिया न वहा जल तक पिया ?" वडे ठाकुर ने कहा, "वेटो कर्म गति विचित्र है जो जिससे कुछ लेता है उसे वापस देना पडता है, कोई वैल वनकर देता है, कोई हाथी वनकर देता है कोई पानी भरकर चुकाता है देना जरूर पडेगा, आज यहा मत दो, आते भव मे छूटेगा नही। वाप वनकर, वेटा वनकर, भाई वन कर स्त्री वनकर मित्र वनकर हर हालत मे लेना पावना करना पडेगा, छूट नही सकेगा।" यो कहकर उन दोनो वैलो की वातचीत व परिणाम कह सुनाया। तीनो भाइयो को आश्चर्य हुआ कि इसीलिए दादा साहव ने उस सेठ से रुपया नही लिया। वडे ठाकुर वोले, "भाइयो वह सेठ रुपया इसी लिए विखेर रहा है-उधार दे रहा है कि इस भव मे तो वह आराम से है ही, आते भव मे भी उसे नौकर चाकर, हाली वालदी, दास दासी अनायास मिलें ताकि तकलीफ न हो। जो लेजाएगा वह राजी होकर खाएगा और आते भव मे वह वह कर, शरीर तोड तोड कर रोते रोते चुकायगा और सेठ को आराम पहुचाएगा"।

तीनो की आखें खुल गई। अव क्या करें। वह सेठ तो रुपया लेगा नही। वडे भाई ने कहा इस वर्ष वारिश अच्छी होगी मेरा शुकन गलत नही है ये सव मोर और पपैये ही

कह रहे है। खूब महनत से खेती करो। समय पर वारिश हुई। पिछले ४—५ वर्षो की कसर निकल गई फसल अच्छी हुई। तीनों भाइयों ने दो दो हजार रुपया बचा लिया। चारों भाई उस सेठ को रुपया देने उसके गांव गए। बहुत हाथा जोड़ी की, मिन्नतें की, पर सेठ ने रुपया वापस नहीं लिया। चारों वापस आए। छः हजार रुपया खर्च कर एक नाले के बांध बनवाया। मजे का तालाब बन गया। आते चौमासे में पूरा भर गया। चारों ठाकुर तालाब के चारों तरफ लट्ठ लेकर खड़े रहते हैं किसी को पानी भरने देना तो दूर रहा किसी पशु पक्षी तक को पानी पीने नहीं देते हैं। तालाव देखकर चरवाहे पशुओं को पानी पीने लाते है पर वे ठाकुर एक बूद भी पानी नही पीने देते। आस पास के गांवों के लोग जमा हुए। ठाकुरों ने कहा, अमुक गांव के अमुक सेठ को यहां लेकर आओ तो हम अपना पहरा हटा लेंगे हम उस सेठ के पहरेदार हैं। लोगों ने पांच आदमी उस सेठ के पास भेजे सेठ आया और कहा कि, "ठाकुरो यह क्या करते हो पशुओं को पानी क्यों नहीं पीने देते हो ? बड़े ठाकुर बोले, "सेठजी यह तलाब उन ६०००) से बना है जो आपसे हम उधार लाए थे आप अंजली भरकर कहदें कि मेरा रुपया मैंने ले लिया और अपना तालाब कबजे करें तो हम पानी पीने देंगे वरना जिएंगे जितने किसी को पानी न पीने देगे"। मजबूर हो सेठ ने हाथ में जल लेकर रुपया पावना किया। सेठ के सामने ही वे चारों ठाकुर घर चले गए। सब के लिए वह तालाब खुल

गया। यो वडे ठाकुर ने अपनी बुद्धि से अपने तीनो भाइयो का आता भव सुधारा, नही तो आते भव मे सेठ को तीन गधे, ऊट बैल तो मुफ्त मे मिलते ही।

कुदरत के घर एक एक पाई व राई रत्ती का लेखा जोखा है जिसका हम प्रत्यक्ष दर्शन कर रहे हैं। कमाता कोई है, न मालूम कही से गोद आकर खाता कोई है। बोता कोई है ले कोई और जाता हे। वनाता कौन है खाने वाला कोई और आन टपकता हे। मकान वना हे किसी के लिए रहनेवाला कोई और ही अचानक आ वसता हे। यह है लेना पावना। यदि कोई किसी का इस भव मे लेना नही देता है तो गाव के लोग कहते है, "राम आगे लेखा हे, इस भौ नही तो आगे भौ देगा।



नीति के वचन

साई इण सरदार मे पास रह्यां पत जाय,
बे इज्जत की चाकरी दीजे आग लगाय;
दीजे आग लगाय कही अपनी नहीं मानें,
है मोटा सिरदार मनख कुं कहा पिछाने।
तजिये वो रुजगार मिले कचन की ढरी,
पेट भरण के काज मान मरजादा ढेरी;
कहे दीन दरवेस पटे पत्थर सो भरिए,
बे इज्जत को काम चतुर नर कबहु न करिए ॥

दया विहीन चंपक सेठ की कथा

पाली नगर में एक सेठ रहता था। वृद्धावस्था में १० वर्षीय एक मात्र पुत्र को छोड़कर वह चल बसा। सेठाणी ने अपने कष्ट के दिन उस बालक के पालन पोषण में बिताए। कुदरत की करनी कि ठीक एक साल बाद वह भी चल बसी। बिचारा चंपक फिर अकेला रह गया। कोई दूर का संवंधी उसके घर का माल असबाब सहित उसे अपने गांव ले गया। उस जमाने में पढ़ाई का इतना महत्व नही था जितना आज है। बस कागज पढ़लो और नावांठावां सीखलो इतना ही कमा खाने के लिए काफी था। उस संबंधी के एक मित्र की वम्वई मे दुकान थी, चंपक को चुस्त चालाक देख कर वह मित्र उसे बम्बई ले गया।

चंपक तो मोहमयी नगरी को देखकर पागल सा हो गया। जिधर देखो उधर बड़ी बड़ी हवेलियां, मोटरे, ट्रामें, बसें। अपने आप में वह खुश था। सुबह उठते ही घर की सफाई चौका बर्तन, कपड़े धोना आदि उसके सुपुर्द हुवा। सेठाणी को आराम मिला, सब कामसे उसे छुट्टी और ऊपर से सगे के लड़के को होशियार करने का अहसान मुफ्त में।

चंपक होशियार था, सब कामों से निपट कर दुपहर को वह दुकान पर जाता, मुनीम जी भले थे, गरीबी की रेवड़ी उन्होंने चख रखी थी वह इस लड़के पर खुश थे वह

उसमे अपना पिछला चित्र देख रहे थे। २० वर्ष पहले वह भी इसी तरह यहा आए थे,

जिसके पैर न फटी बिवाई।
वह क्या जाने पीड पराई॥

यह हरदम उन्हे याद था। चपक को अक्षर ज्ञान था ही। ४-६ महीने मे वह मामूली लिखना पढना सीख गया। यो २० वर्ष का होते होते वह अच्छी तरह से नावा ठावा भी सीख गया। १० वर्ष कहा वीतें पता भी न लगा।

उधर पाली मे उसके रिश्तेदारी मे शादी थी वही सवधी जो उसे वचपन मे अपने घर ले गए थे उन्होने पत्र लिखकर उसे देश मे बुलाया था। उसका घर वार उसके सुपुर्द किया। शादी मे चपक ने वहुत काम किया। सब तरफ उनकी नम्रता व होशियारी की प्रशसा होने लगी। एक आदमी ने अपनी पुत्री का सवध उससे कर दिया और दो माह बाद शादी भी करनी थी। चपक ने ववई सब लिख दिया। वहा से जवाब आया कि शादी करने के वाद आ जाना, कोई खास वात नही है।

अब चपक के भाग्य का उदय हुआ। शादी करके ३ माह और घर पर रहा। पति पत्नि ३ माह तक आनद पूर्वक रहे और चौथे महीने मे चपक बम्बई आ गया। बम्बई वाले सेठ की तबीयत खराब रहती थी इसलिए चपक दुकान के काम मे उन्हे पूरी मदद देता था और उनकी सेवा भी करता था। ४-५ माह मे सेठ को चपक पर पूरा भरोसा आ

गया। उधर मुनीमजी को देश में जाना था अतः सेठ ने चंपक का दुकान में चार आनी भाग डाल दिया और दुकान की सब जुम्मेदारी उसे सौंप दी। चंपक नौकर से मुनीम और मुनीम से भागीदार बना। पाली से पत्र आया कि तुम्हारी पत्नि के पैर भारी है (गर्भ है) देश में आओ। उसने कोई जवाब नहीं दिया। पत्नि अपने माता पिता के पास है अतः वह निश्चित था। २ माह पश्चात फिर पत्र आया कि तुम्हारे पुत्र हुवा है घर आओ। वह काम में ऐसा फंसा कि घर जाना तो दूर कुछ सोचने का भी टाइम उसे न मिलता था। मुनीमजी देश मे गए सो गए, वापस आए ही नहीं। इधर सेठजी की बीमारी बढ़ती जा रही थी। एक दिन सेठजी ने उसे पास बुलाकर प्रेम से कहा, "बैटा मैं तो अब थोड़े दिनों का महमान हूं तुम्हारी काकी तुम्हारे भरोसे है, आज से तुम्हारा भाग आठ आनी हो गया"। अब चंपक गादी तकिए लगाकर बैठता है पूरी होशियारी से पेढी चलाता है, अभिमान का चोर आकर एक कोने में बैठ गया है। 'सेठजी' सेठजी सुन सुन कर वह फूला नही समाता है। बाजार में शाख जम गई। धन भी बढ़ रहा है, धर्म घट रहा है, अभिमान खूब बढ़ रहा है। उधर पाली से समाचार मिले कि लड़का एक साल का हो गया है अब तो घर आओ। लिख दिया एक दो माह बाद आऊंगा। सेठजी चल बसे सेठाणी अपने पियर चली गई। पूरी दुकान का मालिक चंपक। बम्बई में बर्तन चौका करने वाला घाटी आज सेठ बन गया।

उसे अपने भाग्य पर आश्चर्य हो रहा था। एक साल पूरा होते २ उसने एक दुकान और बढा ली। लडका दो साल का हो गया है अत चपक की पत्नि अपने पिता के यहा से अपने घर पाली आ गई थी। रुपए पैसे की कमी नही थी, एक नौकरानी रख ली।

कुदरत की करामात, चपक को बम्बई फली। दो साल बाद एक कारखाना सस्ते मे हाथ लग गया। कमाई का कोई पार नही। लडका ५ वर्ष का हो गया था। वह पाली जाना चाहता था पर काम के मारे एक दिन भी बम्बई छोडना कठिन था। ५ साल बाद दूसरा कारखाना शुरू हुवा। लक्ष्मी की रेलछेल थी। घर पर दो कारे खडी रहती थी चौपाटी पर प्लोट खरीदा, बगला बनने लगा। दो साल इसमे लग गए। लडका १२ साल का हो गया था। पढने जाता था चपक की पत्नि गाव की सेठाणी थी। कागज पत्र बराबर मिलते जाते थे। हर कागज मे जल्दी देश मे आने के समाचार होते थे। हर माह चपक रुपये भेजता रहता था।

यो १३ वर्ष का चपक का पुत्र सपत १७ वर्ष का नजर आता था। जेबो मे दाखे, पिस्ते, बदाम भरे वह स्कूल जाता था। चाहे जिसकी छेटकानी करना किसी को तग कर मजा लूटना, गरीबो का मजाक करना उसे ज्यादा प्रिय था। बस्ता तो पढने जाने की निशानी था बाकी तमाम दिन मटर गस्ती और यार दोस्तो के साथ सैर सपाटे करना उसका धधा था। यही धनवानो की पढाई थी।

होलियों के दिन चल रहे थे। वंदर और ऊपर से भंग पी ली। संपत का नटखट पन शैतानी में वदलता जा रहा था। वैसे ये दिन ही पागलपन के होते हैं ऊपर से धन का नशा और होली की रंग रेली।

एक दिन एक लड़के को गाली दी। सामने वाले ने भी गाली दी। इसने कंकर फैंका उसने जूता उठाया। यों वात वढ़ गई और कुश्तम कुश्ती होने लगी। लोगों की भीड़ जमा हो गई। फुंकारा करते हुए दो सांडों की तरह दोनों लड़ रहे थे। लोगो ने छुड़ाया। दोनों अलग हुए। जाते हुए संपत ने वुरी गाली दी। सामने वाला वोला, 'जा जा रांड के सांड, सतरा वरस का हुवा कभी वाप को भी देखा है ?"

तीर निशाने पर बैठ गया। उसके मर्म को चोट लगी। घर आकर बस्ता पटक कर वह एक तरफ मुंह फुलाए बैठ गया। मां के लिए यह कोई नई वात नहीं थी। रोजाना दो चार लड़ाइयां न लावे तब तक संपत का सूर्य अस्त नहीं होता था। खाने के लिए बुलाने लगी वह नही गया, बहुत समझाया, प्यार किया पर एक से दो नही हुवा और रोने लग गया। संपत की मां हैरान। वह कभी रोता नहीं था। प्यार से गोद में लेकर धीरे २ पूछा। संपत ने कह दिया कि बिना बाप का मुह देखे मैं अब खाना न खाऊ गा। ज्यों त्यों समझा वुझा कर उसे खाना खिलाया और रात को उसके बम्वई जाने की तैयारी की। दो विश्वास पात्र नौकर साथ

दिए खूब नोट दिए। सब प्रवन्ध पूरा किया। सपत बम्बई के लिए रवाना हुवा और सामने से छीक हुई। उधर किसी का ध्यान नही था।

इधर बम्बई मे चपक सेठ का मन उदास हुवा उसने सोचा यहा आए १५ वर्ष पूरे हो गए है। दुकानें कारखाने बगले मोटरें सब घर की हो गई है पर अपना कहने को आज यहा कोई नही अत आज ही फ्रटियर मेल से रवाना होकर देश मे जाऊ और बाल बच्चो को ले आऊ। उसने भी तैयारी की। दो विश्वास पात्र नौकर और एक फैमिली डाक्टर के साथ वह देश को रवाना हुवा।

अहमदावाद मे बहुत जरूरी काम था इसलिए वहा आकर एक धर्मशाला मे चपक सेठ रुका। अहमदावाद देखने की सपत की इच्छा पूरी थी, कुदरत ने दोनो को एक ही धर्मशाला मे पहुचा दिया। शाम का समय था। दोनों सेठो, के नौकर चाकर दौड दौड कर रहे ये दोनो कमरे पास २ थे। चौक मे दोनो जगह रसोई बन रही थी दाल बाटी चूरमा परदेश मे ज्यादा अच्छा लगता हे। यो रात पडते २ सब खाना खा पी कर सिनेमा देखने चले जाते है कोई किसी को पहचानता नही है। धर्मशाला हे, हजारो आते है और जाते हैं। कोन किससे पूछ ताछ करे। फुरसत ही किसको है।

रात को १२ बजे सब लौट आते है। एक बजे के लग-भग सपत के पेट मे दर्द उठता है और वह धीरे धीरे कराहता है। नौकर विचारे पास बैठे है पर इतनी रात मे

क्या उपाय वे कर सकते थे। धीरे २ दर्द बढ़ रहा है और कराहने की आवाज भी जोर पकड़ती है। अब तो संपत हाय हाय कर रहा है पछांटे खा रहा है। उधर पास वाली कोठरी का सेठ चंपक बहुत बड़बड़ाता है कि, "साला कौन रो धोकर चिल्ला रहा है, नींद हराम हो रही है, बम्बई से थका आया हूं जरा चैन भी नहीं लेने देता"। उधर से चीख पुकार व चिल्लाना बढ़ रहा, है इधर "साला मरता हो तो मर जाय इस चीख पुकार से नीद हराम है"। उधर २–३ मिनट बाद चिल्लाना बन्द, कुछ देर तक नौकरों के धीरे २ रोने की आवाज और बस शान्ति, कोई आवाज नहीं। इधर गादी तकिए पर सेठ चंपक खर्राटे खींच रहे है।

सुबह दिन उगने पर धर्मशाला का चौकीदार आया और रात को कौन चिल्ला रहा था पूछा ! नौकरों ने रोते रोते जवाब दिया, "पाली के चंपक सेठ का पुत्र संपत सेठ अपने पिता से मिलने बंबई जा रहा था रात को पेट में दर्द हुवा और यह लाश पड़ी है"। चौकीदार की आंखों में पानी आगया। चंपक सेठ के नौकर भी पाली का नाम सुनकर पास आए, उन नौकरों से इतमिनान से बात करने लगे और जान लिया कि यह तो अपने ही सेठ का बेटा है। दोनों ने चंपक सेठ को जगाया। डरते डरते सब बात कही। चंपक के होश उड़ गए वह लाश के पास आया और बेटे से लिपट गया। बार बार छाती पीटता है और लाश के ऊपर गिरता है नौकर हैरान, डॉक्टर भी पास आ गया था बोला, "सेठजी ने कहा होता तो मैं रात को इसे देख लेता कुछ दवा देता"। चंपक सेठ रो रो

कर कहता है, हाय मुझ निरदय पापी ने अभिमान मे आकर दया की खातिर भी कुछ मदद न की। हाय मेरा वेटा, हाय मेरा सपत ऊपरा ऊपरी पछाटे खाते खाते सेठका हार्ट फैल हो गया। खेल खतम। वाप वेटे मे ५ घन्टे का अन्तर रहा। धर्मशाला से दो अरथी साथ साथ निकली। वाप वेटे जिंदे एक दूसरे के पास नही रहे, श्मशान मे पास पास सुलाए गए।

सपत के भाग्य से सपत्ति आई थी। उसके जाते ही सव चौपट। पाचो नौकरोने असल तर माल रोकड जेवर के पाच वरावर भाग किये। खाली पेटिया विस्तर वर्तन लेकर पाली वाले नौकर पाली आए वम्बई वाले वम्बई गए। पाली के नौकरो ने रो धोकर सव समाचार सेठाणी से कहे। सेठाणी भी पति और पुत्र से मिलने चल धरी।

पछी उड गए पिजरा खाली। चपक सेठ ने लोभ और निर्दयता से न पुत्र का मुह देखा न पत्नि के साथ रहा, न नए वगले मे निवास किया, न सपत्ति को भोग सका। वम्बई की सपत्ति वम्बई मे रह गई उसके कमाने के पापो को लेकर चपक न मालूम कहा पैदा हुवा होगा ज्ञानी जाने।

सव ठाट पडा रह जावेगा जव लाद चलेगा वनजारा
[1]कज्जाक [2]अजल का लूटे है दिन रात वजाकर नक्कारा ॥
जव [3]मुर्ग फिराकर चावुक को यह वैल [4]वदन का हाकेगा।
कोई नाज समेटेगा तेरा कोई गौन [5]सिये और टाकेगा ॥
हो ढेर अकेला जगल मे तु खाक [6]लहद की फाकेगा।
उस जगल मे फिर आह "नजीर" इक तिनका आन न झाकेगा ॥

---

१ डाकू, २ मौत, ३ प्राण पखेरू, ४ शरीर को, ५ थैला, ६ कब्र।

जैन शिक्षा का प्रभाव

एक ज्योतिषी का पुत्र वचपन से ही पढ़ने में जी चुराने के कारण अवारे में गिना जाता था। जहां मिला खा लिया, किसी ने बुलाया तो बात करली बाकी उसका कोई ठौर ठिकाना न था। उसे अपने जीवन की कीमत न थी। परम्परा से ज्योतिप विद्या का उसके घर में प्रचार था। उसके दादाजी व पिताजी प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। पिताजी की मृत्यु के पहले उसका विवाह हो चुका था पर सरस्वती के रुष्ट होने से समस्त शास्त्र उसके शत्रु थे। वंश के नाम और यश के कारण लोग उससे ज्योतिष संबंधी प्रश्नों का उत्तर पूछते पर उससे कुछ बनता नहीं था। उसकी पत्नि एक पंडित की पुत्री थी, कुछ कुछ पढ़ी लिखी थी और बुद्धिमति भी थी। उसने अनुभव किया कि यहां रहने से गुजारा न होगा इसलिए आवश्यक सामान और पोथी पत्रे समेट कर निकट के नगर में वे जा बसे। उस नगरी में उसके पिता के मित्र जैन माहण पंडित रहते थे लड़के ने अपने पोथी पत्रे उन्हें बताये और कहा कि, "मुझे उदर पोषण का कुछ उपाय बताइए। मैंने बचपन यों ही खो दिया है अब क्या करू"। पंडित जी ने कहा कि, "ये शास्त्र अमूल्य है। जैन विद्या तो तरने और तारने वाली है। तुम ध्यान से मेरे पास पढ़ो और कुछ सीखो सदा उवसग्गहरं का

पाठ किया करो।" ६ माह तक प्रयत्न करने पर भी, वह लडका मात्र पचाग देखना, नाम लग्न, मुहूर्त निकालना भी पूरा न सीख पाया फिर भी, अपने आपको पडित मानने लगा और आडम्बर से रहने लग गया। एक दिन पडित जी से रुष्ट होकर वह घर वार समेट कर दूसरे नगर मे जा वसा और वडा पडित वनकर फिरने लगा। यद्यपि पढा लिखा पूरा न था फिर भी जैन पडितजी के दिए थोडे से ज्ञान से व पिताजी के नाम से वह पूजा जाने लगा। वडी नगरी थी किसी को कुछ जवाव देता किसी को कुछ। किसी की बात मिलती थी किसी की नही। पढाई की अपेक्षा उसे अपनी तुरत बुद्धि पर अधिक विश्वास था अत जैसा मौका देखता जवाब दे देता था भाग जोग से और पिछली पुण्याई से उसका काम जमता जाता था और नाम चमकता जाता था। अधो मे काणा राजा। उसका ठाठ भी खूब था —

वडा धोता वडा पोथा पडिता पगडा बडा।।

धीरे धीरे उसका नाम फैलने लगा। वह जो कुछ भी कहता वह सच्चा पडता था। कुदरत उसके साथ थी।

आधो मारे अडगा राम पादरो पाडे ।।

एक दिन राणीजी का हार गुम गया। छोटे मोटे पडितो ने पूछा कोई लाभ नही हुआ। किसी ने इन पडितजी का नाम भी वताया। पडित जी के पास राणी की एक दासी पहुची। हार के वारे मे पूछा। पडित जी उसनी पर गौर,

मेष, वरख करने लगे। मन में मन मे बुड़ बुड़ करते हैं। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या जवाब देवें। दासी की साड़ी में एक (काणा) छेद पड़ा था उसी पर उन की नजर गई और मुंह से बोलते "काणम काणम"। ४—५ मिनट दासी खड़ी रही पंडित जी काणम काणम के सिवा कुछ न कहते थे। दासी चली गई और राणी जी को कहा कि पंडित जी तो सिर्फ यही कहते है काणम काणम। राणी को याद आ गया स्नान घर में एक काणा (छेद) है वहीं हार रखा था और भूल गई थीं। दासी स्नान घर में गई तो हार वहीं मिला। पंडितजी की महिमा बढ़ गई। राजा ने उन्हें सन्मान दिया और भेंट पूजा भी खूब की। अब तो वे राज पंडित माने जाने लगे। धन की वर्षा बरसने लगी। एक दिन राजा के भंडार में चोरी हुई। पंडित जी से शास्त्र पूछा और चोरों का नाम पता पूछा। पंडितजी ने कहा १५ दिन बाद उत्तर दूंगा। घर गए। खूब सोचा विचारा। शास्त्र तो देख सकते ही न थे "अटकल पंचा दो सौ" किया करते थे। घबरा कर वह अपने उन्हीं जैन गुरूजी के पास गया उन्होंने कहा कि १५ दिन में सब पता लग जाएगा तुम चिंता न करो और पार्श्व-नाथ की माला फेरो। राजा ने कहलाया कि १५ दिन में चोरों का पता लगाओ नहीं तो १५वें दिन तुम्हें फांसी दी जाएगी। पंडित की रात को नींद हराम, बिस्तर पर तड़पते थे। उनकी पत्नि भी हैरान, खाना दुश्मन हो गया, नीद गायब हो

गई चिंता के मारे शरीर सूखने लग गया वह पहली रात को चिल्लाने लगे। एका है जी एका है, एका है जी ऐका है अर्थात मौत के १५ दिन बाकी हैं उनमे से एक कम हुवा। उसकी पत्नि बराबर उवसग्गहर की माला फेरती रहती थी।

बात यह थी कि उस गाव के पास जगलो मे १५ डाकुओ का एक अड्डा था, उन्होने ही राज भडार लूटा था। सरदार ने गाँव मे एक चोर को गुप्त रूप से खबर करने भेजा था कि हमारी तलाश मे क्या हो रहा है। वह चोर चतुर था उसने लोगो से पूछा कि उस चोरी की जाच कैसे की जा रही है, लोगो ने कहा कि उन पडितजी के जिम्मे यह काम है। वह उनके घर के पास आकर चुपके चुपके सुनने लगा। पडित जी तो चिल्ला रहे थे एका हे जी एका हे। चोर ने समझा मेरा आना उन्हे मालूम हो गया है मैं अकेला हू इसलिए एका है जी एका है वह कह रहे है। वह चला गया और दूसरी रात को दो चोर आए। पडित चिल्ला रहे थे दूआ है जी दुआ है अर्थात आज दो दिन घट गए यो हर रोज एक एक चोर बढने लगा और वे हर रोज गिनती भी बढाते जाते थे। यो १४ दिन बीतने पर १४ चोर आस पास छुपकर उनकी बात सुनने लगे। वह तो अब जोर जोर से चिल्ला रहे थे चौदह है जी चौदह है। अब चोरो से रहा नही गया उनका सरदार आगे बढा। रात काफी जा चुकी थी। किंवाड खट खटाये पडित जी ने सोचा मरने मे १ दिन बाकी है अब डर किस बात का, किंवाड खोला तो १४ आदमी काली

पोशाकें पहने मुंह पर जाली (नकाव) लगाए हाथ जोड़ कर सामने खड़े हैं। सरदार पंडित जी के पैरों में पड़ा और बोला: हमारी जान आपके हाथ में है। हमें बचाइये। पंडितजी ने सबको मकान में बिठाया, किंवाड़ बंद किए। पहले डर बता कर फिर धीरज से काम लिया और कहा कि, "कल रात को सब लूट का सामान गांव के बाहर अंधेरे कुए में डाल देना और फिर कभी इधर नही आना। मैं तो पहले दिन से ही सब जान रहा हूं तुम एक २ करके मेरा पहरा चोकी हमेशा बढ़ा रहे थे। मै कच्चे गुरू का चेला नहीं हूं। जाओ मौज करो। चोरों के सरदार ने पंडित जी को भरपेट दक्षिणा दी और आज्ञानुसार सब माल उस कुए में पटक दिया।

पन्द्रवें दिन सिपाही पंडित जी को लेने आए। पंडित तो तैयार थे। वड़े रोब से राजसभा में गए और कहा कि चोरी का पता इसी शर्त पर बताया जा सकता है कि चोरों को अभयदान मिले। राजा ने मंजूर किया। पंडित जी ने कहा गांव के बाहर वाले अंधेरे कुए में सब माल है मंगालें। वे चोर आपकी नगरी में कभी नहीं आएंगे। माल ज्यों का त्यों मिल गया। राजा ने पंडित जी का भारी सन्मान किया। कुछ दिन बाद पंडित जी ने अपना बोरी बिस्तर समेटा और गांव चले गए इसी में खैर थी नही तो कौन जाने क्या होता। घर आकर उन्होंने सोचा कि जिन जैन माहण पंडित जी ने

६ माह मे मुझे जो थोडा बहुत सिखाया और मत्र सिखाये उसी का यह प्रताप है। उन्होने अपने पुत्र को उनके पास पढने को भेज दिया। वह पूरा विद्वान और सुसस्कारो वाला हो गया तथा उनके पूरे कुटुम्ब ने जैन धर्म स्वीकार किया।

प्राचीन काल से ही माहण-या महात्मा जाति, क्षत्री ब्राह्मण वैश्य और शूद्र सब की विद्या गुरु रही है इसीलिए उन्हे तबसे ही गुरूजी शब्द से सबोधित किया जाता है।

जो सुख चाहो संसार में तज दो बातां चार।
चोरी चुगली चाकरी और पराई नार ॥१ ॥
याद करी ने नामो मांडे ऊंट चढी ने ऊंघे।
सखा साला सु वणज करे तो धरा क्यूं न सूंघे।२।

रस्ता चलना स्वच्छ, चाहे फेर हो,
काम करना उत्तम चाहे देर हो।
सम्मति लेना भाई की चाहे वैर हो,
भोजन करना मा से चाहे जहर हो,
पत्नी करना पतिव्रता चाहे बे नूर हो,
न्याय करना सत्य चाहे अमीर हो या फकीर हो।
कुलवान की पहचान होती है उसकी शान से,
विद्वान की पहचान होती है उसकी जबान से ॥

पाप का घड़ा अन्त में फूटता है
(देर हो अन्धेर नहीं)

अवंति नगरी में लक्षाधिपति धनदत्त सेठ के पुत्र चतुर सेन का विवाह था। वहुत दूर दूर से अतिथि आने वाले थे। पूरी तैयारी की गई थी। वर राजा के लिए उत्तम कोटिका घोड़ा राजाजी से साज सामान जेवर के साथ मांग लिया गया था। गले में हार की कमी थी। अतः नगर सेठ कुबेरदत्त क्रोड़पति के यहां से नवलखा हार स्वयं धनदत्त सेठ ले आए थे।

विवाह सम्पन्न हुवा। नवलखा हार एक माह तक चतुर-सेन के गले की शोभा बढ़ाता रहा था अतः उस हार के प्रति चतुरसेन अधिक मोहित हो चुके थे। मौका पाकर एक नकली हार ठीक उसी घड़त का उसी वजन का उसी चमक का तैयार करा लिया और उस असली हार की डिविया मे उसे वन्द कर सेठ कुबेरदत्त को हाथों हाथ चतुरसेन दे आए थे और मुनीमजी से भरपाई भी लिखा लाए थे।

यह अषाढ की बात थी। चौमासे में लगन होते नहीं है। मगसर पौष में फिर विवाहो के बाजे वजने लगे। शादी के वक्त घर की हैसियत को चार गुनी वताने के लिए प्रायः सभी लोग स्नेही स्वजनों से जेवर मांगकर वर राजा को पहनाते है यह रिवाज सा था, है और आज भी है। किसी

सेठ के पुत्र का विवाह था अत वह कुबेरदत्त सेठ के यहा हार लेने गया। सेठजी ने डिबिया निकाली और हार बाहर निकाला तो आश्चर्य मे पड गए, यह हार काला कैसे हो गया, इसकी चमक कहा जाती रही वह विचार मे पड गए। वह आगतुक सेठ भी हार की चमक देखकर घर चला गया। काला हार क्या काम का। कुबेरदत्त सेठ के होश उड गए, नौलाख के हार का यह रूप कैसे बदल गया, याद आया कि धनदत्त सेठ के पुत्र के बाद किसी को हार पहनने को नही दिया गया था। मुनीमजी ने भी नामा देखा और विश्वास कर लिया कि हार की अदला बदली चतुरसेन ने ही की है। मौका देखकर धनदत्त सेठ को कुबेरदत्त सेठ ने अपने घर बुलाया और वह हार बताया। सेठ धनदत्त को पसीना हो गया, मेरा पुत्र इस प्रकार का अप्रमाणिक काम भी कर सकता है, धिक्कार है उसे। घर जाकर धनदत्त ने अपने पुत्र को एकात मे प्रेम पूर्वक हार के सबध मे पूछताछ की। चतुर सेन ने पहले से बात घड रखी थी जवाब दिया, "पिताजी मैं हार सेठजी को हाथो हाथ सौंप आया हू यह देख लीजिए उनकी दुकान की रसीद। सेठ ने बहुत ही गभीरता पूर्वक पुत्र को समझाया पुत्र का नाम ही चतुर सेठ था, चतुराई से ६ लाख का हार हाथ मे आ चुका था उसे जाने देना मूर्खता होगी। वह साफ इन्कार हो गया और अकड कर पिता से कह दिया, "बार बार आप क्यो पूछते है मैं क्या ठग हू जो ठगाई करना

हूं"। पिता को विश्वास हो गया कि सब करतूत इसी की है, पर मजबूर कुछ, वश नहीं चलता था।

सेठ कुबेरदत्त राजा के पास पहुंचे। राजा ने चतुरसेन को डराया धमकाया और परीक्षा के लिए सिपाही को आज्ञा दी। नगर के बाहर क्षिप्रा के किनारे एक देवी का मन्दिर था जब कभी ऐसी समस्या उपस्थित होती थी चोर को देवी के मन्दिर में रात को बंद कर दिया जाता था और वहीं न्याय हो जाता था। एक तो रात का समय दूसरा नदी का किनारा और फिर देवी की भयानक मूर्ति व वीभत्स वातावरण ये संजोग भले भले के प्राण लेने के लिए काफी थे। मारू बाजा बजाते हुए खच्चर पर बिठा कर चतुरसेन को देवी के मन्दिर की ओर ले जाया गया, अपरम्पार भीड़ साथ थी। नदी को पार कर उसको खच्चर से उतरने को कहा गया। उसका मुंह काला किया गया और कणेर के फूलों की माला उसे पहनाई गई; पांच मिनट का समय और दिया गया कि अब भी वह सत्य प्रगट कर दे। चतुरसेन निडर था, साहसी था, अतः मस्ती से सबके सामने चुप चाप बैठा रहा और पेशाब करने एक तरफ चला गया। बैठे २ थोड़ेसे पत्थर उसने जेब में भर लिए और उठ आया।

समय पूरा होने पर सब के समक्ष उसे देवी के मंदिर में धकेल दिया गया और बाहर ताला लगा दिया गया। भीड़ सब बिखर गई उसके स्नेही व मित्र तथा परिवार के

लोग रो रहे थे कि चतुरसेन का शव ही सुवह मिलेगा। हमेशा से यही देखते आए है, मौत के घर मे से कोई पीछा आज तक तो नही आया था।

चतुरसेन ने पूरा मनोवल इकट्ठा किया और जेव मे से एक पत्थर निकाल कर भन्नाट करके देवी के सिर पर दे मारा, १-२-३ यो लगातार ५-७ पत्थर फेंके। देवी ने सोचा आज पहली वार किसी सवासेर से पाला पडा है सव लोग तो आते ही डर के मारे मर जाते हैं यह कोई अजव वीर है। यह कही मेरी खोपडी न फोड दे —

मार आगे भूत भागे, ठण्डे आगे प्रेत नाचे ॥

देवी वोली, "भला आदमी ठहर २ क्यो नाहक पत्थरो से मुझे मरता है, मैं तो किसी का कुछ नही करती हू । डर के मारे ही मनुष्य मर जाते है, मैं तुझे कुछ न कहूगी, मुझे मार मत।

चतुरसेन की वुद्धि, यहा भी काम कर गई। मजे मे रात भर सोता रहा। कव दिन उगा उसे पता भी नही। वाहर से जव ताला खोलने की आवाज और भीड की चिल्लाहट सुनी तव उसकी आख खुली।

सिपाहियो के साथ उसके पिताजी व मित्रलोग भी आये थे। उसे जिंदा देखकर सव को आश्चर्य हुवा। पूरे नगर मे वात फैल गई कि चतुरसेन सच्चा है इसलिए देवी ने उसका भक्षण नही किया, नगर सेठ झूठा है, नाहक किसी का नाम वदनाम करता है। चतुरसेन का राजसी जलूस निकला चारो

तरफ नर नारियों ने उसे फूलों से वधाया, जय जय कार की ध्वनी हुई। मित्रों ने दावत दी।

नगर सेठ बड़ा धर्मात्मा व सत्यवादी था। पीढ़ियों से उसके घर का मान था। आज यह नौबत पेश आई कि सत्य की निन्दा हो रही है झूठ का जलूस निकल रहा है। उसने शासन देव का आराधन किया। प्रति दिन जो माला पाठ करता था उसमें वृद्धि की। उसे जैन धर्म पर अटूट श्रद्धा थी। अपने गृहस्थ गुरुजी से सलाह ली कि क्या किया जाय। नौलखा हार गया उसकी चिंता नहीं जैनधर्म की निन्दा सहन नही होती है। माहण गुरूजी ने तीन दिन बाद आने को कहा। स्वयं तेला कर मंत्र जाप करने बैठ गए। चक्रेश्वरी देवी प्रगट हुई और कहा कि घबराने की जरूरत नहीं इस पूनम को प्रातःकाल क्षिप्रा नदी पर उसका न्याय हो जायगा मैं सब कर लूंगी।

रात को राजा ने स्वप्न में चक्रेश्वरी देवी के दर्शन किए, देवी ने दर्शाया कि, "क्रोड़पति सेठ सच्चा है, हार चतुरसेन के ही पास है तुम इस पूनम को प्रातः काल क्षिप्रा के किनारे उसकी अग्नि परीक्षा का आयोजन करो"।

राजा ने अग्नि परीक्षा का ऐलान करा दिया। दो दिन बाद पूनम थी। चतुरसेन एक कुम्हार के घर पहुंचा, एक सुन्दर कुंजा (सुराही) बनाने की आज्ञा दी। अगले दिन कुम्हार एक मनोहर चतराम वाला कुंजा लेकर चतुरसेन के पास गया। चतुरसेन ने कुंजा ले लिया, अपने

खड में गया और हार उस कुजे के तले मे रख कर ऊपर गीली मिट्टी लगा दी और कुजा (घडा) वापस कुम्हार को देते हुए कहा कि पूनम की सुबह वह भी नदी किनारे आवे। एक मोहर आज उसे इनाम मे दी है दो कल और देने को कह दिया, कुम्हार चला गया, चतुरसेन निश्चित हो गया, उसे अपनी बुद्धि का पूरा भरोसा था।

पूनम की सुबह नदी पर अजब समुदाय उलट रहा था नगरी के लिए यह गभीर प्रश्न था, सत्य और झूठ का खुले आम निर्णय आज होने वाला था। एक तरफ अग्नि मे एकलोहका गोला तप कर लाल हुवा पडा था। सूर्योदय होते होते राजा, प्रधान, न्यायाधीश, सेठ साहुकार आदि सब ही उपस्थित हो गए। क्रोडपति सेठ व लक्षाधिपति सेठ भी पहले से उपस्थित थे। इधर सूरज ने किरणें फैलाई उधर राजा ने इशारा किया। पडितो ने तर्पण के लिए जल मगाने को कहा, पास मे ही वह कुम्हार सुन्दर कुजा लिए खडा था, राजा की आज्ञा से वह उस घडे मे (कुजे में) जल भर लाया और जलपात्र चतुरसेन के हाथो में दे दिया।

चतुरसेन ने जल चुलु में भरा और जोर से बोला, "हे सूरज नारायण, शेष किरण का धणी उगता भाण सब देवी देवता, जल नारायण, अग्नि देव आप साक्षी हो अगर मैंने हार सेठ कुबेरदत्त को हाथो हाथ न दिया हो तो मेरे हाथ जल जावें यों कहकर जल का वह कूजा उसने सेठ कुबेरदत्त को हाथो हाथ दे दिया और स्वय ने तपता हुवा गोला अग्नि

में से उठा लिया, दो क्षण तक हाथ में रखकर धरती पर गिरा दिया। यह देख कर राजा प्रजा सव करोड़ पति सेठ की निन्दा करने लगे कि सेठ की नियत बिगड़ गई है, चतुर सेन सच्चा है। इसके २-३ क्षण बाद ही कुबेरदत्त सेठ के हाथ से वह घड़ा देव माया से नीचे गिर जाता है और हार पर सूर्य की किरने पड़ते ही राजा की आंखों में चका चौंध छा जाती है। राजा ने दीवान से वह टूटा घड़ा, मिट्टी लगे हार सहित अपने पास मंगाया, हार को धुलाया तो असली नौलखा हार प्रगट हो गया। राजा की आज्ञा से चतुरसेन को वही पकड़े रखा गया, उस कुम्हार को भी पकड़ कर पास लाया गया। कुम्हार से पूछा कि तुम्हारे घड़े में यह हार निकला है सो सच २ बताओ क्या बात है वरना आज तुम्हारी खैर नहीं है। कुम्हार ने दो दिन पहले वाली चतुरसेन की सब बात राजा से निवेदित कर दी। राजा की आज्ञा से कोतवाल ने चतुरसेन की पिटाई शुरू की। मार आगे भूत भागे, निदान चतुरसेन ने सब सच सच कह दिया। लोगों में सत्य की महिमा बढ़ी। चोर को उचित दण्ड मिला, नगर सेठ का सन्मान किया गया।

तब से यह कहावत प्रगट हुई कि:—

"पाप का घड़ा अन्त में जरूर फूटता है"

—

जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है।

देव पूजा, गुरु पास्ति स्वाध्याय सयमः तप ।
दान चेति गृह स्थाना षट् कर्माणि दिने दिने ॥

अंधेरी रात मे दो डाकू डाका डालनें नगरी की ओर चले । सोचा आज तो अष्टमी है जिनदत्त सेठ के पौषध होगा वही चलें, आसानी से माल हाथ लग जाएगा । हवेली के पास पहुचे तो द्वारे पर किसी दिव्य मूर्ति को हाथ मे भाला लिए खडे पाया, मजबूरी से वापस लौट गए और सुबह नगर मे चर्चा फैली कि रात को विलास राय की हवेली मे डाका पडा । शासन देव द्वारपाल बन कर धर्मात्मा जिनदत्त की रक्षा कर रहे थे ॥१॥

एक भयंकर शेर पीजरे मे से छूट गया था, पीछे से तीर कमान लिए रक्षक दौडकर उसे काबू मे करने के प्रयत्न कर रहे थे, सामने से मन्दिर मे से पूजा करके धर्मचन्द सेठ निकले ही थे कि शेर को सामने आता देखा । वही खडे २ आख मीचकर नवकार का जाप करने लगे, भागने का रास्ता ही न था, घबराने से कुछ होता न था । छतो पर खडे लोगो के हृदय धटक रहे थे कि आज तो धर्मचन्द सेठ के प्राण न बचेंगे । शेर पास आया, न मालूम उसे क्या सूझा कि वह तेजी से आगे बढ गया,लोगोने धर्म का प्रत्यक्ष फल देखा ॥२॥

एक नगरी में अचानक आग लग गई,पूनमचन्द सेठ के बाल बच्चे तीसरी मंजिल पर सोए हुए थे। आग पास के मकान में लगी थी, रात को चारों तरफ रोना चिल्लाना मचा हुआ था। पूनमचन्द यात्रार्थ गए हुए थे घर पर केवल पत्नि और बच्चे ही थे। सब तरफ त्राही त्राही मची हुई थी। सब लोग आग बुझाने में लगे हुए थे, आग काबू मे न आती थी। अचानक आकाश में बादल छा गया और टपोटप बरस पड़ा और देखते ही देखते आग काबू में आ गई। सब के मन में शाँति फैली ॥३॥

गौतम सेठ को मुनि वन्दन के लिए नदी पार जाना पड़ा चौमासे में नदी पार जाना वह उचित नहीं समझते थे पर धर्म कार्य के लिए जाने की छूट उन्होने रखी थी। चौमासे में नदी का और घर में क्रोधी मनुष्यका कोई ठिकाना नहीं। स्वभाव कब ज्यादा कम होता है इसका अन्दाज नहीं। साधु महाराज को वन्दन कर लौटते वक्त सेठ नदी पार कर रहे थे कि नदी में अचानक बाढ़ आ गई। अभी किनारा आधा दूर था। तैरने लग गए पर थकावट इतनी आ गई कि अब १–२ हाथ भी न मार सकते थे अचानक शासन देव ने भील रूप धर कर सामने आकर सेठ की हालत देखी, नदी में कूदा और उसे किनारे ले आया ॥४॥

उपसंहार

पुण्य और पाप का फल अवश्यमेव भुगतना पड़ता है। पुण्य शाली आत्मा की रक्षा के लिए सम्यक् देवो देवता सदा जागृत रहते हैं। जीवन मे पद पद पर भय है, शरीर की स्थिति दिन प्रतिदिन कम होती जाती है, पुद्गल अपना काम करता है आत्मा अपना काम करता है आलसी होकर शात बैठे रहकर अपनी खैर मानना मूर्खता है, अत विवेक शील मनुष्य सदा जागृत रह कर धर्म मे प्रयत्नशील रहता है। अकस्मात की आपत्तियो मे जगल मे, नदी मे, अग्नि मे चोरो के उत्पात मे, गरीबी मे दुख मे अधेरी रात मे हमारा रक्षक कौन है मात्र एक धर्म, धर्म और धर्म।

आवागमन के चक्कर को मिटाने के लिए ही मानव देह की प्राप्ति हुई है अत प्रतिदिन ऐसे शास्त्रो का अध्ययन, श्रवण एव मनन करना चाहिए जो हमे आत्मा और परमात्मा का ज्ञान देने वाले हो वैसे ही मनुष्यो की सगति मे रहना चाहिए जो विवेक शील हो तथा जिनकी बुद्धि निरन्तर निर्मल हो। जो भवभीरू हो, अपने जीवन की कीमत समझते हो और धर्म में ही लगे रहते हो, जिनके रोम २ में परोपकार बसा हो उनका।

कही अन्त में पछताना न पडे कि हमने अपना जीवन मुफ्त में ही खो दिया अत अन्य गति में जाने से पहले आते भव का भाता (धर्म सग्रह) एकत्रित कर लेना चाहिए। धन प्राप्ति के अभाव से भी धर्म प्राप्ति का अभाव अधिक खटकना चाहिए। सब सुखी हो, सब का कल्याण हो, सब को धर्म की प्राप्ति हो, यही अभ्यर्थना है।

आपका बन्धु——फतहचन्द महात्मा

माहण (महात्मा) जाति

लेखक—जयमित्र

माहण का अर्थ है ब्राह्मण। इस शब्द के साथ ही इस जाति की उत्पत्ति का इतिहास मुझे याद आता है जिसका उल्लेख मैंने अपने उपन्यास "चक्रवर्ती भरतदेव भाग दो" मे किया है।

घटना ऐसी है कि चक्रवर्ती होते हुए भी भरतदेव का हृदय योगी का था। अपने ही अनुभव की बात है कि राज्य कार्य बडो-बडो को लक्षबिंदु से विचलित कर देते है, करने का भूल जाते है और न करने का कर बैठते हैं।

इस विषय मे स्वय सदा जागृत रह सके उसके लिए चक्रवर्ती भरतदेव ने राज्य मे व्रत तप करने वाले वृद्ध श्रावक भोगकुली विद्वानो को बुलाया और उन्हे कहा कि आज से आप मेरे उपदेशक, आप मुझे सतत कहते रहे कि—

जितो भवान् वर्द्धते भयनित्यम्
तस्मान्माहण माहणेति ॥

अर्थात्—तुम जीते जा रहे हो, नित्य भय वढ रहा है अत मत हणो, मत हणो।

भावार्थ यह है कि हे राजा तेरे आत्म शत्रुओ द्वारा तू जीता जा रहा है उन शत्रुओ का जोर वढ रहा है अत आत्मा का हनन न कर, न कर।

महात्माओं में वाणारस, आचार्य, भट्टारक पद होते हैं। आचार्य और भट्टारक ब्रह्मचारी रहते हैं। इनके मकानों को पोशाल कहते हैं। गाँव के बालकों को पढ़ाना, सुवह शाम श्रावकों के साथ सेवा पूजा प्रतिक्रमण, सामायिक स्वयं करना और कराना, जैन आचार व विधि से मंदिरों की प्रतिष्ठा विधि विधान साधु महाराज के उपदेश से कराना। पंच महाव्रतधारी उपदेश देते है व गृहस्थ गुरू आदेश देते हैं। आचार्य व भट्टारकजी की पोशाल में जैन मन्दिर का होना अत्यंत आवश्यक व लाजमी है। निकूम व केलवे में वनारस, पीपलीया गरोठ में एवं भिनाय में आचार्यजी तथा उदयपुर में भट्टारकजी की पोशालें है। वृहत शान्ति में "भट्टारक" शब्द का उल्लेख आता ही है।

जैनाचार्य व जैन आगेवान इस जाति की तरफ लक्ष देवें तो जैन पण्डित, जैन प्रचारक, जैन उपदेशक तैयार किये जा सकते हैं।

विवाह और प्रतिष्ठा आदि जैन विधि विधानों के लिए जैन विमुख जैनेतर विद्वानों का मुँह नहीं देखना पड़े। यह महात्माओं का आचार है। इनसे कराना चाहिये। पर्युषण में व्याख्यान देने के ये अधिकारी हैं। जहां साधु नहीं होते वहां-वहां इन्हें बुलाया जाता है।

(लेखक के अध्यात्मकल्पद्रुम के दो शब्दों में से तथा जैन तीर्थ मित्र से उद्धृत)

जयभिखु चन्द्रनगर सोसायटी —ले० जयभिखु

"महात्मा" प्राचीन माहण का अपभ्रंश है। माहण जाति

जैन धर्मावलम्बी हे और उत्तर तथा दक्षिण भारत मे अनेक स्थलो मे फैली हुई है। उत्तर भारत के माहण महात्मा, दक्षिण भारत के माहण जैन उपाध्याय कहलाते है। इस जाति का मुख्य कार्य पठन-पाठन, ज्योतिष, वैद्यक, पूजा प्रतिष्ठा आदि हे।

७/८ दरियागज देहली —ले० यशपाल जैन

ब्राह्मण धर्म को जैन धर्म ने ही अहिंसा धर्म बताया। ब्राह्मण व हिन्दू धर्म मे जैन धर्म के प्रताप से माँस भक्षण व मदिरापान बन्द हो गया। पूर्व काल मे अनेक ब्राह्मण पण्डित जैन धर्म के धुरन्तर विद्वान हो गये हे।

—लोकमान्य बालगगाधर तिलक



प्राचीन जैन ब्राह्मण जाति नो इतिहास तपासताँ जणायु छे के तेमना बालको ने जैन पण्डित, प्रचारक अने क्रिया-कारक बनावामा आवे तो आ जाति धर्म अने समाजनी सेवा बजावी शकशे।

—आ० श्री विजय प्रतापसूरीश्वरजी महाराज के मन्तव्य से उद्धृत



स्व० श्री वक्तावरलालजी महात्मा उदयपुर वालो ने एक विस्तृत इतिहास महात्मा जाति का छपवाया है जो मोती चोहटा उदयपुर मे उनके पुत्र डॉ० वसन्तीलालजी के पास उपलब्ध है जिसमे तावा पत्रो की अनेक नकलें हैं।

श्री श्रमण-माहण संस्कृति पोषक साहित्य संपादन में सहयोगी

दान दाताओं की सूचि

१५१)	श्री लालचन्दजी सा. ढढा—ढढा कंपनी	मद्रास
१५१)	,, देवराजजी माणकचन्दजी चेताला	,,
१५१)	,, जेठमलजी सुकनराजजी वाली	,,
१५१)	,, रूपचन्द एण्ड सन्स ह. श्री मदनलालजी	,,
१०१)	,, तुलसीदासवेलजी ह. लालजी काका	,,
१०१)	,, हरकचन्दजी हुकमीचन्दजी	,,
१०१)	,, जेठमलजी गेनमलजी	,,
१०१)	,, पूनमचन्दजी मांगीलालजी इगमोर	,,
७१)	,, मोहनलालजी एण्ड सन्स	,,
५१)	,, केसरीचन्दजी मगनमलजी	,,
५१)	,, गोविदलाल लालजी काका	,,
५१)	,, भंसाली केमिकल्स	,,
५१)	,, सरदारमलजी शेपमलजी	,,
५१)	,, हजारीमलजी पुखराजजी	,,
३१)	,, जोधाजी मनीरामजी	,,
३१)	,, निर्भेलालजो मूलचन्दजी	,,
२५)	,, गोमराजजी फतेहचन्दजी	,,
२५)	,, धनालालजी मंछालालजी	,,
२५)	,, अमरचन्दजी शोभाचन्दजी	,,